गुलिस्ताँ

अर्थात्

नीति-पुष्पोद्यान।

हरिदास वैद्य।

प्रकाशक
हरिदास एण्ड कम्पनी।

महाकवि ग़ालिब

और

उनका उर्दू काव्य।

(लेखक ज्वालादत्त शर्म्मा ।)

जिनका उर्दू भाषा के साहित्य से थोड़ा भी लगा- महाकवि ग़ालिब को जानते हैं। महाकवि ने उर्दू में जो कुछ लिखा है ग़नीमत है। उसी प्रतिभाशाली सर्वप्रिय काव्य को भावार्थ सहित हमने प्रकाशित कि.. यही नहीं, पुस्तक के आदि में महाकवि का जीवन चा उनके काव्य की समालोचना भी विस्तृत रूप से की गई है भिन्न-भिन्न भाषाओं के काव्य को पढ़ कर जो लोग अपन प्रतिभा और विचार-शक्ति को समुज्ज्वल करना चाहते हैं उन हम इस पुस्तक को पढ़ने के लिए ज़बरदस्त सिफ़ारिश करते हैं।

इस तरह की पुस्तक अभीतक हिन्दी में प्रकाशित नहीं हुई है। अकेली इस पुस्तक को पढ़कर ही पाठक, उर्दू का. के विषय में ही नहीं—बल्कि उर्दू साहित्य के विषय में अने मार्म्मिक बातें जान जायँगे।

मूल्य ।/) प्रति पुस्तक और डाक खर्च /)

॥ श्रीः ॥

गुलिस्ताँ

अर्थात्

नीति-पुष्पोद्यान

अनुवादक
हरिदास वैद्य

प्रकाशक
हरिदास एण्ड कम्पनी

कलकत्ता
२०१, हरीसन रोड के नरसिंह प्रेस में
बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा
मुद्रित।

सन् १९१६

द्वितीय बार १०००] [मूल्य १)

निवेदन

इस पुस्तक की पहली आवृत्ति निकले कोई चार वर्ष हो गये। अब हाथ में इसकी कापियों के न रहने और माँगों का सिलसिला जारी रहने से इस की दूसरी आवृत्ति, इस काग़ज़ के दुर्भिक्ष के समय में ही, निकालनी पड़ी।

इस बार की गुलिस्ताँ पहली के मुक़ाबले में बिलकुल नई चीज़ है। श्रीमान् पं० ज्वालादत्त जी शर्म्मा, किसरौल, मुरादाबाद निवासी ने इस संस्करण में बहुत कुछ काम किया है। प्रत्येक कहानी के सिर पर जो शेर दिये गये हैं, यह उन्हीं की कृपा के फल हैं। उन के सिवा एक और प्रसिद्ध विद्वान् ने इस के संशोधन में बड़ी सहायता की है, अतएव मैं उक्त दोनों महानुभाव सज्जनों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

इतना सब होने पर भी संभव है, कि इसमें अनेक भूलें रह गई हों। भूलों के लिए मैं सहृदय पाठकों से क्षमा माँग कर अपना निवेदन शेष करता हूँ और आशा करता हूँ कि उदारहृदय दयालु सज्जन क्षमा-प्रदान में सङ्कोच न करेंगे।

कलकत्ता
७ अगस्त, सन् १९१९

विनीत
हरिदास

शैख़ सादी का परिचय।

गुलिस्ताँके मूल लेखक शेख़ मसलहुद्दीन सादी शीराज़ी हैं। आप का जन्म ईरानके शीराज़ नामक नगर में हुआ था। आपकी जन्म-तिथि का ठीक पता तो नहीं चलता, परन्तु इस बात में ज़रा भी सन्देह नहीं कि आप का जन्म अँगरेज़ी बारहवीं शताब्दी के अन्तमें हुआ। आप कुछ दिन भारतवर्ष में भी रहे और आपने यहाँ की भाषा आदि सीखी। बहुत से देशों की यात्रा करके आपने ख़ूब अनुभव प्राप्त किया। आपने अरबी फारसी में अनेक पुस्तकें लिखी हैं। उन सब में गुलिस्ताँ, बोस्ताँ और करीमा का शिक्षित जगत् में बड़ा आदर है। इन तीनों में भी, गुलिस्ताँ का सब से अधिक आदर है।

गुलिस्ताँ के अँगरेज़ी में भी अनेक अनुवाद हैं। उनमें सब से बढ़िया अनुवाद "लाइट आफ़ एशिया" के लेखक का किया हुआ है।

शेख़ सादी ने पचास वर्ष की उम्र तक कोई पुस्तक नहीं लिखी थी। उस समय तक वे अपने समय की विशेष क़द्र नहीं करते थे। इसके बाद आपने एकान्तवास करना शुरू किया। उसी

समय से आपने ग्रन्थ-प्रणयन कार्य्य शुरू किया। सन् ६५६ हिजरी में आपने गुलिस्ताँ को समाप्त किया। गुलिस्ताँ को लिख कर नीतिज्ञ सादी ने अपनी कीर्त्ति को संसार में सदा के लिए स्थिर कर दिया है। निस्सन्देह आपकी इस वाटिका में कभी पतझड़ नहीं होगा। आपके विषय में मि० ओसले के शब्द लिख कर हम आपका परिचय समाप्त करते हैं—

"The brightest ornament of Persia, the matchless possessor of piety, genius and learning."

जिस समय आप ईरान में अपनी योग्यता, विद्वत्ता और नीतिज्ञान के लिए अद्वितीय माने जाते थे, उस समय वहाँ अबूबक्र बादशाह राज्य करता था। शेख सादी १०० वर्ष से ऊपर इस दुनिया में रह कर शान्ति से पञ्चत्व को प्राप्त हुए।

विषय-सूची।

विषय — पृष्ठाङ्क

पहला अध्याय।

राजनीति ... ... १—८१

दूसरा अध्याय।

साधुओं की नीति ... ... ८२—१७७

तीसरा अध्याय।

सन्तोष का महत्त्व ... ... १७८—२३५

चौथा अध्याय।

चुप रहने से लाभ ... ... २३६—२५१

पाँचवाँ अध्याय।

प्रेम और यौवन ... ... २५२—२५६

छठा अध्याय।

दुर्बलता और वृद्धावस्था ... ... २५७—२७०

सातवाँ अध्याय।

शिक्षा का फल ... ... २७१—३१२

आठवाँ अध्याय।

सदाचार के नियम (८१ नुसख़े) ... ३१३—३६०

गुलिस्ताँ ।

पहला अध्याय

राजनीति

पहली कहानी ।

जहां ऐ बिरादर न मानद बकस ।
दिल अन्दर जहांआफ़िरीं बन्दो बस ॥ १ ॥
चो आहंग रफ़्तन कुनद जाने पाक ।
चे बर तख़्त मुर्दन चे बर रूये ख़ाक ॥ २ ॥

मैंने सुना है, कि किसी बादशाह ने एक क़ैदी को फाँसी का हुक्म दिया। क़ैदी ने, ज़िन्दगी से नाउम्मेद होकर, उसे अपनी भाषा में ख़ूब गालियाँ दीं। कहावत मशहूर है कि, "जो आदमी अपनी ज़िन्दगी से हाथ

भाई, यह संसार किसी के साथ नहीं जाता। इसलिए इसके साथ दिल मत लगाओ—लगाओ इसके बनाने वाले के साथ। उसके साथ सम्बन्ध जोड़ने से तुम्हारा भला होगा ॥ १ ॥

प्राण-वायु के निकल जाने पर चाहे लाश तख़्त पर पड़ी रहे या ख़ाक पर, दोनों पर एक सी है। मरने के बाद राजा और रंक में कोई फ़र्क़ नहीं रहता ॥ २ ॥

बैठता है, वह अपने दिल की सब बातें कह डालता है। जिस तरह कुत्ते से खदेड़ी हुई बिल्ली, अपने बचने का कुछ उपाय न देख कर, कुत्ते पर ही उलट कर झपट्टा मारती है और जिस तरह, मौक़ा पड़ने पर, जब किसी मनुष्य को अपनी जान बचाने का कोई उपाय नहीं सूझ पड़ता, तब उसका हाथ ख़ाहमख़ाह तेज़ धार की तलवार पर पड़ता है; उसी तरह जब मनुष्य की सब आशायें नष्ट हो जाती हैं, तब वह निरीह होकर जो जी में आता है, वही बकने लगता है और इस तरह अपने दिल का गुबार निकालता है।" बादशाह ने अपने नौकरों से पूछा,—"यह क्या कहता है?" एक दयावान् वज़ीर ने जवाब दिया,—"महाराज! यह कहता है कि जो मनुष्य अपने क्रोध को शान्त रखता है और सब जीवों पर दया रखता है, ईश्वर उसे अपना मित्र बना लेता है।" बादशाह को यह बात सुन कर दया आई और उसने उस अभागे क़ैदी की जान बख़्श दी। इतने में, एक निर्दय वज़ीर बोला,—"हमारे जैसे मर्तबे वाले मनुष्य के लिये बादशाह के सामने झूँठ बोलना ठीक नहीं है। उस क़ैदी ने आप को मनमानी गालियाँ दी थीं।" उसकी बात सुन कर, बादशाह नाराज़ होकर बोला,— "मैं तुम्हारी इस बात से अपने पहले वज़ीर की झूँठी बात को ज़ियादा पसन्द करता हूँ, क्योंकि वह बात भलाई के इरादे से कही गई थी और तुमने जो कहा है, वह

बुराई के इरादे से। बुद्धिमानों का कथन है, कि जिस सच बात के सुनने से बुराई करने की इच्छा पैदा होती है; उस से वह झूँठ बात लाख दर्जे अच्छी है, जिस से भलाई करने का उपदेश मिलता है। बादशाह लोग हमेशा दूसरों की सलाह से काम किया करते हैं, इसलिए जो लोग उन्हें बुराई करने की सलाह देते हैं, उन्हें धिक्कार है! फ़रीदूँ के महल की दीवार के ताक़ पर लिखा है:—"भाइयो! यह संसार चार दिन का साथी है; यदि हमेशा के लिए अपना भला चाहो तो परमेश्वर में लौ लगाओ। इस झूठी दुनिया की राजधानी पर विश्वास मत करो। देखो, तुम्हारे जैसे कितनों को इसने बनाया और बिगाड़ दिया। जिस वक्त पवित्र प्राण निकलने लगते हैं, उस वक्त सिंहासन पर प्राण-त्याग करने वाले बादशाह और खाली ज़मीन पर मरने वाले एक भिखारी में क्या फ़र्क़ रहता है?"

शिक्षा—इस कहानी से हमें दो शिक्षाएँ मिलती हैं—(१) दूसरे की भलाई या पराई जान बचाने के लिए अगर झूँठ भी बोलना पड़े तो कोई दोष नहीं है। वह सच ख़राब है, जिस से दूसरे की हानि हो या किसी को जान जावे। (२) यह संसार असार है। जगत् और उसके पदार्थों की माया-ममता मिथ्या है। इस जहान में कितने ही बाग़ लगे, फले फूले और सूख गये। एक से एक बढ़ कर राजा बादशाह हुए, जिन्हों ने ससागरा पृथ्वी का राज्य किया; सारी दुनिया

को एक नकेल में नाथ दिया; किन्तु आज उनका नामो-निशान नहीं है। जब तक इस कलेवर से प्राणों का प्रयाण नहीं होता, तब तक ही अमीरी-ग़रीबी अथवा छुटाई-बड़ाई प्रभृति अवस्थायें मानी जाती हैं। मरने पर राव और रङ्क, बादशाह और फ़क़ीर एक हो जाते हैं। अतः राज-पाट, महल-मकान, धन-दौलत आदि पर अभिमान करना और अपने से नीची अवस्था के मनुष्यों को नफ़रत की नज़र से देखना बुद्धिमानी के विपरीत है।

दूसरी कहानी।

ख़ैरे कुन ऐ फ़लां व ग़नीमत शुमार उम्र।
ज़ाँ पेश्तर कि बाँग बर आयद फ़लाँ नमाँद ॥ १ ॥

सुल्तान महमूद सुबुक्तगीन के मरने के एक सौ वर्ष बाद, उसको खुरासान के एक बादशाह ने स्वप्न में देखा। बादशाह ने देखा कि सुल्तान का शरीर टुकड़े-टुकड़े होकर मिट्टी होगया है और उसकी आँखें नेत-

---

जो दिन ज़िन्दा है इसको ग़नीमत समझ—और इससे पहले कि लोग तुझे मुर्दा कहें नेकी कर जा ॥ १ ॥

कोषों में इधर-उधर घूम कर चारों ओर देख रही हैं। बादशाह ने ज्योतिषी और नजूमियों से इस स्वप्न का फल पूछा; पर कोई कुछ भी न बता सका। तब एक फ़क़ीर ने सलाम कर के कहा,—"उसका राज्य दूसरे लोग भोग रहे हैं, इसी से वह चारों ओर देख रहा है। ऐसे बहुतेरे नामवर लोग ज़मीन में गाड़ दिये गये हैं, जिन्होंने संसार में आकर कोई ऐसा काम नहीं किया, जिस से पृथ्वी पर उनका नाम रहे। लेकिन नौशेरवाँ जैसे महापुरुष को मरे यद्यपि एक ज़माना बीत गया, क़ब्र में रक्खी हुई उसकी लाश गल कर मिट्टी में मिल गई, उसकी एक हड्डी का भी पता नहीं चलता; तथापि उसका पवित्र नाम परोपकार की वजह से अबतक संसार में ज़िन्दा है। इसलिए भाइयो! जब तक जियो नेकी करो और अपनी ज़िन्दगी से फ़ायदा उठाओ अर्थात् 'अमुक आदमी दुनिया में नहीं रहा' इस आवाज़ के आने के पहले नेकी कर जाओ।

शिक्षा—इस क़िस्से से हमें "परोपकार" की शिक्षा मिलती है। उदारता, सज्जनता, धर्मनिष्ठा आदि सद्गुण इस परोपकार के अन्तर्गत हैं। परोपकार ही मनुष्य का परम धर्म है। परोपकार से ही जगत् मनुष्य को मरने के बाद भी याद किया करता है। इस दुनिया में, ऐसे-ऐसे राजा बादशाह और शासक हो गये हैं, जिन की हाँक से पृथ्वी काँपती थी, जिन्होंने संसार को अपनी छोटी उँगली पर नचा मारा था;

किन्तु उन्होंने कोई लोकोपकार का काम नहीं किया, इस से कोई उनका नाम भी नहीं लेता। ईरान का बादशाह नौशेरवाँ अपनी उदारता, न्यायप्रियता और परोपकारवृत्ति के लिए जगत् में ख़ूब नामी हुआ। यद्यपि वह आज इस जगत् में नहीं है, उसके बदन की ख़ाक का भी पता नहीं है; तथापि उसका नाम लोगों के मुँह पर रहता है। वह मर कर भी अमर है। इसका कारण केवल "परोपकार" है। मौत की गोद में जाने से पहले, मनुष्यमात्र को भरसक परोपकार करने पर कमर बाँधे रहना चाहिए।

तीसरी कहानी।

ता मर्दे सुख़न न गुफ़्ता बाशद।
ऐबो हुनरश नहुफ़्ता बाशद ॥ १ ॥

एक बादशाह के कई बेटे थे। उनमें से सब तो लम्बे क़द के और खूबसूरत थे; सिर्फ़ एक बदसूरत और छोटे क़द का था। एक समय, बादशाह ने अपने बदसूरत लड़के की ओर बड़ी घृणा की दृष्टि से देखा।

---

१ किसी आदमी की बुराई भलाई उस समय तक मालूम नहीं होती जब तक कि वह बातचीत न करे ॥ १ ॥

लड़का बड़ा अक़्लमन्द था। वह अपने बाप के मन की बात ताड़ गया और बोला,—"पिता ! छोटे क़द का अक़्लमन्द मनुष्य लम्बे क़दके बेवक़ूफ़ से अच्छा होता है। हरेक चीज़ की क़दर उसकी ऊँचाई के अनुसार नहीं की जाती। भेड़ पवित्र और हाथी अपवित्र जानवर समझा जाता है। सिनाई पर्व्वत पृथ्वी के और सब पहाड़ों से बहुत छोटा है; पर ईश्वर के यहाँ उसकी पदवी और उसका मान सब से बढ़ कर है। एक दिन एक दुबले-पतले अक़्लमन्द आदमी ने किसी मोटे-ताज़े बेवक़ूफ़ से जो कहा था, क्या आपने उसे सुना है? एक अरबी घोड़ा, चाहे वह कितना ही दुबला हो, अस्तबल के सारे गधों से अच्छा होता है।" इन बातों को सुन कर, बादशाह हँसा और दरबारी लोग लड़के की तारीफ़ करने लगे एवं उसके भाइयों ने दिल में रञ्ज किया। जब तक आदमी नहीं बोलता, तब तक उसके गुण-दोष प्रकट नहीं होते। हरेक जङ्गल को वीरान न समझना चाहिए; मुमकिन है कि उसमें कोई सिंह सो रहा हो। हमने सुना है, कि जब एक ज़ोरावर ग़नीम ने बादशाह पर चढ़ाई की और दोनों तरफ़ की सेनाओं का मुक़ाबला हुआ, उस वक़्त सब से पहले इसी नौजवान शाहज़ादे ने, शत्रुसेना के भीतर, अपना घोड़ा बढ़ा कर शत्रु को ललकारा और कहा,—"मैं लड़ाई में पीठ दिखा कर भागने वाला नहीं हूँ, बल्कि ख़ून से नहा कर अपना सिर देने वाला हूँ। क्योंकि जो आदमी लड़ता है

वह अपनी जान की बाज़ी लगाता है और जो भाग निकलता है वह अपनी सेना का ख़ून करा कर तमाशा देखता है।" यह कह कर, उसने दुश्मन पर हमला किया और बड़े बड़े नामी सिपाहियों को मार कर गिरा दिया। इसके बाद, वह अपने बाप के पास आया और ज़मीन चूम कर बोला,—"आप, मुझे बदसूरत देख कर, मुझ से नफ़रत करते थे; परन्तु लड़ाई के मौके पर, मैं कैसी बहादुरी और कैसी शक्ति से युद्ध करता हूँ इसका आपने बिल्कुल विचार नहीं किया था। एक पतली टाँगोंवाली घोड़ी जितना काम करती है, उतना काम एक मोटे-ताज़े बैल से कभी नहीं हो सकता।" कहते हैं, कि दुश्मन की सेना असंख्य थी और शाहज़ादे की तरफ़ बिल्कुल थोड़ी सी फ़ौज थी। उसमें से भी जब कुछ लोग भागने लगे तब शाहज़ादे ने ललकार कहा,—"यारो! मरदों की तरह युद्ध करो, कि जिस से औरतों की पोशाकें न पहननी पड़ें।" इस वचन से सिपाहियों की हिम्मत बढ़ी और उन लोगों ने, बड़ी बहादुरी के साथ दुश्मनों पर आक्रमण कर के, उसी दिन उन्हें जीत लिया। बादशाह ने शाहज़ादे का सिर और उसकी आँखें चूम कर उसे छाती से लगाया और दिन-दिन उसका प्रेम उसकी ओर बढ़ने लगा। अन्त में, बादशाह ने उसको अपना उत्तराधिकारी बनाया। यह देख कर, उसके भाई उससे जलने लगे और एक दिन उन्होंने उसके भोजन में ज़हर मिला दिया। उसकी बहिन, खिड़की को

राह से, यह सब कार्रवाई देख रही थी। जैसे ही शाहज़ादे ने खाने के लिए ग्रास उठाया, उसकी बहिन ने खिड़की का किवाड़ खटखटाया। उसने इस इशारे को समझ कर; थाली से अपना हाथ झट खींच लिया और कहा,—"अगर अक्लमन्द लोग इस तरह मार डाले जायँगे, तो बेवकूफ़ों से उनकी कमी पूरी न हो सकेगी। यदि पृथ्वी से हुमाँ निर्मूल कर दिया जाता, तो भी कोई उल्लू के साये में न जाता।" इस घटना की ख़बर बादशाह तक पहुँची। उसने शाहज़ादे के सब भाइयों को बुलवाया और उन लोगों को खूब बुरा-भला कहा। पीछे अपनी बादशाहत के मुनासिब हिस्से करके सब को बाँट दिये; कि जिस से भविष्य में किसी तरह का झगड़ा-तकरार न हो सके।

देखा गया है, कि एक कम्बल पर दस फ़क़ीर सो सकते हैं, पर एक बादशाहत में दो बादशाह नहीं रह सकते। यदि किसी फ़क़ीर के पास एक रोटी होती है, तो वह उसमें से आधी आप खाता है और आधी ग़रीब को दे देता है। पर यदि किसी बादशाह के हाथ में एक देश भर की बादशाहत होती है; तो भी वह एक और देश की बादशाहत लेने की इच्छा रखता है।

शिक्षा—इस क़िस्से में यह दिखाया गया है, कि सुन्दरता और बड़े डील-डौल से किसी का काम नहीं हो सकता। मान गुणों से होता है। बुद्धिमानी एवं शूरवीरता का खूब-

खूबसूरती और बदसूरती से कुछ सम्बन्ध नहीं है। पुरुष में गुणों की जितनी ज़रूरत है उतनी सुन्दरता और डील-डौल की आवश्यकता नहीं है। दूसरे यह भी ध्यान रखने योग्य बात है, कि एक राज्य में दो राजे नहीं रह सकते; अगर रहेंगे तो बखेड़ा ज़रूर होगा।

चौथी कहानी ।

अब्र गर आबे ज़िन्दगी बारद ।
हर्गिज़ अज़ शाखे वेद बर न खुरी ॥ १ ॥

किसी पहाड़ पर अरबी डाकुओं ने डेरा डालकर, काफ़िले वालों का रास्ता बन्द कर दिया था। इन लोगों के उत्पात से वहाँ के बाशिन्दों की नाकोंदम हो गया था। सुलतान की फ़ौज ने भी इन लोगों से हार मान

फूले फले न बेत, यदपि सुधा बरषहिं जलद ।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलें बिरञ्चि सम ॥
तुलसीदास ।

ली थी, क्योंकि ये लोग पहाड़ की चोटी पर के क़िले को अपने क़ब्ज़े में करके और उसे अपना गढ़ बना कर उसी में रहा करते थे। बादशाह के मन्त्रियों ने आपस में सलाह की, कि इस बला को किस तरह टालना चाहिए; क्योंकि अगर ये लोग इसी तरह छोड़ दिये जायँगे तो कुछ दिन बाद इन्हें दबाना मुश्किल हो जायगा। ताज़ा लगा हुआ पेड़ एक आदमी की ताक़त से उखड़ जाता है; पर वही जब बढ़ता-बढ़ता जड़ पकड़ लेता है तब चर्ख़ी लगाने से भी उस की जड़ नहीं उखड़ती। झरने का मुँह सूई से बन्द कर दिया जा सकता है, पर वही जब पूरे चश्मे का रूप धारण कर लेता है तब उसे हाथी भी नहीं रोक सकता। अस्तु, उन लोगों ने वहाँ एक जासूस भेजने का निश्चय किया और उस से कह दिया, कि जब डाकू लोग किसी दूसरी जाति पर हमला करने जायँ और उन की जगह ख़ाली हो जाय तब हमें ख़बर दे देना। इधर, थोड़े से चुने हुए सिपाहियों को पहाड़ की दरी में छिपा रक्खा। शाम के वक़्त, जब डाकू लोग अपनी चढ़ाई पर से लूटपाट का माल लेकर वापिस आये और अपनी लूटी हुई चीज़ों और हरबे-हथियारों को रख कर आराम करने लगे, तब कोई एक पहर रात गये पहले दुश्मन नींद ने उन पर हमला किया। इस के बाद, कोई आधीरात के समय छिपे हुए सिपाही झाड़ी से निकल पड़े और उन्होंने एक-एक करके सब डाकुओं की मुश्कें बाँध लीं। सवेरा

होते ही, सब के सब दरबार में लाये गये और बादशाह ने सब के प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी।

इन डाकुओं के साथ एक छोटा सा लड़का था। इस विचारे की जवानी का फल भी अब तक न पका था। इसके गालों पर, वसन्त ऋतु के आदि में खिलनेवाली गुलाब की कली की तरह, कोमलता झलक रही थी। एक वज़ीर ने, बादशाह के तख़्त का पाया चूम कर और पृथ्वी को प्रणाम करके, बादशाह से अर्ज़ की,—"महाराज! इस बालक ने अभी तक अपनी ज़िन्दगी के बग़ीचे का फल भी नहीं चक्खा और अपनी जवानी के मौसिम की फ़सल का सुख भी नहीं भोगा; इसलिए आप की मशहूर मिहरबानी की वजह से मैं उम्मेद करता हूँ कि आप इस बालक को मृत्यु के मुँह में जाने से बचा कर, मुझे एहसानमन्द करेंगे।" बादशाह बड़े समझदार थे, उन्हें यह बात पसन्द न आयी। उन्होंने कहा,—"दूषित जड़ से कभी अच्छा छायादार वृक्ष उत्पन्न नहीं होगा। नालायक़ को शिक्षा देना, गुम्बद पर अख़रोट फेंकने के बराबर होता है; इस से सब को एकादम निर्मूल कर देना ही बेहतर है; क्योंकि सब आग बुझा कर एक चिनगारी बाक़ी रहने देना या साँप को मारकर उस के बच्चे को बचा रखना, बुद्धिमानों का काम नहीं है। बादल का पानी की जगह अमृत बरसाना मुमकिन हो सकता है; परन्तु बेत की डालियों से कभी फल प्राप्त नहीं हो सकता। कमीने के

पीछे अपना समय नष्ट करना अच्छा नहीं; क्योंकि नरकुल में से कभी चीनी नहीं निकल सकती।" वज़ीर ने ज़ाहिरा इन बातों को पसन्द किया और इस उचित विचार के लिए बादशाह की तारीफ करके कहा,—"ईश्वर आप को अमर करे! आप ने जो कहा वह बिलकुल ठीक है। अगर यह बालक उन बदज़ातों की सङ्गति में कुछ दिन रहता तो यह भी उन्हीं लोग की तरह बदमाश और बदचलन हो जाता। पर आप के इस ताबेदार को आशा है, कि अगर यह अच्छे आदमियों की सङ्गति में रक्खा जायगा और इसे अच्छी शिक्षा दी जायगी, तो इस के ख्यालात और सिद्धान्त ऊँचे दर्जे के हो जायँगे; क्योंकि यह अभी बच्चा है। इस लिए इस का उन बदमाशों की तरह नीतिविरुद्ध और द्वेषपूर्ण बदमिज़ाज होना नामुमकिन है। हदीस में कहा गया है, कि,— जन्म लेने के समय सब का मिज़ाज इस्लाम धर्म से परिपूर्ण रहता है; केवल माता-पिता के भेद के कारण कोई यहूदी, कोई ईसाई और कोई मजूसी हो जाता है। हज़रत नूहके लड़के ने दुष्टों की सङ्गति की; इसलिए उनके घराने से पैग़म्बरी जाती रही। कहफ़ के साथियों के कुत्ते ने भले आदमियों की सुहबत की, इससे वह आदमी बन गया।" वज़ीर ने जब यह बात कही, तब और भी कई एक दरबारी बादशाह से अर्ज़ करने में उस के साथ हो गये। निदान बादशाह ने उस बालक का जान

बख़्श दी और कहा,—"यद्यपि मुझे तुम्हारी अर्ज़ पसन्द नहीं है, तो भी मैं उसे मञ्ज़ूर करता हूँ। तुम लोग नहीं जानते कि ज़ाल ने रुस्तम से क्या कहा था?—अपने वैरी को कमज़ोर और तुच्छ कभी मत समझो। हमने अक्सर देखा है, कि सोते से पानी बिल्कुल थोड़ा-थोड़ा निकलता है लेकिन वही पीछे इतना बढ़ जाता है कि उस में साल से लदे हुए बड़े बड़े ऊँट बहने लगते हैं।" अलक़िस्सा, वज़ीर ने उस लड़के को अपने घर ले जाकर बड़े नाज़ और नेमत से पाला और उस को शिक्षा दी। उस की तालीम के लिए एक अच्छा उस्ताद मुक़र्रर किया। जब वह अच्छी तरह सवाल-जवाब करना और दरबार का ज़रूरी काम-काज सीख गया और लोगों की नज़र में भला जँचने लगा; तब एक दिन वज़ीर ने उस के आचार, व्यवहार और मिज़ाज के बारे में बादशाह से कहा, कि उस लड़के पर अच्छी शिक्षा का ख़ूब असर हुआ है। आगे की मूर्खता अब उस के दिल से एकदम दूर हो गई है। बादशाह ने इस बात पर हँस कर कहा,—"भेड़िए का बच्चा यदि आदमियों के बीच में पाला जाय, तो भी वह भेड़िया ही रहेगा।" इस घटना के दो बरस बाद, उस लड़के ने बस्ती के कुछ नीच और लुच्चों के साथ मिल कर, दाँव पाने पर, वज़ीर और उस के दोनों लड़कों को जान से मार डाला एवं बहुत सा माल असबाब लूट ले गया और अपने बाप की जगह खुद सरदार

बनकर डाकेज़नी करने लगा। बादशाह यह ख़बर पाकर बड़े दुखी हुए और बोले,—"निकम्मे लोहे से कोई अच्छी तलवार कैसे बना सकता है ? अक़्लमन्दो, सुनो ! किसी बदज़ात नालायक़ को नेक बनाना नामुमकिन है। मेह ऐसा पक्षपात-हीन है कि क्या बाग़ीचा और क्या ऊसर ज़मीन हर जगह एक सा पानी बरसाता है, पर बाग़ीचों में लाला फूलते हैं और ऊसर में घास उपजती है। ऊसर ज़मीन में कभी सम्बुल नहीं उपजता; इस लिए उस में बीज बोकर बरबाद न करो। बदमाशों पर दया करना, भले आदमियों को नुक़सान पहुँचाना है।"

शिक्षा—इस कहानी से हमें ये नसीहतें मिलती हैं:—
(१) शत्रु को दुर्बल देख कर लापरवाही न दिखानी चाहिए; ज़ोर पकड़ लेने पर दुश्मन को परास्त करना बहुत मुश्किल हो जाता है; अतः शत्रु को भूल कर भी बलवान् न होने देना चाहिए (२) जो अयोग्य है, जो नालायक़ है, जिस की असलियत ख़राब है, उसे कैसी ही अच्छी शिक्षा दी जाय, कैसी ही भली सुहबत में रक्खा जाय, वह हरगिज़ अच्छा न होगा अर्थात् जैसे का तैसा ही रहेगा। शिक्षा निस्सन्देह उत्तम चीज़ है, परन्तु दुर्जनों को वह भी सज्जन नहीं बना सकती। (३) दुष्टों पर दया न करनी चाहिए; क्योंकि इस क़िस्से के वज़ीर ने दुष्ट पर दया कर के अपनी और अपने बेटों की जान गँवाई।

पाँचवीं कहानी।

बालाये सरश ज़े होशमन्दी।
मीताफ़्त सितारये बुलन्दी ॥ १ ॥

मैंने अग़्लमश की ड्योढ़ी पर एक प्यादे का लड़का देखा। वह लड़का इतना बुद्धिमान् और समझदार था कि बयान नहीं किया जा सकता। उस में उच्च श्रेणी की योग्यता के चिह्न बचपन से ही नज़र आने लगे थे। बुद्धिमानी के मारे उस के सौभाग्य का सितारा उस के ललाट पर चमकता था। बहुत लिखने से क्या, थोड़े समय में ही वह अपनी सुन्दरता और तीव्र बुद्धि के कारण बादशाह का कृपापात्र बन गया। "धन से बड़प्पन नहीं मिलता, किन्तु योग्यता से मिलता है। मनुष्य अक्ल से बड़ा समझा जाता है न कि बड़ी अवस्था से।" उस के सङ्गी-साथी उस से जलने लगे। उन्होंने, उस पर बेईमानी का झूठा इलज़ाम लगा कर, उस की जान लेने की कोशिश की; पर वे सफलमनोरथ न हुए। जिस का सच्चा मित्र मिहरबान हो, उस का शत्रु क्या कर सकता है? बादशाह ने उस लड़के से पूछा:—"ये लोग तुझ से क्यों शत्रुता रखते हैं?" लड़के ने जवाब दिया:—"जगत्रक्षक! आप की छाया तले

होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

आकर मैंने जलनेवालों के सिवा सब को राज़ी किया है। जब तक मेरी भाग्य-लक्ष्मी मुझ से न रूठेगी, ये लोग कभी राज़ी न होंगे। आप की दौलत और अक़बाल सदा ऐसे ही बने रहें। मैं किसी को नाराज़ करना नहीं चाहता; किन्तु उन जलनेवालों का क्या उपाय करूँ, जिन के दिल में बुराई ही बुराई भरी रहती है।

ए अभागे जलनेवाले! मर जा, क्योंकि तेरी बीमारी का इलाज सिवा तेरी मौत के और नहीं है। द्रोही मनुष्य यही चाहता है कि भाग्यवानों पर आफ़त आवे। अगर दिन में चमगीदड़ को न सूझे तो इस में सूरज का क्या दोष है? सच बात तो यह है, कि ऐसी हज़ार आँखों का अन्धा होना अच्छा, किन्तु सूर्य्य की रोशनी का मारा जाना अच्छा नहीं।

शिक्षा—इस कहानी में यह दिखाया गया है:—(१) मनुष्य का मान योग्यता और बुद्धिमानी से होता है, धन और बड़ी उम्र से किसी का मान नहीं होता। (२) पराई उन्नति देखकर जलनेवाले पुरुष वृथा जल कर अपनी काया को ख़ाक करते हैं। जब तक मालिक मिहरवान है और सौभाग्य-सूर्य्य के अस्त होने का समय नहीं आया है, तब तक वे उस के नाश करने की हज़ारों कोशिशें करके भी सफल-मनोरथ नहीं हो सकते। परन्तु जिन के स्वभाव में यह रोग लग गया है, वह उन की जान के साथ ही जाता है। किसी की उन्नति देख कर न जलना ही बुद्धिमानी है।

छठी कहानी।

वा रअय्यत सुलह कुन व ज़े जंगे ख़स्म एमन नशीं।
ज़ाँ कि शाहन्शाहे आदिल रा रअय्यत लश्कर (अ) स्त ॥१॥

कहते हैं कि ईरान के बादशाहों में एक ऐसा बादशाह हुआ था, जो अपनी प्रजा के धन-माल को ज़बरदस्ती छीन लिया करता और उस पर ज़ोर-ज़ुल्म किया करता था। इस के बारम्बार अन्याय करने से लाचार होकर लोग उस के राज्य को छोड़ कर अन्य राज्यों में जा बसे। जब प्रजा राज्य छोड़ कर चली गई, तब राज्य की आमदनी घट गई, ख़ज़ाना ख़ाली हो गया और ज़ोरावर दुश्मनों ने बादशाह को चारों ओर से घेर दबाया। जिसे अपने बुरे दिनों में सहायता लेनी हो, उसे अपने अच्छे दिनों में सज्जनता से चलना चाहिए। अगर तुम अपने नौकर के साथ मिहरबानी का बर्ताव न करोगे तो वह चल देगा। मिहरबानी इस ढँग से करो, कि अनजान मनुष्य भी तुम्हारा आज्ञापालक सेवक बन जावे।

एक दिन लोग उस के सामने शाहनामे से ज़हाक और

(अ) प्रजा के साथ मेल करके शत्रु से लड़ना चाहिए। प्रजा-पालक राजा की प्रजा सेना के बराबर ही है।

फ़रीदूँ के राज्य के पतन का विषय पढ़ रहे थे। वज़ीर ने बादशाह से पूछा:—"फरीदूँ के पास न धन था, न देश था, और न सेना ही थी, फिर उसे राज्य किस तरह मिला?" बादशाह ने उत्तर दिया,—"जिस तरह तुम ने सुना है, कि लोग उस से मिल गये और उनके बल से उस ने राज्य पाया।"

वज़ीर ने फिर कहा,—"जब आप यह जानते हैं, कि लोगों के जमा करने से ही राज्य बनता है, तब राज्य करने की इच्छा रख कर भी उन्हें क्यों भगाते हैं? अपनी जान को जोखिम में फँसा कर भी सेना को राज़ी रखना उचित है; क्योंकि सेना ही राजा का बल है।" बादशाह ने पूछा,—"सेना और प्रजा को इकट्ठा करने के लिए क्या तदबीर करनी चाहिए?" वज़ीर ने जवाब दिया:—"बादशाह का इन्साफी होना ज़रूरी है, जिस से लोग उस के पास आवें और साथ ही दयालु होना भी उचित है कि जिस से लोग उस की शरण में आकर सुख-शान्ति भोगें। लेकिन आप में इन में से एक भी गुण नहीं है। जिस तरह भेड़िया चरवाहे का काम नहीं कर सकता, उसी तरह ज़ालिम मनुष्य बादशाहत नहीं कर सकता। ज़ालिम बादशाह अपनी बादशाहत की नींव को खोद-खोद कर पोली करता है।" बादशाह वज़ीर की नसीहत से चिढ़ गया। उस ने वज़ीर के हाथ-पाँव बँधवाकर उसे जेल में भेज दिया। इस घटना के कुछ ही दिन पीछे, बादशाह के चचेरे भाइयों ने बग़ावत की और सेना तैयार कर

के अपने बाप की बादशाहत का दावा करने लगे। वे लोग जो उस के जुल्म से तङ्ग आ गये थे, शत्रुओं से मिल गये और उन्होंने उन्हें सहायता दी। नतीजा यह निकला, कि उस बादशाह के क़ब्ज़े से राज्य निकल गया और उन के हाथ आ गया

जो बादशाह ग़रीबों पर ज़ुल्म करता है, उस के दोस्त भी मुसीबत के दिन उस के ज़बरदस्त दुश्मन हो जाते हैं। अपनी रअय्यत के साथ अच्छा सलूक करो और अपने दुश्मन के हमले से बेखटके होकर बैठे रहो ; क्योंकि इन्साफ़ी बादशाह की रअय्यत ही उस की फौज़ है।

शिक्षा—इस कहानी का खुलासा यह है कि, जो राजा प्रजावत्सल और न्यायप्रिय होते हैं, अपनी प्रजा के दुःख को अपना दुःख और उस के सुख को अपना सुख समझते हैं, रात-दिन प्रजा की भलाई की चिन्ता में ही लगे रहते हैं, उन का राज्य अटल रहता है। हज़ार-हज़ार बलशाली शत्रु भी उन की ओर आँख उठा कर नहीं देख सकते; किन्तु जो राजा प्रजा को दुःख देते हैं, उस पर अत्याचार करते हैं, उस का धन-माल और जायदाद ज़बरदस्ती छीन लेते हैं, उन राजाओं से प्रजा अप्रसन्न हो जाती है। प्रजा के अप्रसन्न रहने से राज्य की नींव ढीली हो जाती है। क्योंकि प्रजा से ही राजा का राज्य है, यदि प्रजा न हो तो राज्य कैसा ? प्रजा को नाराज़ करके ज़ोर से राज्य करने वाले का राज्य बादल की छाया या बालू की भीत के समान है।

सातवीं कहानी ।

ऐ सेर तुरा नाने जवीं खुश न नुमायद ।
माशूक़ मनस्त आँकि ब नज़दीक तो ज़िश्तस्त ॥

एक बादशाह एक ईरानी ग़ुलाम के साथ जहाज़ में बैठा हुआ था। उस ग़ुलाम ने न तो पहिले कभी समन्दर ही देखा था न जल-यात्रा का कष्ट ही अनुभव किया था। वह रोने-चिल्लाने लगा और उस का सारा शरीर काँपने लगा। लोगों के बहुत कुछ दम-दिलासा देने पर भी उस को तसल्ली न हुई। बादशाह के आराम में खलल पड़ा। उस के शान्त करने का कोई उपाय न निकला। एक तत्त्वज्ञानी मनुष्य भी उसी जहाज़ में बैठा हुआ था। उस ने कहा,—"यदि आज्ञा हो, तो मैं इसे चुप कर दूँ।" बादशाह ने कहा,—"बड़ी मिहरबानी होगी।" उस बुद्धिमान् ने जहाज़वालों को हुक्म दिया कि इसे समन्दर में डाल दो। जब उस ने कई ग़ोते खा लिये, तब लोगों ने उस के सिर के बाल पकड़ कर उसे जहाज़ की तरफ़ खींच लिया और दोनों हाथों के बल पतवार से लटका दिया।

आवश्यकता के समय ही हर चीज की क़दर होती है। भूख में गूलड़ भी पकवान होते हैं। इसी लिए मेरा माशूक़ तुझे अच्छा नहीं लगता तो कोई आश्चर्य नहीं।

जब वह पानी से बाहर आया, तब चुप-चाप जहाज़ के एक कोने में बैठ गया। बादशाह ने प्रसन्न होकर पूछा कि यह किस तरह चुप हुआ। बुद्धिमान् ने उत्तर दिया,—"पहले न तो यह डूबने के दुःख को ही समझता था और न जहाज़ में बैठने के सुख को ही जानता था। इसी भाँति जिसने दुःख भोगा है वही सुख की क़दर जानता है। जिस का पेट भरा हुआ है उस को जौ की रोटी अच्छी नहीं मालूम होती। जो दूसरे को कुरूपा मालूम होती है, वही मुझे मनोहर सुन्दरी मालूम होती है। स्वर्ग की अप्सराओं के लिए पाप-शोधक स्थान नरक है और नरकवालों के लिए पाप-शोधक स्थान स्वर्ग है। जिस की प्रेमिका बग़ल में है और जो अपनी प्रेमिका की इन्तज़ारी में दरवाज़े पर आँखें लगाये हुए है उन दोनों में अन्तर है।

शिक्षा—दुःख भोगने से ही सुख की क़दर मालूम होती है।
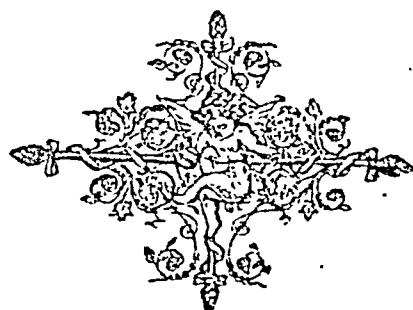
आठवीं कहानी।

अज़ाँ कज़ तो तरसद बतर्स ऐ हकीम।
व गर बा चुनो सद बराई बजंग॥ १॥

लोगोंने हुरमुज़ बादशाह से पूछा,—"आप ने अपने बापके वज़ीरों में क्या दोष देखा जो उन को क़ैद करने का हुक्म दिया?"

उसने उत्तर दिया,—"मैंने उनमें कोई दोष नहीं देखा, किन्तु यह देखकर कि वे मुझ से बहुत ही डरते हैं और मेरे वचन पर पूरा भरोसा नहीं करते, मुझे भय हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि वे लोग अपने बचाव के लिए मुझे ही मार डालने की चेष्टा करें—इसलिए मैंने महात्माओं की शिक्षा के अनुसार काम किया है।" महापुरुष कहते हैं,—"जो तुम से डरते हैं तुम उनसे डरो; चाहो वैसे सौ को तुम युद्ध में परास्त कर सको। क्या तू नहीं जानता कि बिल्ली जब निराश हो जाती है तब अपने पञ्जों से चीते की आँखें निकाल लेती है। साँप अपना सिर पत्थर से कुचले जाने के भय से चरवाहे को काटता है।

शिक्षा—जो तुम पर विश्वास न रखते हों, तुम्हारी बातों को सन्देह की दृष्टि से देखते हों, तुम से भयभीत रहते हों उन लोगोंका विश्वास मत करो।

जो तुझ से डरता है उससे तू भी डर—यह दूसरी बात है कि वैसे सौ आदमियों को तू लड़ाई में हरा सकता हो॥ १॥

नवीं कहानी।

रोज़गारम बशुद ब नादानी।
मन न करदम शुमा हज़र ब कुनेद॥ १॥

ईरान का एक बादशाह बुढ़ापे में बीमार हो गया। उसके बचने की कोई आशा न रही। इसी समय एक सवार दरवाज़े पर आया और यह ख़ुशख़बरी लाया,—"मैंने हुज़ूर के इक़बाल से फलाँ क़िला अपने क़ब्ज़े में कर लिया है और शत्रु भी क़ैद कर लिये गये हैं। उस अञ्चल की सेना और प्रजा ने आपकी आधीनता स्वीकार कर ली है।"

बादशाह ने यह ख़बर सुनकर ठण्डी साँस भरी और कहा,—"यह ख़बर मेरे लिए नहीं है, बल्कि मेरे शत्रुओं के लिए है जो मेरे पीछे मेरे राज्य के मालिक होंगे। मैंने अपना बहुमूल्य जीवन अपनी इच्छाओं को पूरी करने की आशा में व्यर्थ गँवाया। किन्तु अब क्या होता है; क्योंकि अब बीती हुई ज़िन्दगी के फिर लौटने की आशा नहीं है। इस समय मौत कूच का नक्कारा बजा रही है। ऐ आँखों! तुम मेरे सिर से जुदा हो जाओ। हाथ, भुजा और हथेलियों! तुम सब परस्पर

"मैंने अपना जीवन मूर्खता में काटा, मैं कर्त्तव्य-पालन न कर सका—भाइयो, तुम मेरे जीवन से शिक्षा लाभ करो, उसका अनुकरण मत करो।"

विदाई लो। मेरे मनोरथों के शत्रु काल ने मुझे धर दबाया है। हे मित्रो! मेरा जीवन मूर्खता में बीता। मैंने अपना कर्त्तव्य पालन नहीं किया। मेरा अनुकरण कोई न करना।"

शिक्षा—संसार में जिसे देखो वही किसी न किसी प्रकार की आशा और तृष्णा में गिरफ़्तार है। कोई अपना राज्य बढ़ाना चाहता है, कोई अपना धन बढ़ाना चाहता है, कोई हाथी घोड़े वा बग्घी की सवारी चाहता है, कोई राज-दरबार में मान पाने की इच्छा रखता है। एक इच्छा पूरी होते न होते, दूसरी पैदा हो जाती है। इसी तरह आशा और तृष्णा के फन्दे में फँसकर मनुष्य अपने अमूल्य और दुष्प्राप्य जीवन को बरबाद करता है। मनुष्य की इच्छाओं का अन्त नहीं होता, किन्तु उसके शरीर के अन्त होने का समय आ जाता है। अन्तिम समय में धन, राज्य, पदवी वग़ैरः कोई मनुष्य के साथ नहीं जाता ; साथ जाता है केवल धर्म्म ; अतः बुद्धिमान् को व्यर्थ की इच्छाओं के फेर में पड़कर अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ न गँवाना चाहिए ; किन्तु उसे सदा अपने कर्त्तव्य-धर्म्म के पालन करने में लगाना चाहिए।

दसवीं कहानी।

दरवेशो ग़नी बन्दये ईं ख़ाके दरन्द।
आनाँ कि ग़नी तरन्द मुहताज तरन्द ॥ १ ॥

एक समय, मैं दमश्क़ की बड़ी मसजिद में पैग़म्बर औलिया यहिया की क़ब्र के सिरहाने बैठा था। अरब का एक बादशाह, जो अन्याय के लिए प्रसिद्ध था, वहाँ तीर्थ करने आया। उसने औलिया की पूजा और उसका ध्यान करके निम्नलिखित बातें कहीं,—"ग़रीब और अमीर सब इस देहली के दास हैं और जो बहुत ही धन-वान् हैं उनकी तृष्णा सब से अधिक है।"

पीछे, उसने मेरी ओर देखा और कहा,—"फ़क़ीर लोग ईश्वर के सच्चे और पक्के प्रेमी होते हैं। आप मेरे साथ ईश्वर से प्रार्थना कीजिए; क्योंकि मुझे एक बलवान् शत्रु का भय है।" मैंने जवाब दिया,—"निर्बलों पर दया करो तो बलवान् शत्रु तुम्हें कष्ट न दे सकेंगे। निर्बल और निस्सहाय प्रजा को बाहु-बल से दबाना अपराध है। जो ग़रीबों से मेलजोल नहीं रखता, उसे सदा भय रहता है; क्योंकि अगर किसी समय

अमीर ग़रीब सभी ज़रूरतें रखते हैं—इसलिए दीन हैं—अमीरों की ज़रूरतें भी ज्यादा हैं—इसलिए औरों की अपेक्षा वे दीन भी ज्यादा हैं ॥१॥

उसका पैर फिसल जावे तो उसे कोई हाथ का सहारा न देगा। जो बदी का बीज बोता और नेकी के फल की आशा करता है, वह वृथा अपने दिमाग़ को तकलीफ़ देता है और झूठे विचार बाँधता है। कान से रुई निकाल ले और मानव मात्र के प्रति न्याय कर। अगर तू न्याय न करेगा, तो किसी न किसी दिन तुझे उसका दण्ड भोगना पड़ेगा।

आदम के बच्चे एक दूसरे के अङ्ग हैं और एक ही तत्त्व से बने हैं। जबकि एक अङ्ग को तकलीफ़ होती है, तब दूसरे को भी होती है। जो दूसरों की तकलीफ़ों को लापरवाही की नज़र से देखता है यानी दूसरों की तकलीफ़ों से बेफ़िक्र रहता है, वह "आदमी" कहलाने योग्य नहीं है।"

शिक्षा—मनुष्य को मनुष्य मात्र पर दया रखनी चाहिए। निर्बल, निस्सहाय और निर्धनों पर भूल कर भी अत्याचार न करना चाहिए; किन्तु दुखियों के दुःख को अपने समान समझ-कर, उनके दुःख दूर करने का उपाय करना चाहिए। जो ग़रीबों पर ज़ुल्म करता है, उसे मुसीबत के दिन कोई सहायक नहीं मिलता। निश्चय है, कि बुराई करने से भला फल नहीं मिलता। बदी करने से किसी को अच्छा फल न तो मिला और न मिलेगा ही। अतः मनुष्य मात्र के प्रति दया और सहानुभूति दिखाना ही मनुष्य मात्र का कर्त्तव्य है।

ग्यारहवीं कहानी

ऐ ज़बर्दस्त ज़ेरदस्तआज़ार।
गर्म ताके बमानद बाज़ार॥ १॥
बचे कार आयदत जहाँदारी।
मुरदनत बेह कि मर्दुमआज़ारी॥ २॥

एक दफ़ा बग़दाद में एक ऐसा फ़क़ीर आया, जिसने कभी निष्फल प्रार्थना न की थी अर्थात् वह जो प्रार्थना करता था, उसे ईश्वर मञ्जूर कर लेता था। ज्योंही हज्जाज यूसुफ़ को उसके आने की ख़बर लगी, उसने उस फ़क़ीर को बुलाया और कहा,—"मेरे लिए ईश्वर से दोआ माँगो।" उसने कहा,—"हे ईश्वर! इसे मार डाल।" हज्जाज ने पूछा,—"ईश्वर के लिए, यह किस प्रकार की प्रार्थना है?" उसने उत्तर दिया:—"यह तेरे और सब मुसल्मानों के लिए शुभकामना है। तू बलवान् होकर निर्बलों को सताता है। तेरा यह ज़ुल्म कबतक क़ायम रहेगा? बहुत ही अच्छा हो, अगर तू मर जावे; क्योंकि तू मनुष्यों पर अत्याचार करने वाला है।

ऐ जबरदस्त, ऐ परपीड़क! तू कब तक दूसरों को तकलीफ देगा। तेरा धन-सम्पद् किस काम आयेगा। तू मनुष्य-पीड़क है अतएव तू जितनी जल्द मर जाय, अच्छा है।

शिक्षा—साधुओं को स्पष्टवादी होना चाहिए। उन्हें चाटुकारिता से दूर रहना चाहिए।

बारहवीं कहानी।

वाँ कि ख़्वाबश बेहतर अज़ बेदारियस्त।
आँ चुनाँ बद ज़िन्दगानी मुर्दा बेह॥ १॥

किसी ज़ालिम बादशाह ने किसी धर्मपरायण मनुष्य से पूछा,—"मैं किस प्रकार की उपासना करूँ, जिससे मुझे बहुत सा पुण्य हो। उसने जवाब दिया,—"तुम दोपहर के समय सोया करो; क्योंकि जितनी देर तुम सोते रहोगे उतनी देर लोग तुम्हारे ज़ुल्म से बचे रहेंगे।"

जब मैंने एक ज़ालिम—अत्याचारी—को मध्यान्हकाल में सोते हुए देखा तो मैंने कहा,—"वह अत्याचारी है इससे उसका नींद के वश में रहना अच्छा है। जिसके जागने से सोना अच्छा है, उसकी बुरी ज़िन्दगी से उसका मरना भला है।"

जो अत्याचारी है उसका सोना जागने से अच्छा है, सच तो यह है कि उसके जीवन से उसका मरण ही अच्छा है॥ १॥

शिक्षा—अत्याचार—ज़ुल्म—करना अच्छा नहीं है। अत्याचारी का अत्याचार सदा स्थिर नहीं रहता। एक न एक दिन अत्याचारी को मौत अपने चुङ्गल में फँसा ही लेती है। अन्तमें, अत्याचरी के अत्याचार की कहानी अथवा बदनामी रह जाती है। अत्याचार ईश्वर और मनुष्य सब के लिए अप्रिय है। इसीलिए अत्याचारी का परिणाम बुरा ही होता है।

तेरहवीं कहानी।

अबलहे को रोज़े रौशन शमा काफ़ूरी निहद।
ज़ूदबीनी कश व शब रोग़न नमानद दर चिराग़ ॥ १ ॥

मैं ने एक बादशाह के विषय में सुना, जिसने तमाम रात ऐश व आराम में बिताई और जब उसे खूब नशा चढ़ा तब कहने लगा,—"मैंने, अपने जीवन में, आज की भाँति सुख कभी नहीं पाया; क्योंकि इस समय मुझे

जो मूर्ख दिन-दहाड़े काफूर की बत्ती जलाता है, उसको एक दिन ऐसा आयेगा जो रातको जलाने के लिए तैल भी न मिलेगा। उसकी फिजूलख़र्ची एक दिन विषमय फल लायेगी ही ॥ १ ॥

बुराई भलाई का कुछ ध्यान नहीं है और न मुझे किसी से दुःख है।" एक नङ्गे फ़क़ीर ने, जो बाहर सर्दी में सो रहा था, बादशाह की यह बात सुनी और कहा,—"ऐ बादशाह! तेरे समान बलवान कोई नहीं है और तुझे किसी प्रकार का कष्ट भी नहीं है; परन्तु क्या तेरा हम लोगों से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है?" बादशाह इस बात से बहुत ही प्रसन्न हुआ और एक हज़ार दीनारों का तोड़ा निकाल कर उससे कहा,—"ऐ फ़क़ीर! पल्ला फैला।" उसने उत्तर दिया:—"जब मेरे पास कपड़ा ही नहीं है, तब पल्ला कहाँ से लाऊँ?"

बादशाह को फ़क़ीर की दीन दशा पर बहुत ही दया आई और उसने रुपयों के साथ एक कपड़ा भी उसके पास भिजवा दिया। फ़क़ीर उस धन को थोड़े ही दिनों में उड़ा कर फिर आगया। धर्मात्माओं के हाथ में धन नहीं टिकता, प्रेमी के दिल में सब्र नहीं रहता और चलनी में पानी नहीं ठहरता।

एक समय, जब बादशाह को उस फ़क़ीर का ध्यान भी न था किसी ने उसका ज़िक्र छेड़ा। बादशाह नाराज़ हुआ और उसकी तरफ़ से उसने अपना मुँह फेर लिया। ऐसे ही मौक़े के लिए अक़्लमन्दों ने कहा है,—"बादशाहों के कोप से बचना चाहिए; क्योंकि अक्सर बादशाहों का ध्यान राज्य के ज़रूरी-ज़रूरी मामलों में उलझा रहता है। उस समय जो लोग उनके ध्यान में विघ्न-बाधा डालते हैं, उनसे बादशाह नाराज़ हो जाते

हैं। जो शख्स अच्छा मौका नहीं देखता, उसे बादशाह से कुछ नहीं मिलता। जब मौका हाथ न आवे, तब बेहूदा बातें करके अपना काम न बिगाड़ना चाहिए। बादशाह ने कहा,—"इस गुस्ताख और फ़िज़ूलखर्च को निकाल दो। इसने इतना धन बात की बात में फूँक दिया। बैतुलमालका खज़ाना ग़रीबों को टुकड़े देने के लिए है, न कि शैतान के भाइयों की दावत के लिए। जो मूर्ख दिन में कपूर की बत्ती जलाता है उसको चिराग में जलाने के लिए रात के समय तेल नहीं मिलता।" एक बुद्धिमान् मन्त्री ने कहा,—"बादशाह! इस श्रेणी के लोगों की परवरिश के लिए कुछ रकम अलग मुकर्रर कर दीजिए, जिससे ये लोग फ़िज़ूलखर्ची न कर सकें। परन्तु आपने नाराज़ होकर, इन लोगों से बिल्कुल ही सम्बन्ध न रखने की जो आज्ञा दी है वह सच्ची उदारता के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। किसी पर दयालु होकर, उसको आशा दिलाना और फिर एकदम निराश करके मार डालना अच्छा नहीं है। बादशाह लोगों को अपने पास नहीं आने देता; किन्तु जबकि सखावत का दरवाज़ा खुल जाता है, तब वह उसे ज़ोर से बन्द भी नहीं कर सकता। समन्दर के किनारे कोई प्यासा मुसाफिर नज़र नहीं आता। जहाँ मीठे पानी का चश्मा होता है, वहीं मनुष्य, पशु, पक्षी और कीट पतङ्ग जमा होते हैं।

शिक्षा—इस कहानी से हमें कई शिक्षाएँ मिलती हैं:—

(१) मनुष्य को अपने ही सुख में न भूले रहना चाहिए। दीन-दुखियों के दुःख की भी ख़बर रखनी चाहिए तथा उनका कष्ट निवारण करना चाहिए। (२) बादशाह या अमीरों से मौक़ा देखकर बात करनी चाहिए। जो बिना मौक़ा देखे मुँह से बात निकाल बैठते हैं, वे अपनी बात खोते और कुछ लाभ नहीं उठाते। (३) मनुष्य को समझ-बूझ कर ख़र्च करना चाहिए; जो फ़िज़ूल-ख़र्ची करते हैं वे दुःख पाते हैं। (४) दानका सिलसिला सदा जारी रखना चाहिए और उसका ऐसा प्रबन्ध रखना चाहिए कि वह वास्तविक दीन-दुखियों के काम आवे।

चौदहवीं कहानी।

चो दारन्द गञ्ज अज़ सिपाही दरेग़।
दरेग़ आयदश दस्त बुर्दन ब तेग़॥ १॥

एक बादशाह अपने राज्य की रक्षा की ओर बिलकुल ध्यान न देता था। यहाँ तक कि सेना सामन्त को वेतन आदि भी न देता था। सेना के सिपाहियों को इस प्रकार के व्यवहार से इतना कष्ट हुआ कि जब एक

जो लोग सिपाहियों की धन द्वारा रक्षा नहीं करते सिपाही भी तलवार द्वारा उनकी रक्षा नहीं करते॥ १॥

शक्तिशाली शत्रु ने बादशाह पर आक्रमण किया, तो सिपाहियोंने उसका सामना करने से इन्कार कर दिया। सैनिकों की तनख़्वाह रोक रखने से, वे लोग तलवार को हाथ लगाना नहीं चाहते। नौकरी छोड़कर बैठ जाने वाले सिपाहियों में से एक मेरा बड़ा मित्र था। मैंने उसे धिक्कार कर कहा—"एक सामान्य बात के कारण, अपने पुराने मालिक के अनेक वर्षों के अनुग्रह को बिलकुल भूल कर, विपद के समय, उसका साथ छोड़ देना, बहुत ही नीचता, बदनामी और कृतघ्नता का काम है।" उसने उत्तर दिया,—"यदि आप इस बात का पूरा-पूरा हाल सुनेंगे तो मुझे दोषी न कहेंगे। मेरा घोड़ा दाने बिना मरने पर आगया था। उसके चारजामे का कपड़ा फटकर चिथड़ा हो गया था। इस हालत में भी, शाहज़ादे ने लोभ के मारे सिपाहियों का वेतन रोक रक्खा था। फिर भला, वे लोग उसके लिए अपनी जान देने को किस तरह तैयार हो सकते थे? वीर योद्धाओं को धन देकर सन्तुष्ट रखना चाहिए कि जिससे काम पड़ने पर वे लोग अपना सिर दे सकें; क्योंकि यदि वे आपके पास से वेतन न पावेंगे तो धन पाने की आशासे किसी दूसरे के पास जा रहेंगे। योद्धाओं का पेट भरा रहने से वे बड़ी वीरता के साथ युद्ध करते हैं; परन्तु यदि भूखे रहते हैं तो उन्हें मजबूरन रण से पीठ दिखा कर भागना पड़ता है।"

शिक्षा—राजा बादशाहों को अपने सैनिकों तथा नौकरों

का वेतन बिना हीला-हुज्जत के समय पर दे देना चाहिए। सभी बड़े आदमियों को, जिनके यहाँ नौकर रहते हों, फ़ौरन् उनकी तनख़्वाह दे देनी चाहिए। नौकर लोग जिस से वक़्त पर तनख़्वाह पाते हैं, उसके काम में कोताही नहीं करते और समय पर अपने स्वामी के लिए अपना सिर दे देने में भी आनाकानी नहीं करते।

पन्द्रहवीं कहानी।
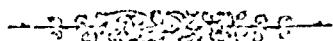
आनाँ कि बकुञ्जे आफ़ियत बनशिस्तन्द।
दन्दाने सगो दहाने मर्दुम बस्तन्द॥ १॥

किसी वज़ीर की नौकरी छुट जाने पर, वह साधुओं के एक समाज में जा मिला। महात्माओं की सङ्गति से उसके हृदय में बड़ी शान्ति उत्पन्न हुई। कुछ दिन बाद, बादशाह की कृपा-दृष्टि फिरी और उसने उसे फिर काम करने की आज्ञा दी। परन्तु वज़ीर ने यह आज्ञा स्वीकार न की और कहा,—"काममें लगे रहने की अवस्था से

जो लोग एकान्त-वास करते हैं, उनको कोई हानि नहीं पहुँचाता। कुत्तों के दाँत और आदमियों का मुँह उनके लिए बेकार हो जाता है॥ १॥

पदच्युति की अवस्था अधिक सुखद है । जो लोग संसार की माया-ममता छोड़ कर, एकान्त में जाकर वास करते हैं, वे सब प्रकार की चिन्ताओं और भय से मुक्त रहते हैं एवं स्वतन्त्रता-पूर्व्वक सुख भोगते हैं ।" बादशाह ने कहा,—"मुझे अपने राज्यशासन के लिए तुम जैसे योग्य मनुष्य की बहुत ही आवश्यकता है ।" वज़ीर ने अपने मन में कहा, कि मैं नौकरी करना स्वीकार नहीं करता, इसी से मैं योग्य व्यक्ति समझा जाता हूँ । हुमाँ हड्डी खाकर अपना निर्व्वाह करता और किसी को हानि नहीं पहुँचाता, इसी से लोग उसका सब पक्षियों से अधिक आदर करते हैं ।

दृष्टान्त—लोगों ने सियाह गोश से पूछा,—"तुम दास की तरह सिंह के साथ रहना क्यों पसन्द करते हो ?" उसने उत्तर दिया,—"इसका कारण यह है कि मुझे उसके शिकार का बचा-खुचा माल खाने को मिलता है । उसकी शरण में रहने से, उसके पराक्रम के प्रभाव से, शत्रु लोग मेरा कुछ अनिष्ट नहीं कर सकते ।" लोगों ने पूछा,—"जब तुम उसकी शरण में रहते हो और कृतज्ञतापूर्व्वक उसके उपकार को स्वीकार करते हो, तो फिर उसके बिल्कुल नज़दीक क्यों नहीं चले जाते कि जिस से वह तुम्हें अपने और प्रधान नौकरों के साथ मिलाकर अपना प्रिय मन्त्री बना ले ?" उसने उत्तर दिया,—"उसका मिज़ाज ऐसा कड़ा है कि मैं उसके निकट जाने में अपना कल्याण नहीं समझता ।" यद्यपि अग्नि-पूजक

सौ वर्ष तक आग को जलाता रहे; तो भी अगर वह दम भर के लिए भी उसमें गिर पड़े तो भस्म हो जाय। ऐसा अकसर हुआ करता है, कि कभी तो मन्त्री राजा से धन-मान पाता है और कभी उसके हाथ अपना सिर गँवाता है। ऋषियों ने कहा है कि राजाओं के चञ्चल स्वभाव से सावधान रहो; क्योंकि वे लोग कभी तो प्रणाम करने से भी अप्रसन्न हो जाते हैं और कभी गालियाँ देने से भी सन्मान करते हैं। बुद्धिमान् लोग कह गये हैं, कि चालाकी दरबारियों के लिए गुण है और महात्माओं के लिए दोष। मनुष्य को चाहिए कि अपना चरित्र ठीक रक्खे और हँसी-दिल्लगी एवं खेल-तमाशा राज-कर्म्मचारियों के लिए छोड़ दे।

शिक्षा—राज-सेवा करना और नङ्गी तलवार की धार पर चलना एक ही बात है। राज-सेवा से मनुष्य बहुधा मालामाल हो जाता है सही; किन्तु उसके चित्त में शान्ति नहीं रहती और मौक़ा पड़ने पर उसे अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ता है। राज-सेवा की अपेक्षा एकान्त-वास अच्छा है। उसमें मनुष्य को सच्ची शान्ति मिलती है। मन में खटका नहीं रहता। चिन्ता-फ़िक्र और भय उससे हज़ारों कोस दूर भागते हैं। राज-सेवा से जो सुख मिलता है, वह ऊपरी सुख है और परिणाममें प्राणघातक है, किन्तु एकान्त-वास का सुख वास्तविक सुख है। वह इस लोक और परलोक दोनों में चिरस्थायी है।

सोलहवीं कहानी।

के आसानी गुज़ीनद् ख़ेश्तन रा।
ज़ानो फर्ज़न्द व गुज़ारद व सख़्ती॥ १॥

मेरे एक मित्रने, कुसमय की शिकायत करते हुए, मुझसे कहा, कि मेरा कुटुम्ब बहुत बड़ा है और मेरे पास इतना धन-धान्य नहीं है कि मैं उसका पालन कर सकूँ। मुझ से दरिद्रता का भार नहीं उठाया जाता। बहुधा, मेरे चित्त में ऐसा आता है कि मैं किसी दूसरे देश में जाकर 'देश चोरी और विदेश भिक्षा' के अनुसार किसी तरह अपना जीवन निर्वाह करूँ। बहुतेरे लोग उपवास करके सो रहते हैं और कोई जानता भी नहीं: बहुतेरे मर जाते हैं और कोई उनके लिए रोता तक नहीं। और फिर, मैं यह भी सोचता हूँ कि मेरे पीछे मेरा बुरा चेतनेवाले शत्रु मेरे चालचलन पर हँसेंगे और अपने कुटुम्ब का पालन-पोषण करने में असमर्थ होने के कारण मुझे नामर्द कहकर बदनाम करेंगे। और कहेंगे,—"देखो, निर्लज्ज अभागा अपने आराम के लिए अपने बाल-बच्चों को छोड़ कर भाग गया है। उसका

अपना पेट भरने वाला और अपने साथियों को दुःख में डालने वाला आदमी कभी सुखी नहीं हो सकता। धिक्कार है उनको जो अपना जीवन सुख में काटते हैं और अपने बच्चे और स्त्री का ध्यान तक नहीं करते॥ १॥

कभी भला न होगा ।" आप जानते हैं, कि मैं गणित-शास्त्र में थोड़ा बहुत दखल रखता हूँ। यदि आपकी कृपा और चेष्टा से मुझे कोई काम मिल जाय, तो मेरा चित्त शान्त हो जायगा और मैं जन्मभर आपका कृतज्ञ बना रहूँगा । मैंने कहा,—"मित्र-वर ! दुःखका विषय है, कि राजाओं की नौकरी में दो बातें रहती हैं:—एक ओर तो जीविका की आशा और दूसरी ओर जीवन गँवाने का भय । इसलिए जीविका की आशा से अपने जीवन को संकट में डालना बुद्धिमानों के मत के विरुद्ध है । दरिद्र के घर पर कोई कहने को नहीं आता कि ज़मीन या बाग़ीचे का महसूल दे या दुःख और सन्ताप सहन कर अथवा दुनिया भर की बलायें अपने सिर पर उठा ले ।" उसने उत्तर दिया,—"यह बात मेरी अवस्था के साथ बिलकुल मेल नहीं खाती । आप ने मेरे प्रश्न का ठीक उत्तर नहीं दिया । क्या आपने यह कहावत नहीं सुनी कि बेईमानों का हाथ हिसाब करते समय कांपने लगता है । सदाचार से ईश्वर प्रसन्न रहता है । मैंने सीधे रास्ते से चलनेवाले को कभी गुम होते नहीं देखा । महात्माओं ने कहा है कि चार प्रकार के मनुष्य दूसरे चार प्रकार के मनुष्यों से बहुत डरते हैं । अत्याचारी मनुष्य राजा से ; चोर पहरेदार से ; व्यभिचारी चुग़लख़ोर से और वेश्या दण्डनायक से । परन्तु जिस मनुष्यका हिसाब ठीक है, उसको हिसाब जांचनेवाले का क्या डर है ? जो पदच्युति की दशा में शत्रुओं की बुराई से बचना चाहो, तो पदाधिकार की

अवस्था में समझ-बूझ कर काम करो। भाइयो! जो अपना चालचलन ठीक रखोगे तो तुम्हें किसी का भी भय न रहेगा। देखो, धोबी के हाथ से पत्थर पर पछांटे जाने का भय मैले कपड़े को ही रहता है, साफ़ को नहीं। जो हर तरफ़ से साफ़ है उसे किसी का भय नहीं।" मैंने उत्तर दिया,—"तुम्हारी दशा के साथ उस लोमड़ी का क़िस्सा खूब ठीक मिलता है, जिसको किसी ने जी छोड़ कर भागी जाती देखकर पूछा, कि तुम्हारे ऊपर क्या आफ़त आई है जो तुम इतनी भयभीत हो रही हो। उसने उत्तर दिया,—'मैंने सुना है कि लोग ऊँट को बेगार में पकड़ते हैं।' उसने कहा,—'अरी मूर्खा! ऊँट के साथ तेरा क्या सम्बन्ध? तेरी और उसकी क्या बराबरी?' उसने उत्तर दिया 'चुप रहो! इन सब बातों से कुछ ख़ास नहीं; क्योंकि यदि कोई दुष्ट, मुझ को फँसाने के इरादे से, मुझे भी ऊँट ही कह दे और मैं भी बेगार में फँस जाऊँ, तो कौन मेरी खोज करेगा और मेरी ओर से वकालत करके मुझे छुड़ावेगा?' सम्भव है, ईराक से ज़ाहरमुहरा लाते-लाते साँप का काटा हुआ मनुष्य मर जावे। यद्यपि तुम में इतनी योग्यता और सचाई है; लेकिन तोभी तुमसे जलनेवाले घात के स्थान में और तुम्हारे शत्रु कोने में बैठे हैं। अगर वे लोग तुम्हारे अच्छे स्वभाव को ख़राब साबित कर दें, बादशाह तुम से नाराज़ हो जाय और तुम उसके क्रोधानलमें पड़ जाओ; तो तुम्हारे पक्ष में कौन बोल सकेगा? यदि तुम अपनी इच्छाओं को

त्याग दो और उच्च पद पाने के विचारों को छोड़ दो, तो बहुत ही अच्छा हो। क्योंकि महात्मा लोगोंने कहा है :—समुद्रमें असंख्य अच्छी अच्छी चीज़ें हैं; लेकिन जो तुम कुशल चाहो तो उन्हें किनारे से तलाश करो।" मेरा मित्र यह बात सुन कर बहुत ही नाराज़ हुआ। मेरी ओर क्रोध से देखने लगा और रुखाई से कहने लगा:—"इसमें बुद्धिमानी, सफलता, समझदारी और तेज़फ़हमी की क्या बात है? ऋषियों ने कहा है, कि मित्र कारागार—जेल—में काम आते हैं।* आनन्दके दिनों में तो शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। जो लोग सम्पत्तिके दिनों में अपना प्रेम और भ्रातृभाव दिखाते हैं, उनको अपना मित्र मत समझो। मैं तो उसे अपना मित्र समझता हूँ, जो आफ़त और सङ्कटके समय मेरा हाथ पकड़ता है।"

मैंने देखा कि उसका दिल घबरा गया है और वह मेरी सलाह से यह समझता है, कि मैं उसे सहायता देना नहीं चाहता। इसलिए मैं मालगुज़ारीके हाकिम के पास गया। उससे मेरी पहले की दोस्ती थी, इस लिए मैंने उससे सारा हाल कहा। नतीजा यह निकला, कि उसने मेरे कहने से मेरे दोस्त को एक साधारण सी नौकरी दे दी। थोड़े ही समयमें, उसके आचरण की योग्यता लोगों की नज़र में समा गई। उसके इन्तज़ाम की तारीफ़ होने लगी। उसके दिन फिरे। उसकी पदवृद्धि की गयी। उसकी तक़दीर का सितारा इतना ऊँचा

*राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति स बान्धवः ;

चढ़ा, कि उसकी समस्त इच्छायें पूर्ण हो गईं और वह बादशाह का कृपा-पात्र बन गया। लोग चारों ओर से उसकी तारीफ़ करने लगे और बड़े-बड़े आदमियों में उसका मान-सम्मान बढ़ गया। मुझे उसकी सौभाग्यसम्पन्न अवस्था देखकर बहुत ही प्रसन्नता हुई। मैंने उससे कहा:—"यार! काम-काज से घबराना मत, मन में कभी दुःखी न होना; क्योंकि अमृत अँधेरे में ही रहता है। ऐ मुसीबत में फँसे हुए भाई! घबरा मत; क्योंकि ईश्वर दयालु है। तक़दीर की चञ्चलता पर रञ्ज न कर, क्योंकि धैर्य—सब्र—बहुत कड़वा होता है, किन्तु उसका फल मीठा होता है।"

इसी मौक़े पर, दैवयोगसे, मैं अपने मित्रों के साथ मक्के की यात्रा को चला गया। जब हम यात्रा से लौटे आ रहे थे, तब वह दो दिन का रास्ता चलकर मुझ से मिलने आया। उस समय वह फ़क़ीरों के से कपड़े पहिने हुए बड़े सङ्कट में था। मैंने ऐसी दशा हो जानेका कारण पूछा। उसने जवाब दिया,—"आपने मुझ से जैसा कहा था, ठीक वैसा ही हुआ। कुछ लोगों ने मुझ से जलकर, मुझ पर झूँठे इलज़ाम लगाये। बादशाहने जाँच होने तक की आज्ञा न दी। मेरे पुराने मेल-मुलाक़ातियों और मित्रों ने अपनी पुरानी मित्रता भुला दी और मेरी सफ़ाई के लिए अपने होंठ तक न खोले। जब कोई ईश्वरेच्छा से नीचे गिरता है, तो तमाम दुनिया उसका सिर रौंदने लग जाती है। जब मनुष्य के अच्छे दिन

होते हैं, तब लोग छाती पर हाथ धरकर उसकी तारीफ़ करने लगते हैं। सारांश यह है, कि मैं अबतक दुःख और क्लेशों से दबा हुआ था। इसी सप्ताह, जब तीर्थ-यात्रियों के सकुशल तीर्थ करके फिर आने की ख़बर मिली, मैं कारागार से छोड़ा गया हूँ; किन्तु मेरी पैतृक सम्पत्ति सरकार ने ज़ब्त कर ली है।" मैंने उत्तर दिया:—"तुमने उस समय मेरी बात न मानी। मैंने तुमसे पहले ही कहा था, कि बादशाहों की नौकरी दरियाई सफ़र की भाँति लाभदायक होती है, परन्तु ख़तरे से ख़ाली नहीं होती। सफ़र में या तो धन हाथ आता है या लहरों में जीवन गँवाना होता है। दरियाई सौदागर या तो दोनों हाथों में सोना भरकर किनारे आता है या समन्दर की लहरें उसे किसी न किसी दिन मृतक अवस्थामें किनारे पर फेंक देती हैं।" मैंने उसके अन्दरूनी घाव को नोचकर बढ़ाना या उसपर नमक छिड़कना मुनासिब नहीं समझा; इसलिए नीचे लिखी हुई पंक्तियाँ कह कर मन में सन्तोष कर लिया,—"तुम नहीं जानते, कि लोगों का उपदेश न माननेसे तुम्हें बेड़ियाँ पहननी पड़ेंगी। अगर तुम में बिच्छू के डङ्क की चोट सहने की हिम्मत न हो, तो उसके बिल में अँगुली न डालो।"

शिक्षा—इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य को अपने सच्चे और हितचिन्तक मित्र की सलाह ज़रूर माननी चाहिए। अपनी वासनाओं को कम करके, थोड़े से सुख में ही सन्तोष मानना चाहिए। बादशाही नौकरी समझ-बूझकर

करनी चाहिए और बादशाह की कृपा को चिरस्थायी न समझना चाहिए; क्योंकि बादशाही दरबार में चुग़लखोरों का बड़ा ज़ोर रहता है और राजा लोग कानों के कच्चे होते हैं ।

सत्रहवीं कहानी

सगो दर्बान चो याफ़तन्द ग़रीब ।
ईं गिरेबाँनश गीरद् आँ दामन ॥ १ ॥

मैं कुछ ऐसे आदमियोंकी संगति में बैठा-उठा करता था, जिनका चाल-चलन ज़ाहिरा बहुत अच्छा मालूम होता था । एक समृद्धिशाली पुरुष उन लोगों पर बहुतही श्रद्धा रखता था । उसने उनके भरण-पोषण के लिए कुछ वृत्ति नियत कर दी थी; परन्तु उनमें से एक मनुष्य ने कुछ ऐसा काम किया जो फ़क़ीरों की चाल के विरुद्ध था, इसलिए उस समृद्धिशाली पुरुष की श्रद्धा उन लोगों पर न रही ; उन लोगों की वृत्ति में बाधा पड़ गई । मैं किसी उपाय से उनकी वृत्ति—जीविका— फिर जारी कराना चाहता था ।

ग़रीब का रईस के घर गुज़ारा नहीं । वहाँ उसको दो शत्रुओं से मुक़ाबला करना पड़ता है । एक द्वारपाल से और दूसरे—कुत्ते से । इसलिए वहां बिना किसी वसीले के जाना उचित नहीं ॥ १ ॥

इसी इरादेसे, मैं उस अमीर की ख़िदमत में गया, परन्तु उसके दरबान ने मेरा अपमान किया और मुझे उसके पास तक न जाने दिया। मैंने इस कहावतके अनुसार उसकी बात का बुरा न माना कि, "जो कोई किसी मीर, वज़ीर या बादशाह के पास बिना वसीले के जाता है, तो दरबान लोग उसे ग़रीब समझ कर उसका गला पकड़ते हैं और कुत्ते दामन पकड़ कर खींचते हैं।" जब उस अमीर के प्रधान कर्मचारियों को मेरा हाल मालूम हुआ; तो वे लोग मुझे बड़े आदर-सम्मान से अन्दर ले गये और मुझे अच्छे स्थान पर बिठाया। परन्तु मैंने बड़ी दीनता के साथ नीचे बैठकर कहा,—"मुझे क्षमा कीजिए, मैं नीचे दर्जेका आदमी हूँ, मुझे नौकरों की ही श्रेणी में बैठने दीजिए।" अमीर ने कहा,—"आप यह क्या करते हैं? अगर आप मेरे सिर और आँखों पर बैठो तो भी मुझे इनकार नहीं। आप प्रीति करने योग्य हैं।" ख़ैर, मैं बैठ गया और अनेक प्रकार की बातचीत हो जानेके बाद, जब मेरे मित्रों का ज़िक्र आया तो मैंने पूछा,—"हुज़ूर ने ऐसा क्या दोष देखा, जिस से हुज़ूर को तावेदार से इतनी घृणा हो गई? केवल ईश्वर ही ऐसा दयाशील और महत्त्व-पूर्ण है, कि जो दोष देखकर भी किसी की रोज़ी बन्द नहीं करता।" उस अमीरको मेरी बात भली मालूम हुई और उसने मेरे मित्र की वृत्ति—जीविका—फिरसे जारी कर दी और जो कुछ बाक़ी था, वह भी चुका देने की आज्ञा

देदी। मैंने उसकी उदारता की प्रशंसा की और अपनी कृतज्ञता प्रकट की तथा अपनी गुस्ताख़ीके लिए माफ़ी माँगी। चलने के समय मैंने यह कहा कि, "मक्काका मन्दिर लोगों को मनोवाञ्छित फल देता है, इसी लिए अनेक लोग वहाँ जाते हैं। अत: आपको भी हमारे जैसे लोगों की अड़ियल प्रार्थना पर ध्यान देना चाहिए। जिस वृक्ष में फल नहीं होता, उस पर कोई पत्थर नहीं मारता।"

शिक्षा—इस कहानीसे हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हमें अपराधी और निरपराध सब पर दया-दृष्टि रखनी चाहिए। जिस तरह चन्द्रमा राजा-तपस्वी, अपराधी-निरपराध और चण्डाल सबके घरों में अपनी चाँदनी छिटकाता है; सूर्य बुरे-भले सब के घरों में उजियाला करता है; उसी तरह हमें भी अपराधी-निरपराध दीन-दुखियों पर दया प्रकाश करनी चाहिए। शेख़ सादी ने स्वयँ कह दिया है, कि विश्वम्भर अपने विश्व के बुरे-भले सब जीवों को जीविका पहुँचाता है।

अठारहवीं कहानी।

अगर गञ्जे कुनी पर आमयाँ बख़्श।
रसद हर कदखुदाए रा बिरञ्जे॥ १॥
चरा न सितानी अज़ हर यक जवे सीम।
कि गिर्द आयद तुरा हर रोज़ गञ्जे॥ २॥

किसी राजकुमारको, पिताके मरने पर, बहुत सा धन मिला। उसने उदारता का हाथ खोल दिया और अपनी प्रजा तथा सेना को वेशुमार इनाम-इकराम दिया।

अगर की बनी हुई तश्तरी से सुगन्ध नहीं निकलता, उसे आग पर रक्खो तो अम्बर की महक आने लगे। अगर तुम बड़प्पन चाहो तो दानी बनो; क्योंकि बिना दाना छितराये अन्न पैदा नहीं होता। दरबारियों में से एक ने अविचार-पूर्व्वक उपदेश के ढँग से कहा,—"भूतपूर्व्व राजाओं ने इस ख़ज़ाने को बड़ी मिहनत से जमा किया है और किसी ज़रूरत के वक़्त के लिए इकट्ठा करके रक्खा है; अतः आप अपनी दानशीलता, उदा-

अपना खज़ाना लुटाकर भी आप किसी का भला नहीं कर सकते। ऐसा करने से किसी का भी उपकार न होगा। किसी के पास एक दाने से अधिक नहीं आवेगा; किन्तु यदि तू अपनी प्रजासे एक-एक दाना भी रोक लेगा तो निश्चय तेरा ख़ज़ाना भर जायगा॥ १। २॥

रता को रोकिये; क्योंकि आपके आगे दरिद्र आता है और पीछे दुश्मन लगे हुए हैं। आपको इस तरह ज़रूरत के समय काम आनेवाले धन को खो देना मुनासिब नहीं। अगर आप अपने खज़ाने में से सब लोगों को एक-एक दाना भी देने लगें, तो प्रत्येक कुटुम्ब के एक मनुष्य के हिस्से में एक-एक दाने से अधिक न आवेगा। आप हर मनुष्य से एक-एक दाना चाँदी का क्यों नहीं लेते, जिससे आप के लिए रोज़ एक खज़ाना तय्यार हो जावे।" यह बात राजकुमारके स्वभावके विरुद्ध थी। वह इस बात से चिढ़ गया और कहने लगा,—"उस नित्य, अनादि, अनन्त, सर्व्वशक्तिमान् ईश्वर ने मुझे इन जातियोंका राजा इस गरज़से बनाया है, कि मैं आप सुख भोगूँ और दान करूँ। मैं खज़ाने का पहरा देने के लिए सन्तरी नहीं हूँ।

कारूँ, जिसके पास चालीस कोठे धन से भरे हुए थे, नाश हो गया; किन्तु नौशेरवाँ मर कर भी नहीं मरा। वह अपना यश अमर कर गया।"

शिक्षा—इस कहानी से हमें यह नसीहत मिलती है, कि धन को सञ्चित रखना उचित नहीं। मनुष्य को चाहिए कि धन को अपने सुख और पराये सुख के लिए खर्च करे। कारूँ के पास बहुत सा धन था; पर उसने दीन-दुखियों को अपना धन दान न किया; इसलिए उसका कोई नाम भी नहीं लेता; किन्तु नौशेरवाँ दानी था; उसे मरे हज़ारों वर्ष बीत गये, किन्तु वह आज मर कर भी अमर है।

उन्नीसवीं कहानी ।

अगर ज़ बाग़े रअय्यत मलिक खुरद सेबे ।
बर आवरन्द ग़ुलामाने ओ दरख़्त अज़ बेख़ ॥ १ ॥

कहते हैं, कि नौशेरवाँ किसी समय शिकार को गया था। जब वह शिकार में मारे हुए जानवरों को पकवाने लगा, तो पास नमक न निकला। पास के गाँव में नमक लाने के लिए नौकर भेजा गया। बादशाह ने हुक्म दिया कि नमक का दाम दे दिया जावे; जिस से बिना दाम दिये चीज़ लेने की चाल न चल जाय और गाँव उजड़ न हो। लोगों ने कहा,—"इस तुच्छ चीज़ से क्या हानि होगी?" बादशाह ने जवाब दिया,—"ज़ुल्म संसार में ज़रा-ज़रा करके ही पैदा हुआ था, जिसे प्रत्येक नवागन्तुक ने बढ़ाया है, जिस से वह इस दर्जे तक बढ़ गया है। अगर बादशाह किसी किसान के बाग़ीचे से एक सेब खाता है, तो उस के नौकर-चाकर वृक्षों को समूल ही उखाड़ लेते हैं।

राजा को अपनी प्रजा के माल की रक्षा करना चाहिए। अकारण उसके बाग़ का एक सेब भी उसे न लेना चाहिए। ऐसा करने से राजा के नौकर-चाकर तो प्रजा के बाग़ को उजाड़ डालेंगे। उनको तो राजा का इशारा चाहिए, फिर वे कर्त्तव्याकर्त्तव्य-शून्य होकर प्रजा के धन को लूटने में आगा-पीछा नहीं करते ॥ १ ॥

अगर बादशाह पाँच अण्डे ज़बरदस्ती छीन लेने का हुक्म देता है, तो उस के सिपाही हज़ारों पक्षी छीन लेते हैं। अन्यायी अत्याचारी नहीं रहता, किन्तु दुनिया का शाप उस पर हमेशा बना रहता है।"

शिक्षा—इस कहानी से हमें क़दम-क़दम पर न्यायपरायणता अथवा इन्साफ़ से चलने की नसीहत मिलती है। हाकिमों को चाहिए कि आप न्याय से चलें और अपने अधीन लोगों को भी उसी रास्ते पर चलावें। बुद्धिमान् लोग न्याय-मार्ग से एक क़दम भी इधर-उधर नहीं होते। नौशेरवाँ को मरे हज़ारों बरस बीत गये; किन्तु वह अपनी इन्साफ-पसन्दी और न्यायपरायणता के लिए आज मर कर भी जी रहा है।

बीसवीं कहानी।

मिसकीन ख़र अगर्चे बेतमीज़स्त॥
चूं बार हमीं बुरद अज़ीज़स्त॥ १॥

मैं ने सुना है, कि किसी तहसीलदार ने राजा का सन्दूक़ भरने के लिए प्रजा के घर उजड़ कर दिये। उस ने महात्माओं के इस वचन पर ध्यान न दिया,—"जो मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य का दिल राज़ी करने

गधा बेशक बेहूदा जानवर है मगर हमारा बोझ ढोता है इसलिए हमें प्यारा है। मतलब यह कि सब को "काम" प्यारा है॥ १॥

के लिए ईश्वर को नाराज़ करता है, ईश्वर उसी मनुष्य को उस के नाश करने का अस्त्र बना देता है। दुःखित हृदय की आह से जितना धुँआँ निकलता है, उतना सदाब नामक झाड़ी की आग से भी नहीं निकलता। लोग कहते हैं, कि सिंह जानवरों का बादशाह है और गधा सब से नीचे दर्जे का जानवर है; परन्तु महात्माओं की राय में, बोझ ढोनेवाला गधा मनुष्य-नाशक सिंह से भला है। बेचारा गधा मूर्ख होने पर भी बोझा ढोने के लिए क़ीमती है। परिश्रमी बैल और गधा उन मनुष्यों से अच्छे हैं, जो दूसरों को तकलीफ पहुँचाया करते हैं।

बादशाह ने उस की बदचलनी की बात सुन कर, उसे शूली देकर मार डालने का हुक्म दिया,—"जब तक तुम प्रजा का मन हाथ में करने का उद्योग न करोगे; तब तक तुम बादशाह को प्रसन्न न कर सकोगे।" अगर तुम ईश्वर की उदारता चाहते हो, तो तुम उस की सृष्टि के सङ्ग भलाई करो। एक मनुष्य जिस पर उस ने ज़ुल्म किया था, उस को शूली मिलते समय उधर से निकला और कहने लगा,—"मन्त्रित्व की शक्ति और उच्च पदवीवाला मनुष्य, लोगों को कष्ट देकर, उन का धन हज़म नहीं कर सकता। अगर तुम कड़ी हड्डी खाओगे तो वह नाभि में जाकर अटकेगी और पेट को फाड़ डालेगी।"

शिक्षा—इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य को

उच्चपदस्थ होकर अपने भाइयों पर अत्याचार न करना चाहिए। मनुष्यों पर ज़ुल्म करने वाले से ईश्वर सख़्त नाराज़ होता है, अन्त में पाप का घड़ा फूटता है और मनुष्य अपने किये हुए दुष्कर्मों का फल अवश्य पाता है। मनुष्य को अपनी उन्नत अवस्था में ऐसा काम करना चाहिए, जिस से लोग उस को अवनत अवस्था में उसे प्रेम-दृष्टि से देखें; दिन के बाद रात और रात के बाद दिन होता है, जो समय आज है वह कल न रहेगा। जो आज उच्चपद पर हैं, सम्भव है कि एक दिन वह पदच्युत हो जावें। महाकवि कालिदास कहते हैं,—

"नीचैर्गच्छत्युपरि च दशाचक्रनेमिक्रमेण।"

इक्कीसवीं कहानी ।
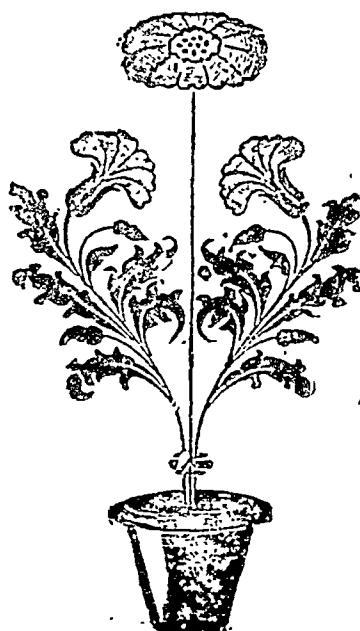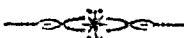
हरके बा फ़ौलादे बाज़ू पंजा कर्द ।
साअ़दे मिस्कीने ख़ुदरा रंजा कर्द ॥ १ ॥

लोग एक क़िस्सा कहते हैं, किसी ज़ालिमने एक महात्मा के सिर पर पत्थर फेंका । महात्मा में उससे बदला लेने का सामर्थ्य न था ; इसवास्ते उसने उस पत्थर को अपने पास रख लिया । दैवयोगसे, एक समय बादशाह उस अत्याचारी से नाराज़ हो गया और उसे गढ़े में डाल देने का हुक्म दिया । उस समय वह फ़क़ीर वहाँ आया और उसने उस ज़ालिम का सिर उसी पत्थरसे चूर चूर कर दिया । इस पर उस ज़ालिमने कहा,—"तू कौन है, और तूने यह पत्थर मेरे सिर पर क्यों फेंक कर मारा है ?" फ़क़ीर ने जवाब दिया—

"मैं अमुक मनुष्य हूँ,और यह वही पत्थर है जो तुमने अमुक दिन मेरे सिर पर फेंक कर मारा था।" ज़ालिम ने कहा,—"अब तक तुम कहाँ थे ?" फ़क़ीर ने जवाब दिया,—"मैं तुम्हारे पद से डरता था ; लेकिन अब तुम्हें खड्डे में देखकर, तुमसे बदला

लोहे के पंजे से पंजा करने वाला आदमी अपनी कलाई को ही तोड़ लेता है ॥ १ ॥

लेने का अच्छा मौक़ा समझता हूँ। नालायक़ आदमी जब उच्च-पदारूढ़ हो, तब बुद्धिमान् उसकी इज्जत करने में ही अपनी बुद्धिमानी समझते हैं। जबकि तुम्हारे नाख़ून चीरने के लिये काफ़ी तेज़ न हों, तब दूसरों से झगड़ा करना बुद्धिमानी नहीं है। जो फ़ौलादी पञ्जे से पञ्जा लड़ाता है, वह अपनी ही कलाई को चोट पहुँचाता है, चाहे वह चाँदी की ही क्यों न हो। उस समय तक प्रतीक्षा करो, जब तक क़िस्मत उसके हाथ न बांध दे; समय पर, तुम अपने मित्रों के प्रसन्न करने के लिए उसका भेजा निकाल सकते हो।

शिक्षा—इस कहानी से हमें यह नसीहत मिलती है, कि जबतक हमारा शत्रु बलवान् हो, तबतक हमें उस से हरगिज़ न उलझना चाहिए; बल्कि उसका आदर-सम्मान करना चाहिए। जब हम उसे बलहीन देखें, तब उससे अपना बदला लें। बलवान् शत्रु से भिड़ना बुद्धिमानी के विपरीत है।

बाईसवीं कहानी।

ज़ेरे पायत गर बिदानी हाले मोर।
हम चो हाले तस्त ज़ेरे पाये पील ॥ १ ॥

किसी वादशाह को ऐसा भयङ्कर रोग था जिसका यहाँ वर्णन करना उचित नहीं है। कई यूनानी हकीमों ने मिल कर यह राय ठहराई, कि एक ख़ास तरह के आदमी के पित्त के सिवाय इस बीमारी का और इलाज नहीं है। वादशाह ने इस तरह के आदमी की तलाश करने का हुक्म दिया। लोगों ने एक किसान के लड़के में वह सब गुण मौजूद पाये। वादशाह ने उस लड़के के मा-बाप को बुलवाया और उन्हें बहुत सा इनाम देकर राज़ी कर लिया। क़ाज़ी ने यह फ़ैसला किया, कि वादशाह को बीमारी से आराम करने के लिए एक रिआया का ख़ून बहाना न्यायसङ्गत है। जब जल्लाद ने उसके मारने की तय्यारी की; तब वह बालक आकाश की ओर देख कर हँसा। वादशाह ने उस बालक से पूछा,—

तुम्हारे पांव के नीचे दबी चींटी का वही हाल होता है जो यदि तुम हाथी के पांव के नीचे दब जावो तो तुम्हारा हो। दूसरे के दुःख को अपने दुःख से तुलना किये बिना हम उसकी प्रकृत अवस्था का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते ॥ १ ॥

"इस अवस्था में ऐसी क्या बात हुई जिससे तुझे खुशी हुई ?" उसने जवाब दिया—"बालक मा बापके प्रेम पर निर्भर रहते हैं ; मुक़दमों का समावेश क़ाज़ी करता है ; न्याय की आशा बादशाह से की जाती है। मेरे माता-पिता की मति थोथे सांसारिक विचारों से भ्रष्ट हो गई है, कि वे मेरा खून बहाने पर राज़ी हो गये हैं। क़ाज़ी ने मुझे प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी है और बादशाह अपनी स्वास्थ्यरक्षा के लिए मेरी मृत्यु पर राज़ी हो गया है। ऐसी दशा में, मैं अब ईश्वर के सिवाय किसकी शरण जाऊँ ?" बादशाह इस बातको सुनकर बहुत ही दुःखी हुआ और आँखों में आँसू भर कर बोला—"निर्दोष मनुष्य का खून बहाने की अपेक्षा मेरा ही मर जाना अच्छा है।" बादशाह ने उस बालक का सिर और आँखें चूम कर, गले से लगाया और उसे बहुत सा इनाम देकर छोड़ दिया। लोग कहते हैं, कि बादशाह उसी सप्ताह रोगमुक्त हो गया। इस क़िस्से से ठीक मेल खाता हुआ एक पद मुझे याद पड़ता है, जो एक फ़ीलबान—महावत—ने नील नदी के किनारे पर सुनाया था,—"अगर तुम्हें अपने पैर के नीचे दबी हुई चींटी की अवस्था ज्ञात न हो; तो तुमको समझना चाहिये कि चींटी की वैसी ही हालत है जैसी हाथी के पैर के नीचे दबने पर तुम्हारी हो।"

शिक्षा—इस कहानी से हमें यह नसीहत मिलती है, कि हमें सब जीवों को अपने समान समझना चाहिए। दूसरों को कष्ट

पहुँचाते समय इस बातका ख़याल रखना चाहिए, कि यदि हमें कोई ऐसा ही कष्ट दे तो हमें कैसा दुःख होगा ।

तेईसवीं कहानीं ।

हर्चे ख़्वद बर सरम चूं तो पसन्दी ख़्वास्त ।
बन्दह चे दावा कुनद हुक्म ख़ुदावन्द रास्त ॥ १ ॥

उमरुलैस के गुलामों में से एक गुलाम भाग गया। एक आदमी उसके पकड़ने के लिए भेजा गया। वह उसे ले आया। गुलाम की वज़ीर से दुश्मनी थी। वज़ीरने, इस ग़रज़ से कि और गुलाम ऐसा अपराध न करें, उसे प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी। गुलाम ने उमरुलैस को साष्टाङ्ग दण्डवत् की और कहा—"आप जो कुछ करें, वही न्यायसङ्गत है; मालिक की दण्डाज्ञा के सामने ग़ुलाम का क्या उज्र चल सकता है? लेकिन यह देखकर, कि मैंने

आप जो कुछ हुक्म देते हैं वह न्यायसंगत ही है। मालिक की आज्ञा के सामने सेवक का उज्र नहीं चल सकता ॥ १ ॥

आपके घरमें परवरिश पाई है, मैं नहीं चाहता कि क़यामत के दिन मेरे ख़ून का अपराध आप पर लगाया जावे। अगर आप ने ग़ुलाम की जान लेने का ही मन्सूबा ठान लिया है तो मुझे न्याय के अनुसार मारिये ; ताकि क़यामत के दिन आपको झिड़कियाँ न सहनी पड़ें।" बादशाह ने पूछा—"मुझे यह काम किस तरह करना चाहिये ?" उसने जवाब दिया—"मुझे वज़ीर को मारडालने की आज्ञा दीजिये, पीछे उसके एवज़ में मुझे मरवा डालिये ; तब आपका मुझे मरवाना न्यायानुसार होगा।" बादशाह हँसा और उसने वज़ीर से पूछा कि तेरी राय में अब क्या करना चाहिए ? वज़ीर ने उत्तर दिया—"जगत्रक्षक ! अपने पिता के समाधि-मन्दिर की पूजा समझ कर, इस दुष्ट को छोड़ दीजिए कि जिससे मेरी जान आफ़त में न फँसे। अपराध मेरा ही है, क्योंकि मैंने महात्माओं के इस वचन का ख्याल नहीं किया—अगर कोई शख्स मिट्टी के ढेले फेंकनेवाले के साथ लड़ता है, तो अपनी मूर्खता से अपने ही सिर को तोड़ता है ; जब तुम अपने शत्रु पर गोली चलाओ तब उसके निशाने से भी बचने का ख़याल रक्खो।"
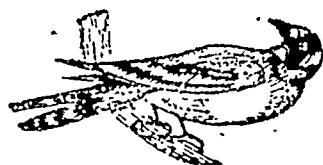
चौबीसवीं कहानी ।

सुलह वा दुश्मन अगर ख़्वाही हर गह कि तुरा ।
दर क़फ़ा ऐब कुनंद दर नज़रश तहसीं कुन ॥ १ ॥

ज़ून के एक बादशाह के यहाँ एक बड़ा नेक और मिलनसार वज़ीर था। वह लोगों के सामने होने पर, उनसे सभ्यता का बर्त्ताव करता और उनकी अनुपस्थिति में उनकी प्रशँसा किया करता था। दैवात्, उसके किसी काम से बादशाह नाराज़ हो गया। उसने बुरा-भला कह कर, उसे दण्ड देने की आज्ञा दी। राज-कर्मचारियों ने उसके पहले उपकार का ख़याल करके, इस अवस्था में, उसके प्रति कृतज्ञता प्रकाश करना ही अपना धर्म समझा। इसलिए जबतक वह उनके पास क़ैद रहा, तबतक उन लोगोंने उसके साथ बड़ी सभ्यता और नम्रता का व्यवहार किया। न तो उस के साथ सख़्तोही की और न किसी को गाली-गलौज देने दिया। "अगर तुम अपने दुश्मन से मेल रखना चाहते हो, तो दुश्मन जब कभी पीठ पीछे तुम्हारी निन्दा करे तो तुम बदले में उसके मुँह के सामने उसकी प्रशँसा करो। यदि किसी अप-

---

दुश्मन को खुश रखने की सब से बड़ी युक्ति यह है कि जब जब वह तेरी परोक्ष में बुराई करे तभी तभी तू उसके प्रत्यक्ष में उसकी प्रशंसा कर ॥ १ ॥

कारी मनुष्य के कड़वे वचनों को रोकना चाहो, तो उसके मुँह से बात निकलने के पहले ही उसका मुँह मीठा कर दो।" वह बादशाह के लगाये हुए कुछ अभियोगों से तो रिहाई पा गया; किन्तु कुछ शेष अभियोगों के लिये जेल भोगता रहा। किसी पड़ोस के राजाने उसके पास गुप्त रीति से यह समाचार भेजा—"उस तरफ़ के बादशाह गुणों की क़दर करना नहीं जानते; इसीसे तुम्हारा अपमान किया गया है। अगर ऐसा गुणी मनुष्य हमलोगों की शरण में आजाय, तो हम उसके गुणों के कारण से उसका पूरा-पूरा सम्मान करें और भरसक उसको सन्तुष्ट रखने की चेष्टा करें। अस्तु; अगर तुम यहाँ आ जाओ, तो राज्य के शासनकर्त्ता तुम्हें देखकर अपने तईं सम्मानित समझें। ये लोग बड़ी अधीरता से पत्रोत्तर की बाट देखते हैं।" वज़ीर चिट्ठी का मज़मून समझ गया। उसने अपनी उपस्थित विपत्ति पर विचार करके, उसी पत्र की पीठ पर, अपनी समझ के माफ़िक़, छोटा सा जवाब लिख कर भेज दिया। बादशाह के किसी सहचर को यह बात मालूम हो गयी। उसने बादशाह को सूचना दी और कहा,—"जिसको आपने क़ैदकी सज़ा दी है, वह पड़ोसी राजा से पत्र-व्यवहार करता है।" बादशाह नाराज़ हुआ और इस मामले की जाँच होने की आज्ञा दी। लोगोंने पत्र लेजानेवाले को पकड़ लिया और उस पत्रको पढ़ा, जिसकी पीठपर यह लिखा हुआ था—"जितनी तारीफ़ की गयी है उसके लायक़ यह तावेदार

नहीं है। जो कुछ आप लोगोंने लिखा है, वह स्वीकार करना मेरे लिये असम्भव है ; क्योंकि उसके नामी-गिरामी घरमें मेरी परवरिश हुई है। उसके विचारों में ज़रा सा फ़र्क होने से, मैं उसके प्रति अकृतज्ञ नहीं हो सकता। क्योंकि कहावत है— "जिसने तुम्हारा बराबर उपकार किया, यदि उस से जीवन में तुम्हारी एक बुराई भी हो जाय तो उसे क्षमा करो।" बादशाह ने उसकी भक्ति की प्रशंसा की और उसे खिलअत तथा इनाम-इकराम दिया। पीछे उससे माफ़ी माँगते हुए कहा— "मुझसे ग़लती हुई, जो मैंने तुम जैसे निर्दोष को कष्ट दिया।" वज़ीर ने जवाब दिया,—"हुज़ूर! यह ताबेदार आपको इस मामले में दोषी नहीं समझता, क्योंकि विधाता को ही मुझे विपद् में फँसाना मञ्ज़ूर था। यह भी अच्छा हुआ, कि यह कष्ट इस ताबेदार को एक ऐसे पुरुष द्वारा प्राप्त हुआ, जो चिरकाल से मेरे ऊपर अपनी कृपा और मिहरबानी रखता था।"

अगर आदमी तुझे दुःख दे, रञ्ज मत कर ; क्योंकि सुख और दुःख देना मनुष्य के हाथ की बात नहीं है। इस बात को याद रख, कि मित्र और शत्रु से बुरे-भले बर्त्तावका करानेवाला केवल ईश्वर ही है ; क्योंकि वही दोनों के दिलों पर हुकूमत रखनेवाला है। यद्यपि तीर कमान से छूटता है ; तथापि जो बुद्धिमान् हैं वे तीरन्दाज़ की ओर ही देखते हैं।

शिक्षा—इस कहानी से हमें दो नसीहतें मिलती हैं,—(१)हमारे

ऊपर उपकार करनेवाला यदि कभी हमारी ज़िन्दगी में एकाध दफ़ा, हमसे अप्रसन्न हो जाय और हमारे निरपराध होने पर भी हमारे साथ बदी करे ; तो हमें उसकी ज़रा सी नाराज़ी के सबब उसके पहले उपकारों को भूल न जाना चाहिए और उसके साथ भूलकर भी बुराई न करनी चाहिए। एक अपकार के कारण पिछले सैकड़ों उपकारों को भूल जाना ओछे आदमी का काम है। (२) अगर कोई मनुष्य हमें दुःख दे, तो हमें यह न समझना चाहिए कि यह दुःख हमें अमुक मनुष्य के कारण से हुआ है ; बल्कि यह समझना चाहिए कि दुःख और सुख देना मनुष्य के सामर्थ्य के बाहर है। दुःख और सुख देनेवाला ईश्वर ही है। शत्रु और मित्र सब तरह के मनुष्यों के दिलों का नेता या रहनुमा केवल ईश्वर ही है। वह जैसा चाहता है वैसा ही कराता है। मनुष्य किसी को सुख और दुःख नहीं दे सकता। हमारे एक हिन्दू कवि ने बहुत ही ठीक कहा है—"को सुख को दुख देत है, देत करम भकभोर; उलझे सुलझे आपही, ध्वजा पवन के जोर।" अर्थात् न कोई किसी को दुःख देता है और न कोई किसी को सुख ही देता है; जिस तरह ध्वजा हवा के ज़ोर से आप ही उलझती और सुलझती है, उसी तरह मनुष्य अपने पूर्वकृत कर्मों के फल-स्वरूप दुःख और सुख पाता है।

पच्चीसवीं कहानी

दो बाम्दाद गर आयद कसे बखिदमते शाह।
सोम हरआईना दर वे कुनद व लुत्फ़ निगाह ॥१॥

अरब देशके किसी बादशाह ने अपने वज़ीरों को किसी शख्स की तनख्वाह दूनी कर देने का हुक्म दिया; क्योंकि वह शख्स बराबर हाज़िर रहता था और सदा अपना कर्त्तव्य पालन करता था; जब कि दूसरे दरबारी फ़िज़ूलखर्च, अय्याश और अपने काम की तरफ़ से बेपरवाई करने वाले थे। एक चतुर मनुष्य ने यह बात सुन कर कहा, कि ईश्वरीय दरबार में भी इसी तरह उच्च पद दिये जाते हैं।

अगर कोई मनुष्य दो दिन तक सावधानी से बादशाह की खिदमत करता है, तो वह तीसरे दिन अवश्य ही कृपापात्र हो जाता है। सच्चे उपासकों के दिल में पक्का विश्वास रहता है, कि हम ईश्वर की देहली से बिना पुरस्कार पाये न लौटेंगे। आज्ञापालन करने से मनुष्य बड़ा होता है, किन्तु आज्ञा-पालन

बादशाहों की सेवा में एक बार जाकर ही निराश मत हो जाओ। यदि तुम दो बार भी उनके पास से खाली लौट आओ तो भी तीसरी बार जाओ। उनकी दया-दृष्टि ज़रूर उस बार तुम पर पड़ेगी ॥ १ ॥

न करने से निकाला जाता है। जो सत्पुरुष होता है, वह अपना मस्तक आज्ञापालन की देहली पर रखता है।

शिक्षा—इस कहानी से हमें यह नसीहत मिलती है, कि जिस हालत में, हम किसी की नौकरी करें, हमें अपने मालिक की खिद्‌मत दिलो जान से करनी चाहिए। उसकी सेवा में किसी भाँति की भी त्रुटि करना अनुचित है। मसल मशहूर है, कि जो सेवा करेगा सो मेवा पायेगा; यानी सेवा करनेवाले को उसकी मिहनत का एवज़ अवश्य मिलता है। जिस हालत में कि हम अमीर हों, हमारे अधीन थोड़े या बहुत नौकर-चाकर हों, हमें अच्छा काम करनेवाले और बुरा काम करने-वाले सब को ध्यान में रखना चाहिए। जो नमकहलाल, मिह-नती और आज्ञानुसार चलनेवाले हों, उनका वेतन बढ़ाना चाहिए या उन्हें पुरस्कार देना चाहिए। अगर अच्छा काम करनेवाले नौकरों को पुरस्कार न दिया जायगा या उनकी वेतन-वृद्धि न की जायगी तो उनका दिल टूट जायगा। ईश्वर भी जैसी जिसकी चाकरी होती है उसको वैसा ही फल देता है।
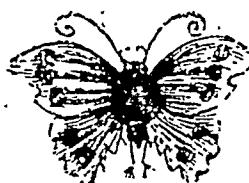
छब्बीसवीं कहानी ।

वहम बर मकुन ता तवानी दिले ।
कि आहे जहाने वहम बर कुनद ॥ १ ॥

लोग एक ज़ालिम की कहानी कहते हैं, जो ग़रीबों से ज़बरदस्ती लकड़ियाँ ख़रीदा करता और अमीरों को थोड़े दामों में दिया करता था। एक न्यायप्रिय मनुष्य ने उधर से निकलते हुए कहा,—"तुम साँप के समान हो, जो जिसे देखता है उसे ही काटता है या उल्लू के समान हो, जो जहाँ बैठता है वहीं खोदता है। यद्यपि तुम अपने अन्याय के लिए हमलोगों से बिना दण्ड पाये बच जा सकते हो; किन्तु ईश्वर की नज़र से तुम्हारा अन्याय छिपा नहीं रह सकता; क्योंकि ईश्वर के आगे कोई गुप्त भेद अप्रकट नहीं रह सकता। इस दुनिया के बाशिन्दों को मत सताओ; ऐसा काम करो, जिससे उन लोगों की आहें परमेश्वर तक न पहुँचे। ज़ालिम उसकी बातें सुनकर नाराज़ हुआ और उसने उसकी ओर से मुँह फेर लिया। एक दिन रातके समय, उसके बावरचीख़ाने से उसके लकड़ियों के गोदाम में आग लग गयी। उसका

जहाँ तक हो किसी के मन को मत दुखाओ। याद रखो, ग़रीब की आह से संसार उलट-पुलट हो सकता है ॥ १ ॥

तमाम माल-असबाब जल गया। उसका गुदगुदा बिछौना राख का ढेर बन गया।

दैवयोग से, वही न्यायप्रिय मनुष्य उधर से निकला और उसने उसे अपने मित्रों से यह कहते हुए सुना—"मैं नहीं जानता कि यह आग मेरे घर पर कहाँ से पड़ी।" उस न्यायप्रिय ने उत्तर दिया—"ग़रीबों के दिलों के धुएँ से।"

दुखी लोगों की हाय से सावधान रहो; क्योंकि अन्दरूनी घाव आख़िरकार फूटेगा। किसी एक दिल को भी अत्यन्त दुःखी मत करो; क्योंकि एक आह में भी दुनिया के उलट देने की शक्ति है। कैख़ुसरो के ताज पर निम्नलिखित लेख लिखा हुआ था—"न मालूम मेरे मरने के बाद कितनी मुद्दत तक, और कितनी उम्रों तक लोग मेरी क़ब्र के ऊपर से गुज़रते रहेंगे? यह बादशाहत हाथों-हाथ मुझे मिली और उसी तरह दूसरों के हाथों में जायगी।"

शिक्षा—इस कहानी से हमें यह नसीहत मिलती है, कि हमें ग़रीब और दीन-दुःखियों को भूल कर भी न सताना चाहिए; ग़रीबों के सतानेवालों का अन्तिम परिणाम बहुत ही बुरा होता है। हमारे यहाँ भी किसी कवि ने इस कहानी के उपदेश से मिलती-जुलती ही बात कही है,—'दुर्ब्बल को न सताइये, वाकी मोटी हाय; मुई खाल की साँस लों, सार भसम ह्वै जाय।" अर्थात् ग़रीब को न सताना चाहिये, ग़रीब की हाय बुरी होती है; जिस तरह मरी हुई खाल (धोंकनी)

की साँस से लोहा भस्म हो जाता है; उसी भाँति ग़रीब की हाय से ज़बरदस्त ज़ालिम का भी सत्यानाश हो जाता है। क्योंकि ग़रीब की आह ईश्वर तक बहुत ही जल्द पहुँचती है।

सत्ताईसवीं कहानी।

कस नयामोख़्त इल्मे तीर अज़ मन।
कि मरा आक़बत निशाना न कर्द ॥ १ ॥

एक शख़्स कुश्ती के हुनर में अत्यन्त बढ़ गया था। वह इस फ़न के तीन सौ साठ अच्छे-अच्छे दाँव-पेच जानता था और हर दिन कोई न कोई नई बात दिखाया करता था; लेकिन अपने शागिर्दों में से एक सुन्दर जवान पर सच्चा प्रेम रखने के कारण, उसने उसे तीन सौ उनसठ दाँव-पेच सिखा दिये थे और सिर्फ़ एक दाँव अपने निज के लिए छिपा रक्खा था। वह जवान ताक़त और

मुझ से जिस-जिस ने बाण-विद्या सीखी—सीख चुकने पर अन्त में उसी उसने मुझी पर बाण सीधा किया। हा कृतघ्नता!

कुश्ती के फ़न में इतना बढ़ गया कि कोई उसका सामना न कर सकता था।

एक दिन वह बादशाह के सामने शेखी मारने और कहने लगा, कि मैं अपने उस्ताद् को केवल उनकी उम्र की अधिकता के लिहाज़ से और यह समझ कर कि वह मेरे शिक्षक हैं अपने से ऊँचा रहने देता हूँ। वास्तव में, मैं उन से बल में कम नहीं हूँ और दाँव-पेच में तो उनके बराबर ही हूँ। बादशाह को उस जवान की यह आचरण-हीनता अच्छी न लगी। उसने उन दोनों के गुणों की परीक्षा करने की आज्ञा दी। इस काम के लिये एक लम्बा-चौड़ा स्थान ठीक किया गया। राज्य के मन्त्री और दूसरे अमीर-उमरा जमा हुए। वह जवान मस्त हाथी की तरह झूमता हुआ, इस तरह अखाड़े में दाखिल हुआ, कि अगर उसके सामने उस समय लोहे का पहाड़ भी आता तो वह उसे भी जड़ से उखाड़ फेंकता। उस्ताद को यह मालूम था; कि जवान में मुझ से अधिक बल है; इसलिए उसने उस पर वही दाँव चलाया जो उसने अपने लिए छिपा रक्खा था। जवान इस दाँव का काट न जानता था। उस्ताद ने उसे दोनों हाथों पर ज़मीन से उठा लिया और अपने सिर से ऊँचा लेजा कर ज़मीन पर पटक दिया; सब लोग वाह-वाह करने लगे! बादशाह ने उस्ताद को खिलअत और रुपया इनाम में देने का हुक्म दिया और उस जवान को अपने उप-

कारी के साथ मुक़ाबला करने और अपनी चेष्टा में सफल न होने के कारण बुरा-भला कहा और धिक्कारा! जवान ने कहा—"ऐ बादशाह! मेरे उस्ताद ने मुझ पर बल या निपुणता से फ़तह नहीं पाई है; किन्तु कुश्ती के एक छोटे से पेच से मुझे शिकस्त दी है। यह सामान्य पेच उन्होंने मुझ से छिपा रक्खा था और मुझे नहीं सिखाया था।" उस्ताद ने कहा—"मैंने उस पेच को आज के जैसे मौक़े के लिए ही बचा रक्खा था। क्योंकि महात्माओं ने कहा है—'अपने मित्र के हाथों में इतने मत हो जाओ, कि अगर वह कभी शत्रु होजाय तो तुम्हारा अनिष्ट कर सके।' क्या तुमने उस शख़्स की बात नहीं सुनी जो अपने शिष्य द्वारा अपमानित और लाञ्छित हुआ था? या तो जगत् में कभी कृतज्ञता थी ही नहीं या इस ज़माने में कोई कृतज्ञता से काम नहीं लेता। ऐसा कोई आदमी नहीं है, कि जिसको मैंने तीरन्दाज़ी सिखाई हो और अन्त में उसने मुझी पर निशाना न लगाया हो।"

शिक्षा—इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हमें अपने मित्र के क़ाबू में बिल्कुल ही न हो जाना चाहिए। जो आज मित्र, है, सम्भव है कि वही किसी दिन हमारा शत्रु हो जाय; अतः परम मित्र से भी अपना गुप्त भेद छिपा रखना चाहिए। आज-कल के मित्र ज़रा-ज़रा सी बातों पर शत्रु हो जाते हैं और यदि उनको अपने मित्र का कुछ भी भेद

मालूम होता है तो उसी गुप्त भेद को अपना अस्त्र बना कर अपने मित्र के अनिष्ट-साधन का उद्योग किया करते हैं। दूसरे, आजकल के जलवायु की तासीर ही ऐसी हो गयी है कि जिसे कुछ गुण सिखाया जाता है, वह अपने सिखाने वाले की कृतज्ञता को तो स्वीकार नहीं करता,—वरन् उससे बढ़ जाने या बराबरी करने का दावा करता है। आज-कल के शिष्यों में कृतज्ञता का नामोनिशान भी नहीं होता, जिसे भूँकना सिखाया जाता है वही काट खाने को दौड़ता है। अतः चतुर मनुष्यों को सावधानी से चलना चाहिए।

अट्ठाईसवीं कहानी।

फ़र्क़ शाही व बन्दगी बर्ख़ास्त।
चूं क़ज़ाये नविश्ता आमद पेश॥ १॥
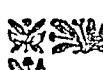
एक एकान्तवासी फ़क़ीर किसी जङ्गल के कोने में रहता था। बादशाह उधर होकर निकला। एकान्तवास सन्तोष की राजधानी है; इसलिए फ़क़ीर ने बादशाह को देख कर न तो मस्तक उठाया और न
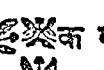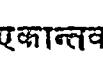
मृत्यु के आने पर या मरजाने पर अमीरी ग़रीबी का फ़र्क़ मिट जाता है॥ १॥

किसी तरह का शिष्टाचारही दिखाया। बादशाह को अपने ऊँचे दर्जे का खयाल हो गया, इसलिए उसने चिढ़ कर कहा—"ऐसे चिथड़-पोश फ़क़ीर जङ्गली जानवरों के समान होते हैं।" बादशाह के वज़ीर ने फ़क़ीर से कहा,—"इस दुनिया का बादशाह जब तुम्हारे पास होकर निकला, तब तुमने उसका आदर-सम्मान क्यों न किया ? आदर-सम्मान तो आदर-सम्मान, तुमने उसका साधारण शिष्टाचार भी न किया।" फ़क़ीर ने जवाब दिया,—"दुनिया के बादशाह से कह दो, कि वह अपनी ख़ुशामद की उम्मेद उसी शख्स से करे जो उस से कुछ उपकार चाहता है और उस से यह भी कह दो कि बादशाह अपनी प्रजा की रक्षा के लिए है, न कि प्रजा बादशाह की सेवा के लिए। भेड़ें गड़रिये के लिए नहीं होतीं, किन्तु गड़रिया भेड़ों की खिदमत के लिए होता है। आज तुम किसी को आनन्द-चैन करते और किसी को सन्तप्त हृदय से मिहनत मज़दूरी करते हुए देखते हो ; लेकिन चन्द रोज़ में ही घमण्डियों का दिमाग़ मिट्टी में मिल जायगा। जिस समय क़िस्मत का क़ौल पूरा होजाता है, उस वक्त मालिक और नौकर में भेद नहीं रहता। अगर कोई शख्स क़ब्र खोदे, तो वह यह न कह सकेगा कि यह अमीर है और वह ग़रीब है।" फ़क़ीर की बात का बादशाह पर ख़ूब असर हुआ। उसने पूछा कि तुम क्या चाहते हो ? फ़क़ीर ने जवाब दिया—"मैं केवल यही चाहता हूँ कि मुझे

फिर कभी ऐसी तकलीफ़ न दी जावे।" बादशाह ने कहा—"मुझे कुछ उत्तम उपदेश दीजिए।" फ़कीर ने उत्तर दिया,—"जब तुम अपनी शक्ति का उपयोग करो, तब इस बात का ख़याल रक्खो कि धन और राज्य एक के पास से दूसरे के पास चले जाते हैं।"

शिक्षा—इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है, कि धनवान् और शक्तिमान् पुरुष को अभिमान न करना चाहिए और ग़रीब लोगों को नफ़रत की नज़र से न देखना चाहिए। क्योंकि इस दुनिया की छुटाई-बड़ाई उसी समय तक है जबतक प्राण नहीं निकलते। मरने पर श्मशान में सभी समान हो जाते हैं। श्मशान-भूमि में राजा-प्रजा, अमीर-ग़रीब, दाता-भिखारी सब की ख़ाक एक हो जाती है। वहाँ उँचाई-निचाई कुछ नहीं रहती, इसलिए इस बिजली की सी चमक के समान चञ्चल जीवन और धन ऐश्वर्य्य पर अभिमान करना वृथा है।

उन्तीसवीं कहानी।

गर न बूदे उमेद राहतो रञ्ज।
पाये दर्वेश बर फ़लक बूदे॥ १॥
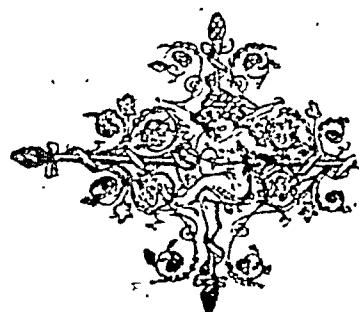
एक वज़ीर मिश्र देश के ज़ुलनून के पास गया और उस से आशीर्व्वाद माँग कर कहा,—"मैं रात-दिन बादशाह की ख़िदमत में लगा रहता हूँ, क्योंकि मैं उस से कुछ उपकार की आशा करता हूँ अतः उसके भय से डरता रहता हूँ। ज़ुलनून ने रोकर कहा—"तुम बादशाह के भय से उसकी जितनी सेवा करते हो, अगर तुम उतनी ही सेवा ईश्वर की करते तो तुम्हारी गिनती प्रशस्त साधुओं में हो जाती।"

अगर इनाम और सज़ा की आशा न होती तो फ़क़ीर का क़दम देवलोक में पहुँच जाता ; और अगर वज़ीर जितना बादशाह से डरता है उतना ईश्वर से डरता तो स्वर्गीय दूत हो जाता।

शिक्षा—इस कहानी से यह नसीहत मिलती है, कि मनुष्य को ईश्वर के सिवा किसी से न डरना चाहिए। मनुष्य जितना

संन्यासी को यदि वासना न रहे तब सब से बड़ी ऊँचाई (आस्मान) भी उसके पदतल के नीचे ही हो जाती है। सुख दुःख रूप द्वन्द्व से छूट जाने पर जीव मुक्त हो जाता है॥ १॥

मनुष्य से डरता है, अगर उतना ही ईश्वर से डरे तो उस से कभी कोई बुरा काम न हो और वह स्वर्ग का देवता हो जाय।

तीसवीं कहानी।

दौराने वक़ा चो बादे सहरा बुगुज़िश्त।
तलख़ी व खुशी व जिश्तो ज़ेबा बुगुज़िश्त ॥ १ ॥

एक बादशाह ने किसी निर्दोष मनुष्य के प्राण-वध की आज्ञा दी। उसने कहा,—"ऐ बादशाह! आप अपना क्रोध मुझ पर उतार कर अपने कष्ट का बीज न बोइये।" बादशाह ने पूछा—"मैं कष्ट का बीज किस तरह बोता हूँ?" उसने जवाब दिया, "मेरे कष्ट का अन्त तो क्षण भर में हो जायगा; परन्तु उसका पाप तुम्हारे सिर पर सदा बना रहेगा। जीवन का समय जङ्गल की वायु की भाँति गुज़र जायगा। कटुता, मधुरता, कुरूपता और सुन्दरता आदि

. जिन्दगी भी हवा के झोंके की तरह गुजर जाती है; उस समय कड़ुता, मधुरता अच्छा बुरा सभी का ख़ात्मा हो जाता है ॥ १ ॥

सब का अन्त हो जायगा। अत्याचारी समझता है, कि वह हम पर अत्याचार करता है; लेकिन् उसका अत्याचार हमसे गुज़र कर उसी की गर्दन पर रह जाता है।" यह उपदेश बादशाह के हक़ में मुफ़ीद हुआ। उसने उसकी जान बख़्श दी और उससे माफ़ी माँगी।

शिक्षा—निरपराध पुरुषों को दण्ड देना अपने आपको दण्ड देना है; क्योंकि एक न एक दिन उसके लिए हमें किसी गुरुतर विपत्ति में फँसना पड़ता ही है। कृतकर्म का फल भोगना पड़ता ही है।

इकत्तीसवीं कहानी।

खिलाफ़े राय सुलताँ राय जुस्तन।
बखूने ख़ेश बाशद दस्त शुस्तन॥ १॥

नौशेरवाँ के मन्त्री ज़रूरी-ज़रूरी राजकीय विषयों पर सलाह कर रहे थे। प्रत्येक मनुष्य ने अपनी-अपनी समझ के अनुसार उत्तम सलाह दी। इसी भाँति बादशाह ने भी अपनी राय दी। बुज़रचेमेहर ने बादशाह की

राजा की सम्मति के प्रतिकूल अपनी सम्मति प्रकट करना—अपने ही खून से अपने हाथ धोने की चेष्टा करना है॥ १॥

राय पसन्द की। दूसरे मन्त्रियों ने बुज़रचेमेहर से एकान्त में पूछा, कि आपने इतने बुद्धिमानों के मुक़ाबले में बादशाह की राय ही क्यों पसन्द की। उसने उत्तर दिया— "कोई नहीं जानता कि क्या होगा। प्रत्येक मनुष्य की राय ईश्वर पर निर्भर है। कौन जानता है कि मेरी राय का फल अच्छा होगा अथवा बुरा; इसलिए बादशाह की राय का ही समर्थन करना अच्छा है। अगर बुरी घटना घटेगी, तो मैं आज्ञापालन का आश्रय लेकर अपने तईं झिड़कियों से बचा सकूँगा। जो लोग बादशाह के विचार से अपना विचार भिन्न रखने की चेष्टा करते हैं, वे अपने ही ख़ून में हाथ धोते हैं। अगर बादशाह दिन को रात कहे तो बुद्धिमान को चाहिए कि वह यह कहे—देखिये, वह चाँद और सप्तर्षि मण्डल है।"

शिक्षा—यह कहानी हमें परले सिरे का आज्ञापालन करना सिखाती है। कुछ राजा बादशाहों पर ही मुनहसिर नहीं है। हम लोग जिसकी अधीनता—मातहती—में हों, हमें अपने अफ़सर या मालिक की हाँ में हाँ मिलानी उचित है। मालिक या अफ़सर के विरुद्ध बात कहने से सिवा हानि के लाभ किसी हालत में भी नहीं हो सकता। जो अपने अफ़सर या स्वामी की हाँ में हाँ मिलाते हैं, उन्हीं की राय का समर्थन करते हैं, वे सदा सर्व्वदा आनन्द करते हैं और उन्हें कभी शोक-सन्तप्त होना नहीं पड़ता।

बत्तीसवीं कहानी।

अगर रास्त मीख़्वाही अज़ मन शुनों।
जहांदीदा बिसियार गोयद दरोग़ ॥ १ ॥

एक फ़रेबी अपनी जटाओं को लपेट कर, अपने तईं अली की सन्तान बताता हुआ, हिजाज़ के यात्रियों के दल के साथ नगर में दाख़िल हुआ। उसने अपने तईं मक्का का यात्री बताया और एक मरसिया बादशाह के सामने पेश किया, जिसे वह अपना बनाया हुआ कहता था। एक दरबारी ने जो उसी साल यात्रा करके लौटा था, कहा—"मैंने इसे ईदुलज़ुहा पर बसरे में देखा था, फिर यह हाजी किस तरह हो सकता है?" एक और दरबारी कहने लगा—"इसका बाप ईसाई है और वह मलातिया में रहता है; यह पवित्र वंशीय कैसे हो सकता है?" उन लोगों ने उस के पदों को दीवाने अनवरी में से ढूँढ़ निकाला। बादशाह ने हुक्म दिया कि इसे दण्ड देकर बाहर निकलवा दो और इससे यह पूछो कि तू इतना झूँठ क्यों बोला। उसने जवाब दिया—"हे पृथ्वीनाथ! मैं एक बात और कहूँगा, यदि वह बात सच न हो तो आप जो दण्ड देंगे मेरे लिए

यह बात सच है कि बहुदर्शी पुरुष ही बहुत झूठ बोला करते हैं। मूर्ख आदमी का झूठ भी मामूली ही होता है॥ १ ॥

वही ठीक होगा।" बादशाह ने पूछा—"वह क्या बात है ?" उसने जवाब दिया—"अगर कोई दूध-दही बेचने वाला आपके पास छाछ लाता है, तो उसमें दो हिस्सा पानी और एक हिस्सा दही रहता है। अतएव यदि इस गुलाम ने कोई बात अविवेकता से कही हो तो नाराज़ न हूजिए ; क्योंकि मुसाफ़िर अनेक झूँठ बोला करते हैं।" बादशाह ने कहा—"इसने अपनी ज़िन्दगी में इस से अधिक सच्ची बात नहीं कही है; अतः यह जो कुछ माँगता है इसे वही दिया जाय।"

शिक्षा—इस कहानी का सारमर्म्म यही है कि जो जहाँदीदा अर्थात् संसार देखा हुआ मनुष्य होता है, वह बहुत कुछ मक्कारी और चालाकी भी कर सकता है। पर यह कोई अनुकरणीय गुण नहीं।

तेतीसवीं कहानी।

कहते हैं कि एक वज़ीर अपने से नीचे दर्जे के लोगों पर बहुत मिहरबानी रखता था और प्रत्येक मनुष्य को सुख देने की चेष्टा किया करता था। एक समय जब बादशाह उससे नाराज़ हो गया, तो सब लोगों ने मिल कर उसके छुड़ाने की चेष्टा की और जिन लोगों की मातहती में वह

क़ैद किया गया था उन सब लोगोंने उसे बिल्कुल तकलीफ़ न होने दी। दूसरे अमीर-उमरा ने बादशाह के सामने उसके गुणों की प्रशंसा की। परिणाम यह हुआ, कि बादशाह ने उसका अपराध क्षमा कर दिया। एक नेक आदमी को जब इस घटना का हाल मालूम हुआ, तो उसने कहा—"अपने मित्रों के प्रसन्न करने के लिए अपने बाप-दादे का बाग़ीचा बेच दो। अपने शुभचिन्तक की रसोई तय्यार होने के लिये अपने घर का सामान-असबाब भी जला देना उचित है। बुरे आदमी के साथ भी भलाई ही करनी चाहिए; क्योंकि एक टुकड़ा रोटी देकर कुत्ते का मुँह बन्द कर देना ही सब से अच्छा है।"

शिक्षा—इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हमें प्रत्येक मनुष्य के साथ भला बर्त्ताव करना चाहिए। भलों के साथ भलाई का व्यवहार करना तो ठीक ही है; किन्तु दुष्ट, बदकार और नीचों के साथ भी भलाई करने में ही अपनी भलाई है।

चौंतीसवीं कहानी।

वले मर्द आँकसस्त अजरूये तहक़ीक़।
के चूं खश्म आयदश बातिल न गोयद ॥ १ ॥

हारूँ नरशीद के लड़कों में से एक लड़का क्रोध में लाल-पीला होकर अपने बाप के पास गया और उससे शिकायत की अमुक अफ़सर के पुत्र ने मेरी माँ के विषय में बुरी-बुरी बातें कही हैं। हारूँ ने अपने मन्त्रियों से पूछा कि ऐसे अपराध की सज़ा क्या होनी चाहिए। एक ने कहा उसे जान से मरवा डालिए; दूसरे ने कहा उसकी जीभ कटवा लीजिए; तीसरे ने कहा कि उस पर जुरमाना कीजिए और अपने राज्य से निकलवा दीजिए। हारूँ ने कहा—"मेरे प्यारे पुत्र! उसे क्षमा कर दो। अगर तुम में क्षमा करने योग्य मानसिक बल नहीं है, तो तुम भी बदले में में उसकी मा को गाली दे लो। किन्तु बदले की सीमा का उल्लङ्घन मत कर जाओ; अन्यथा हमही उलटे पाप के भागी हो जायँगे। बुद्धिमानों की राय में वह शख़्स बहादुर नहीं है जो मतवाले हाथी से लड़ता है; लेकिन वह शख़्स सचमुच बुद्धिमान् है जो गुस्से की हालत में भी मुँह से बेजा बात

बड़ा आदमी वही है जो गुस्से में भी आत्मसंयम किये रहता है॥

नहीं निकालता। एक दुष्टने किसीको गालियाँ दीं। उसने गालियाँ सह लीं और कहा कि यह होनहार जवान है। हममें क्या-क्या दोष हैं, इस बातको जितना हम जान सकते हैं उतना दूसरा नहीं जान सकता।"

शिक्षा—क्रोध के समय मन को वश में रखना चाहिए।

पैंतीसवीं कहानी।

कारे दरवेश मुस्तमन्द बरआर।
कि तुरा नीज कारहा बाशद ॥ १ ॥

मैं कुछ भले आदमियों के साथ एक नाव पर बैठा था; उसी समय हम लोगों के पास ही एक जहाज़ डूबा और दो भाई भँवर के बीच में पड़ गये। एक साथी ने मल्लाह से कहा कि, "यदि तुम इन दोनों भाइयों की जान बचाओ तो मैं तुम्हें एक सौ दीनार इनाम दूँ।" मल्लाह ने आकर एक को तो बचा लिया परन्तु दूसरा मर गया।

जरूरतमन्दों की जरूरतें पूरी कर, आखिर तू भी जरूरतें रखता है ॥१॥

मैंने कहा—"सच पूछिये तो उसकी ज़िन्दगी ही नहीं थी; इसी से वह पानी से पीछे निकाला गया।" मल्लाह हँसकर बोला—"आपका कहना सच है, परन्तु दूसरे मनुष्य के सम्बन्ध में मैं कुछ और ही कहना चाहता था। क्योंकि एक समय जब मैं जङ्गल में चलता-चलता थक गया, तब उसने मुझे अपने ऊँट पर चढ़ा लिया और दूसरे मनुष्य ने मुझे बचपन में कोड़ों से मारा था।" मैंने उत्तर दिया,—"सचमुच ईश्वर बड़ा न्यायी है, इसी से जो दूसरे का भला करता है, उसे भलाई ही प्राप्त होती है और जो दूसरे के साथ बुराई करता है उसे बुराई ही मिलती है।

शिक्षा—जैसा करना वैसा भरना।

छत्तीसवीं कहानी।

बदस्त आहके तफ़्ता कर्दन ख़मीर।
बे अज़ दस्त बर सीना पेशे अमीर॥ १॥

दो भाई थे; उनमें से एक बादशाह की नौकरी करता था और दूसरा मिहनत-मज़दूरी करके अपनी जीविका उपार्ज्जन किया करता था। एक दफ़ा अमीर भाई ने अपने ग़रीब भाई से कहा—"तुम बादशाह

अमीरों के उन सेवकों से जो सदा उनके सामने हाथ बांधे खड़े रहते हैं वे मज़दूर अच्छे हैं जिनके हाथ चूने में सने रहते हैं। मतलब मज़दूरों से है॥ १॥

की नौकरी क्यों नहीं करते, कि जिससे इतनी मिहनत और तकलीफ़ों से छुटकारा पाजाओ"। उसने जवाब दिया,—"तुम कुछ काम क्यों नहीं करते, जो ग़ुलामी से छुटकारा पाजाओ।" महात्माओं ने कहा है, कि मिहनत से कमा कर रोटी खाना और आराम से बैठना अच्छा है; किन्तु सोने का कमरबन्द पहन कर तावेदारी के लिए खड़ा रहना अच्छा नहीं। अमीर की सेवा में हाथों को छाती पर रक्खे रहने की अपेक्षा, उनसे चूना-ईंटे तय्यार करने का काम लेना अच्छा है। यह अमूल्य जीवन इन्हीं बातों की चिन्ताओं में बीता जाता है, कि गर्मी के मौसम में क्या खाऊँगा और जाड़े में क्या पहनूँगा। हे नीच पेट! एक ही रोटी में सन्तोष करले, कि जिससे तुझे ग़ुलामी में पीठ न झुकानी पड़े।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि आज़ादी से रहना और मोटा-झोंटा खाना अच्छा है; किन्तु ग़ुलामी की ज़ञ्जीरों में जकड़े रहकर सोना लादना अच्छा नहीं है। स्वतन्त्रतापूर्व्वक परिश्रम करके रोटी कमाना और पर्णकुटी में रहना अच्छा, किन्तु पराई तावेदारी करके महलों में रहना और सब तरह के ऐश-आराम करना भला नहीं है। सोने के पिञ्जरे में क़ैद होकर मोती चुगनेवाली चिड़िया से, जङ्गल में आज़ादी से घूम-फिरकर अपनी जीविका उपार्ज्जन करनेवाली चिड़िया हज़ार दर्जे अच्छी है। श्रीमान् पण्डित महावीरप्रसाद जी द्विवेदी (सरस्वती-सम्पादक) अपनी सेवा-वृत्ति विगर्हणा में लिखते हैं,—

चाहे कुटी अति घने वन में बनावे,
चाहे नमक विना कुत्सित अन्न खावे ।
चाहे कभी नर नये पट भी न पावे,
सेवा प्रभो, पर न तू पर की करावे ॥

सैंतीसवीं कहानी ।

अगर बिमुर्द अदू जाये शादमानी नेस्त ।
कि जिन्दगानिये मा नीज जाविदानी नेस्त ॥ १ ॥

न्यायी नौशेरवाँ के पास कोई यह समाचार लाया, कि ईश्वर की कृपा से आपका अमुक शत्रु मर गया। बादशाह ने पूछा—"क्या तुमने यह सुना है, कि परमेश्वर किसी उपाय से मेरी जान बचा सकेगा? मेरे शत्रु की मृत्यु से मुझे खुशी नहीं हो सकती; क्योंकि स्वयं मेरा ही जीवन अनन्त नहीं है अर्थात् किसी न किसी दिन मुझे भी मरना ही होगा।"

शिक्षा-दूसरे की मृत्यु पर चाहे वह शत्रु ही हो—हर्ष मनाना बुरा है।

दुश्मन के मरने की खुशी मत कर, आखिर तू स्वयं भी अमर नहीं है ॥१॥

अड़तीसवीं कहानी।

चो कारे बे फ़िज़ूले मन बर आयद।
मरा दरवै सुख़न गुफ़्तन न शायद॥ १॥

किसरा के दरबार में, कुछ बुद्धिमान लोग किसी विषय पर तर्क-वितर्क कर रहे थे। उस समय बुज़रचेमेहर चुपचाप बैठा हुआ था। लोगों ने पूछा, कि इस वाद-विवाद में आप क्यों नहीं बोले? उसने उत्तर दिया—"मन्त्री हकीमों के सदृश होते हैं और हकीम लोग केवल बीमारों को ही दवा दिया करते हैं; अत: जब मैं देखता हूँ, कि आप लोगों की सम्मति न्याययुक्त है, तब मैं उस में अपनी राय घुसेड़ना बुद्धिमानी के विपरीत समझता हूँ। जब कोई काम बिना मेरे हस्तक्षेप किये ही अच्छी तरह होता है, तब उस विषय में कुछ कहना मैं अनुचित समझता हूँ; किन्तु यदि मैं किसी अन्धे मनुष्य को कुएँ की तरफ़ जाते देखूँ और उस समय कुछ न बोलूँ, तो मैं दोषी हो सकता हूँ।"

शिक्षा-ज़रूरत के समय तो बोलना अच्छा है। बे मौक़े या बिना ज़रूरत बोलने से मौन रहना बहुत अच्छा है। कहा है—

"मौनं सर्वार्थ साधनम्।"

बिना बोले ही यदि मेरा काम होजाये तो मुझे फ़िजूल बात बनाने की क्या ज़रूरत है॥ १॥

उन्तालीसवीं कहानी ।

कीमियागर व गुस्सा मोंदह ओ रंज ।
अबलह अन्दर खराबा याफ़्ता गंज ॥ १ ॥

हारूँनूर्रशीद ने मिश्र देश को फ़तह करके कहा—"उस बाग़ी के मुक़ाबले में जो मिश्र का राज्य अपने हाथ में होने से घमण्ड करता था और कहता था कि, मैं ईश्वर हूँ; मैं इस बादशाहत को अपने नीचे से नीचे ग़ुलाम को दे दूँगा। उसके पास खुज़ीब नामक एक महामूर्ख मिश्रनिवासी ग़ुलाम रहता था। उसने वह बादशाहत उसी को देदी। लोग कहते हैं, इस शख़्स की विद्या और बुद्धि इतनी अधिक थी, कि जब मिश्री किसानों ने इसके पास नालिश की, कि हम लोगों ने नील नदी के किनारे जो रूई बोई थी, वह अकाल-वृष्टिकी वजह से नष्ट हो गयी है; तब उनकी बात सुनकर उसने कहा कि तुम लोगोंको ऊन बोना चाहिए। यह सुनकर एक विचारवान् मनुष्य बोला—"यदि ज्ञान ही पर धन-दौलत की वृद्धि का मदार होता, तो मूर्ख की तरह

रसायन-शास्त्री गुस्सा खाकर मरगया और बेवक़ूफ़ ने खण्डहर में ख़जाना पालिया—इससे यही मालूम होता है कि विद्या बुद्धि से उतना काम नहीं निकलता जितना प्रारब्ध से। भाग्यं फलति सर्वत्र।

किसी को कष्ट न उठाना पड़ता ; किन्तु ईश्वर एक मूर्ख को इतना धन-धान्य प्रदान करता है, जिस से सैकड़ों बुद्धिमानों को आश्चर्य होता है !" दौलत और हुकूमत का मिलना बुद्धिमानी पर मुनहसिर नहीं है; बिना ईश्वर की सहायता के ये चीज़ें नहीं मिल सकतीं। संसार में प्रायः यह देखा जाता है, कि मूर्खों का मान और बुद्धिमानों का अपमान होता है। रसायन तय्यार करनेवाला दुःख और मुसीबत में मरा और एक मूर्ख ने खण्डहर में ख़ज़ाना पाया।

शिक्षा–इस कहानी का सारमर्म यही है, कि धन-दौलत और ऐश्वर्य्य का मिलना अक़ल पर मुनहसिर नहीं है। कर्म-फल या ईश्वर-कृपा से ही ये चीज़ें मिलती हैं। देखते हैं, कि हज़ारों पण्डित, अक़ल के पुतले, जूतियाँ चिटख़ाते फिरते हैं, उन्हें कोई दमड़ी को भी नहीं पूछता, किन्तु महा मूर्ख अक़ल के दुश्मन मौज उड़ाते हैं और बड़े-बड़े बुद्धिमान उनकी देहली की धूल साफ़ करते हैं।

चालीसवीं कहानी।

हर्गिज़ ओरा बदोस्ती मपसन्द।
कि रवद् जाये नापसन्दीदा॥ १॥

लोग किसी बादशाह के पास चीन देश की एक छोकरी ले गये। बादशाह नशे में चूर था। उसने उससे सहवास करना चाहा; लेकिन उस लड़की ने उसकी बात मानने से इनकार कर दिया। इस बात से बादशाह को इतना ग़ुस्सा आया, कि उसने उस कन्या को एक अपने हब्शी ग़ुलाम के हवाले कर दिया। इस मनुष्य का ऊपर का होंठ उसके नथने तक चढ़ा हुआ था और नीचे का होंठ छाती तक लटकता था। इसकी सूरत ऐसी थी, कि सखरा राक्षस भी उसे देखकर डरके मारे भाग जाता। उसकी बग़लों से मैले का झरना झरता था। अगर तुम उसे देखते तो यही कहते कि सँसार भर में इससे अधिक बदसूरत और कोई न होगा। उसका रूप ऐसा बुरा और घिनावना था, कि जिसका बयान करना असम्भव है। उसकी बग़लमें से, ईश्वर हम लोगों की रक्षा करे, भादों के महीने में धूप में रक्खी हुई लाश की तरह दुर्गन्ध निकलती थी। हबशी ने, मस्ती के जोश में आकर, उस कन्या का सतीत्व नष्ट कर दिया। जब

जिसकी संगत अच्छी नहीं उसको मित्र मत बनाओ॥ १॥

सवेरा हुआ, तब बादशाह ने उस लड़की की खोज की । लोगों ने रात का सारा हाल बादशाह को कह सुनाया। बादशाह बड़ा क्रुद्ध हुआ ; उसने हबशी और लड़की दोनों को हाथ पैर बाँधकर, राजमहल की छतके ऊपर से, खाई में डाल देने का हुक्म दिया। एक नेक-मिज़ाज वज़ीर ने पृथ्वी चूम कर बादशाह से दया-प्रार्थना की और कहा—"हबशी इस मामले में अपराधी नहीं है ; क्योंकि सभी नौकर और ग़ुलाम शाही इनाम-इकराम पाया करते हैं।" बादशाह ने कहा—"उसे एक रात भर तो अपना जोश दबा रखना उचित था।" उसने जवाब दिया—"अफ़सोस ! मेरे मालिक, क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी है कि जब कोई प्यास के मारे घबराता हुआ किसी निर्मल झरने पर पहुँच जाता है, तब यह खयाल मत करो, कि वह मतवाले हाथी से भय खायगा। इसी तरह अगर कोई भूखा नास्तिक एक भोजन से भरे हुए मकान में अकेला बन्द कर दिया जाय, तो वह रमज़ान के रोज़े का खयाल रक्खेगा, इस बात का विश्वास मुझ को नहीं होता।" बादशाह इस दिल्लगी से ख़ुश हुआ और बोला कि इस हबशी को मैं तुम्हारी भेंट करता हूँ, परन्तु इस लड़की का क्या करूँ ?" उसने उत्तर दिया, कि इसे इसी हबशी के हवाले कर दीजिये ; क्योंकि इसका झूँठा खाना किसी को पसन्द नहीं है।

शिक्षा—जो गन्दे स्थानों में आया-जाया करता है, उसकी सङ्गति हरगिज़ मत करो। मनुष्य यद्यपि प्यासा हो क्यों न हो, किन्तु

वह दुर्गन्धयुक्त साँसवाले के झूठे और मीठे पानी को नहीं पीयेगा। जबकि नारङ्गी कीचड़ में गिर पड़ी है, तो वह फिर बादशाह के हाथ में नहीं दी जा सकती। प्यासे मनुष्य का दिल उस पानी पर कैसे चलेगा जो पीब टपकते हुए होठों से छुआ गया है?

शिक्षा-घृणित चीज़ के सहवास से अच्छी चीज़ भी बुरी बन जाती है।

इकतालीसवीं कहानी।

ईं हमः हेचस्त चूँ मी बुगुज़रद।
बख़्तो तख़्तो अम्रो नही व गीरोदार॥

लोगों ने सिकन्दर से पूछा—"आपने पूरब से पश्चिम तक का देश कैसे विजय किया? आपके पहले जो बादशाह हो गये हैं, वह दौलत में, मुल्क में, उम्र में और सेना की संख्या में आप से बढ़ कर थे; किन्तु उन्हों ने ऐसा विजय-लाभ नहीं किया।" उसने जवाब दिया—"जब

धन सम्पद् आज्ञा निषेध, धर पकड़ बीत जाने पर ये सभी बेकार हैं।

मैंने ईश्वर की सहायता से किसी राज्य पर विजय प्राप्त की, तो मैंने प्रजाओं पर अत्याचार न किया और उनके बादशाहों की सदा तारीफ़ की। जो लोग बड़ों की निन्दा करते हैं, उन्हें बुद्धिमान् लोग बुद्धिमान् नहीं समझते। नीचे लिखी हुई तमाम चीज़ें जबकि गुज़र जाती हैं, हेच हैं,—दौलत और बादशाहत, आज्ञा और निषेध, युद्ध और विजय। जो लोग संसार में अच्छा नाम कमा कर मरे हैं, उनका नाम बदनाम न करो; जिससे बदले में तुम्हारा नाम भी अमर हो जाय।"

शिक्षा—जीती हुई जातियों की मानरक्षा करने से ही राज्य को स्थैर्य प्राप्त होता है। उनकी निन्दा करने से या उनको कष्ट देने से, वे बहुत दिनों तक उसके राज्य में रहना पसन्द नहीं करतीं।
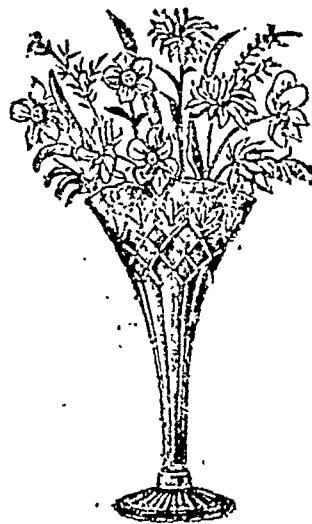
दूसरा अध्याय।

साधुओं की नीति।

पहली कहानी।

वर नदानी के दर निहानश चीस्त।
मुहतसिब रा दरून खानह चे कार ॥ १ ॥

किसी मनुष्य ने एक योगी से पूछा—"जिस भक्त को लोग गालियाँ देते हैं, उसे तुम कैसा समझते हो?" उसने उत्तर दिया कि हमारे देखने में तो उसमें कोई बाहरी दोष नहीं है; परन्तु उसके अन्दर क्या है सो हम नहीं जानते। यदि तुम्हें कोई ऐसा धर्माभ्यासी

जब तुझे भीतरी हाल मालूम नहीं है अर्थात् बाहरी किसी बात से उस का कोई दोष दिखाई नहीं देता तब उसको बुरा समझने की कोई जरूरत नहीं। घरकी भीतरी बातों से किसी का क्या सम्बन्ध है ?

मिले, कि जिसके भीतर का हाल तुम्हें न मालूम हो, तो उसे सच्चा धर्मात्मा और सत्पुरुष समझो? मैजिस्ट्रेट को घर के भीतरी भाग से क्या सरोकार है?

शिक्षा—अकारण दूसरे के लिए बुरी राय क़ायम करने से कोई फ़ायदा नहीं।

—:०:—

दूसरी कहानी।

—:०:—

मन नगोयम के ताअतम बपज़ीर।
क़लमे अफ़् बर गुनाहम कश ॥ १ ॥

मैंने एक फ़क़ीर को देखा कि वह मक्के के मन्दिर की देहली पर माथा रक्खे रो-रो कर यह कह रहा था—"हे क्षमावान् दयालु परमेश्वर! आप जानते हो, कि एक अज्ञानी और अन्यायी—पापी—मनुष्य से क्या हो सकता है कि जो वह आपके अर्पण करे। मेरे दूषणों के लिए मुझे क्षमा प्रदान कीजिए; क्योंकि मैंने जो कुछ धर्म का काम

मेरा यह दावा नहीं है कि मैं ने तेरी सेवा की है—इसलिए तुझे प्रसन्न होना चाहिए। मेरी तो यह प्रार्थना है कि तू मेरे पापों को क्षमा कर दे। मेरा कोई अधिकार नहीं है बल्कि मैं भिक्षा मांगता हूँ।

किया है, मैं उसके बदले का बिल्कुल हक़दार नहीं हूँ। पापी लोग अपने पाप के लिए पश्चात्ताप करते हैं। जो लोग परमेश्वर को जानते हैं, उनसे यदि उपासना में किसी प्रकार का दोष हो जाता है, तो उसके लिए वे उससे माफ़ी माँगते हैं।

"भक्त लोग अपनी भक्ति के पुरस्कार के प्रत्याशी रहते हैं और सौदागर लोग अपने माल का मूल्य चाहते हैं। परन्तु मैं सेवक हूँ, मैं आज्ञाकारिता नहीं वरन आशा लाया हूँ और व्यापार करने नहीं वरन भिक्षा माँगने आया हूँ। तू अपनी योग्यता के अनुसार मुझ से व्यवहार कर, मेरी तपस्या के अनुसार मुझ से बर्त्ताव न कर। मेरा मुँह और सिर तेरी देहली पर है, तू चाहे माफ़ कर, और चाहे क़त्ल कर, आज्ञा करना तावेदार का काम नहीं है। तू जो आज्ञा करेगा मैं वही करूँगा।" काबे के द्वार पर मैंने एक तपस्वी को देखा। वह चिल्ला-चिल्ला कर रोता हुआ कह रहा था—"मैं तुझसे यह प्रार्थना नहीं करता, कि तू मेरी सेवा को ग्रहण कर; मैं यह चाहता हूँ कि तू मेरे पापों पर क्षमा का क़लम चला दे।"

शिक्षा—"क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को अपराध।" अंगरेज़ी में भी एक कहावत है—To err is human, to forgive is divine.

तीसरी कहानी।

रूये बर ख़ाक इज्ज़ मी गोयम।
हर सहर गह के बाद मी आयद॥ १॥
ऐ के हरगिज़ फरामुश्त न कुनम।
हेचत अज़ बन्दा याद मी आयद॥

अब्दुलक़ादिर गीलानी, मक्के के मन्दिर के द्वार के सामने, कङ्कड़ों पर सिर रखकर, यह कह रहा था—"हे परमेश्वर! मेरे गुनाहों को माफ़ कर। लेकिन, यदि तू मेरी सजा करे तो मुझे आक़बत के समय अन्धा करके उठा लेना, कि जिस से पुण्यात्मा लोगों के सामने मुझे शर्मिन्दा न होना पड़े।"

"रोज़ प्रातःकाल के समय, जब मैं दुर्बलता के कारण पृथ्वी-पर मुँह रख कर औंधा पड़ जाता हूँ और ध्यान में सतर्क होता हूँ, तो मैं यही कहता हूँ कि हे ईश्वर! मैं तुम्हें कभी न भूलूँगा। क्या आप मेरा ख़याल करेंगे?"

ईश्वर तेरा मुझे उस समय भी ध्यान रहता है जिस समय ठंडी हवा के झोंके से और आदमी नींद का आनन्द लेते हैं। पर यह तो बता कि तुझे भी मेरा किसी समय ध्यान आता है?

चौथी कहानी।

हर के ऐबे दीगराँ पेशे तो आवुर्दो शमुर्द।
बेगुमाँ ऐबे तो पेशे दीगराँ ख़्वाहद बुरद॥

एक चोर किसी धार्म्मिक मनुष्य के घर में घुसा, किन्तु बहुत खोज-ढूँढ़ करने पर जब उसे कुछ न मिला, तब वह बहुत दुःखी हुआ। उस भले आदमी ने उसकी यह अवस्था देखकर, अपने बिस्तरेमें से कम्बल निकाल कर उसके रास्ते में, जिधर से वह जानेवाला था, फेंक दिया कि जिस से वह निराश न हो जाय। हमने सुना है, कि जो असल धर्म्मात्मा होता है, वह अपने दुश्मन का भी दिल नहीं दुखाता। तू जोकि सर्व्वदा अपने मित्रों से झगड़ा तकरार किया करता है, उस पद को कैसे पा सकता है? धर्म्मात्मा लोग मुँह के सामने और पीठ-पीछे एक ही प्रकार का स्नेह रखते हैं। वे लोग वैसे नहीं होते, कि जो तुम्हारे पीठ-पीछे तुम्हारी निन्दा करते हैं, परन्तु मुँह के सामने तुम्हारे लिए मरने को तय्यार रहते हैं; तुम्हारे सामने बकरी के बच्चे की तरह नम्र

दूसरे की बुराई करने वाले से तू यह आशा मत रख कि वह दूसरों के सामने तेरी प्रशंसा करेगा। जो औरों की तेरे सामने बुराई करता है, वह तेरी भी औरों के सामने बुराई करेगा।

रहते हैं और तुम्हारे पीछे मनुष्याहारी भेड़िये की तरह हो जाते हैं। जो कोई तुम से तुम्हारे पड़ौसी के दोष वर्णन करता है, वह तुम्हारा दोष भी अवश्य दूसरों के सामने प्रकट करेगा।

शिक्षा—साधु पुरुषों का स्वभाव होता है, कि वे अपने दुश्मनों का भी दिल नहीं दुखाते। वे लोग आगे-पीछे समान प्रेम रखते हैं। लेकिन दुष्ट लोग सामने तो चिकनी-चुपड़ी बातें बनाया करते हैं, हर तरह अपना प्रेम-भाव दिखाते हैं; किन्तु पीठ-पीछे बुराइयाँ किया करते हैं। बहुत से भोले-भाले लोग उनकी निन्दाओं पर विश्वास कर लेते हैं और यह समझने लगते हैं कि यह अमुक मनुष्य की निन्दा करता है किन्तु हमारी निन्दा न करेगा। लेकिन उनको खूब ख़याल रखना चाहिए, कि जो मनुष्य और की बुराई तुम्हारे सामने करता है, वह तुम्हारी बुराई भी दूसरे के सामने अवश्य करेगा; क्योंकि दुर्ज्जनों का तो स्वभाव ही ऐसा होता है।

पाँचवीं कहानी ।

चो अज़ क़ौमे यके बेदानशी कर्द ।
न केहरा मंज़िलत मानद न मेहरा ॥

कुछ मुसाफ़िर परस्पर के दुःख-सुख के भागी होकर एक साथ सफ़र कर रहे थे। मैंने उन लोगों से कहा कि मुझे भी अपने साथ ले लो, पर उन लोगों ने इनकार कर दिया। तब मैं बोला, कि परोपकारी धर्म्मात्माओं का यह काम नहीं है कि वह ग़रीबों से मुँह फेर लें और उन्हें ऐसी सङ्गत से वञ्चित रक्खें। मैं उतनी शक्ति स्वयं प्राप्त करना जानता हूँ, कि जिससे मैं एक कामकाजी दोस्त बनूँ न कि लोगों का विघ्नकारी। यद्यपि मैं किसी जानवर पर सवार नहीं हूँ; किन्तु तोभी मैं आप लोगों का बोझा ढो ले चलूँगा। उनमें से एक ने कहा,—"जो बात तुमने सुनी है, उससे दुखी मत होना; क्योंकि थोड़ी ही देर हुई एक चोर दरवेश के रूप में हमलोगों की मण्डली में घुस आया था। कोई कैसे जान सकता है कि किस के जामे के नीचे क्या है। लिखनेवाला ही जानता है कि पत्र में क्या लिखा है। अब मैं अपनी कहानी की तरफ़ लौटता हूँ, दरवेश की हालत सब जगह

जातिका कोई व्यक्ति भी यदि ग़लती करता है तो उस जाति के छोटे बड़े सभी आदमियों की अप्रतिष्ठा हो जाती है—उनकी बुराई होती है ।

पसन्द की जाती है, इसलिए लोगों ने उसकी पवित्रता के सम्बन्ध में बिलकुल शङ्का न की और उसे अपने समाज में आने दिया। धर्म का बाहरी भाग दरवेशों की पोशाक होता है। मनुष्य की सूरत के लिए यही काफ़ी है। अपना कार्य्य-कलाप अच्छा रखो, फिर जैसा चाहो, वैसा कपड़ा पहनो; चाहो सिर पर ताज रखो, चाहो कन्धे पर निशान उठाये फिरो; क्योंकि गाढ़ा कपड़ा पहन लेने से ही कोई ईश्वर-भक्त नहीं बन जाता। साटिन की पोशाक पहिनो और सच्चे धर्मात्मा बनो। सांसारिक लालसा और वासनाओं के परित्याग करने से ही मनुष्य पवित्र आत्मा बन सकता है; केवल कपड़े बदलने से कुछ नहीं होता। युद्ध में मनुष्यत्व की ज़रूरत होती है; हिजड़े के बकतर किस कामका? संक्षिप्त हाल यह है, कि एक दिन हमलोगों ने अँधेरा होने तक सफ़र किया और रात में हम एक क़िले के नीचे सो गये। वह निर्दय चोर, स्नान करने का बहाना करके, अपने एक मित्र का लोटा ले गया और उसके बाद चोरी की तलाश में निकल गया। इस आदमी को देखो, कि जिसने साधुओं की पोशाक से अपना बदन ढाँक कर काबे के परदे को गधे की भूल बनाया। दरवेशों की नज़र से बाहर होते ही उसने, एक बुर्ज पर चढ़ कर, गहनों का एक डिब्बा चुराया। सवेरा होते-होते, यह काले हृदय वाला हतभागा बहुत दूर निकल गया और सवेरे इसके दोस्त बेचारों को (जिनको वह सोता छोड़ गया था)

लोगों ने क़िले में लेजाकर क़ैदखाने में बन्द कर दिया। उस दिन से हमलोगों ने अपनी मण्डली के न बढ़ाने और उदासीन बनकर जीवन निर्व्वाह करने का इरादा कर लिया है ; क्योंकि निर्ज्जन स्थान में ही शान्ति निवास करती है। जब किसी वंश का एक मनुष्य कोई मूर्खता का काम करता है तो फिर छोटे बड़े में कोई प्रभेद नहीं रह जाता, सब के सब अपमानित होते हैं। क्या तुमने यह नहीं सुना, कि चरागाह का एक ही बैल गाँव के सारे बैलों को दूषित कर देता है।" मैंने उत्तर दिया—"उस प्रभावान परमेश्वर को धन्यवाद है! यद्यपि उन लोगों ने मुझे अपने समाज से अलग कर दिया है ; तथापि धर्मात्मा लोग जो सुख भोगते हैं, मैं भी उन सुखों से वञ्चित नहीं हूँ। क्योंकि मुझ को इस कहानी से ऐसी शिक्षा मिल गई है, कि जो हमारे जैसे आचार-व्यवहार के मनुष्य को बाक़ी के जीवन भर उपदेश देने का काम करेगी।"

समाज के एक उद्दण्ड मनुष्य की वजह से अनेक ज्ञानियों का दिल दुखता है। यदि तुम किसी हौज़ को गुलाब-जलसे भर दो और उसमें एक कुत्ता गिर पड़े तो उससे वह अपवित्र हो जायगा।

शिक्षा—आजकल भी ऐसे ढोंगी साधु बहुत मिलते हैं, जो वास्तव में साधु नहीं हैं; किन्तु उन्हों ने अपना ऊपरी पहनावा और ढंग ऐसा बना रखा है, जिससे लोग उन्हें असली साधु समझें। ऐसे बनावटी साधु भोले-भाले लोगों पर

अपना हाथ खूब फेरते हैं। इस कहानी का यह मतलब है, कि सच्चे साधुओं को अपना आचरण साधुओं का सा रखना चाहिए; सांसारिक विषय-वासनाओं से दूर रहना चाहिए। जिसे विषय-वासना नहीं सताती; जिसे किसी चीज़ की इच्छा नहीं रहती; जिसने तृष्णा को त्याग दिया है; वही सच्चा साधु है। वह इच्छानुसार मलमल, नैनसुख और मख़मल के वस्त्र पहनने पर भी निर्दोष साधु कहा जा सकता है; किन्तु जो लोग गेरुए या और क़िस्म के कपड़े पहनते हैं, चिथड़ों से शरीर ढाँकते हैं, राख धूल से शरीर रँगते है, किन्तु विषय-वासना को नहीं त्यागते, तृष्णा से पीछा नहीं छुड़ा सकते, वे साधु-वेशधारी होने पर भी साधु नहीं कहे जा सकते। उनको ठग और मक्कार कहना चाहिये। ऐसे ढोंगी साधु सच्चे साधुओं को भी बदनाम करते हैं। इनकी वजह से असली और नक़ली साधुओं का पहचानना मुश्किल हो जाता है। जिस तरह एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है, उसी तरह ढोंगी या नक़ली साधु सारे साधु-समाज को बदनाम करते हैं।

छठी कहानी।

तर्सम न रसी बकाबा ऐ एराबी।
कीं रह के तू मीरवी ब तुर्किस्तानस्त॥
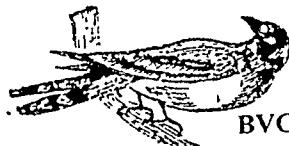
किसी बादशाह ने एक फ़क़ीर को भोज के अवसर पर निमन्त्रित किया। फ़क़ीर आकर पत्तल पर बैठा और उसको जितना कम खाने की आदत थी, उससे भी अधिक कम खाने लगा और जब ईश्वर की प्रार्थना करने को खड़ा हुआ तो रोज़ से और ज्यादा देर तक ठहरा, कि जिससे लोग उसकी ईश्वर-निष्ठा की प्रशंसा करें। ऐ अरब! मैं समझता हूँ कि तू काबे तक न पहुँचेगा; क्योंकि जो रास्ता तूने पकड़ा है वह तुर्किस्तान का है। जब वह घर पहुँचा तो उसने आज्ञा दी कि थाली परोसो मैं खाऊँगा। उसका बड़ा बेटा समझदार था, उसने कहा—"पिता जी! आप राजा के यहाँ भोज में गये थे, क्या वहाँ आपने कुछ नहीं खाया?" उसने जवाब दिया—"किसी उद्देश्य से मैंने उसकी उपस्थिति में कुछ नहीं खाया।" पुत्र ने कहा—"बारम्बार

ऐ अरब, तू काबा कभी न पहुँचेगा; क्योंकि तू ने जो रास्ता पकड़ा है, वह काबे का नहीं तुर्किस्तान का है। विपरीत पथ पर चलने से सिद्धि की प्राप्ति कभी सम्भव नहीं।

ईश्वर की प्रार्थना कीजिये ; क्योंकि आपने ऐसा कोई कर्म नहीं किया, जिससे आपका उद्देश्य सिद्ध होगा।"

तू अपने गुणों को हथेली पर रखता है और दोषों को बग़ल में छिपाता है। अरे घमण्डी हतभागे! तू दुर्दिन में अपने क्षुद्रव्य-से क्या ख़रीदने की उम्मेद रख सकता है।

शिक्षा—इस कहानी का सारमर्म्म यह है, कि जो लोग मनुष्यों में प्रतिष्ठा लाभ करने के लिए, अपने तईं पुजाने के लिये, साधु-महात्माओं का सा ढोंग करते हैं ; किन्तु लोगों की नज़र से बाहर होकर असाधुओं का सा काम करते हैं, वे अच्छा काम नहीं करते। वे भूल करते हैं ; इस राह पर चलने से वे ईश्वर की राह को छोड़ते हैं और कुराह पर चलते हैं। अन्तमें, ऐसे बनावटी साधुओं का परिणाम खोटा होगा। उन्हें ईश्वर-दर्शन हरगिज़ न होगा।
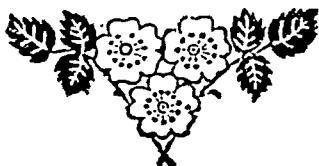
सातवीं कहानी।

न बीनद मुद्दई जुज़ ख़ेश्तन रा।
के दारद पर्दये पिन्दार दरपेश॥ १॥
गरत चश्मे ख़ुदा बीनी ब बख़्शद।
न बीनी हेच कस आजिज़तर अज़ ख़ेश॥ १॥

मुझे याद है, कि मैं बाल्यावस्था में बड़ा धार्मिक था। उन दिनों मैं रात ही में उठता था और अपनी पूजा और व्रत आदि भी ठीक-ठीक समय पर किया करता था। एक रात को, मैं क़ुरान की पुस्तक को छाती से लगाये हुए, समस्त रात अपने पिता के सामने बैठा रहा। मैंने रात भर ज़रा आँख भी न मूँदीं, परन्तु आस-पास के सब लोग सो गये थे। मैंने अपने पिता से कहा—"ये लोग मुर्दे की तरह ऐसे सो गये हैं कि इनमें से एक भी मनुष्य इबादत के लिए सिर नहीं उठाता।" उसने उत्तर दिया—"बेटा! इस प्रकार लोगों का अपराध ढूँढ-ढूँढ कर निकालने से तो अच्छा था कि तुम भी सो जाते।" अहङ्कारियों को

मूर्ख आदमी अहंकार के वशवर्त्ती होकर अपने के सिवा दूसरों के दुःख-दर्द को बिल्कुल नहीं देखते, दूसरों के गुणों को भी नहीं जान पाते, यदि उनमें ईश्वर को देखने की शक्ति होती तो अपने को ही सब से अधिक नीचा समझते।

आँखों पर अहङ्कार का पर्दा पड़ा रहता है; इसलिए वे अपने सिवा दूसरे को कुछ नहीं समझते। यदि उनके नेत्रों में परमेश्वर को देखने की शक्ति होती, तो वे किसी को अपनी अपेक्षा शक्तिहीन न देखते।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि जो सच्चे साधु हैं, जो अभिमानरहित हैं, वे दूसरों में दोष नहीं ढूँढते; किन्तु जो अभिमानी हैं, उनकी दृष्टि दूसरों के दोष ढूँढने में ही रहती है। अभिमानी मनुष्य अपने तईं जगत् में सब से बड़ा, सब से गुणवान् और दोषहीन समझता है; किन्तु सच्चा महात्मा वही है, जिसे ज़रा भी अभिमान नहीं है। जिसमें अभिमान है, उसमें सब दोष हैं। अभिमान त्यागे बिना मनुष्य ईश्वर तक कभी नहीं पहुँच सकता। किसीने कहा है—

है तजस्सुस शर्त याँ मिलने को क्या मिलता नहीं।
है खुदी इनसान में जब तक खुदा मिलता नहीं।

आठवीं कहानी।

शख़्सम वचश्मे आ़लिमयाँ ख़ूब मनज़रस्त।
वज़ ख़ुब्से वातनम सरे ख़िजलत फ़गन्दःपेश॥ १॥

एक समाज में, समाज का प्रत्येक मनुष्य एक धार्म्मिक मनुष्य की प्रशंसा कर रहा था। उस धर्म्मात्मा ने सिर उठा कर कहा—"मुझ में क्या गुण और क्या अवगुण हैं, सो मैं ही जानता हूँ। तुमलोग मुझे केवल ऊपर से देखकर, मेरे अच्छे कामों की प्रशंसा करते हो; परन्तु मेरे भीतर क्या है सो तुम्हें नहीं मालूम।"

"आदमी मेरी बाहरी सूरत देखकर मुझे नेक समझते हैं; परन्तु अपने भीतर की नीचता के कारण, मैं शर्म से सिर झुका लेता हूँ। मनुष्य मोर को, उसके सुन्दर पङ्खों की वजह से, प्रशंसा करते हैं; पर वह अपने कुरूप पैरों के लिए लज्जित रहता है।"

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यही है, कि अपने गुण-दोषों को जितनी अच्छी तरह हम ख़ुद जानते हैं उतनी अच्छी तरह अन्य लोग नहीं जान सकते। मनुष्य को चाहिए कि अपने दोषों पर नज़र रक्खे और उन्हें छोड़ने की कोशिश करे।

मेरे बाहरी ठाट से लोग मुझे नेक समझते हैं, परन्तु अपनी भीतरी नीचता के कारण मैं अपना सिर नीचे झुकाये हुए हूँ।

नवीं और दशवीं कहानी।

अगर दर्वेश बर हाले बमाँदी।
सरे दस्त अज़ दो आलम बरफ़िशाँदी ॥

लिबनान पर्वत का एक धार्म्मिक मनुष्य, जिसकी ईश्वर-भक्ति की अलौकिक कार्यावली अरब भरमें प्रसिद्ध थी, दमश्क की बड़ी मसजिद में प्रविष्ट होकर, कुएँ के हौज़ के किनारे हाथ पैर धो रहा था, कि इतने में उसका पैर फिसला और वह पानी में गिर पड़ा और फिर बड़ी कठिनता से उस से बाहर निकला। जब लोग पूजा-पाठ से निवृत्त हुए, तब उसके एक साथी ने कहा कि मेरे मन में एक शङ्का है वह आपको दूर करनी होगी। शेख़ ने कहा—"क्या शङ्का है?" उसने उत्तर दिया,—"मुझे याद आता है कि आप अफ़्रि.का के समुद्र में पानी पर चलते थे, परन्तु आपका पैर बिलकुल नहीं भीगता था; लेकिन आज मैं देखता हूँ कि आप केवल एक पुरसे-भर पानी में गिर कर मरने की हालत को पहुँच गये थे, इसका क्या कारण है?" वह बहुत देर तक ध्यान में मग्न रहा और फिर ऊपर देखकर बोला—"क्या तुमने नहीं सुना कि संसार के सय्यद मुहम्मद मुस्तफा ने (ईश्वर उसको

यदि फ़क़ीर सदा एक सी हालत में रहता तो दोनों जहान ही उसके सामने गर्द होते।

शान्ति और सुखदे !) कहा था कि ईश्वर ने एक समय मुझे ऐसी शक्ति दी थी, कि जो किसी देव-दूत और ईश्वर के भेजे हुए पृथ्वी के पैग़म्बरों को भी मयस्सर नहीं हुई थी; परन्तु उसने यह कहने का दावा नहीं किया, कि ऐसी घटना हमेशा होती है और यह भी नहीं कहा कि जिबरईल और मेकाईल* में वैसी शक्ति नहीं थी। एक समय हफ़सा† और ज़ैनब को भी वैसी ही शक्ति दी गई थी। महात्माओं की दृष्टि में प्रकाश और अन्धकार दोनों हैं। वे जिसको चाहें उसे प्रकट कर दें और जिसे चाहें उसे गुप्त रक्खें। तू ही अपना मुँह दिखाता और फिर उसे छिपा लेता है। अपने गुणों को बढ़ाता हुआ, तू हमारी वासनाओं की वृद्धि करता है। तुझे प्रत्यक्ष देखकर मैं रास्ता भूल जाता हूँ। कभी अग्नि-शिखा उद्दीप्त होती है और कभी जल-सिञ्चन द्वारा निवृत्त हो जाती है; उसी कारण कभी तो तू मुझे प्रचण्ड अग्नि-शिखा में देखता है और कभी जल-तरङ्गों में डूबा हुआ पाता है।"

एक मनुष्य का लड़का खो गया था। (याक़ूब से मतलब है) किसी ने उस से कहा—"अरे भद्र-वंशज, बुद्धिमान् बूढ़े, जब तूने सुदूर मिस्रमें उसके जामे की गन्ध पाई, तब फिर कनआन के कुएँ में क्यों न देख सका?" उसने उत्तर दिया "हमलोगों की हालत चमकती हुई बिजली की तरह है, जो

* जिबरईल और मेकाईल दो फ़रिश्तों या ईश्वर-दूतों के नाम हैं।

† हफ़सा और ज़ैनब दो पैग़म्बरों के नाम हैं।

कभी झलकती और कभी लुप्त हो जाती है। कभी तो हम चौथे स्वर्ग में बैठे रहते हैं और कभी अपने पैर की पीठ भी नहीं देख सकते (अर्थात् पाताल को चले जाते हैं) यदि फ़क़ीर सर्व्वदा एक ही अवस्था में रहने पाता; तो वह दोनों जहान की आकांक्षा से निवृत्त हो जाता।"

ग्यारहवीं कहानी।

फ़हमे सुख़न गर न कुनद मुस्तमा।
क़ूवते तबा अज़ मुतकल्लिम मजोय॥ १॥
फ़ुसहते मैदां इरादत बयार।
तावज़नद मर्दे सुख़नगोये गोय॥ २॥

बलबक की बड़ी मसजिद में, मैं एक समाज के लोगों को उपदेश देने के ढँग से वक्तृता दे रहा था। उस समाज के लोग ऐसे शुष्क और मुर्दा-दिल थे, कि इस लोक में रहकर परलोक की राह अवलम्बन करने में बिलकुल असमर्थ थे (अर्थात् संसार का कार्य्य करते हुए, परलोक

जब सुनने वाले में समझने की योग्यता नहीं होती तब कहने वाले की बातका उस पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। पहले समझने की योग्यता पैदा करो, फिर तुम कहने वाले की बात से लाभ उठा सकोगे।

को पहुँचने का उपाय निरीक्षण करने में अशक्त थे)। मैंने देखा कि मेरे उपदेश का उनपर कुछ असर न हुआ और मेरी ईश्वर-भक्ति-रूपी अग्नि ने उनके हृदय-रूपी हरे जङ्गल को प्रज्वलित न किया। मैं उन जङ्गली जानवरों को उपदेश देता-देता और अन्धों को आईना दिखाता-दिखाता परेशान हो गया; परन्तु उद्देश्य सिद्ध न हुआ। बात-चीत की अविच्छिन्न शृङ्खला इतनी बढ़ी, कि क़ुरान* के इस पदका वर्णन आया:—"हम अपनी गर्दन के नस की अपेक्षा भी उसके निकट रहते हैं।" मेरा वाद यहाँ तक बढ़ा कि मैंने कहा—"मेरा मित्र स्वयँ मेरी अपेक्षा भी मेरे निकट है; परन्तु आश्चर्य यह है कि, मैं उससे दूर हूँ। मैं क्या करूँ और किस से कहूँ, क्योंकि वह मेरी गोद में है पर मैं उससे जुदा हूँ? मैं उसकी बात-चीतके मद से मतवाला हो गया हूँ और प्याले की दवाइयाँ (दारू) मेरे हाथ में हैं।" इसी समय उस मण्डली के निकट से एक मनुष्य गुज़रा। वह मेरे अन्तिम शब्दों से ऐसा उत्साहित हो गया और इतनी ताकीद के साथ नसीहत करने लगा, कि सब लोग वाह-वाह करने लगे और समाज एक अत्यन्त उत्साहजनक आनन्द में संयुक्त हो गया। मैंने कहा—"भगवन्! जो लोग तुझ से बहुत दूरी पर हैं, वे तुझे जानते हैं; पर जो लोग तुझ को नहीं जानते वे निकट होने पर भी तुझ से दूर हैं।" जब सुननेवाला बात को समझता नहीं, तब वक्ता के

* क़ुरान मुसलमानों का धर्म-ग्रन्थ है।

उपदेश का ज़रा भी असर नहीं होता । प्रथम सीखने की इच्छा को बढ़ाओ, कि जिससे वक्ता अपनी वक्तृता को अच्छी तरह कह सके और तुम पर असर डाल सके ।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यही है, कि ईश्वर हर दम मनुष्य के पास है । जो उसे अपने पास छोड़कर, दूसरी जगह खोजते फिरते हैं वे अज्ञानी हैं । जो लोग ईश्वर को जानते हैं वे उसके नज़दीक हैं ; किन्तु जो उसे नहीं जानते, वे उसके नज़दीक रहने पर भी उससे दूर हैं । दूसरी बात यह है, कि नसीहत देनेवाले को नसीहत का असर तभी हो सकता है जबकि सुननेवाले ध्यानपूर्वक सुनें ; अगर सुननेवाले ध्यान न दें तो वक्ता का बोलना व्यर्थ है ।

बारहवीं क़हानी ।

ख़ुशस्त ज़ेरे मुग़ीलाँ बराहे बादिया ख़ुफ़्त ।
शबे रहील वले तर्क जाँ बबायद गुफ़्त ॥ १ ॥

एक रात को, मक्के के वीरान जङ्गल में, नींद के मारे हिलने-डोलने की शक्ति से रहित होकर, मैं ज़मीन पर सिर रख कर लेट गया और मैंने ऊँट हाँकनेवाले से कहा कि मुझे छेड़ना मत । जब ऊँट मारे थकावट

---

१. सफ़र में फूल वाले पेड़ के नीचे, सड़क के किनारे, सोना निस्सन्देह बहुत अच्छा है पर उसमें जान जाने का भी डर है ।

के बोझा नहीं उठाता तब बेचारे मनुष्य के पैर कहाँतक आगे चलेंगे। जब मोटे-ताज़े मनुष्य का शरीर दुर्ब्बल हो रहा है, तब सम्भव है कि वह थकावट से मर जाय।" उसने जवाब दिया—"भाई आगे मक्का है और पीछे चोर हैं, आगे बढ़ चलो तो बच जाओ और यदि सोओगे तो मरोगे।" अकेसिया के पेड़ के नीचे, जङ्गल की सड़कपर, कूच की रात में सोना बहुत ही सुखद है; परन्तु यह खूब समझ लो कि वह सोना नहीं; जानका खोना है।

शिक्षा—वही आराम अच्छा है, जिसका परिणाम अच्छा हो।

तेरहवीं कहानी।

"आँके ब मुसीबते गिरफ़्तारम न बमासीयते।"

समुद्र के किनारे मैंने एक धार्म्मिक मनुष्य को देखा। उसके शरीर में चीते के पञ्जे का घाव था, जो किसी दवा से आराम न हो सका था। इस कष्ट-पूर्ण अवस्था में, वह बहुत काल तक रहा परन्तु सर्व्वदा ईश्वर को धन्यवाद देता रहता था। किसी ने पूछा कि तुम किसलिए धन्यवाद दिया करते हो? उसने कहा—"मैं इस बात के लिए

पापों में लिप्त होने से दुःखों में फँसा रहना अच्छा है।

धन्यवाद दिया करता हूँ कि मैं मुसीबत में गिरफ़्तार हूँ न कि पाप में। अगर वह प्यारा मित्र—ईश्वर—मेरे मार डालने का भी हुक्म दे, तो मैं अपनी जान जाने से कुछ भी भयातुर न हूँगा; लेकिन उससे पूछूँगा कि हे दीनबन्धो! इस दास ने क्या अपराध किया है, जिससे आप अप्रसन्न होगये हैं। यही ख़याल मेरे रञ्ज का सबब है।"

शिक्षा—इस कहानी का फ़क़ीर ईश्वर को अपना प्रिय मित्र मान कर कहता है, कि ईश्वर मुझे चाहे जितनी तकलीफें दे, मुझे मरवा डाले; किन्तु मैं अपनी जान के लिए उफ़ भी न करूँगा, जान जाने से मुझे कुछ दुःख न होगा। लेकिन अगर वह प्यारा मित्र—ईश्वर—मुझ से रूठ जाय, नाराज़ हो जाय, तो मुझे अत्यन्त दुःख होगा। सारांश यह है कि इस कहानी का फ़क़ीर ईश्वर की प्रसन्नता को अपनी जानसे भी बढ़ कर समझता है।
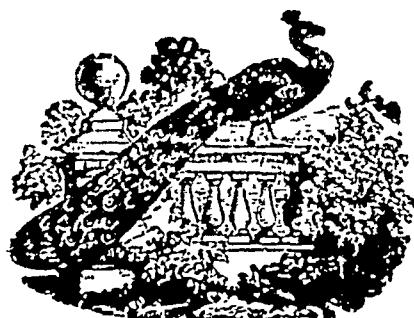
चौदहवीं कहानी ।

चूं फरोमानी बसख़्ती तन ब इज्ज़ अन्दर मदह ।
दुश्मनांरा पोस्त बर कन दोस्ताँरा पोस्तीन ॥ १ ॥

एक फ़क़ीर ज़रूरत पड़ने पर एक दोस्त के घर से कम्बल चुरा लाया। विचारक ने उसके हाथ काटने का हुक्म दिया। कम्बल के मालिक ने बीच में पड़ कर कहा कि मैं इसे दोषमुक्त करता हूँ। विचारक ने कहा कि हम तुम्हारे बीच में पड़ने पर भी न्यायानुसार दण्ड दिये बिना न रहेंगे। उसने कहा—"आपका कहना उचित है, किन्तु जो मनुष्य धर्मार्थ अलग की हुई चीज़ चुराता है उसे अङ्ग काटने की सज़ा नहीं दी जा सकती। क्योंकि न तो फ़क़ीर ही किसी चीज़ का मालिक होता है और न कोई फ़क़ीर का ही मालिक होता है। फ़क़ीर के पास जो कुछ होता है वह मुहताजों के ही लिये होता है।" विचारक ने उसको छोड़ दिया और कहा—"क्या संसार में तुझे और जगह न मिली जो तूने ऐसे मित्र के यहाँ ही चोरी की ?" उसने जवाब दिया—"ऐ मेरे मालिक, क्या तुमने नहीं

विपत्ति के समय हाथ पर हाथ रख कर निराश होकर मत बैठ जा—दुश्मनों की खाल और दोस्तों के कपड़े तक उतार ले ।

सुना है कि अपने दोस्तों के घर बुहारो किन्तु अपने दुश्मनों के दरवाज़े मत खटखटाओ। जब तुम पर आफ़त आवे तब निराश मत हो; अपने दुश्मनों की खाल उधेड़ो और अपने मित्रों की आरती उतार लो।"

पन्द्रहवीं कहानी।

हर सू दवद आँकस ज़े दरे ख़ेश वरआनद।
वाँरा कि वख़वानद वदरे कस न दवानद॥

किसी बादशाह ने एक महात्मा से पूछा—"क्या तुम कभी मेरा भी ख़याल करते हो?" उसने उत्तर दिया—"हाँ, उस समय जब मैं ईश्वर को भूल जाता हूँ।" जिसे ईश्वर अपने दरवाज़े से भगा देता है, वह जगह-जगह मारा-मारा फिरता है; लेकिन जिसे अपने पास बुला लेता है, उसे किसी के द्वार पर जाना नहीं पड़ता।

शिक्षा—जो मनुष्य ईश्वर-प्रेम में लीन रहते हैं, जो ईश्वर के

ईश्वर जिसको अपने द्वार से भगा देते हैं वह घर-घर टुकड़े मांगता फिरता है परन्तु जिसे वह अपने पास बुला लेते हैं उसे किसी के द्वार पर जाने की जरूरत नहीं रहती।

सिवा और किसी का आश्रय नहीं पकड़ते, जिन पर ईश्वर की कृपा होती है, वे जगत् में किसी सम्राट् या राजा-महाराजा किसी से भी भय नहीं खाते। ईश्वर-भक्तों को मनुष्य के आश्रय की कुछ ज़रूरत ही नहीं होती। जो ईश्वर-प्रेमी नहीं हैं, जिनका सच्चा भरोसा ईश्वर पर नहीं है, वह ईश्वर के प्यारे न होने के कारण संसारी मनुष्यों से डरते और उनका आश्रय टटोलते हैं। ईश्वर के प्यारे को न तो किसी से डर ही लगता है और न उसे किसी चीज़ की इच्छा ही होती है, अतएव उसे संसारी आदमियों से क्या प्रयोजन?
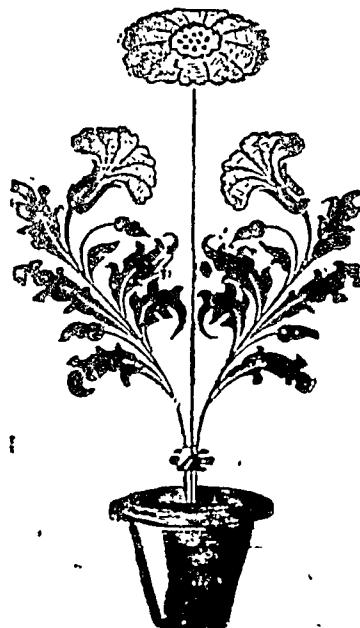
सोलहवीं कहानी।

दलक़त बचेकार आयद व तसबीहो मुरक़्क़ा।
खुदरा ज़े अमलहाये निकोहीदा वरीदार॥ १॥
हाजत ब कुलाह बर्की दाश्तनत नेस्त।
दर्वेशसिफ़त बाशो कुलाहे ततरी दार॥ २॥

किसी महात्मा ने स्वप्न में एक राजा को स्वर्ग में और एक तपस्वी को नरक में देखा। उसने पूछा—"इसका क्या कारण है कि राजा तो ऊँचा चढ़ा और तपस्वी नीचे गिरा; क्योंकि प्रायः इसकी उलटी बात ही देखी जाती है।" लोगोंने जवाब दिया—"राजा महात्माओं से प्रेम रखता था, इससे उसे स्वर्ग मिला और तपस्वी राजाओं की सङ्गति करता था, इससे वह नरक में डाला गया।" मोटे-झोंटे और ढीले-ढाले कुरते, माले और थेगड़ीदार कपड़ों से क्या फ़ायदा? बुरे कर्मों से बचो तो फिर पत्तों की टोपी की क्या ज़रूरत? तपस्वियों के से गुण रख कर भले ही तातारी मुकुट पहन लो—कोई हानि नहीं।

शिक्षा—इस कहानी का सारमर्म यह है, कि जो मनुष्य एक

जो साधु बुरे कर्म करता है पर बाहरी ठाट साधुओं जैसा रखता है वह मक्कार है। साधुओं जैसे गुण रखने वाले यदि राजाओं जैसे कपड़े पहनलें तो भी कोई हानि नहीं।

मात्र ईश्वर से प्रेम रखता है, उसके सिवा दूसरे की शरण नहीं जाता, सदा परोपकार में लगा रहता है, अपनी काया को अनित्य और क्षणभङ्गुर समझ कर अभिमान नहीं रखता, वह चाहे जैसा वेश रखने पर भी सच्चा योगी है। जिस मनुष्य में उपरोक्त गुण तो नहीं हैं, किन्तु वह पत्तों से बदन ढाँकता है, शरीर में खाक रमाता है, कोपीन बाँधता है या हज़ारों थेगड़ियों के कपड़े पहनता है, वह योगी नहीं, किन्तु योगी का स्वाँग भरनेवाला है।
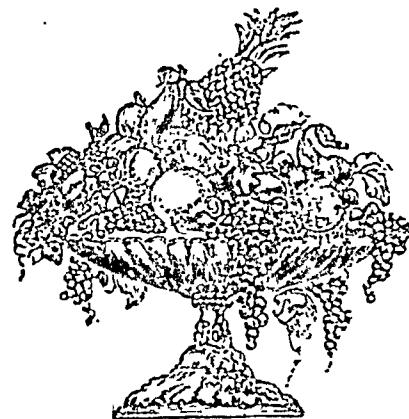
सत्रहवीं कहानी

न वा शुतर वा सवारम न चो उशतर ज़ेरबारम।
न खुदावन्दे रअय्यत न ग़ुलामे शहरयारम॥ १॥
ग़मे मौजूदो परेशानी मादूम नदारम।
नफ़से मीज़नम आसूदह ओ उम्र मीगुज़ारम॥ २॥

एक पैदल यात्री, नङ्गे सिर और नङ्गे पाँवों, कूफे से आकर मक्के जानेवाले यात्रियों के साथ हो लिया। वह बड़ी ख़ुशी से राह चलता और कहता—"न तो मैं ऊँट पर सवार हूँ और न खच्चर की तरह बोझा ही लादे हुए हूँ। मैं न तो किसी का मालिक हूँ और न किसी बादशाह का ग़ुलाम हूँ। न मुझे भूत से सरोकार है और न वर्त्तमान से। मैं स्वच्छन्दतापूर्व्वक साँस लेता हूँ और सुख से जीवन व्यतीत करता हूँ।" ऊँट पर चढ़े हुए एक मनुष्य ने उससे कहा—"ऐ फ़क़ीर! तू कहाँ जा रहा है? जा, लौट जा, नहीं तो कष्ट के मारे मर जायगा।" फ़क़ीर ने उस सवार की बात पर ध्यान न दिया और चलता-चलता जङ्गल में दाख़िल

न तो मैं घोड़े पर सवार हूँ—न ऊँट की तरह बोझ से लदा हुआ हूँ। न किसी का मालिक हूँ न किसी का सेवक। मैं अगले-पिछले झगड़ों को छोड़ कर सुखपूर्वक सांस लेता हूं और मौज में अपना जीवन व्यतीत करता हूँ॥ १-२॥

हो गया। जब हम लोग नख्लये महमूद नामक स्थान पर पहुँचे; तो उस धनी के दिन पूरे होगये और वह मर गया। फ़कीर उस मरनेवाले के तकिये के पास बैठ कर कहने लगा—"मैं कष्ट सहकर भी यहाँ तक जीता-जागता चला आया और तुम साँडनी पर सवार रह कर भी मर गये।"

एक मनुष्य किसी बीमार की बग़ल में रात भर रोया और सवेरे मर गया; लेकिन बीमार भला-चङ्गा होगया। ऐ मित्र! अनेक तेज़ घोड़े गिरकर मर गये, किन्तु लँगड़ा गधा मञ्जिले मक़सूद तक जीता हुआ पहुँच गया। अनेक बार ऐसा हुआ है कि हट्टे-कट्टे तन्दुरुस्त लोग काल के गाल में समा गये और घायल लोग अच्छे हो गये।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है कि जब मनुष्य के दिन पूरे हो जाते हैं, तब वह मरता है। ऐसा नहीं हो सकता कि कष्ट सहनेवाले, दुबले पतले और रोगग्रस्त लोग तो पहले मर जायँ और सुख-चैन से जीवन यापन करनेवाले मोटे-ताज़े तन्दुरुस्त लोग बहुत दिन तक जियें और पीछे मरें। मृत्यु मोटे-ताज़े और दुबले-पतले एवं रोगी-निरोगी को नहीं देखती, जिसका समय पूरा हुआ देखती है, उसे ही अपने मुँह में रख जाती है।

अठारहवीं क़हानी ।

चूँ बन्दा खुदाये खेश ख़्वानद ।
बायद के बजुज़ खुदा नदानद ॥ १ ॥

किसी बादशाह ने एक फ़क़ीर को बुलाया। फ़क़ीर ने मनमें सोचा कि अगर मैं कोई ऐसी दवा खालूँ जिससे कमज़ोर हो जाऊँ तो बादशाह मेरी तारीफ़ करेगा। कहते हैं, उसने प्राणघातक विष खा लिया और मर गया।

वह मनुष्य जो मुझे पिस्ते की तरह फूला हुआ मालूम होता था उस पर प्याज़ की तरह तह पर तह थीं। वह फ़क़ीर जो संसार की तरफ़ देखता है, मक्के की तरफ पीठ करके उपासना करता है। जो अपने तईं ईश्वर का सेवक कहता है, उसे उचित है कि वह ईश्वर के सिवा किसी को न जाने।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि सच्चे फ़क़ीर को दुनिया और दुनिया की निन्दा-स्तुति से क्या मतलब? जो ईश्वर का सेवक हो, उसे केवल ईश्वर से ही मतलब रखना चाहिये।

जो अपने को ईश्वर का भक्त समझता है, उसे चाहिए कि वह ईश्वर के सिवा और किसी से सम्बन्ध न रखे।

उन्नीसवीं कहानी ।
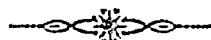
बरोज़गारे सलामत शिकस्तगाँ दरयाब ।
के जब्र ख़ातिरे मिस्कीं बला बगरदानद ॥ १ ॥
चो सायलज़ तो-बज़ारी तलब कुनद चीज़े ।
बिदह वगर्ना सितमगर बज़ोर बसतानद ॥ २ ॥

यूनान देश में, लुटेरों ने एक मुसाफिरों के झुण्ड पर हमला किया और बहुत सा माल-असबाब लूट लिया । व्योपारी लोग बहुत कुछ रोये-पीटे और ईश्वर तथा पैग़म्बर से विनती की, किन्तु कुछ फल न हुआ । जब कि नीच डाकू फ़तह पाजाते हैं, तब वे मुसाफ़िरों के रोने-पीटने की क्या पर्वाह करते हैं । उन मुसाफ़िरों में लुक़मान हकीम भी थे । उन लोगों ने लुक़मान से कहा,—"आप ऐसा उपदेश दीजिए, जिससे ये लुटेरे लूट के माल में से कुछ हिस्सा लौटा दें; क्योंकि इतना धन गँवा देना बड़े दुःख की बात है ।" लुक़मान ने जवाब दिया—"उन लोगों को ज्ञानोपदेश करना वृथा है । जिस लोहे को ज़ङ्ग ने खा लिया है, उसे तुम पालिश करके साफ़ नहीं कर सकते । स्याह-दिल को नसीहत देने से

दीन दुखियों की सहायता करने से आफत टलती है । जो दुखियों क़ो दान नहीं देते उनका धन अत्याचारी उन से ज़बरदस्ती छीन लेते हैं ।

क्या फ़ायदा ? लोहे का मेख़ पत्थर में नहीं घुसता। अपनी सुख-सम्पद् की अवस्था में उनकी सहायता करो जो तङ्गहाल और दुखी हैं ; क्योंकि दीन-दुःखियों की ख़ातिर करने से तुम्हारी बला टल जायगी। भिखारी तुम से आकर कुछ माँगे तो उसे दे दो ; अन्यथा ज़ालिम—अत्याचारी—तुमसे तुम्हारा माल ज़बरदस्ती छीन लेगा।"

शिक्षा— इस कहानी से हमें ये शिक्षाएँ मिलती हैं, कि जो हिये के अन्धे हैं, जिनका दिल मैला है, उन पर किसी की नसीहत काम नहीं कर सकती। मनुष्य को चाहिए कि अच्छे दिनों में अपने धन-माल को दुःखियों के दुःख दूर करने के काम में लगावे ; जिस से उसका इस लोक और परलोक में भला हो। अगर वह अपना धन परोपकार में ख़र्च न करेगा, याचकों की इच्छा पूर्ण न करेगा और यदि ज़बरदस्त उसका माल ज़बरदस्ती छीन लेगा तो वह उस समय रोने पछताने के सिवा क्या करेगा ? लिखा है,—

दानो भोगो नाशस्तिस्रो गतयः भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति॥

बीसवीं कहानी।

न गोयन्द अज़ सरे बाज़ीचा हर्फ़।
कज़ाँ पन्दे नगीरद साहबे होश ॥ १ ॥
व गर सद बाबे हिकमत पेशे नादाँ।
बख्वानन्द आयदश बाज़ीचह दरगोश ॥ २ ॥

किसीने लुक़मान हकीम से पूछा—"आपने अदब-तमीज़ किस से सीखा?" उसने जवाब दिया—"बेअदबों से। क्योंकि मैंने उन लोगों में जो कुछ बुरी बात देखी, उससे परहेज़ किया। अक्लमन्द आदमी लोगों के खेल से भी शिक्षा लाभ करता है, किन्तु मूर्ख हिकमत—तत्त्वज्ञान—के सौ अध्याय सुनकर भी खेल और मूर्खता ही सीखता है।"

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है कि अक़्लमन्द खेल-कूद से भी अक़्ल सीख सकता है, किन्तु मूर्ख फ़िलासोफी—हिकमत—पढ़ कर भी मूर्खता ही सीखता है। सच हैं—

अन्तःसारविहीनानामुपदेशो न जायते।

बुद्धिमान् खेल से भी शिक्षा प्राप्त कर लेता है। मूर्ख आदमी तर्क-शास्त्र के सौ अध्याय सुनलेने पर भी खेल और मूर्खता ही सीखता है।

इक्कीसवीं कहानी।

अन्दरूँ अज़ तुआम खाली दार।
ता दरो नूर मार्फ़त बीनी ॥ १ ॥
तही अज़ हिक़मते बइल्लते आँ।
के पुरी अज़ तुआम ता बीनी ॥२॥

कहते हैं कि एक साधु एक रात में दस सेर भोजन करता और सवेरा होने के पहले ही सारे क़ुरान का पाठ कर डालता; एक महात्मा ने यह बात सुनकर कहा—"अगर वह मनुष्य आधी रोटी खाता और सो जाता तो अच्छा होता। अगर मनुष्य पेट को भोजन से ख़ाली रक्खे तो उसे ईश्वरीय ज्ञान की रोशनी नज़र आने लगे। जो नाक तक भोजन से भरे रहते हैं, वे अक्ल से ख़ाली हैं।"

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है कि जो ठूँस-ठूँस कर खाना खाते हैं, उनको ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दिखाई नहीं देता; किन्तु जो अल्पभोजी होते हैं, उन्हें ईश्वरीय ज्ञान जल्द होता है। जो हलका भोजन करते हैं, वे ही संसार में अच्छे-अच्छे काम कर सकते हैं; अत्यधिक खानेवाले तो अन्न के कीड़े हैं।

यदि मनुष्य कम भोजन करे तो उसको ईश्वरीय ज्योति के दर्शन हों। जो नाक तक भोजन से भरे रहते हैं वे बुद्धि से ख़ाली होते हैं।

बाईसवीं कहानी ।

वउज़ तोबा तवाँ रस्तन अज़ अज़ावे खुदाय ।
हनोज़ मी नतवाँ अज़ ज़ुवाने मर्दुम रस्त ॥ १ ॥
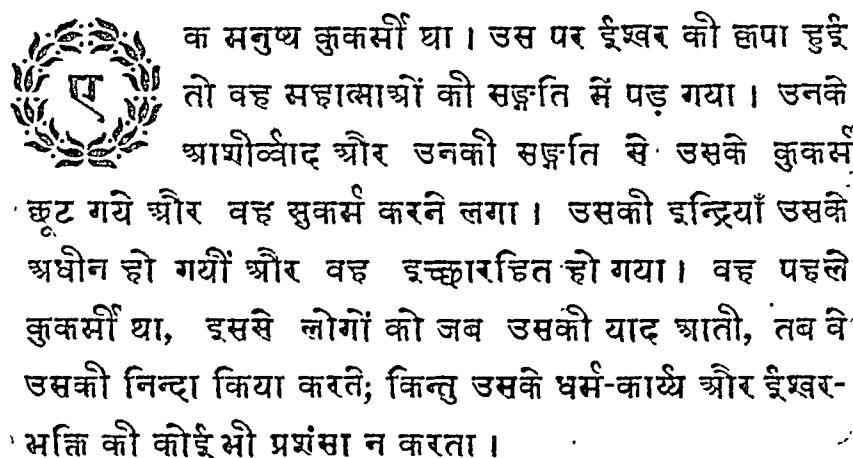
एक मनुष्य कुकर्मी था । उस पर ईश्वर की कृपा हुई तो वह महात्माओं की सङ्गति में पड़ गया । उनके आशीर्व्वाद और उनकी सङ्गति से उसके कुकर्म छूट गये और वह सुकर्म करने लगा । उसकी इन्द्रियाँ उसके अधीन हो गयीं और वह इच्छारहित हो गया । वह पहले कुकर्मी था, इससे लोगों को जब उसकी याद आती, तब वे उसकी निन्दा किया करते; किन्तु उसके धर्म-कार्य्य और ईश्वर-भक्ति की कोई भी प्रशंसा न करता ।

मनुष्य अपने कुकर्म और पापों के लिए पश्चात्ताप करने से ईश्वर के कोप से बच सकता है ; किन्तु वह आदमियों की ज़ुबानों से नहीं बच सकता । जब वह लोगों की गालियाँ और निन्दा सहता-सहता थक गया; तब उसने रो-पीटकर सारा हाल अपनी मण्डली के मुखिया को सुनाया । शेख़ ने कहा—"तू इस ईश्वरीय आशीर्व्वाद के लिए कैसे कृतज्ञता प्रकट कर सकता है कि लोग तुझे जैसा जानते हैं, उससे तू अच्छा है।" तुम इस

पापों से तोबा कर के तू ईश्वरीय दण्ड से बच जाय पर मनुष्यों की तेज जुबान से नहीं बच सकता ।

बात को कितनी बार कहोगे कि, मेरे शत्रु और मुझ से जलने-वाले मुझ में दोष ढूँढ़-ढूँढ़ कर निकालते हैं, कभी वे मेरा ख़ून करने को तैयार होते हैं और कभी मेरी बुराई चाहते हैं। तुम सचमुच अच्छे बने रहो, यदि जगत् तुमको बुरा कहे तो कहने दो। उससे तुम्हारी क्या हानि है? यह बात अच्छी नहीं है, कि तुम असल में बुरे हो और दुनिया तुम्हें अच्छा समझे। मेरी ओर देखो, कि लोग मुझे कामिल समझते हैं और सभी मेरी प्रशंसा करते हैं लेकिन मैं कामिल नहीं हूँ, बल्कि बुरा हूँ। दुनिया मुझे जैसा समझती है अगर मैं वैसे ही कर्म करता तो मैं सचमुच ईश्वर-भक्त और धर्मात्मा होता।

"सच बात तो यह है, कि मैं अपने पड़ोसियों से अपने तईं छिपाता हूँ; किन्तु ईश्वर मेरे गुप्त और प्रकट सब कामों को जानता है। लोग मेरे ऐब-दोषों को न जान सकें, इसलिये मैं दरवाज़ा बन्द कर लेता हूँ; लेकिन सर्वव्यापी और सर्वज्ञ ईश्वर मेरे गुप्त और प्रकट सभी कामों को देखता है; तब द्वार बन्द करने से क्या लाभ हो सकता है?"

शिक्षा—इस कहानी का खुलासा मतलब यह है, कि मनुष्य को सदा सज्जनता और धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए; लोगों की निन्दा और स्तुति की पर्वा न करनी चाहिए। अगर मनुष्य अच्छे कर्म करे, अच्छे रास्ते पर चले और लोग उसकी निन्दा करें तो क्या हानि? मनुष्य मनुष्य के गुप्त हाल नहीं जान

सकता; किन्तु ईश्वर से कुछ भी भेद नहीं छिप सकता। अगर मनुष्य किवाड़ बन्द करके बुरे काम करे और लोगों पर अपने ऐब ज़ाहिर न होने दे तो लोग उसको भला कहेंगे; पर उनके भला कहने से क्या लाभ होगा? क्योंकि ईश्वर तो हज़ार कोठरियों के भीतर भी मनुष्य के बुरे-भले कर्मों को देखता है। जगत् में उस सर्वव्यापी परमात्मा की दृष्टि से कोई नहीं बच सकता। अतः बुरे कर्म करते समय मनुष्य को एकान्त से एकान्त, बिल्कुल जनहीन स्थानमें भी ऐसा हरगिज़ न समझना चाहिए कि यहाँ मेरे कामों का देखने वाला कोई नहीं है; परमेश्वर जीव के साथ हर जगह है। इसलिए मनुष्य को सदा उससे डरकर बुरे काम न करने चाहिएँ और हमेशा उसी की प्रसन्नता को प्रधान से भी प्रधान समझना चाहिए। मनुष्य के निन्दावाद और प्रशंसावाद से कुछ भी लाभ-हानि नहीं हो सकती।

तेईसवीं कहानी।

चो आहंग बर्गत बुवद मुस्तक़ीम।
के अज़ दस्त मुतरिब खुरद गोशमाल ॥१॥

मैंने एक पूज्य शेख़ से रोकर कहा कि अमुक मनुष्य मुझ पर व्यभिचार का झूँठा दोष लगाता है। उसने जवाब दिया—"तुम उसे अपनी नेकी से शरमिन्दा करो। यदि तुम अपना चालचलन अच्छा रक्खोगे तो कोई बुराई चाहने वाला तुम पर दोष न लगा सकेगा। अगर बीन की आवाज़ ठीक हो तो उसे साज़िन्दे के सुधार की ज़रूरत न हो।"

शिक्षा—इस कहानी का ख़ुलासा यह है, कि अगर हम अपना आचरण—चाल-चलन—अच्छा रक्खेंगे तो हमारे शत्रुओं को हमारी निन्दा करने का मौक़ा हरगिज़ न मिलेगा। अन्तमें, वे हमारी नेकियाँ देख कर लज्जित हो जायँगे और झूँठी बुराई करना छोड़ देंगे।

सारंगी ठीक हो तो फिर उसे बजाने वाले से कान (खूंटी) मिलवाने नहीं पड़ते।

चौबीसवीं कहानी।

चो हरसाअत अज़ तो बजाये रवद दिल।
बतनहाई अन्दर सफ़ाई न बीनी॥ १॥
वरत मालो जाहस्तो ज़र ओ तिजारत।
चो दिल बा खुदायस्त खिलवत नशीनी॥ २॥

लोगोंने दमश्क के शेखों से पूछा कि सूफ़ियों के पन्थ का क्या हाल है? उसने जवाब दिया—"अब से पहले दुनिया में उनकी एक जमाअत थी। वे लोग उस समय प्रकट में तो दुःखी थे परन्तु भीतर से सन्तुष्ट थे; लेकिन अब वह एक क़ौम—जाति—है जो प्रकट में तो सन्तुष्ट है किन्तु अन्दर से असन्तुष्ट है।"

जबकि तुम्हारा मन एक स्थान में स्थिर नहीं रहता है यानी जगह-जगह भटकता है, तब तुम्हें एकान्त स्थानमें भी शान्ति और सन्तोष प्राप्त नहीं हो सकता। धन-माल, ज़मीन-जायदाद, क़ीमती असबाब और मर्तबा होते हुए भी अगर

अगर दिल गिरफ्तार है मखमसों में,
तो खिलवत भी बाज़ार मे कम नहीं है।
मगर जिसके दिल को है यकसूई हासिल,
तो वह अंजुमन में भी खिलवतनशीं है।

तुम्हारा दिल ईश्वर में अटका रहे तो तुम एकान्तवासी संन्यासी हो ।

शिक्षा—इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य को अपना मन वश में करके उसकी चञ्चलता मिटानी चाहिए। मनकी स्थिरता से ही सुख-शान्ति मिलती है । अगर मन स्थिर न हो तो एकान्तवासी होने से भी कुछ लाभ न होगा । अगर मनुष्य धन-दौलत रक्खे, खेती और वाणिज्य व्योपार आदि दुनिया के सारे कर्म करे; किन्तु अपने मन को इन सब झँझटों से अलग रखकर एक मात्र ईश्वर में लौ लगाये रहे ; तो वह दुनिया के काम करता हुआ, दुनिया में रहकर भी एकान्तवासी योगी है । जो दिखाने को एकान्त-वास करता है, किन्तु भीतर से संसारी झंझटों में फँसा रहता है, वह योगी नहीं बल्कि ढोंगी है ।
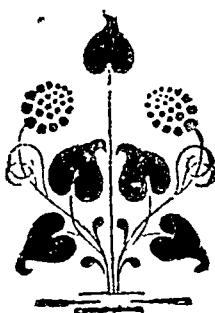
पच्चीसवीं कहानी

गुफ़्तम ईं शर्तें आदमीयत नेस्त।
मुर्ग तसबीह ख्वाँ व मन ख़ामोश॥

मुझे याद है कि एक समय मैंने रात भर मुसाफ़िरों के साथ सफ़र किया और सवेरे एक जङ्गल के किनारे सो गया। एक उन्मत्त मनुष्य, जो हम लोगों के साथ सफ़र कर रहा था, रोने लगा और जङ्गल की तरफ़ चल दिया। उसने दम भर भी आराम न किया। जब दिन निकला, तब मैंने उससे पूछा कि क्या मामला था? उसने जवाब दिया—"मैंने वृक्षों पर बुलबुलों को, पहाड़ों पर तीतरों को, पानी में मेंडकों को और अन्यान्य जानवरों को जङ्गल में चिल्लाते और शोकपूर्ण क्रन्दन करते हुए सुना। मुझे ख़याल हुआ, कि जब सब जीव ईश्वर का गुणगान कर रहे हैं, तब मनुष्य को अपने कर्त्तव्य-कर्म को भूलकर पड़े-पड़े सोना उचित नहीं है।" कल पिछली रात को सवेरा होते-होते एक चिड़िया का रोना सुन कर मेरे होश-हवास खता होगये, शक्ति और धैर्य्य ने जवाब दे दिया। जब मेरे एक सच्चे मित्र ने

प्रातःकाल के समय चिड़ियाँ चहचहा कर ईश्वर का गुणगान करती हैं—उस समय यदि कोई मनुष्य ईश्वराराधन न करे तो कैसी शर्म की बात है।

मेरी आवाज़ सुनी तो वह बोला कि मुझे विश्वास नहीं था कि तुम एक चिड़िया का गाना सुनकर इस तरह बदहवास हो जाओगे। मैंने जवाब दिया—"यह बात मानव-जाति के नियम के विरुद्ध है कि एक चिड़िया तो ईश्वर का गुण गावे और मैं मौन साधे रहूँ।"

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है कि मनुष्य को बड़े सवेरे उठकर ईश्वर का गुणानुवाद करना चाहिए। जब पशु-पक्षी तक चार घड़ी के तड़के उठकर ईश्वर की स्तुति करते हैं तब मनुष्य का उस समय चारपाई तोड़ना अनुचित है।

छब्बीसवीं कहानी।

न बुलबुल बर गुलश तसबीह ख्वानेस्त।
के हर खारे बतसबीहश ज़ुबानेस्त॥

एक समय मैं कुछ नेक-मिज़ाज जवानों के साथ हिजाज़ को जा रहा था। वे नवयुवक मेरे दिली दोस्त और मेरे हर घड़ी के साथी थे। वे लोग आनन्द में मग्न होकर अक्सर धर्म-सम्बन्धी शेरें कहने लगते

सिर्फ बुलबुल ही उसके (बनाये) फूल के लिए नहीं चहचहाती है किन्तु उसकी प्रशंसा के लिए हर कांटा ज़ुबान रखता है।

थे । उसी जमाअत में एक भक्त था । वह फ़क़ीरों की चाल को बुरी समझता था ; क्योंकि वह उनके कष्ट को न जानता था । चलते-चलते हमलोग नख़ीले नबी हिलाल के ताड़-वृक्षों के एक कुञ्ज के पास पहुँचे । वहाँ एक काले रङ्ग का छोकरा अरबी मुहल्ले से निकला । वह ऐसी तान से गाने लगा कि उड़ते हुए पक्षी ठहर गये । मैंने देखा कि उस भक्त का ऊँट नाचने लगा और अपने सवार को नीचे गिराकर जङ्गल को चल दिया । मैंने कहा—"ऐ भक्त ! उन तानों को सुन कर पशु-पक्षी तक खुश होगये, पर तुझ पर उनका बिल्कुल असर न हुआ । क्या तुझे मालूम है कि सवेरे के बुलबुल ने मुझ से क्या कहा ? तू किस क़िस्म का मनुष्य है, जो प्रेम से अनजान है ? अरबी ग़ीत सुनकर ऊँट मोहित हो गया । अगर तुझे कुछ आनन्द न आया हो तो तू जानवर है । मैदानों में आँधियाँ चलकर सनोवर के दरख्तों का सिर नीचा कर देती हैं, परन्तु पत्थर पर उनका कुछ असर नहीं होता । हर चीज़, जिसे तुम देख रहे हो, ईश्वर का गुण गान करती है । इस विषय को समझदारों का दिल खूब जानता है । केवल बुलबुल ही उसके फूल के लिये उसकी स्तुति नहीं करती, किन्तु उसकी तारीफ़ के लिए हर काँटे में ज़ुबान है ।"

शिक्षा—इस कहानी का यही सारांश है, कि दुनिया में पशु पक्षी कीट पतङ्ग आदि सभी अपने सिरजनहार और पालनहार ईश्वर के गुण गाते हैं तब मनुष्य को, जोकि सब

जीवों में प्रधान है, उस कर्त्ता के गुणानुवाद करने से हरगिज़ न चूकना चाहिए। मनुष्य का प्रधान कर्त्तव्य-धर्म है कि वह हर घड़ी ईश्वर की वन्दना में ध्यान रक्खे।

सत्ताईसवीं कहानी।

शगूफ़ा गाह शगुफ़्तस्तो गाहख़ोर्शीदह।
दरख़्त वक़्त बिरहनस्तो वक़्त पोशीदह॥

किसी बादशाह के कोई वारिस—उत्तराधिकारी—न था। जब उसका अन्तिम समय निकट आया, तब उसने अपने वसीयतनामे में यह लिखवाया कि मेरे मरने के बाद सवेरे ही जो मनुष्य नगर के फाटक पर पहले-पहल आवे उसी के सिर पर राज-मुकुट रखना और उसी को राज्य का शासन-भार सौंप देना।

राजा के प्रधान मन्त्री और अमीर-उमरा सब दरवाज़े पर जाकर खड़े हो गये। दैवयोग से, पहले-पहल एक भिखारी

संसार परिवर्त्तनशील है। फूल कभी मुर्झाता है कभी खिलता है। वृक्ष के पत्ते कभी गिर जाते हैं और कभी हरे-भरे पत्तों से उसकी शोभा होती है।

नगर-द्वार में घुसा। इस भिखारी की सारी ज़िन्दगी रोटियों के टुकड़े उठाते और थेगड़ी लगाते बीती थी। राजा के मन्त्रियों और दरबारियों ने राजा के वसीयतनामे के अनुसार उसी भिखारी को राज्य और ख़ज़ाना सौंप दिया। कुछ दिन तक उस भिक्षुक ने राज-काज चलाया। पीछे कुछ मन्त्री और दरबारी लोगों ने उसकी आज्ञा पालन करने से मुँह मोड़ लिया। आस-पास के राजा लोग उसके शत्रु हो गये। उन लोगोंने सेना लेकर उस पर चढ़ाई की। उसकी फ़ौज और रिआया ने हार खाई। बहुत कहने से क्या, उसका कुछ देश उसके हाथ से निकल गया।

दरवेश इन घटनाओं से अत्यन्त पीड़ित और मर्माहत हुआ। इसी बीच में उसके एक पुराने मित्र से उसकी मुलाक़ात हुई। यह शख़्स उसका कङ्गाली का मित्र था। इन्हीं दिनों वह एक सफ़र से वापिस आया था। उसे ऐसे उच्च पद पर देख कर, उसने कहा—"सर्वशक्तिमान् और महिमान्वित ईश्वर को धन्यवाद है कि तुम्हारे भाग्य ने तुम्हें सहायता दी। काँटेदार झाड़ी से गुलाब निकला। तुम्हारे पैर से काँटा निकल गया और तुम इस दर्जे को पहुँचे। सचमुच दुःख के बाद सुख आया। पुष्प-कली कभी खिलती है और कभी मुर्झा जाती है। वृक्ष कभी पत्रहीन हो जाता है और कभी पत्तों से ढक जाता है।" उसने जवाब दिया—"भाई! यह समय बधाई देनेका नहीं है किन्तु मेरे साथ मिल कर शोक करने

का है। जब तुम मुझ से पिछली बार मिले थे, तब मुझे ख़ाली रोटी की ही फ़िक्र करनी पड़ती थी। अब मुझे दुनिया भर की चिन्ता करनी पड़ती है। जब दिन अच्छे होते हैं, तब मुझे संसारी भोग-विलासों में लिप्त होना पड़ता है और जब बुरे दिन आते हैं, तब मुझे कष्ट भोगने पड़ते हैं। संसारी झगड़ों से बढ़ कर और कोई आफ़त नहीं है; क्योंकि वे सुख और दुःख दोनों के समय हृदय को पीड़ित करते हैं।"

अगर तुम्हें धन की अभिलाषा हो तो सन्तोष की खोज करो, क्योंकि वह अमूल्य धन है। अगर कोई धनाढ्य पुरुष तुम्हारी गोद में रुपये डालदे तो तुम उसके कृतज्ञ मत हो; क्योंकि मैंने महात्माओं को ऐसा कहते सुना है कि धनवानों के दान से निर्द्धनों का सन्तोष अच्छा है। अगर बहराम लोगों में बाँटने के लिए एक गोरखर भूने तो चींटी के लिए टिड्डी की टाँग के बराबर भी न होगा।

शिक्षा—ग़रीब और निर्द्धन लोग राजों-महाराजों और अमीर-उमरा को देखकर मन में दुःखित हुआ करते हैं और कहते हैं कि वे लोग स्वर्ग का आनन्द भोग रहे हैं; परन्तु वास्तव में यह बात नहीं है। जो जितने धनी हैं, जो जितने उच्च पद पर हैं वे उतने ही अधिक चिन्ताग्रस्त और दुःखी हैं। प्रकट में, वे लोग सुखी जान पड़ते हैं परन्तु उनकी भीतरी दशा बहुत ही दुःख और कष्टपूर्ण है। उनके ऊपर बड़ी-बड़ी ज़िम्मेदारी और चिन्ताएँ सवार हैं। बड़े लोगों को

रात के समय भी सुख की नींद नहीं आती; परन्तु साधारण लोग उनकी अन्दरूनी बातों को नहीं जान सकते; इसी से वे उनकी बाहरी दशा देखकर उन्हें सुखी समझते हैं। जिसके पास पहनने को कपड़े नहीं हैं, कल के खाने को अन्न नहीं है, उस मनुष्य में अगर 'सन्तोष' है तो वह सच्चा सुखिया है। सन्तोष का दर्जा सब धनों से ऊँचा है। जो समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वी का शासन करते हैं; जिनके पास लाखों फ़ौजें और अरब-खरब की सम्पदा है उनके पास अगर 'सन्तोष' नहीं है तो वे निस्सन्देह दुःखी और निर्धन हैं।

अट्ठाईसवीं कहानी।

किसी मनुष्य का एक मित्र दीवान के पद पर मुक़र्रर था। एक मुद्दत से वह अपने दीवान मित्र से न मिला था। किसी ने कहा—"अमुक मनुष्य से मिले तुम्हें बहुत दिन होगये।" उसने जवाब दिया—"मैं उससे मुलाक़ात करना ही नहीं चाहता।" उसी स्थान पर दीवान का एक आदमी भी उपस्थित था। उसने कहा—"आपके मित्र से ऐसा क्या अपराध हुआ जो आप उससे मिलना भी नहीं चाहते?" उसने जवाब दिया—"कोई अपराध नहीं हुआ, किन्तु

दीवान से मुलाक़ात करने का समय तब आवे, जब वह अपनी नौकरी से अलग कर दिया जावे। लोग जब हुकूमत और बड़े पद पर होते हैं, तब अपने मित्रों से परहेज़ करते हैं; किन्तु जब वे पदच्युत होते हैं और मुसीबत में फँसते हैं, तब वे अपने दिल के दुःख मित्रों से कहते हैं।"

शिक्षा—इस कहानी में जो बात कही गयी है वह अधिकांश लोगों पर ठीक उतरती है। उच्च पद पाकर लोग अपने ग़रीब मित्रों और सम्बन्धियों से मिलने में अपना अपमान और बेइ-ज़्ज़ती समझते हैं; मगर यह बात उच्च हृदय के मनुष्यों के योग्य नहीं है। जो उदार-हृदय हैं, जो महात्मा हैं, वे उच्चपदासीन होकर अपने निर्धन मित्रों की जी जान और धन द्रव्य से सहा-यता करते हैं और उनके आदर-सम्मान में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं करते हैं।
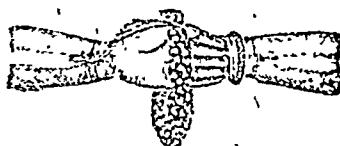
उन्तीसवीं कहानी।

अगर खेश्तन रा मलामत कुनी।
मलामत नबायद शुनीदन ज़ेकस॥

अबूहरैरा हर रोज़ मुहम्मद मुस्तफा साहब के दर्शन करने जाया करते थे। पैग़म्बर साहब ने कहा—"अबूहरैरा! तुम रोज़-रोज़ न आया करो। इस तरह रोज़ आने से प्रेम बढ़ जाना सम्भव है। लोगों ने किसी महात्मा से कहा कि हम लोगों का सूर्य से बड़ा उपकार होता है लेकिन हमने किसी को उसके लिये प्रेमपूर्ण वचन कहते नहीं सुना। उसने जवाब दिया—इसका कारण यह है कि वह रोज़-रोज़ दिखाई देता है। जाड़े में वह जब छिपा रहता है, तब लोग उसको चाहने लगते हैं।"

किसी से मिलने-जुलने में कोई हानि नहीं है; लेकिन बारम्बार मिलना-जुलना ठीक नहीं है कि जिससे किसी को यह कहना पड़े—"बस, अधिक न आया करो।" अगर तुम अपने तईं दुरुस्त रक्खोगे तो किसी को तुम्हारी मलामत करने की ज़रूरत न होगी।

यदि तू अपनी निन्दा स्वयं करता रहेगा अर्थात् अपने ऐबों पर नजर रक्खेगा तो दूसरों को तेरी निन्दा करने का अवसर न मिलेगा।

शिक्षा—किसी के मकान पर बारम्बार हरगिज़ न जाना चाहिए। जो बार-बार पराये घर जाया करते हैं, उनका अपमान और अनादर होता है। अपने हितू मित्र आदि के घर भी काम पड़ने पर ही जाना चाहिए। बाज़-बाज़ लोग जो निठल्ले और निकम्मे होते हैं, इधर-उधर जाते फिरते हैं। हमने अनेक बार घर के मालिकों को उकता कर यह कहते सुना है कि इस वक्त माफ़ कीजिए, कुछ एकान्त का काम है। ऐसी बात सुनकर उनका मुँह छोटा सा हो जाता है, पर अनेक मूर्खों को दो-चार बार में भी शिक्षा नहीं मिलती। किसी नीतिज्ञ ने क्या ख़ूब कहा है—

अति परिचयादवज्ञा अति गमनादनादरो भवति।
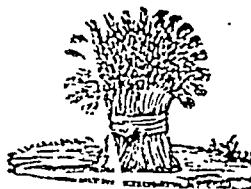
तीसवीं कहानी।

पाये दर ज़ञ्जीर पेशे दोस्ताँ।
बहके बा बेगानगाँ दर बोस्ताँ॥

दमश्क में, मैं अपने मित्रों की सङ्गति से विरक्त होकर यरूसलीम (क़ुद्स) के जङ्गल में चला गया और वहाँ पशुओं के साथ रहने लगा। कुछ समय बाद फ़्रेङ्क लोगों ने मुझे क़ैद कर लिया और त्रिपोली में कुछ यहूदियों के साथ मिट्टी खोदने के लिए एक खड्डे पर नियुक्त कर दिया। परन्तु अलप्पो का एक प्रसिद्ध पुरुष, जिससे पहले मेरी मित्रता थी, उसी राह से निकला। उसने मुझे पहचान लिया। उसने पूछा—"तुम यहाँ कैसे आये और किस तरह अपना गुज़ारा करते हो?" मैंने जवाब दिया—"मेरे दिल में इस बात का विचार आया कि केवल एक ईश्वर पर निर्भर रहना अच्छा है। बस, मैं अपने इसी विचारानुसार मनुष्यों से दूर रहने के लिए जङ्गल और पहाड़ों में चला गया। आज-कल मुझे मनुष्यों से भी बदतर अभागों के साथ लाचार होकर काम करना पड़ता है। इस बात का अनुमान आप स्वयं ही

अपरिचित मनुष्यों के साथ बाग में रहने से मित्रों के साथ बेड़ियाँ पहन कर रहना अच्छा है।

कर सकते हैं कि इस वक्त मेरी कैसी हालत होगी। अजनबी लोगों के साथ बाग़ीचे में रहने की अपेक्षा मित्रों के सङ्ग बेड़ियाँ पहन कर रहना अच्छा है।" उसे मेरी हालत पर तर्स आया। उसने फ्रैंक लोगों को दश दीनार देकर मुझे छुड़ा लिया और अपने साथ अलप्पो लेगया। उसके एक कन्या थी। उसने उसकी शादी मेरे साथ कर दी और दहेज़ में एक सौ दीनार दिये। कुछ समय बाद मेरी बीबीने अपने जौहर दिखाने शुरू किये। उसका स्वभाव बहुत ही बुरा था। वह बात-बात में झगड़ा करने, गाली-गलौज देने और हठ करने पर उतारू रहती थी। उसने मेरे सुख का नाश कर दिया। लोगों ने ठीक ही कहा है—"अच्छे आदमी के घर में बुरी स्त्री का होना उसके लिए इसी लोक में नरक है। ख़राब औरतों की सङ्गति से बचो। हे ईश्वर! हमें इस अग्नि-परीक्षा से बचा।" एक रोज़ उस स्त्रीने मुझे गाली-गलौज देकर कहा—"क्या तू वही नहीं है जिसे मेरे पिताने फ्रैंकों को दस दीनार देकर छुड़ाया था?" मैंने जवाब दिया—"हाँ, उन्हों ने दस दीनार देकर मुझे छुड़ाया था किन्तु सौ दीनारों में तेरे हाथ सौंप दिया।"

मैंने सुना है कि किसी बड़े आदमी ने एक भेड़ को भेड़िये के दाँतों और पञ्जों से बचाया और दूसरी रात को उसके गले पर छुरी चला दी। मरनेवाली भेड़ ने उस मनुष्य पर दोषारोप करते हुए कहा—"तुमने मुझे भेड़िये के चुङ्गलों

से बचाया किन्तु अन्तमें तुमने मेरे साथ उसी भेड़िये का सा बरताव किया ।"

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि भले आदमियों के साथ वनमें रहना भी अच्छा, किन्तु दुष्ट लोगों के साथ स्वर्ग में भी रहना अच्छा नहीं । महाराज भर्तृहरि ने कहा है—

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह ।
न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥

इकत्तीसवीं कहानी ।

ऐ गिरफ्तारे पाये बन्दे अयाल ।
दिगर आज़ादगी मबन्द ख़याल ॥ १ ॥
ग़मे फरज़न्दो नानो जामओ क़ूत ।
बाज़त आरद ज़े सेर दर मलकूत ॥ २ ॥

किसी बादशाह ने एक फ़क़ीर से जिसके बालक और स्त्री भी थी पूछा कि तुम अपना अमूल्य समय किस तरह बिताते हो ? फ़क़ीर ने जवाब दिया—"रात भर तो मैं ईश्वरोपासना में लगा रहता हूँ और सवेरा

ऐ औलाद की मुहब्बत में गिरफ्तार रहने वाले, तू किसी तरह भी बन्धन-मुक्त नहीं हो सकता । सन्तान, रोटी, कपड़ा तथा जीविका की चिन्ता तुझे स्वर्ग की चिन्तना से रोकती है ।

होते ही ईश्वर के सामने अपनी प्रतिज्ञाओं एवं प्रार्थनाओं को कहता हूँ। दिन भर अपना खर्च जुटाने की चिन्ता में रहता हूँ। बादशाह ने आज्ञा दी कि इसे इसका दैनिक आहार दिया जाय, जिससे इसके दिलमें बाल-बच्चों के भरण-पोषण की चिन्ता न रहे। ओ तू! जो कुटुम्ब के पालन-पोषण करने की चिन्ताओं के बन्धन में फँसा हुआ है, बन्धनमुक्त होने की आशा न कर। बच्चों और रोटी कपड़े तथा जीविका का दुःख तुझे अदृश्य जगत्—स्वर्ग—की चिन्तना करने में असमर्थ करता है। समस्त दिन, मैं यही चिन्ता करता हूँ कि रात हो और मैं ईश्वरोपासना में लगूँ। रात होने पर, जब मैं उपासना करने लगता हूँ तब यह फ़िक्र सिर पर सवार होती है कि कल सवेरे मैं बच्चों के खाने के लिए कहाँ से लाऊँगा।

शिक्षा—इस कहानी का ख़ुलासा यह है, कि मनुष्य कुटुम्ब परिवार के भरण-पोषण की फ़िक्र में ही सारा जीवन व्यतीत कर देता है। रोज़ सूर्य पर सूर्य उदय होते हैं, दिन पर दिन उम्र घटती जाती है; किन्तु मनुष्य को यह चिन्ता कभी उसका पीछा नहीं छोड़ती; नतीजा यह निकलता है कि मनुष्य इन्हीं चिन्ताओं में लिप्त रहकर सारा जीवन व्यर्थ गँवा बैठता है। इन गृह-चिन्ताओं के मारे न तो उसे आत्मज्ञान ही होता है और न वह स्वर्ग ही पा सकता है। अच्छा हो, यदि मनुष्य सब व्यर्थ की चिन्ताओं को छप्पर पर रखकर ईश्वराराधन में लीन होजावे। जिस मालिक ने जगत् को पैदा किया है, उसे क्या

अपनी बनाई हुई सृष्टि के भरण-पोषण की फ़िक्र न होगी ? अवश्य होगी। उसी परम पिता की चिन्ता ठीक है, मनुष्य के चिन्ता करने से कुछ नहीं होता। उसका नाम विश्वम्भर है। वह अपनी सारी सृष्टि का पालन करता है। मनुष्य को तो उस विश्वम्भर का ही ध्यान लगाना चाहिए।

बत्तीसवीं कहानी।

ता मरा हस्त दीगरम बायद।
गर न ख्वानन्द ज़ाहिदम शायद॥

दमश्क़ के किसी फ़क़ीर ने, अनेक वर्षों तक जङ्गल में रहकर और दरख़्तों की पत्तियाँ खाकर जीवन व्यतीत किया। उस देश का बादशाह एक दिन उसके दर्शनार्थ गया। उसने फ़क़ीर से कहा—"मेरी राय में, अगर शहर में ही एक ऐसा स्थान बना दिया जाय तो आप और भी सुभीते के साथ ईश्वरोपासना कर सकें। आपके वहाँ

जो सामान पास रखते हुए भी दूसरों से याचना करता है, वह फ़क़ीर नहीं है।

रहने से यह लाभ होगा कि अन्यान्य लोग भी आपकी सङ्गति में फ़ायदा उठावेंगे और आपके सत्कर्मों को देखकर शिक्षा लाभ करेंगे।" फ़क़ीर ने बादशाह की बात स्वीकार न की। तब राजमन्त्रियों ने कहा—"बादशाह के राज़ी करने के लिए यह बात बहुत ही ज़रूरी है, कि आप थोड़े दिनों के लिए अपना डेरा-डण्डा शहर में ले चलें और देखें कि वह स्थान कैसा है। यदि लोगों की सङ्गति से आपको अपना अमूल्य समय वृथा नाश होता दीखे, तो फिर आपकी जैसी इच्छा हो आप वैसा ही कीजियेगा।" लोग कहते हैं, कि वह फ़क़ीर नगर में आ गया। बादशाह ने उसकी अभ्यर्थना के लिए महल से सम्बन्ध रखने वाला बाग़ीचा ही खाली करा दिया। यह स्थान बहुत ही सुखदायी और तबीयत खुश करनेवाला था। लाल-लाल गुलाब के फूल सुन्दरी ललनाओं के कपोलों की बराबरी करते थे। सम्बुल माशूक़ों की ज़ुल्फ़ों की तरह शोभायमान था। यद्यपि वह समय गभीर शीतकाल का था; तथापि फलों में नवजात-शिशु की तरह ताज़ापन था। वृक्षों की शाखों में सुर्ख़ फूल लटक रहे थे, जो हरियाली के बीच में अग्नि के समान मालूम होते थे। बादशाह ने शीघ्र ही एक सुन्दरी दासी उसके पास भेज दी। उसका नये चाँद का सा चेहरा योगियों के चित्त को चुरा लेता था। मतलब यह है, कि वह ऐसी मनोमोहिनी थी कि उसे देख कर बड़े-बड़े योगी-यतियों की भी इन्द्रियाँ चञ्चल हो जाती थीं। उसके साथ एक

अतीव सुन्दरी दासी भी रहती थी। उसे प्यासे मनुष्य घेरे हुए खड़े हैं; लेकिन वह हाथ में प्याला रखने वाला जल नहीं पिलाता। जिस तरह जलन्धर रोग से पीड़ित मनुष्य उफ़रात नदी को देखकर सन्तुष्ट नहीं होता, उसी तरह उसे देखने से मन नहीं भरता।

वह फ़क़ीर अब खूब मज़ेदार चीज़ें खाने लगा। भाँति-भाँति की अच्छी-अच्छी पोशाकें पहनने लगा। नाना प्रकार के फूलों और अन्यान्य सुगन्धित द्रव्यों का आनन्द लूटने लगा तथा क्वाँरी स्त्रियों और उनकी सहेलियों की सुहबत का सुख उपभोग करने लगा। महात्माओं ने कहा है—"सुन्दरी युवती की ज़ुल्फ़ें विचारशक्ति के पैरों की बेड़ी और अक़्ल की चिड़िया का फन्दा हैं। तुम्हारी सेवा में मैंने अपना हृदय, अपना धर्म और अपनी विचारशक्ति खो दी है। सच बात तो यह है कि मैं अक़्ल की चिड़िया हूँ और तुम फन्दे हो।" संक्षेप में उसके सुखों का अधःपतन होने लगा। किसी ने कहा है—"जब कोई वकील, शिक्षक, शिष्य, वक्ता या महात्मा संसारी विषय-भोगों में फँस जाता है तब उसकी दशा उस मक्खी के समान हो जाती है, जिस के पैर मधु में लिपट जाते हैं।"

एक दिन बादशाह के दिल में उस फ़क़ीर से मिलने की इच्छा हुई। उसने जाकर देखा, कि फ़क़ीर का तो रङ्ग-रूप ही बदल गया है। वह खूब मोटा-ताज़ा हो गया है और उसके शरीर का रङ्ग गुलाब के समान झलक मारता है। वह

रेशमी तकिये के सहारे लेटा हुआ है और एक परी की सी सूरत का छोकरा हाथ में मोरछल लिये हुए उसके पीछे खड़ा हुआ है। बादशाह फ़क़ीर को सुख में देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, लेकिन और लोग तरह-तरह की बातें करने लगे। अन्तमें, जब बात-चीत समाप्त हुई, तब बादशाह ने कहा—"दुनिया में, मुझे दो प्रकार के लोग भले लगते हैं—एक तो विद्वान् और दूसरा एकान्तवासी संन्यासी।" उस मौक़े पर वहाँ एक बड़ा ज्ञानी और अनुभवी मन्त्री मौजूद था। उसने कहा—"महाराज! परोपकार का नियम यह कहता है कि आप उन दोनों का उपकार करें। विद्वान् को धन दें जिससे उसे देखकर दूसरे लोग भी विद्या सीखें और विरक्तों—संसार-त्यागियों—को कुछ भी न दें, जिससे उनकी विरक्ति बनी रहे। फ़क़ीरों को दिरम और दीनारों की ज़रूरत नहीं होती। जब उन्हें धन मिलता है, तब वे उसे देने के लिए दूसरे फ़क़ीरों को तलाश करते हैं। जिसका स्वभाव उत्तम है, जिसका चित्त ईश्वर में लगा हुआ है, जो ईश्वर के नाम पर निकाली हुई रोटी नहीं खाता और टुकड़े-टुकड़े के लिए भीख नहीं माँगता, वही फ़क़ीर या महात्मा है। सुन्दरी नारी के हाथ की अँगुली बिना फ़ीरोज़े की अँगूठी के और उसके कानों की लौ बिना कर्णफूल-झूमकों के ही सुन्दर मालूम होती है। फ़क़ीर वही है, जो धार्म्मिक और ज्ञानी हो, चाहे वह पवित्र रोटी और भिक्षा के टुकड़े न खाता हो। सुन्दर रूप-लावण्य-सम्पन्न-स्त्री बिना रङ्ग और

गहनों के ही मन मोहित कर लेती है। जब कि मेरे पास कोई अपनी चीज़ हो, यदि उस समय भी मैं पराये माल पर दिल ललचाऊँ तो अगर आप मुझे महात्मा न कहें तो शायद आपकी भूल न होगी।

शिक्षा—इस कहानी का यही सारांश है, कि जिन्होंने संसार से वैराग्य ले लिया है, जिन्हों ने सब प्रकार की आशा-तृष्णाओं को तिलाञ्जलि दे दी है, उन्हें फिर संसारी विषय-वासनाओं में हरगिज़ न फँसना चाहिए। जो सच्चे योगी संन्यासी हैं, वे धन-द्रव्य और विषय-भोगों की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखते। जिस भाँति सुन्दरी नारी गहने और ज़ेवरों की मुहताज नहीं होती, वह बिना ज़ेवरों के ही मनुष्यों का मन मोहित कर लेती है; उसी तरह संसार-त्यागी वैरागियों को साँसारिक भोग-सामग्रियों की आवश्यकता नहीं होती। वे अपने वैराग्य से ही जगत् की आँखों में सूर्य्य की भाँति तपते हुए मालूम होते हैं। जो सच्चा फ़क़ीर है, उसे धन-दौलत और ऐश आराम से क्या मतलब है?

तेतीसवीं कहानी।

ज़ाहिद के दिरम गिरफ़्तो दीनार।
ज़ाहिद तर अज़ो यके बदस्त आर॥

जो कुछ ऊपर की कहानी में कहा गया है उसका उदाहरण इस कहानी में मिलेगा। किसी बादशाह का एक सङ्गीन मामला चल रहा था। उसने यह मन्नत मानी, कि जो मैं इस मामले में सफलता प्राप्त करूँगा तो इतना धन फ़क़ीर और महात्माओं को बांटूँगा। जब बादशाह को अपने काम में सफलता हुई, तब उसने अपनी मानी हुई मन्नत पूरी करना ज़रूरी समझा। उसने अपने एक कृपापात्र नौकर को बुलाया और उसके हाथमें दीनारों से भरी हुई एक थैली देकर कहा कि इसे फ़क़ीरों को बाँट दो। कहते हैं, कि वह नौकर बड़ा बुद्धिमान् और समझदार था। वह सारे दिन चारों ओर घूमा-फिरा और जब सन्ध्या समय लौट कर आया तो उसने वही थैली बादशाह के आगे रख दी और कहा कि मुझे कोई फ़क़ीर न मिला। बादशाह ने कहा—"यह क्या बात है? इस नगर के एक सौ

जो फ़क़ीर रुपये और अशर्फ़ियों से वास्ता रखते हैं उन से तुम्हें वास्ता रखना न चाहिए।

फ़क़ीरों को तो स्वयं मैं ही जानता हूँ ।" उसने जवाब दिया—"हे जगत्-रक्षक ! जो फ़क़ीर हैं वे धन नहीं लेते और जो धन लेना चाहते हैं वे फ़क़ीर नहीं हैं ।" बादशाह ने हँस कर अपने दरबारियों से कहा—"मैं इस फ़िरक़े के लोगों—ईश्वर-पूजकों—पर इतनी कृपा रखता हूँ; लेकिन यह गुस्ताख़ उन परसे मेरी श्रद्धा हटाया चाहता है । न्याय इसकी ओर है । अगर फ़क़ीर दिरम और दीनारों को लेना स्वीकार करें तो तुम्हें फ़क़ीर के लिए और जगह खोज करनी चाहिये ।"

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि जो फ़क़ीर हैं, वे धनको हाथ नहीं लगाते और जो धन की चाहना रखते हैं या उसे ग्रहण करते हैं, वे फ़क़ीर नहीं हैं ।

चौंतीसवीं कहानी

नान अज़ बराये कुञ्ज इबादत गिरफ़्ता अन्द।
साहबेदिलाँ न कुञ्जेइबादत बराय नान॥
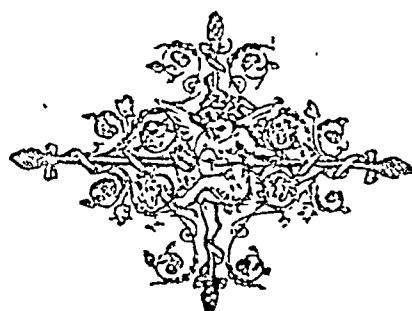
लोगोंने किसी बुद्धिमान् से पूछा कि आप ईश्वर के नाम पर निकाली हुई रोटी को कैसी समझते हैं? उसने जवाब दिया—"अगर लोग इसे अपने चित्त को शान्त करने और ईश्वर-भजन की वृद्धि करने के लिए लें, तो उनका यह काम न्यायसङ्गत है। अगर उनकी इच्छा एक मात्र रोटी पर ही रहे और किसी बात पर न रहे तो ऐसी रोटी लेना अनुचित है। महात्मा लोग एकान्तवास का आनन्द भोगने के लिए ही रोटी पाते हैं। वे रोटी पाने के लिए उपासना-गृहमें नहीं घुसते।"

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि जो लोग एकान्त स्थान में रहकर शान्तचित्त से ईश्वर-भजन में लीन रहते हैं, उन्हें ईश्वर के नाम पर निकाली हुई रोटी लेना अनुचित नहीं है। लेकिन जिन लोगों का ध्यान ईश्वर में तो नहीं रहता, किन्तु खाली रोटी में ही रहता है वे लोग उस रोटी के लेने के हक़दार नहीं हैं। आजकल इस देशमें ऐसे साधु-फ़क़ीरों की

भक्त पुरुष भजन के लिए ही रोटी खाता है, वह रोटी खाने के लिए भजन का ढोंग नहीं करता।

बहुत भरमार है जो रोटी कमाने के लिए ही फ़क़ीरों का सा वेश बनाते हैं; धन कमाने के लिए ही जटा-जूट बढ़ाते और अग्नि में काया तपाते हैं एवं अनेक प्रकार के रूप बदलते हैं।

पैंतीसवीं कहानी।

कोफ़्ता बर सफ़रये मन गो मबाश।
कोफ़्तारा नाने तही कोफ़्ता अस्त॥

एक फ़क़ीर ऐसे स्थान पर आया, जिस घर का मालिक आतिथ्य-सत्कार का बड़ा प्रेमी था। उस मण्डली में बड़े-बड़े बुद्धिमान् और सुवक्ता थे, जो रसिक लोगों की तरह आपस में हँसी-मज़ाक कर रहे थे। फ़क़ीर जङ्गल में सफ़र करता-करता थक गया था और उसने कुछ खाया भी न था। उन लोगों में से एक ने हँस कर फ़क़ीर से कहा कि

भूखे आदमी के लिए भुने हुए मांस की ज़रूरत नहीं; उसके लिए रूखी रोटी ही सब से अधिक स्वादिष्ट गिज़ा है।

आप भी कोई बात कहिए। फ़क़ीर ने जवाब दिया—"मुझमें और लोगों की भाँति रसिकता और वाक्पटुता नहीं है; अतएव मैं आशा करता हूँ कि आप मेरी एक बात सुनकर ही सन्तुष्ट हो जायँगे।" वे सब के सब उसके पीछे पड़ गये और उससे बारम्बार कहने लगे कि कुछ कहिए। फ़क़ीर ने कहा—"मैं भूखा हूँ। भोजन से भरी हुई थाली देखकर मेरी भूख इस भाँति उत्तेजित हो जाती है, जिस भाँति ज़नाना खाना-गार देखकर नवयुवक उत्तेजित हो जाता है।" फ़क़ीर की बात सुनकर सब के सब चुप हो गये और उसके लिए भोजन परोसने का हुक्म दिया गया। घरके मालिक ने कहा—"महाशय! ज़रा और सब्र कीजिए; मेरा नौकर माँस तय्यार कर रहा है।" फ़क़ीर ने सिर उठाकर कहा—"कह दीजिए कि मेरी थाली में माँस न परोसा जाय; क्योंकि क्षुधातुर मनुष्य के लिये कोरी रोटी ही स्वादिष्ट भोजन है।"

शिक्षा—इस कहानी का यही साराँश है, कि घर पर आये हुए अतिथि को पहले भोजन कराना चाहिए। भूखे मनुष्य को हँसी-दिल्लगी या और कोई बात अच्छी नहीं लगती; पेट भरने पर ही सारी बातें सूझा करती हैं। भूखे मनुष्य को रुचि नहीं होती। उसे रूखी-सूखी रोटी ही नेमत दिखती है।

छत्तीसवीं कहानी ।

गर गदा पेशरवे लश्करे इस्लाम बुवद ।
काफ़िर अज़ बीमे तवक्कह वरवद ता दरे चीन ॥

किसी शागिर्द ने अपने उस्ताद से कहा कि वेहद्दे मुलाक़ातियों से मुझे बड़ी तकलीफ़ होती है। वे लोग मेरे अमूल्य समय को वृथा नष्ट करते हैं। आप मुझे उनसे छुटकारा पाने की तरकीब बतलाइये। उस्ताद ने कहा—"अगर तुम्हें उनमें से किसी एक से भी मिलने की आवश्यकता न हो; तो जो धनहीन हैं उन्हें धन दो और जो धनवान् हैं उनसे धन माँगो। अगर मुसलमानी सेना का सेनानायक भिखमँगा होता तो नास्तिक लोग, उसके कुछ माँगने के भयसे, चीन को भाग जाते।"

मुसलमानी सेना का अध्यक्ष यदि भीख मांगता तो काफ़िर लोग भीख देने के भय से चीनको भाग जाते।

सैंतीसवीं और अड़तीसवीं कहानी।

वातिलस्त आंचे मुद्दई गोयद।
खुफ्तारा खुफ्ता के कुनद वेदार॥
मर्द वायद के गीरद अन्दर गोश।
वर नविश्तस्त पन्द वर दीवार॥

एक पण्डित ने अपने बाप से कहा—"वक्ताओं की वक्तृता का मुझ पर कुछ भी असर नहीं होता; क्योंकि वे लोग जो उपदेश देते हैं, आप स्वयं उसके अनुसार नहीं चलते। वे दूसरों को संसार से विरक्त होने का उपदेश देते हैं, किन्तु आप दौलत और माल जमा करते हैं। बुद्धिमान् जो आप उस काम को किये विना ही दूसरों को उपदेश देता है, उसकी बात का असर दूसरों पर नहीं पड़ता। बुद्धिमान् वही है जो पाप-कर्मों से बचता है। वह बुद्धिमान् नहीं है, जो दूसरों को भलाई सिखाता है किन्तु आप बुराई करता है। वह बुद्धिमान् जो आप राह भूलकर इन्द्रियों के विषय-सुख भोगने में लिप्त रहता है, दूसरों

यह बात झूठी है कि सोया हुआ मनुष्य दूसरे सोते हुए को नहीं जगा सकता। मनुष्य को चाहिए कि दीवार पर भी यदि कोई अच्छी बात लिखी हो तो उसे भी ग्रहण कर ले।

को अच्छी राह पर कैसे चला सकता है?" पिता ने उत्तर दिया—"पुत्र! तुम्हें इस अभिमान भरी कल्पना के आधार पर उपदेशकों के उपदेशों पर अश्रद्धा प्रकट करना और विद्वानों पर दोष लगाना उचित नहीं है। यदि तुम निर्दोष शिक्षक की खोज करते हो; तो तुम उस अन्धे की भाँति शिक्षा के लाभों से वञ्चित हो, जिसने एक रात को कीचड़ में गिरकर पुकार मचाई—'मुसलमानो! चिराग़ लाकर मुझे रास्ता दिखाओ।' उस समय एक गुस्ताख़ औरत बोल उठी—'जब तुम चिराग़ को ही नहीं देख सकते तब तुम्हें चिराग़ क्या दिखला सकेगा?' इसके सिवा, शिक्षक-मण्डली व्यापारी की दुकान के समान है जहाँ से तुम रुपये चुकाये बिना माल उठाकर नहीं ले जा सकते; उसी तरह जबकि तुम उपदेशक के पास अच्छे इरादे से न जाओ, तब तुम्हें वहाँ जाने से कोई लाभ न होगा। विद्वान् लोग चाहें आप अपने उपदेशानुसार न चलें; किन्तु तुम उनका उपदेश ख़ूब ध्यान देकर सुनो। विरोधियों का यह कहना, कि जो स्वयं सोता है, वह दूसरों को कैसे जगा सकता है, बिल्कुल बेजड़ है। मनुष्य को चाहिए, कि वह दीवार पर लिखा हुआ उपदेश देखकर उससे भी शिक्षा ग्रहण करे।"

शिक्षा—इस कहानी का यह मतलब है, कि बुद्धिमान् मनुष्य हर जगह से कुछ न कुछ सीख सकता है। उपदेशक स्वयं उपदेशानुसार चलता है या नहीं, इससे कुछ मतलब नहीं।

उसका उपदेश चित्त लगाकर सुनने से मनुष्य को कुछ न कुछ लाभ अवश्य हो सकता है; बुद्धिमान् वही हैं, जो खेल से भी नयी बात सीख लेते हैं और दीवार पर लिखे हुए उपदेश से भी शिक्षा लाभ करते हैं।

एक फ़क़ीर अपना मठ और महात्माओं की संगति छोड़ कर किसी महा-विद्यालय का सदस्य हो गया। मैंने पूछा—"क्योंजी! विद्वान् और धार्म्मिक बनने में क्या प्रभेद है जो आपमें, अपना समाज छोड़कर, अन्य समाज में मिलने की प्रवृति हुई?" उसने कहा—"फ़क़ीर जल-प्रवाह से केवल अपना ही कम्बल बचाता है; किन्तु विद्वान् दूसरों को भी डूबने से बचाता है।"

शिक्षा-इस कहानीका सारांश यही है, कि विद्वान् महात्माओं से भी बड़ा होता है; क्योंकि वह हज़ारों लाखों को अपने उपदेशामृत से सीधे रास्ते पर लाता और उन्हें कुव्यसनों में पड़ने से बचाता है।

उन्तालीसवीं कहानी ।

मतावपे पारसा रू अज़ गुनहगार ।
बबख़्शायन्दगी दर बै नज़ार कुन ॥ १ ॥
अगर मन नाजवाँमरदम बकिरदार ।
तो बरमन चूँ जवाँमरदाँ गुज़ार कुन ॥ २ ॥

एक आदमी बेख़बर सड़क पर सो रहा था । उसी राह से एक साधु निकला । वह उसको शराबी को सी हालत देखकर नाक-भौं चढ़ाने लगा । उस जवान ने अपना सिर उठाकर कहा—"जब तुम्हें कोई असावधान—ग़ाफ़िल—मनुष्य मिले तब उस पर दया करो और जब तुम्हें कोई पापी मिल जाय, तब उसके पापों को छिपाओ और उस पर रहम करो । तू जो मेरी नादानी देखकर मुझ से नफ़रत करता है; अच्छा होता, यदि तू मुझ पर दया करता । हे साधु ! पापी को देखकर मुँह न फेर, वरन उस पर दया कर । यदि मेरा आचरण असभ्य हो तो पर्वा न कर; किन्तु तू स्वयँ मेरे साथ सभ्यता का बर्ताव कर ।"

ऐ भक्त ! पापी को देख कर तुझे घिन न करनी चाहिए । चाहिए उस पर दया करनी । यदि मैं काम करने में असमर्थ हूँ तो भी तुझे सामर्थ्यवानों की तरह मुझ से व्यवहार करना चाहिए ।

शिक्षा—ऐसे लोग बहुत कम देखे जाते हैं, जो पापियों के पाप-कर्म पर पर्दा डालें और उनपर दया-दृष्टि रखकर उन्हें सुधारने का यत्न करें। ऐसे लोग बहुत हैं जो पापियों को देखकर हँसते हैं और जहाँ जाते हैं, वहीं उनकी निन्दा करते हैं। इस कहानी से हमें यह नसीहत मिलती है, कि जब हम मूर्ख असभ्य बदतमीज़ और कुत्सित राह पर चलनेवालों को देखें, तब उन पर मिहरबानी करें और यथा-सामर्थ्य उनको सुधारें।

चालीसवीं कहानी।

दर्याये फ़िरावाँ न शवद तीरह बसंग।
आरिफ़ के बरंजद तुनकआवस्त हनोज़॥ १॥

लुच्चों का एक दल एक फ़क़ीर से वाद-विवाद करने आया और ऊटपटाँग बातें कहने लगा। फ़क़ीर को यह बात बुरी लगी। उसने अपने मन्त्रदाता गुरु के पास जाकर सारा रोना रोया। उसने उत्तर दिया—

नदी एक पत्थर से गदली नहीं हो सकती ; फ़क़ीर जो तकलीफ़ों से घबराता है ओछा पानी है।

"बेटा! फ़क़ीरों की पोशाक सब्र की पोशाक है। जो मनुष्य इस पोशाक को पहनता है, किन्तु कष्ट को नहीं सह सकता, वह इस वेश का दुश्मन है और इसका अधिकारी नहीं है। बड़ी भारी नदी एक पत्थर से गदली नहीं हो सकती। फ़क़ीर जो कष्टों से दुःखी होता है, छिछला पानी है। यदि कोई मुसीबत आपड़े तो उसे बर्दाश्त करो। दूसरों को क्षमा करने से तुम्हें भी क्षमा मिलेगी। हे भाई! अन्त में हमें मिट्टी में मिलना पड़ेगा; इसलिए हमें चाहिए कि हम ख़ाक होने से पहले अपने तईं ख़ाक बना डालें।"

शिक्षा—इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हमें अपनी देह पर भूलकर भी अभिमान न करना चाहिए। इस देह को क्षण-भङ्गुर और मिट्टी में मिल जाने वाली समझना चाहिए। यह बात बहुत ही ठीक है, कि यह हमारी देह जिसको हम खूब सजाते-सँवारते हैं मिट्टी से बनी है और एक दिन निश्चय ही मिट्टी में मिल जायगी। इस मिट्टी की बनी हुई और मिट्टी में मिलजानेवाली देह पर अभिमान करना और अपने तईं बड़ा समझना अक़्लमन्दी नहीं है। जब हमें इस बात का निश्चय है, कि यह देह एक दिन मिट्टी होगी, तब हमें उचित है कि हम इसे पहले से ही मिट्टी बना लें। देह को मिट्टी करने का यह मतलब नहीं है, कि हम अपने स्वास्थ्य को नाश करके या और किसी तरह काया को हानि पहुँचा कर ख़राब करलें; किन्तु यह मतलब है कि

हम ऐसे नम्र और शान्त हो जायँ जैसी मिट्टी या ख़ाक है। मिट्टी पर जगत् पैर रखता और उसे खूँदता है, मगर वह चूँ तक नहीं करती। हम लोगों में भी वैसी ही सहनशीलता होनी चाहिए कि अपने तईं सदा नम्र और विनीत बनाये रक्खें और किसी के कटु या अप्रिय वचन सुनकर बुरा न मानें।

इकतालीसवीं कहानी।

हर्के बेहूदा गर्दन अफ़राज़द।
ख़ेश्तन रा बर्गर्दन अन्दाज़द ॥ २ ॥

यह क़िस्सा ध्यान देकर सुनिये। बग़दाद नगर में, निशान और पर्दे में झगड़ा हुआ। निशान ने सड़क की धूल से घृणा करके और चलने से थक कर कहा—"तुम और हम दोनों एक ही पाठशाला के निकले हुए हैं और दोनोंही बादशाह की कचहरी में नौकरी करते

, जो कोई अपनी गर्दन ऊँची करता है, वही मुँह के बल गिरता है। मतलब यह है कि—न गणस्याग्रतो गच्छेत्।

२१

हैं। मुझे काम के मारे कभी दम मारने को फ़ुर्सत नहीं मिलती। मुझे बारहों महीने घूमना पड़ता है। तुम्हें लड़ाई पर जाने की थकावट, क़िले पर छापा मारने के ख़तरे, जङ्गल की विपत्ति और धूल-मिट्टी में पड़ने का अनुभव नहीं है। साहस के कामों में मेरा क़दम तुमसे आगे है, फिर भी न जाने क्यों तुम्हारा दर्जा मुझ से ऊँचा है? तुम जुही चमेली के समान सुगन्धि देनेवाली चन्द्रमुखी कन्याओं और सुन्दर-सुन्दर नवयुवकों के बीच में अपना समय बिताते हो। मुझे मज़दूर हाथों में ले चलते हैं और मैं बँधे हुए पैरों से सफ़र करता हूँ। मेरा सिर मारे हवा के घबरा जाता है।" पर्दे ने जवाब दिया—"तुम्हारा सिर आसमान में रहता है और मेरा सिर देहली पर रहता है। जो कोई मूर्खता से अपनी गर्दन ऊँची रखता है, वह अपने तई जान-बूझकर विपत्ति में फँसाता है।"

शिक्षा—जो ऊँचा चढ़ता है, वह अवश्य ही नीचे गिरता है। मतलब यह है, कि ग़रूर का सिर सदा नीचा रहता है; अतः मनुष्य को भूलकर भी घमण्ड न करना चाहिए।

बयालीसवीं कहानी।

बनी आदम सरश्त अज़ ख़ाक दारन्द।
अगर ख़ाकी न बाशद आदमी नेस्त॥ १॥

एक महात्मा ने एक पहलवान को देखा। पहलवान क्रोध के मारे लाल हो रहा था और उसके मुँह से झाग निकल रहे थे। उसकी यह हालत देखकर महात्मा ने किसी से उसका कारण पूछा। जवाब मिला कि उसे किसी ने गालियाँ दी हैं। महात्मा ने यह बात सुनकर कहा—"यह अधम जो बारह मन का पत्थर उठा लेता है, एक बात बर्दाश्त करने की ताक़त नहीं रखता! ऐ दुर्बल-हृदय मनुष्य! तू अपने बल और साहस का मिथ्या घमण्ड छोड़ दे। तेरे जैसे मर्द और औरत में क्या फ़र्क़ है? अगर हो सके, तो मीठा बोलने में अपनी शक्ति दिखा। दूसरे आदमी के मुँह पर घूँसा मारना शहज़ोरी नहीं है। जो शख़्स हाथी का माथा फाड़ सकता है, अगर उसमें आदमीयत नहीं है, तो वह मर्द नहीं है। आदम की औलाद नर्म मिट्टी से बनी है। अगर तुझ में नम्रता नहीं है तो तू आदमी नहीं है।"

मनुष्य ख़ाक से बना है, यदि उसमें 'ख़ाकसारी' (नम्रता) नहीं है तो फिर वह आदमी नहीं है।

शिक्षा—इस कहानी से यह नसीहत मिलती है, कि बलवान् मनुष्य को दुर्बलों पर ज़ोर-आज़माई न करनी चाहिए। वही सच्चा बलवान् ज़ोरावर एवं साहसी है, जिसने अपनी इन्द्रियों को अपने अधीन कर लिया है। जो शख़्स अपनी इन्द्रियों को भी अपने अधीन नहीं रख सकता, वह शारीरिक बल में बलवान् होने पर भी बलवान् नहीं है। जो नम्र है, जो शान्त है, जो सहनशील है, वही मर्द है। जो पहलवान दस-बीस मन का पत्थर आसानी से उठा सकता है; अपनी छाती पर हाथी चढ़ा सकता है; सिंह को बिना हथियार मार सकता है, युद्ध में हज़ारों योद्धाओं को धराशायी कर सकता है; अगर उसमें नम्रता और सहनशीलता न हो तो वह बलवान्, वीर्य्यवान् और साहसी नहीं कहलाया जा सकता। मनुष्य जब नर्म मिट्टी से बना है, तब उसे मिट्टी की भाँति ही नर्म और सहिष्णु होना उचित है।

तैंतालीसवीं कहानी।

हज़ार ख़ेश के बेगाना अज़ ख़ुदा बाशद।
फ़िदाये यक तने बेगाना आशना बाशद॥ १॥

किसी ने एक विद्वान् से उसके भाई सूफ़ियों के आचरण के विषय में पूछा। उसने जवाब दिया,—"वे मित्रों की इच्छा पूर्ण करने की अपेक्षा अपनी इच्छा पूर्ण करना पसन्द करते हैं, यही उनमें कमीनापन है। हकीमों ने कहा है, कि वह भाई जो अपनी ही फ़िक्र रक्खे न तो भाई है और न अपना है। सफ़र में तुम ठहरो और तुम्हारा साथी चलने की जल्दी करे तो उसे अपना साथी मत समझो। जो तुम से प्रेम नहीं रखता, उसपर तुम भी प्रेम मत रक्खो। रिश्तेदारों में धार्म्मिकता और ईश्वर-निष्ठा न हो तो उनसे रिश्ता तोड़ देना ही भला है।" मुझे याद है, कि एक विपक्षी ने उपरोक्त बात पर आपत्ति की और कहा कि क़ुरान में ईश्वर ने रिश्तेदारों से रिश्ता तोड़ने की मनाही की है और दूसरों की अपेक्षा रिश्तेदारों के साथ ही दोस्ती रखने का हुक्म दिया है। तुमने जो ऊपर कहा है, वह क़ुरान की विधि के

ईश्वर को न जानने वाले हज़ार परिचित व्यक्ति ईश्वरज्ञ एक अपरिचित व्यक्ति पर न्योछावर हैं।

विरुद्ध है। मैंने जवाब दिया—"तुम ग़लती करते हो। मेरी बात क़ुरान के अनुकूल है। ईश्वर ने कहा है—अगर तेरे माता-पिता इस बात की कोशिश करें कि तू अपने साथ उनको भी शरीक कर ले जिनको तुझे ख़बर नहीं है, तो उनकी बात न मान। ईश्वर को पहचाननेवाले एक अपरिचित पर ईश्वर को न जाननेवाले हज़ार रिश्तेदार निछावर हैं।"

शिक्षा—समान गुण धर्म वाले मनुष्यों से ही मित्रता करनी चाहिए।

चँवालीसवीं कहानी।

ख़ूए बद दर तबीअते के नशिस्त।
न रवद जुज़ बवक़्ते मर्ग अज़ दस्त॥
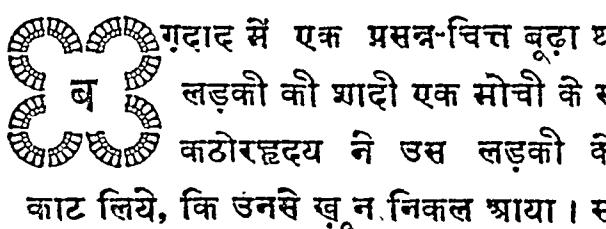
बग़दाद में एक प्रसन्न-चित्त बूढ़ा था। उसने अपनी लड़की की शादी एक मोची के साथ कर दी। उस कठोरहृदय ने उस लड़की के होंठ इस तरह काट लिये, कि उनसे ख़ून निकल आया। सवेरे बाप ने अपनी

बुरी आदत पड़ जाने पर मृत्यु तक वह नहीं छूटती है।

लड़की का यह हाल देखकर अपने दामाद से जाकर कहा—"ए नीच! तेरे दाँत किस तरह के हैं जो तूने उसके होठोंको चमड़े की तरह चबा डाला? मैं मज़ाक नहीं करता। तू दिल्लगी को छोड़ और क़ायदे के माफ़िक आनन्द कर। जब किसी में बुरी आदत पड़ जाती है, तब वह मरण काल तक नहीं छूटती।"

शिक्षा--इस कहानी का यही सार है, कि जिसका जो स्वभाव पड़ गया है वह उसके जीके साथ जाता है।

———

पैंतालीसवीं कहानी।

ज़िश्त बाशद दबीक़िओ देबा।
के बुवद बर अरूसे नाज़ेबा॥ १॥

किसी वकील के एक कुरूपा कन्या थी। वह व्याहने योग्य हो गयी थी। वकील ने अपनी कन्या के दहेज़ में बहुत सा धन-माल और अन्यान्य बहुमूल्य सामान देने की प्रतिज्ञा की; परन्तु कोई भी उस कन्या के

अच्छे कपड़े बदसूरती को दूर नहीं कर सकते।

साथ शादी करने पर राज़ी न हुआ । बदसूरत दुलहिन को ज़री और कमख़ाब शोभा नहीं देते । बहुत बात बढ़ाने से क्या, उसने लाचार होकर उस कन्या का व्याह एक अन्धे मनुष्य के साथ कर दिया । कहते हैं कि उसी साल लङ्का से एक ऐसा हकीम आया जो अन्धों की आँखें ठीक कर सकता था । लोगों ने उस कन्या के पिता से कहा कि तुम अपने दामाद की आँखें ठीक क्यों नहीं करा लेते ? उसने कहा—"मुझे इस बात का भय है कि ज्योंहीं उसे सूझने लगेगा त्योंही वह अपनी बीबी को छोड़ देगा । कुरूपा स्त्री के पतिका अन्धा रहना ही अच्छा है ।"

महाकवि माघ ने ठीक कहा है,—*सर्वः स्वार्थं समीहते ।*

छियालीसवीं कहानी।

पे दरूनत विरहना अज़ तक़वा।
कज़ा वरूँ जामये रिया दारी ॥ १ ॥
पर्दये हफ्त रंग दर वगुज़ार।
तो के दर ख़ाना वोरिया दारी ॥ २ ॥

कोई बादशाह फ़क़ीरों को बहुत ही नफ़रत की नज़र से देखता था। एक फ़क़ीर को यह बात मालूम हुई तो उसने बादशाह से कहा—"आप ख़ाली बाहरी शान-शौक़त में हम से चढ़े-बढ़े हो; परन्तु ज़िन्दगी का सुख जितना हमलोगों को मिलता है, उतना आपको नहीं मिलता। मरने के समय हम और तुम बराबर हो जायँगे। ईश्वर के सामने पहुँचने पर हमारी दशा तुमसे अच्छी हो जायगी। यद्यपि अनेक राज्यों का विजेता बादशाह स्वतन्त्र प्रभुत्व का सुख भोगे और फ़क़ीर रोटी का भी मुहताज हो; तथापि मृत्यु के समय दोनों ही कफ़न के सिवाय कुछ साथ न ले जायँगे। इस दुनिया को छोड़कर दूसरी दुनिया में जाने और आनन्द करने के लिए बादशाही से फ़क़ीरी अच्छी है। फ़क़ीरों

जो बाहर से धर्म्म का ठाट दिखाता है पर अन्दर से दुष्ट है, वह उस मूर्ख मनुष्य के सदृश है जिसने बोरिया बिछे हुए मकान के दरवाज़े पर सात रंग का परदा छोड़ा है।

की पोशाकें थेगड़ीदार और शिर मुँडा हुआ रहता है ; लेकिन सच बात तो यह है, कि उनका हृदय सजीव होता है और इनकी इन्द्रियाँ मरी हुई होती हैं ।

"वह मनुष्य नहीं है, जो मनुष्यों के साथ मूर्खता से दावा करे और जो कोई उसके विरुद्ध काम करे तो उससे झगड़ा करने को तय्यार हो । अगर पहाड़ परसे पत्थर की चक्की गिरे और वह मनुष्य जो उस पत्थर की राह से हट जावे, ईश्वर में विश्वास रखनेवाला नहीं है । फ़क़ीर का कर्त्तव्य है, कि वह ईश्वर से पुकार करे, उसी के गुण गावे, उसके आज्ञानुसार चले, उसकी उपासना करे, भिखारियों को भिक्षा दे, सन्तुष्ट रहे, अपनी वासनाओं को त्याग दे और इस बात का विश्वास रक्खे कि ईश्वर एक है । जिसमें उपरोक्त गुण मौजूद हों, वह बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहनने पर भी असली साधु है । इसके विपरीत निकम्मा बकवादी जो ईश्वरोपासना नहीं करता, जो अपनी इन्द्रियों के अधीन है, जो इन्द्रियों की विषय-वासना पूरी करने में दिन को रात करता है, सोने से दिन को रात बना देता है, जो कुछ पाता वही खा जाता है और जो कुछ ज़ुबान पर आता है वही कह बैठता है; कुराह पर चलने वाला है ; चाहे वह कम्बल के सिवा और कुछ भी पास न रखता हो ।

"ओ तू ! जो अन्दर से परहेज़गार नहीं है, किन्तु ज़ाहिर में दिखाने के लिये मक्र की पोशाक पहनता है, बोरिया बिछे हुए मकान के आगे सात रङ्ग का पर्दा न डाल ।"

शिक्षा--इस कहानी का खुलासा यह है, कि बादशाहों से फ़क़ीरों का दर्जा ऊँचा है ; क्योंकि फ़क़ीरों को जीवन का जो सच्चा सुख और शान्ति मिलती है, वह बादशाहों को नहीं मिलती। दूसरे, मरने के समय बादशाह और फ़क़ीर एक समान हो जाते हैं और दोनों ही यहाँ से सिवा कफ़न के और कुछ साथ नहीं ले जाते। जब ईश्वर के सामने उनका न्याय होता है, तब फ़क़ीर तो निष्पाप रहने और ईश्वर से प्रेम रखने और उसी की उपासना करने के कारण ऊँचे पद पर पहुँचता है और बादशाह नीचे गिराया जाता है ; क्योंकि जीवन भर वह राज्य की झंझटों में फँसा रहकर कभी शान्त चित्त से ईश्वर का भजन नहीं कर सका था तथा अनेक स्थानों में बड़े-बड़े पाप कर बैठा था। फ़क़ीर को दोनों दुनियाओं में सुख-शान्ति मिलती है। जब तक जीता है, तब तक इच्छारहित होजाने से शान्ति से जीवन बिताता है और मरने पर स्वर्ग में जाता है। लेकिन यह सब सुख उसी फ़क़ीर को मिलते हैं, जो वास्तव में फ़क़ीरों के से गुण रखता है। जो दिखलाने को फ़क़ीरों की सी पोशाक पहनते हैं, किन्तु अन्दर से ईश्वर-भक्ति से कोरे हैं, जिनकी इन्द्रियाँ उनके अधीन नहीं हैं और जिन्होंने इच्छा को नहीं छोड़ा है, वह फ़क़ीर नहीं बल्कि मक्कार और फ़रेबी हैं।

सैंतालीसवीं कहानी।

बदवख़्त कसे के सर बतावद।
ज़ीं दर के दरे दिगर नयावद॥ १॥

मैंने कुछ ताज़ा गुलाब के फूलों के गुलदस्ते देखे, जो एक गुम्बद पर घास के साथ बँधे हुए थे। मैंने कहा—"कौनसी घास है जो इस भाँति गुलाब के साथ रह सकती है?" घास ने रोकर कहा—"चुप रहो, परोपकारी अपने साथी को नहीं भूलते। यद्यपि मुझ में सुन्दरता, रङ्ग और सुगन्ध आदि कुछ भी नहीं है तो भी क्या मैं ईश्वर के बाग़ की घास नहीं हूँ? मैं उस परमेश्वर की सेविका हूँ, उसीकी कृपा से प्राचीन काल से मेरा प्रतिपालन होता है। मुझ में चाहें गुण हों अथवा न हों; तथापि मैं ईश्वर से दया की आशा रखती हूँ। यद्यपि मैं किसी योग्य नहीं हूँ और मेरे पास कोई ज़रिया भी नहीं है जिससे मैं अपनी सेवा उसे जताऊँ; लेकिन वह अपने सेवक को, अन्यान्य अवलम्बों से हीन होने पर भी, सहायता करने में समर्थ है। यह क़ायदा है कि मालिक अपने पुराने ग़ुलामों को ग़ुलामी से छोड़ देते हैं। हे ईश्वर! तूने इस जगत् को अपनी सृष्टिसे

जो ईश्वर के द्वार से शिर हटाता है, उस अभागे के लिए संसार के सब द्वार बन्द होजाते है।

सुशोभित कर दिया है। अपने इस पुराने नौकर को स्वतन्त्रता दे। ऐ सादी। परितोष के मन्दिर की राह पकड़। मनुष्यो! धर्म-मार्ग पर चलो। जो मनुष्य इस द्वार से सिर हटाता है, वह अभागा है; क्योंकि उसे दूसरा द्वार नहीं मिलेगा।"

शिक्षा--इस कहानी का यह सारांश है कि, इस जगत् में जो कुछ है वह सब ईश्वर का बनाया हुआ है। वह अपने सेवकों की खूब सम्हाल रखता और उन्हें सहायता देता है। मनुष्य को चाहिए, कि ईश्वर की सेवा में कोताही न करे और सदा नेकी और परोपकार में चित्त रक्खे। मनुष्य के लिए ईश्वर-दर्शन का यही सबसे अच्छा द्वार है।

अड़तालीसवीं कहानी।

ज़काते माल वदर कुन के फ़ज़लए रज़रा।
चो बाग़वाँ बबुर्द बेश्तर दिहद अंगूर ॥ १ ॥

किसीने एक अक्लमन्द से पूछा कि सख़ावत और जवाँमर्दी इन दोनोंमें से कौन अच्छी है ? अक्लमन्द ने कहा—"जिसमें सख़ावत है, उसे जवाँमर्दी की ज़रूरत नहीं। बहराम गोरकी समाधि पर लिखा हुआ था—'दानी हाथ बलवान भुजाओं से अच्छे हैं। हातिमि ताई अब नहीं है; लेकिन उसका बड़ा नाम अनन्तकाल तक प्रसिद्ध रहेगा।' अपने धन का दसवाँ हिस्सा दान कर दिया करो; क्योंकि जब किसान अङ्गूर के वृक्षों की बढ़ी हुई डालियों को काटकर फैंक देता है, तब उनमें और भी अधिक अङ्गूर उत्पन्न होते हैं।"

शिक्षा—इस कहानी में परोपकार या दानकी प्रशंसा की गई है। हातिमि ताई बड़ा ही परोपकारी पुरुष था। उसके परोपकारों की बातें पढ़कर मनुष्य हैरत में आजाता है। हातिम मर गया, किन्तु उसका नाम, उसकी परोपकारवृत्ति के कारण

दान करने से धन घटता नहीं—बढ़ता है। अंगूरों की शाखाएँ काटने से और ज्यादा अंगूर आते हैं।

दान से धन तो बढ़ताही है और चित्त की शुद्धि नफ़े में होजाती है।

आजतक लोगों की ज़ुबान पर है और अनन्त समय तक इसी भाँति रहेगा। अतः मनुष्य को सदा परोपकार में चित्त रखना चाहिये। ईश्वर ने यह मनुष्य-देह परोपकार के लिए ही रची है।

तीसरा अध्याय।

सन्तोष का महत्त्व।
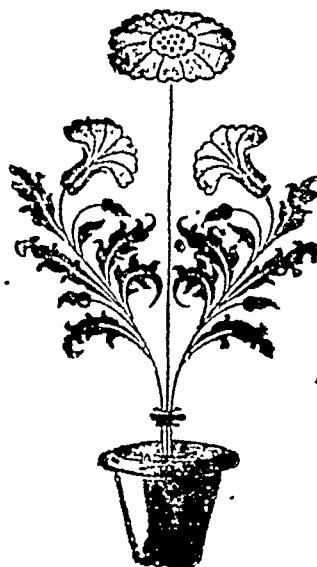
पहली कहानी।

ऐ क़नाअत तवन्‌गरम गरदाँ।
के वराये तो हेच नेमत नेस्त॥ १॥

एक अफ्रीकी सनिया कपड़ा बेचनेवालों के कूचे में इस तरह कह रहा था:—"ऐ धनी लोगो! अगर तुम लोगोंमें न्याय होता और हम लोगों में सन्तोष होता; तो संसार से भीख माँगने की प्रथा ही उठ जाती।"
हे सन्तोष! मुझे धनी बना दे; क्योंकि तेरे बिना कोई धनी

---

१ ऐ सन्तोष! मुझे दौलतमन्द बना दे—क्योंकि संसार की कोई दौलत तुझ से बढ़ कर नहीं है।

नहीं है। लुक़मान ने एकान्त-वासमें सन्तोष धारण किया था। जिसके दिलमें सन्तोष नहीं है उसमें तत्त्वज्ञान—हिकमत—नहीं है।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि जगत्में "सन्तोष" ही सबसे बड़ा धन है। जिसमें सन्तोष नहीं है, वह भारी से भारी धनी होने पर भी, निर्धन है। जिसके हृदय में असन्तोष नहीं है, वही सदा सुखी है। लाख, करोड़ और अरब खरब की सम्पदा होने पर भी जो सन्तोष-हीन है वह परम दुःखी है। सन्तोषी मनुष्य ही सच्चा सुख भोग करता है।

दूसरी कहानी।
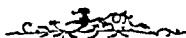
मन आँ मोरम के दर पायम विमालन्द।
न ज़ंबूरम के अज़ नेशम विनालन्द॥ १॥

सिस देशमें किसी अमीर के दो लड़के थे। उनमें से एक ने इल्म सीखा और दूसरे ने दौलत जमा की। पहला अपने समय का सब से भारी विद्वान् हुआ और दूसरा मिस्र का बादशाह हुआ। धनवान् भाई

मैं उस चींटी के समान हूँ जो पांव तले रौंदी जाती है, किन्तु वह बर्र नहीं हूँ, जिस के डंक की तकलीफ़ से लोग रोते हैं।

अपने विद्वान् भाई को नफ़रत की नज़र से देखता और कहता—"देखो! मैं बादशाह हो गया और तुम उसी कङ्गाली की हालत में पड़े हो।" उसने जवाब दिया—"ऐ भाई! मुझे ईश्वर का कृतज्ञ होना चाहिए, क्योंकि मुझे पैग़म्बरों की मीरास—अक़्ल—मिली और तुमने फ़रऊन और हामान का भाग—मिस्र का राज्य—पाया। मैं वह चींटी हूँ, जिसे लोग पैर तले रौंदते हैं; लेकिन वह बर्र नहीं हूँ, जिसकी लोग शिकायत किया करते हैं। मनुष्यों पर अत्याचार—ज़ुल्म—करने का कोई ज़रिया मेरे पास नहीं है, ईश्वर की इस कृपा के लिए मैं उसे किस तरह धन्यवाद दूँ?"

शिक्षा—इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य को हर हालत में खुश रहना चाहिए। सन्तोष-वृत्ति धारण करने से मनुष्य सदा सुखी रहता है और दुःख-क्लेश आदि उससे हज़ारों कोस दूर रहते हैं।

तीसरी कहानी।

यनाने खुश्क क़नाअत कुनीमो जामये दल्क़।
के रंज मेहनते खुद वह के वार मिन्नते खल्क़ ॥१॥

मैं ने सुना कि एक फ़क़ीर दरिद्रता के मारे बहुत ही दुःखी था; और थेगड़ियों पर थेगड़ियाँ सिया करता था; किन्तु अपने मनको धीरज देनेके लिए नीचे लिखा हुआ पद कहा करता था—"मैं सूखी रोटी और गुदड़ी से ही सन्तुष्ट हूँ; क्योंकि मनुष्य की कृतज्ञताका भार उठाने की अपेक्षा, अपनी आवश्यकताओं का भार अपने ही सिर लेना अच्छा है।"

किसी ने उससे कहा, कि अमुक मनुष्य इस नगर में बड़ा ही उदारचित्त और परोपकारी है। वह सदा साधुओं की सहायता देना चाहता है और हमेशा प्रत्येक मनुष्य को सुखी करने के लिए तय्यार रहता है। उसके होते हुए, तुम हाथ पर हाथ धरे कैसे बैठे हो? उसने जवाब दिया—"अपनी आवश्यकताओं का भार उसके सिर पर डालने की अपेक्षा, बिना उन चीज़ों के मर जाना अच्छा है। कहा है, कि किसी

मैं सूखी रोटी और थेगड़ीदार गुदड़ी में खुश हूँ। मैं मनुष्यों के ऐहसान के भार से अपने दुःख का भार हल्का समझता हूँ।

अमीर को कपड़ों के लिए निवेदन-पत्र लिखने की अपेक्षा, थेगड़ी पर थेगड़ी लगाकर सन्तुष्ट रहना अच्छा है।" सच बात तो यह है, कि अपने पड़ोसी की मदद से स्वर्ग में प्रवेश करना, नरक की यातनाओं के बराबर है।

शिक्षा— इस कहानी का ख़ुलासा यह है, कि मनुष्य को चाहिए कि अपनी आवश्यकताओं को पूरी करने का भार दूसरों के सिर पर न डाले; आप जिस अवस्था में हो उसी में सन्तुष्ट रहे। लोगों से माँग-माँगकर अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनने और स्वादिष्ट भोजन करने की अपेक्षा, निराहार रहना और और रास्ते के पड़े हुए चिथड़े लपेट लेना अच्छा है।
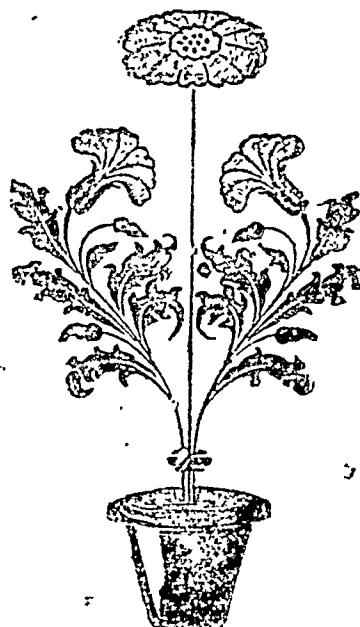
चौथी कहानी ।

सुख़न आँगह कुनद हकीम आग़ाज़ ।
या सर अँगुश्त सूये लुक़्मा दराज़ ॥ १ ॥
के ज़े नागुफ्तनश ख़लल ज़ायद ।
या ज़े ना खुरदनश बजाँ आयद ॥ २ ॥
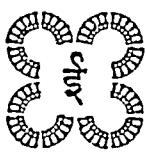
ईरान के बादशाहों में से एक ने एक सुचतुर हकीम को मुस्तफ़ा के पास भेजा। वह कई बरस तक अरब में रहा; किन्तु कोई भी उसके हुनर की आज़मायश करने न आया और न किसी ने उससे कोई दवा ही माँगी। एक दिन वह पैग़म्बरों के बादशाह के पास गया और दुःखी होकर कहने लगा—"लोगोंने मुझे आपके साथियों की दवा-दारू करने भेजा था; किन्तु आजतक मुझे किसीने भी न पूछा; इससे जिस सेवा के लिए मैं भेजा गया था, उसके करने का मैंने मौक़ा न पाया।" मुहम्मद ने जवाब दिया—"इन लोगोंमें यह रीति है, कि जब तक यह भूख से ख़ूब

हकीम उस समय बोलता है, जब कि बिना उसके बोलने के हानि होती है। या तो भोजन ज्यादा खाया जाय या बिल्कुल न खाया जाय—इन दोनों कारणों से मृत्यु हो सकती है और ऐसे ही अवसर पर हकीम को बोलने की आवश्यकता पड़ती है।

व्याकुल नहीं होते, तबतक हरगिज़ भोजन नहीं करते और जब खासी भूख रहती है, तभी भोजन करने से हाथ खींच लेते हैं।" हकीम ने जवाब दिया—"स्वास्थ्य-सुख भोगने का यही तरीक़ा है।" पीछे वह हकीम पैग़म्बर को सलाम करके वहाँ से चलता बना। हकीम उसी समय बोलता है जबकि उसके न बोलने से हानि होती है। खाना अत्यधिक खाया जाता हो या निराहार रहने से मृत्यु होती हो; ऐसे समय में उसका बोलना कि ऐसा भोजन करना स्वास्थ्य के लिए हितकारी है, निस्सन्देह बुद्धिमानी है।

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है, जो लोग ख़ूब भूख लगने पर खाते हैं और कुछ भूख बाक़ी रहने पर ही भोजन करना छोड़ देते है अर्थात् अल्प आहारसे ही सन्तुष्ट हो जाते हैं, उन्हें वैद्य हकीमों की ज़रूरत नहीं होती। ख़ूब भूख लगने पर भोजन करना और कुछ भूख बाक़ी रखना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।
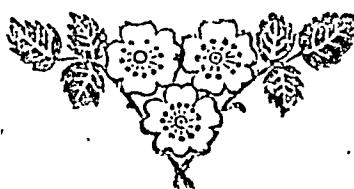
पाँचवीं कहानी ।

किसी मनुष्य ने बहुत सी प्रतिज्ञाएँ कीं और पीछे वे सब भङ्ग कर दीं। एक बुज़ुर्ग ने उससे कहा—"मैं जानता हूँ, कि तुम अधिक खाने का अभ्यास करते हो और तुम्हारी भूख रोकनेकी प्रवृत्ति बाल से भी कमज़ोर है। जिस भाँति तुम क्षुधा शान्त करते हो, उससे ज़ञ्जीर टूट सकती है। एक दिन ऐसा आवेगा कि तुम्हारी यह बदपरहेज़ी तुम्हें तकलीफ़ देगी।" किसीने एक भेड़ियेका बच्चा पाला था। जब वह बड़ा हो गया; तब उसने अपने मालिक को ही चीर-फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि जो मनुष्य नाक तक पेट भरने को ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं, जिनकी धुन हर समय खानेमें ही रहती है, जो भूख के अधीन होते हैं, उनको जब कभी खाना नहीं मिलता या अत्यधिक खानेसे बीमार हो जाते हैं, तब इस चोलेको ही छोड़ने के लिये लाचार होते हैं। मनुष्यको चाहिए कि अल्पाहारसे ही सन्तुष्ट और प्रसन्न रहे और भूखको रोकनेकी भी शक्ति रक्खे; जिससे उसे अत्यधिक खाने अथवा भोजन न मिलने के कारण प्राण न खोने पड़ें। जो अपने पीछे बुरी आदतें लगा देते हैं, अन्तमें उनकी बुरी आदतें ही उनका नाश कर देती हैं।

छठी कहानी।

खुर्दन बराये ज़ीस्तन व ज़िक्र कर्दनस्त।
तो मोतक़िद के ज़ीस्तन अज़ बह्रे खुर्दनस्त ॥ १ ॥

अर्दशीर बाबकान के इतिहास में लिखा है, कि उसने एक अरबी हकीम से पूछा कि दिन भरमें कितना भोजन करना चाहिए। उसने जवाब दिया कि एक सौ दिरम भर भोजन काफ़ी है। बादशाह ने कहा—"इतने अल्प भोजन से कितनी ताक़त आवेगी?" हकीम ने कहा—"इतना भोजन तुम्हें सम्हालने के लिये काफ़ी है और जो इससे अधिक खाओगे तो तुम्हें भोजन को सम्हालना होगा अथवा उसे लिये-लिये फिरना होगा। हम लोग जीवित रहने और ईश्वर का गुणानुवाद करने के लिए खाते हैं। तुम्हारा यह विश्वास है, कि लोग खाने के लिए जीते हैं।"

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है, कि मनुष्य को अल्पाहार पर सन्तोष रखकर इतना खाना चाहिए, जितना खाने से यह काया ठहरी रहे। अत्यधिक खाने से मनुष्य को स्वास्थ्य-सुख नहीं मिल सकता। मनुष्य ज़िन्दा रहने और भगवान्

भोजन सिर्फ जिन्दा रहने के लिए और ईश्वर-भजन करने के लिए किया जाता है पर तू मूर्ख, खाने के लिए जिन्दगी को समझता है।

का भजन करने के लिए खाता है न कि खाने के लिए ज़िन्दा रहता है। मतलब यह है, कि मनुष्यों को थोड़े से भोजन पर ही सब्र करना अच्छा है।

सातवीं कहानी।

चौ कम खुर्दन तबीअत शुद कसेरा।
चौ सख़्ती पेशश आयद सहल गीरद॥ १॥
वगर तनपरवरस्त अन्दर फ़राख़ी।
चौ तंगी बीनद अज़ सख़्ती बमीरद॥ २॥

खुरासान के दो फ़क़ीरों में खूब गाढ़ी दोस्ती हो गयी थी। वे साथ-साथ सफ़र करते थे। उनमें से एक दुर्बल और दूसरा हट्टा-कट्टा था। जो दुर्बल था, वह दो दिन तक उपवास करता और जो हृष्ट-पुष्ट था,

अल्पाहार करने वाला आसानी से तकलीफों को सहन कर लेता है। पर जिसने सिवाय शरीर पालने के और कुछ किया ही नहीं, उस पर यदि सख़्ती की जाती है तो वह मर ही जाता है।

वह दिनमें तीन बार खाता। दैवयोग से ऐसा हुआ, कि वे दोनों जासूस समझे जाकर, नगर के फाटक पर गिरफ़्तार कर लिये गये और एक ही कोठरी में क़ैद कर दिये गये। जिस कोठरी में वे दोनों क़ैद किये गये, उसका द्वारभी मिट्टी से बन्द कर दिया गया। पन्द्रह दिन पीछे मालूम हुआ, कि वे दोनों निर्दोष ही क़ैद किये गये हैं। इसलिए द्वार खोलकर बाहर निकाले गये। उनमें से जो मोटा-ताज़ा था वह तो मरा हुआ मिला और जो दुबला पतला था, वह ज़िन्दा मिला। इस घटना से लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। इस पर एक हकीम ने कहा, कि यदि मोटा मनुष्य जीता रहता और दुबला मर जाता तो और भी अधिक आश्चर्य की बात होती; क्योंकि वह शख़्स जो बहुत खानेवाला था उपवास नहीं कर सकता था; जो मनुष्य दुर्बल था, वह उपवासों का अभ्यासी था और अपनी काया को वशमें रख सकता था; इसी से वह बच गया। जो मनुष्य थोड़ा खाने का आदी होता है, वह सुख से सङ्कट सह लेता है; लेकिन जो सुख के दिनों में नाक तक ठूँस-ठूँस कर खाता है, उसे दुःख के दिनोंमें अपनी खोटी आदत में डूब-कर मरना पड़ता है।

शिक्षा—इस कहानी का साराँश यह है, मनुष्य को भूलकर भी अधिक खाने की आदत न डालनी चाहिए। अधिक खाने-वाले, खाना न मिलने या कम खाना मिलने से, मर जाते हैं; किन्तु जो भूखको अपने सिर पर नहीं खेलने देते, अपनी काया

को अपने अधीन रखते हैं, थोड़े से भोजन से ही सन्तुष्ट रहते हैं, वे कुछ दिन भोजन न मिलने या थोड़ा भोजन करने से दुःख और मृत्यु के अधीन नहीं होते। तात्पर्य्य यह है, कि जो थोड़ेमें ही सन्तुष्ट रहते हैं, उन्हें संसारी यातनाएँ नहीं सता सकतीं।

आठवीं कहानी।

बा आँके दर वजूद तुआमस्त ऐशे नफ़स।
रञ्ज आवुरद तुआम के बेश अज़ क़दर बुवद॥ १॥

किसी अक़्लमन्द ने अपने पुत्र को उपदेश दिया कि अधिक न खाया करो; क्योंकि अत्यधिक खाने से रोग होता है। पुत्र ने उत्तर दिया—"पिताजी! भूख मनुष्य को मार डालती है। क्या अपने महात्माओं की कहावत नहीं सुनी, कि भूख के कष्ट सहने की अपेक्षा

निस्सन्देह भोजन से प्राण-रक्षा होती है पर ज्यादा खाने से हानि भी पहुँच जाती है। अतएव भूख देख कर ही भोजन करना चाहिए।

अधिक खाकर मरना अच्छा है?" पिताने उत्तर दिया—"परिमित आहार करो; 'क्योंकि ईश्वर ने कहा है—'खाओ-पियो सही, लेकिन हद से ज़ियादा नहीं।' यानी न तो इतना ज़ियादा खाओ कि खाया हुआ मुँह से निकल पड़े और न इतना कम खाओ कि दुर्बलता के कारण मृत्यु हो जाय। यद्यपि भोजन से जीवन-रक्षा होती है; किन्तु जब वह हद से ज़ियादा खाया जाता है, तब हानि करता है। अगर बिना इच्छाके गुलक़न्द भी खाओगे तो वह भी नुक़सान करेगा। यदि उपवास के बाद सूखी रोटी भी खाओगे, तो वह गुलक़न्द का मज़ा देगी।"

शिक्षा—इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य को एक हद मुक़र्रर तक भोजन करना चाहिए। इतना न खाना चाहिए जिससे अजीर्ण वमन आदि रोग होकर कष्ट पाना पड़े या विसूचिका वगैर: होजाने से प्राण ही त्याग करने पड़ें। जो अत्यधिक खाते हैं या बिल्कुल कम खाते हैं वे दोनों ही मर जाते हैं; लेकिन जो नियमित आहार करते हैं, वे सुख-पूर्व्वक जीवन-सुख भोगते हैं।

नवीं कहानी ।

किसीने एक रोगी से पूछा कि तुम्हारा दिल क्या चाहता है ? उसने जवाब दिया---"यह चाहता है कि मेरा दिल किसी चीज़ को न चाहे ।" जब कि आमाशय—मेदा—भरा होता है और पेट में दर्द होता है, उस समय कोई अच्छी दवा भी फ़ायदा नहीं करती ।

शिक्षा—इस कहानी में भी अधिक न खाने की सलाह दी गयी है । भरे पेट में बिना भूख लगने के आहार करने से मनुष्य की मृत्यु हो जाती है । ऐसे समय में कोई-कोई समय किसी प्रकार की औषधि भी कुछ फ़ायदा नहीं करती ; तब भोजन क्या फ़ायदा करेगा ?

दसवीं कहानी।

तर्के ऐहसान ख़्वाजा औलातर।
के ऐहतमाल जफ़ाये वव्वाबान ॥ १ ॥
बतमन्नाये गोश्त मुर्दन वह।
के तक़ाज़ाये ज़िश्त क़स्साबान ॥ २ ॥

वसीत नामक नगर के एक क़साई का सूफ़ियों पर कुछ क़र्ज़ चढ़ गया था। वह रोज़ उन लोगों से तक़ाज़ा करता और अनेक प्रकार से गाली-गलौज देता। सूफ़ी लोग उसकी गालियों से बहुत ही दुःखी होते; परन्तु सब्र के सिवा उनके पास और इलाज न था। उनके आईबन्दोंमें से एक सत्पुरुष ने कहा—"क़साई को रुपया देने का वादा करके राज़ी करने की अपेक्षा, भूखको भोजन का वचन देकर सन्तुष्ट करना आसान है। बड़े आदमी की कृपा की आशा त्याग देना अच्छा'; किन्तु उसके दरबान की बुरी-भली बातें सहना अच्छा नहीं। क़साई के तक़ाज़े सहने की अपेक्षा माँस खाने की इच्छा को लिए हुए मर जाना अच्छा है।"

दरबान की बुरी-भली बातें सुनने से तो वहां से मिलने वाली चीज़ का ख़्याल छोड़ देना ही अच्छा है। क़साई के तकाजों से मांस खाने की इच्छा को बिना पूरा किये ही मर जाना अच्छा है।

शिक्षा-इस कहानी से यह नसीहत मिलती है, कि मनुष्य को चाहिए कि अपने पास कुछ हो तो खाले; यदि न हो तो क़र्ज़ लेकर न खावे। क़र्ज़ लेकर खाने और तक़ाज़े पर तक़ाज़े सहने की अपेक्षा भूखों मर जाना अच्छा है। नीच लोगों से माँग कर आनन्द करने की अपेक्षा मरना लाख दर्जे अच्छा है।

ग्यारहवीं कहानी।

अगर हिनज़ल ख़ुरी अज़ दस्त ख़ुशरूए।
बह अज़ शीरीनी दस्ते तुर्शरूए ॥ १ ॥

एक शूरवीर पुरुष तातारियों के साथ युद्ध करता हुआ सख़्त ज़ख़्मी हो गया। किसीने कहा—"फ़लाँ सौदागर के पास मोमदारू है। अगर तुम उससे माँगो तो शायद वह तुम्हें थोड़ी सी दे दे।" वह सौदा-

---

दुष्ट के हाथ से मिठाई खाने की अपेक्षा सज्जन के हाथ से इन्द्रायण का कड़वा फल खाना अच्छा है।

गर अपनी कञ्जूसी के लिए मशहूर था। उस योद्धा ने कहा "अगर मैं उससे नोशदारू माँगू; तो मालूम नहीं वह देगा या न देगा। अगर वह दे भी दे; तोभी इस बातका सन्देह है कि वह आराम करे और न भी करे। ऐसे आदमी से माँगना हर तरह प्राण-घातक विष है।"

किसी मनुष्य की खुशामद-बरामद करके जो चीज़ माँगी जाती है, उससे कायाको लाभ होता है; किन्तु आत्मा को हानि पहुँचती है। अक़्लमन्दों ने कहा है—"अगर अमृत नेकनामी के बदले में बिकता, तो बुद्धिमान् उसे हरगिज़ न ख़रीदते। मान सहित मरना, अपमान सहित जीने से अच्छा है। दुष्टके हाथ की मिठाई खाने की अपेक्षा, सज्जन के हाथ से इन्द्रायण का फल खाना अच्छा है।

शिक्षा—इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं के पूरी करने के लिए लोगों के सामने रिरियाना गिड़गिड़ाना और अपना मान खोना अच्छा नहीं है। मान खोने और अपमानित होने से मरना बहुत अच्छा है। जिसके मनमें सन्तोष और सब्र है, उसका मानभङ्ग कभी नहीं होता; किन्तु जो असन्तोषी है, उसे पद-पद पर अपमानित और लाञ्छित होना पड़ता है।

बारहवीं कहानी।

नानम अफ़जूदो आवरूयम कास्त।
वेनवाई वह अज़ मज़िल्लते ख्वास्त॥ १॥

एक विद्वान् के सिर पर एक बड़े भारी कुटुम्ब के भरण-पोषण का भार था; किन्तु उसकी रोज़ी थोड़ी थी। उसने एक बड़े आदमी के सामने, जो उसे चाहता था, अपना रोना रोया। बड़े आदमी को उसका रोना न भाया। उसने यह बात साहसी मनुष्य के अयोग्य समझी। जबकि तुम अपने भाग्यसे असन्तुष्ट हो तो अपने प्यारे से प्यारे मित्रके पास न जाओ; अन्यथा तुम उसकी प्रसन्नता को शोक में बदल दोगे। जब तुम किसी को अपने दुःख की कहानी सुनाओ; तब अपने चेहरे को प्रसन्न और सजीव रक्खो। हँसमुख आदमी अपनी कोशिशों में कभी नाकामयाब नहीं होता।

कहते हैं, कि उस बड़े आदमी ने उसकी रोज़ी तो अवश्य बढ़ा दी; किन्तु उसका मान कम कर दिया। कुछ समय बाद उसने उसके प्रेम की कमी देखकर कहा—"विपद् के

यदि रोज़ी के बढ़ने से इज्जत घटती हो तो वैसी रोज़ी से ग़रीबी ही भली है।

समय का प्राप्त किया हुआ भोजन बुरा होता है ; चूल्हे पर देगची तो चढ़ी रहती है किन्तु प्रतिष्ठा घट जाती है। उसने मेरी रोज़ी बढ़ा दी, किन्तु इज़्ज़त घटा दी। माँगने के अपमान सहने की अपेक्षा, जीविका-विहीन रहना अच्छा है।"

शिक्षा--इस कहानी का यह सारांश है, कि मनुष्य को भूखे मर-कर भी मान-भङ्ग कराना अच्छा नहीं है। बुद्धिमान् को चाहिये कि उपवास करले, किन्तु पेट भरने के लिए अपना मान न खोवे। जो सन्तोषी हैं, वे अपना मान-भङ्ग नहीं कराते; किन्तु जिनके दिलमें सन्तोष नहीं है वे अपमान सहकर भी पेटके लिए जने-जनेके सामने अपने दुःख का रोना रोते हैं। सन्तोषी और मानी पुरुष दस फ़ाके करने पर भी, असन्तोषी और अपमान सहकर मावा-मलाई उड़ाने वाले से, अच्छा है।

तेरहवीं कहानी

मवर हाजत बनज़दीके तुरशरूए।
के अज़ खूये बदश फ़र्सूदा गर्दी ॥ १ ॥

एक फ़क़ीर बहुत ही तङ्गहाल था। किसीने कहा—"अमुक मनुष्य के पास अपार धन है। अगर उसे तुम्हारा हाल मालूम हो जाय; तो वह तुम्हारी आवश्यकताएँ मिटाने में विलम्ब न करे।" उसने कहा—"मैं तुम्हें ले चलूँगा।" पीछे उसने फ़क़ीर का हाथ पकड़ कर अमीर के घर का रास्ता दिखा दिया। फ़क़ीर ने जाकर देखा, कि एक मनुष्य बैठा है, जिसका एक होठ लटक रहा रहा है और उसका मिज़ाज बड़ा कड़ा है। फ़क़ीर ने यह हाल देखकर, कुछ भी न कहा और उल्टे पैरों लौट आया। दूसरे आदमी ने फ़क़ीर से पूछा कि आपने क्या किया? फ़क़ीर ने जवाब दिया—"मैंने उसकी बख्शिश उसकी शकल को बख्श दी।" दुष्ट स्वभाववाले के सामने अपने अभावों का रोना न रोओ; क्योंकि उसके बुरे स्वभाव के कारण तुम्हें दुःखित होना पड़ेगा। अगर तुम अपने दिल का दुःख किसी मनुष्य के

दुष्टस्वभाव के सामने अपनी आवश्यकताओं को कहने से दुःख के सिवा तुम्हें और कुछ न मिलेगा।

सामने कहो ; तो ऐसे के सामने कहो कि जिसके प्रसन्न-मुख को देखने से तुम्हें निश्चय हो जाय कि वह अवश्य देगा।

शिक्षा-इस कहानी से यह नसीहत मिलती है, कि मनुष्य को किसी से कुछ भी न माँगना चाहिए। यदि माँगना ही हो तो हँसमुख, शीलवान् और सज्जन पुरुष से माँगना चाहिए, जिसके पास याचना करने से आशा पूरी होने का भरोसा हो। दुष्ट-स्वभाव मनुष्य से माँगना अच्छा नहीं है; क्योंकि वह देता तो कुछ नहीं, उल्टा मान और लेलेता है।

चौदहवीं कहानी।

न ख़ुरद शेर नीम ख़ुरदये सग।
गर बसख़्ती बमीरद अन्दर ग़ार ॥ १ ॥

एक साल इसकन्दिरिया में ऐसा सूखा पड़ा, कि लोगों की हिम्मत एकदम छूट गयी। आकाश का द्वार पृथिवी की ओर से बन्द हो गया और पृथिवी-निवासियों का हाहाकार आस्मान तक पहुँचा। क्या पशु, क्या

शेर भूख के कारण चाहे मांद में मर जाय, पर वह कुत्ते का जूठा नहीं खाता।

पक्षी, क्या मछली और क्या कीड़ा-मकोड़ा, ऐसा कोई जान-दार पृथ्वी पर न रहा, जिसकी पुकार आस्मान तक न गयी हो। इस बात का आश्चर्य है, खुलकत के दिल के धुँएँसे बादल न बन गया और आँखों के आँसुओं से मेह न बरसा। उसी साल एक हींजड़ा जिसका बयान करना सभ्यता के विरुद्ध है; विशेष कर बुज़ुर्गों के सामने उसका ज़िक्र करना तमीज़दार आदमी का काम नहीं है; लेकिन उसका ज़िक्र छोड़ देना भी अनुचित है; क्योंकि ऐसा करने से लोग समझेंगे कि कहानी कहने वाले को हाल ही मालूम न था; अतः मैं अपनी बात को संक्षेप से कहूँगा। थोड़ीसी बात से लोग बहुत सी बात का विचार कर लेते हैं। थोड़ी सी बानगी से गौन भर का हाल मालूम हो जाता है। अगर कोई तातारी उस हींजड़े को मार डालता तो कोई उस तातारीसे खूनका बदला लेनेकी इच्छा न करता। कब तक वह बग़दाद के पुलके माफ़िक़ रहेगा, जिसके नीचे पानी बहता है और ऊपर आदमी चलते हैं?

वह हींजड़ा, जिसका मैंने कुछ ज़िक्र किया है, उस समय बहुत ही धनवान् था। वह निर्धनों को सोना-चाँदी बाँटा करता और बटोहियों को भोजन कराया करता था। एक फ़क़ीरों की मण्डली ने बहुत ही तङ्ग होकर, उससे अतिथि होनेकी इच्छा की और मुझ से सलाह माँगी। मैंने उनका मन इस बात से फेर दिया और कहा—"शेर भूख के मारे मांदमें

ही मर जाय ; लेकिन वह कुत्ते का जूठा हरगिज़ न खायगा। इसलिए इस समय भूख की तकलीफ़ों को बर्दाश्त कर लो और किसी नीच कम्बख़्त के पास जाकर भीख न माँगो। यदि कोई अधर्मी आदमी धन-बल में फ़रीदूँ की बराबरी करे; तोभी उसे तुच्छ ही समझना चाहिए। मूर्ख के ऊपर रेशमी छींट और बढ़िया मनिया कपड़ा दीवार पर सुवर्ण और लाजवर्द के समान है।"

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है, कि मनुष्य पर कैसी ही विपद् क्यों न पड़े; लेकिन वह सब्र को हाथ से न जाने दे। परले सिरे की तङ्गी में भी जिस-तिसके सामने हाथ ओटकर अपना मान न गँवावे। सिंह मांद में भूख से प्राण-त्याग कर-देना अच्छा समझता है, किन्तु कुत्ते का जूठा खाना अच्छा नहीं समझता।

पन्द्रहवीं कहानी।

हर के नान अज़ अमले ख़ेश खुरद।
मिन्नते हातमे ताई न बुरद॥

लोगोंने हातिमताई से पूछा, कि आपने दुनिया में अपने से ज़ियादह उदार-हृदय मनुष्य कभी सुना या देखा है। उसने जवाब दिया—"एक दिन, चालीस ऊँटोंका बलिदान करके, एक अरबी सरदार के साथ एक जङ्गल के किनारे गया। वहाँ मैंने एक मज़दूर को देखा, जिसने लकड़ियों की एक भारी गठरी बाँध रक्खी थी। मैंने उससे कहा—'तुम हातिम के यहाँ क्यों नहीं जाते, जहाँ सैकड़ों आदमी भोजन पाया करते हैं?' उसने जवाब दिया—'जो शख़्स अपनी मेहनत की कमाई हुई रोटी खाता है, वह हातिम का एहसानमन्द होना कभी न चाहेगा।' मैंने उसी आदमी को अपने से अधिक उदार और ऊँचे दिल का समझा।"

शिक्षा-इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य को हमेशा अपने पसीने की कमाई हुई रोटी खानी चाहिये। जो लोग अपने परिश्रम और मेहनत-मज़दूरी से कमाकर मोटी-

जो आदमी मेहनत से कमा कर रोटी खाता है वह हातिम का ऐहसान-मन्द होना नहीं चाहता।

मोटी और रूखी-सूखी रोटी खाते हैं, वे सचमुच उच्च-हृदय हैं। जो लोग दूसरों के सिर पड़ कर मावा, मलाई और अन्यान्य षट्रस व्यञ्जन उड़ाते हैं, वे नीच-हृदय और कमीने हैं।

सोलहवीं कहानी।

गुरबये मिस्कीं अगर पर दाश्ते।
तुख़्म कुंजश्क़ज़ जहां बरदाश्ते ॥ १ ॥

पैग़म्बर मूसा ने एक ऐसा फ़क़ीर देखा जो वस्त्र-हीन होने के कारण बालू में छिपा हुआ था। फ़क़ीर ने कहा—"ऐ मूसा! ईश्वर से प्रार्थना कर, कि वह मुझे जीविका दे: क्योंकि मैं मुसीबत से मरता हूँ।" मूसा ने ईश्वर से प्रार्थना की और ईश्वर ने उस फ़क़ीर को सहायता देनी स्वीकार की।

कुछ दिन बाद मूसा ईश्वरोपासना करके लौटा, तब उसने

यदि बिल्ली के पर होते तो वह संसार में चिड़ियों का नाम भी न छोड़ती।

देखा कि वही फ़कीर गिरफ़ार हो गया है और उसकी चारों ओर आदमियों की भीड़ जमा है। मूसा ने उसका हाल पूछा तो किसीने जवाब दिया,—"इसने शराब पीकर एक मनुष्य को मार डाला है। अब लोग बदला लेंगे।" अगर बेचारी बिल्ली के पङ्ख होते, तो वह संसार में किसी भी चिड़िया का अण्डा न छोड़ती। अगर कोई नीच मनुष्य शक्तिसम्पन्न हो जाय; तो वह गुस्ताख़ी करेगा और कमज़ोरों के हाथ मरोड़ेगा।

मूसा ने सृष्टिकर्त्ता की बुद्धिमानी स्वीकार की और अपनी ढिठाई के लिए क़ुरान का निम्नलिखित पद पढ़कर माफ़ी माँगी—"अगर ईश्वर अपने सेवकों के लिए अपना भण्डार खोल दे तो सचमुच वे लोग पृथ्वी पर हंगामा मचा दें।" ऐ घमण्डी आदमी! तूने अपने तईं बरबादी में डालने के लिए क्या किया है? अच्छा हुआ, कि चींटी में उड़ने की शक्ति न हुई!

जब मनुष्य ऊँचे दर्जे पर पहुँच जाता है और उसके पास धन-दौलत हो जाती है, तब वह सिर पर धौल चलाता है,—क्या यह किसी ऋषि का वचन नहीं है? चींटी के पङ्ख न हुए यह अच्छा हुआ। हमारे स्वर्गीय पिता—ईश्वर—के पास बहुत सा शहद है; किन्तु उसका बेटा गर्ममिज़ाज है। वह जो तुम्हें धनवान् नहीं बनाता, तुम्हारी अपेक्षा इस बात को भली भाँति जानता है, कि तुम्हारे हक़ में क्या अच्छा और क्या बुरा है।

शिक्षा-इस कहानी का यह साराँश है, कि ईश्वर अपनी सृष्टि में जिसके लिए जो कुछ उचित समझता है, उसके लिए वही करता है। उसके कामों में भूल नहीं होती। मनुष्य को दुःख-सुख, सम्पद्-विपद्, हर अवस्था में प्रसन्न और सन्तुष्ट रहना चाहिए। ईश्वर गञ्जे को नाखुन और चींटी को पङ्ख नहीं देता।

सत्रहवीं कहानी

दर बियाबाने खुश्क व रेगे रवाँ।
तिश्नारा दर दहाँ चे दुर चे सदफ़ ॥ १ ॥
मर्द बे तोशा के उफ़ताद ज़े पाय।
बर कमरबन्द ओ चे ज़र चे ख़िज़फ़ ॥ २ ॥

मैं ने देखा कि एक अरब बसरे के जौहरियों के बीच में बैठा हुआ यह कह रहा था—"एक दफ़ा जङ्गल में, मैं रास्ता भूल गया। उस समय मेरे पास खाने-पीने का सामान भी चुक गया। मैंने अपने लिए जगत् से गया-

---

झुलसते हुए गर्म रेत के मैदान में प्यासे मुसाफिर के मुंह में मोती या सीपी व्यर्थ है। जबकि खाने-पीने की चीजों के बिना मनुष्य थक के गिर जाता है, उस समय उसके कमरबन्द में चाहे सोना हो या ठीकरी सभी बेकार है।

गुज़रा समझ लिया; किन्तु उसी समय मुझे एक मोतियों से भरी हुई थैली पड़ी मिली। मैंने उसमें भुने हुए गेहूँ समझ कर मन में बड़ा आनन्द माना और जब उसे खोलकर देखा तो उसमें मोती निकले। उस समय मैं कैसा दुःखी हुआ, यह बात मैं कभी न भूलूँगा।"

झुलसते हुए गर्म बालू के जङ्गल में, प्यासे मुसाफ़िर के मुँह में मोती या सीपी व्यर्थ है। जबकि खाने-पीने के सामान से रहित मनुष्य थक जाता है; तब उस के कमरबन्द में चाहे सोना हो चाहें ठीकरियाँ, सब व्यर्थ हैं।

शिक्षा—जिस समय जिस चीज़ की ज़रूरत होती है, उस समय उसी से काम निकलता है—उससे बढ़ी-चढ़ी क़ीमतवाली चीज़ से नहीं।

अठारहवीं कहानी।

दर बियावाँ फ़क़ीर सोख़्ता रा।
शलग़मे पुख़्ता बह के नुक़रये ख़ाम ॥ १ ॥

एक अरब एक जङ्गल में प्यास से दुःखी होकर कह रहा था—"मैं चाहता हूँ, कि मृत्यु से पहले मेरी यह आकाँक्षा पूरी होवे,—नदी की लहरें मेरे घुटनों से टक्कर मारें और मैं अपने मशक को पानी से भर लूँ।"

इसी तरह एक बड़े जङ्गल में एक पथिक अपनी राह भूल गया था। उस में न तो बल था और न कुछ खाने-पीने का सामान ही उसके पास था। केवल चन्द दिरम उसके कमर-बन्द में बच रहे थे। वह बहुत दिनों तक जङ्गल में भटकता फिरा, लेकिन उसे रास्ता न मिला। अन्त में, वह खाने-पीने बिना मरगया। कुछ मनुष्य वहाँ जा पहुँचे। उन्होंने देखा कि दिरम उसके सामने पड़े हैं और ज़मीन पर यह शब्द लिखे हुए हैं—"यदि आहार-विहीन मनुष्य के पास सोना हो तो वह उसके कुछ काम नहीं आता। रेतीले जङ्गल में, सूर्य्य से तपते हुए बेचारे हतभागे मनुष्य को, उबाला हुआ एक शलजम शुद्ध चाँदी से कहीं ज़ियादह क़ीमती है।"

रेतीले जंगल में भूखे फकीर के लिए कच्ची चांदी या उबला हुआ शल-जम—दोनों में—कौन प्रिय—हितकर—है ?

शिक्षा—उपरोक्त दोनों कहानियों का यह सारांश है, कि जिसे जिस वस्तुकी आवश्यकता होती है, उसे वही चीज़ मिलने से सन्तोष होता है। प्यासे को पानी और भूखे को भोजन से ही तृप्ति होती है। भूखे मनुष्य की भूख-प्यास धन-द्रव्य से नहीं दबती।

उन्नीसवीं कहानी।

मुर्ग़ बिरियाँ बचश्म मर्दुम सेर।
कमतरज़ बर्ग तर्रा बरख़्वानस्त ॥ १ ॥
वाँ केरा दस्तगाहो क़ुदरत नेस्त।
शलग़मे पुख़्ता मुर्ग़ बिरियानस्त ॥ २ ॥

मैंने भाग्य के उलट-फेरों और ईश्वर की व्यवस्था की एक बार के सिवा कभी शिकायत नहीं की। एकबार, मेरे पैरों में जूते नहीं थे और जूते ख़रीदने को दाम भी मेरे पास नहीं थे; उसी समय मैंने बड़बड़ाहट की थी। मैं दुःखितहृदय से कूफ़ा की मसजिद में दाख़िल हुआ। वहाँ मैंने एक ऐसा आदमी देखा, जिसके पाँव ही न

पेट भरे हुए आदमी को भुना हुआ मुर्ग़ साग-पात से भी कम अच्छा लगता है किन्तु जो दीन हैं अतएव भूखे हैं, उनके लिए उबला हुआ शलजम भी भुने हुए मुर्ग़ के बराबर है।

थे। मैंने ईश्वर की कृपा के लिए उसकी स्तुति की और धन्यवाद दिया एवँ जूतों के अभाव को सन्तोष से सहन कर लिया। पेट भरे हुए मनुष्य की निगाह में भुना हुआ मुर्ग़ सागपात से भी कम जँचता है; लेकिन जिसे भोजन नहीं मिला है, उसे भुना हुआ शलजम भी भुने हुए मुर्ग़ के समान मालूम होता है।

शिक्षा—मनुष्य को चाहिए कि वह जिस अवस्था में हो, उसी में खुश रहे। अपने तईं दुःखी देखकर अथवा अपने अभावों को देखकर मन में दुःखी न हो। संसार में एकसे एक बढ़कर दुखिया पड़े हैं। उनकी तरफ़ नज़र डालने से यही मालूम होता है, कि हम उनसे अच्छी हालत में हैं। ईश्वर ने जिसके लिए जो कुछ दे रक्खा है या जिसे जिस हालत में रख छोड़ा है, उसके लिये वही सब से उत्तम है। तात्पर्य्य यह है, कि मनुष्य जिस अवस्थामें हो; उसी में सन्तुष्ट रहे और ईश्वर को उसकी दया के लिए धन्यवाद देता रहे। मनका दुःख दबाने के लिये सन्तोष से बढ़कर और उपाय नहीं है। कष्टों के शान्त करने के लिए सन्तोष ही अव्यर्थ महौषध है।
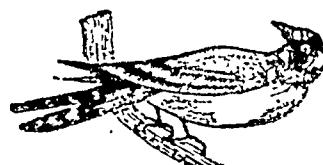
बीसवीं कहानी ।

ज़ेक़द्र शौकते सुलताँ नगश्त चीज़े कम ।
अज इलतफ़ात बमेहमाँसराय देहक़ाने ॥ १ ॥
कुलाह गोशये देहक़ाँ बआफ़ताब रसीद ।
केसाया बरसरश अन्दाख़्त चूं तो सुलताने ॥ २ ॥

एक बादशाह जाड़े के मौसम में अपने कुछ अमीर-उमरा के साथ शिकार खेलने गया। शिकार में, उसे एक ऐसे स्थान पर रात हो गयी जो नगर से बहुत दूर था। एक किसान की झोंपड़ी देखकर बादशाह ने कहा—"चलो आज रात को वहीं चल रहें, जिस में सर्दी से दुःख न पाना पड़े।" एक दरबारी ने जवाब दिया—"बादशाह को एक नीच किसान की झोंपड़ी में आश्रय लेना अनुचित है। हम लोग इसी स्थान पर एक तम्बू तान लेंगे और आग सुलगा लेंगे।"

उस किसान को जब यह हाल मालूम हुआ; तब वह यथासामर्थ्य भोजन बनाकर बादशाह के पास ले गया। भोजन बादशाह के सामने रख दिया और पृथ्वी चूमकर बोला—"सुलतान के उच्च पद में इस शिष्टता से कोई कमी न होगी;

किसान के यहां भोजन कर लेने से राजा की पदवी या शोभा नहीं घटती, किन्तु दीन किसान की टोपी का कोना सूर्य तक पहुँच जाता है। क्योंकि उस पर बादशाह की छाया हो गई।

लेकिन ये सज्जन किसान की नीची अवस्था को ऊँची होने देना नहीं चाहते।" बादशाह को किसान की बात अच्छी लगी और उसने वह रात किसान के झोंपड़े में ही बिताई। सवेरे बादशाह ने किसान को कपड़े और रुपये दिये।

मैंने सुना, कि वह बादशाह की रकाब के साथ-साथ कुछ क़दमों तक गया और बोला—"आप ने जो इस किसान की छत के नीचे भोजन करने की शिष्टता दिखाई, उससे आपकी पदवी और शोभा तो न घटी; किन्तु इस दीन किसान की टोपी का कोना सूर्य्य तक ऊँचा हो गया; क्योंकि उसके सिर पर आप जैसे बादशाहकी छाया पड़ी।"

शिक्षा—बड़ों को चाहिए, कि अपने से नीचे दर्जे के लोगों को नीची नज़र से न देखें। छोटों को मान देने और उन्हें ऊँचा करने से बड़े छोटे नहीं होजाते; किन्तु उनका बड़प्पन और भी बढ़ जाता है।
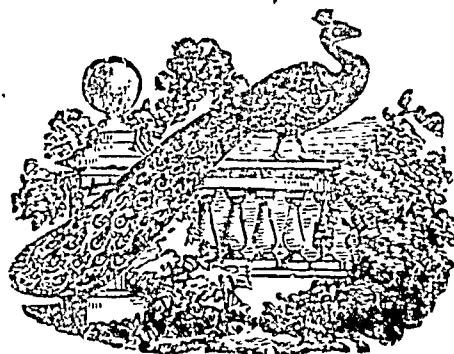
इक्कीसवीं कहानी।

वलताफ़त चो बरनयायद कार।
सर वह बेहुरमती कशद नाचार॥ १॥
हर के बर ख़ेस्तन नबख़्शायद।
गर न बख़्शद बरो कसे शायद॥ २॥

लोग एक कहानी कहा करते हैं, कि किसी भयङ्कर योगी के पास बहुत सा धन था। किसी बादशाह ने उससे कहा—"मालूम होता है कि आप बड़े धनी हैं। चूँकि मुझे इस समय रुपयों की सख़्त ज़रूरत है, इसलिये अगर आप अपने धन में से थोड़ा भी मुझे क़र्ज़ देकर मेरी सहायता करें; तो जब ख़ज़ाने में ख़ूब रुपया होजायगा तब मैं सब रुपया आप को चुका दूँगा। योगी ने कहा—"मैं भिक्षुक हूँ। मैंने एक-एक दाना जमा करके रुपया इकट्ठा किया है। आप जैसे पृथ्वीपति को मुझ से रुपया लेना शोभा नहीं देता।" बादशाह बोला—"आप इस बात का दुःख न कीजिए। मैं आपका धन तातारियों को दे डालूँगा। अपवित्र वस्तुएँ अपवित्र लोगों के ही योग्य होती

जब सज्जनता से काम नहीं चलता तब मजबूरन सख़्ती से काम लेना पड़ता है। यदि राज़ी से कोई नहीं देता है, तब राजालोग उस से जबर्दस्ती ले लेते हैं।

हैं। लोग कहते हैं, कि गोबर से दीवार साफ़ नहीं होती। मैं कहता हूँ, मुझे गोबर मैले छेदों के बन्द करने के लिए चाहिये।। अगर किसी ईसाई के कुएँ का जल अपवित्र हो और उससे एक यहूदी की लाश धोई जाय तो क्या होगा?"

मैंने सुना कि उस योगी ने बादशाही हुक्म का अनादर किया और तर्क-वितर्क एवं धृष्टता की; अतः बादशाह ने हुक्म दिया कि इसका माल इससे ज़बरदस्ती छीन लिया जाय। जब कोई काम मिठाई से नहीं निकलता; तब कड़ाई से ही काम लिया जाता है। यदि कोई राज़ी से न दे, तो उस से ज़ोर से ले लेना ही उचित है।

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है, कि अगर वह योगी थोड़ा सा सब्र करके अपने धन में से कुछ हिस्सा देदेता; तो उसका सारा माल-मता ज़ोर से न छीना जाता। सन्तोष-रहित होने के कारण उसे सबसे हाथ धोना पड़ा।

बाईसवीं कहानी।

गुफ़्त चश्मे तंगे दुनियादार रां।
या क़नाअत पुर कुनद या ख़ाके गोर ॥ १ ॥

मैं ने एक सौदागर को देखा, जिसके पास सौदागरी मालसे लदे हुए डेढ़ सौ ऊँट, पचास ग़ुलाम और नौकर-चाकर थे। एक रात को, कीश द्वीप में, उसने मुझे अपने कमरे में भोज दिया। रात भर उसकी बेवकूफ़ी की बातें चलती रहीं। वह कहता था—"तुरकिस्तान में मेरा अमुक माल है और हिन्दुस्थान में फलाँ असबाव है। यह फलाँ ज़मीन का क़िवाला है। यह अमुक दस्तावेज़ है। अमुक उसमें ज़ामिन है।" कभी यों कहता—"सिकन्दरिये की जल-वायु सुखद है; अतः मेरा वहाँ जानेका इरादा है।" कभी कहता—"नहीं, मैं वहाँ न जाऊँगा, क्योंकि भूमध्य-सागर बड़ा प्रचण्ड है। ऐ सादी! मैंने एक और सफ़र का विचार किया है। जब वह पूरा हो जायगा; तब मैं वाणिज्य को छोड़कर शेष जीवन एकान्त में बिताऊँगा। मैंने सुना है, कि चीन में गन्धक की दर ऊँची है; अतएव मैं वहाँ गन्धक ले जाऊँगा। वहाँ से चीनी मिट्टी के बरतन

सांसारिक आदमी की तंग नज़र या तो सन्तोष से ही भरती है या क़ब्र की मिट्टी से ही।

यूनान को चालान करूँगा। यूनान से ज़रीके कपड़े हिन्दुस्तान भेजूँगा। अलप्पो के काँच के बरतन यमन भेजूँगा और वहाँ से धारीदार कपड़ा लेकर ईरान जाऊँगा। उसके बाद मैं व्यापार छोड़कर अपनी दुकान में ही बैठा रहूँगा।" उसने ये मूर्खता की बातें यहाँ तक कहीं, कि अन्तमें जब कुछ कहने को न रह गया तब थककर बोला—"ऐ सादी ! तुमने भी जो कुछ देखा सुना हो, उसे कहो।" मैंने जवाब दिया—"क्या तुमने नहीं सुना है, कि एक समय एक सर्दार ग़ोरके रेतीले जङ्गल में सफ़र करता हुआ अपने ऊँटसे नीचे गिर पड़ा ? उसने कहा कि दुनियावी आदमी की ललचीली आँखें या तो सन्तोष से सन्तुष्ट होती हैं या क़ब्र की मिट्टी से सन्तुष्ट होती हैं।"

शिक्षा—मनुष्य को चाहिए, कि दुनिया भर के मनसूबे न बाँधे, तृष्णा को त्यागे और सदा सन्तोष रक्खे। जो दुनिया भर के मनसूबे बाँधते हैं, रात-दिन असन्तोष के जाल में फँसे रहते हैं, उनका जीवन वृथा ख़राब होता है। अन्त में मरने पर तो सन्तोष करना ही पड़ता है।

तेईसवीं कहानी।

दस्ते तजरीं चे सूद वन्दये मुहताजरा।
वक़्ते दोआ वर ख़ुदा वक़्ते करम दर वग़ल ॥ १ ॥

मैं ने सुना, कि एक अमीर अपनी कञ्जूसी के लिए उसी तरह मशहूर था; जिस तरह हातिम अपनी सख़ावत के लिये। उसकी बाहरी सूरत पर धन का रूप छिटका पड़ता था; किन्तु उसके स्वभाव में ऐसी नीचता समा गई थी, कि वह किसी को एक रोटी भी न देता था। वह पैग़म्बर अबूहरैरा की बिल्ली को भी एक टुकड़ा न देता और असहावे काहफ़ के कुत्ते को भी एक हड्डी तक न डालता। किसी ने भी उसके द्वार को खुला और दस्तरख़्वान को बिछा न देखा। कोई फ़क़ीर सुगन्धि के सिवा उसके खाने-पीने के सामानों की बात भी न जानता था और किसी पक्षी ने उसके दस्तरख़ान से गिरा हुआ दाना न चुगा था।

मैंने सुना, कि वह अपने तईं फ़रऊन समझता हुआ, बड़े गर्व के साथ, जहाज़ पर चढ़कर, भूमध्य-सागर होकर, मिस्र देश को जा रहा था। अकस्मात् प्रतिकूल वायु ने झोंका मारा। उत्तरीय वायु तो जहाज़ों के अनुकूल होती ही नहीं।

जो हाथ प्रार्थना के समय ईश्वर की ओर उठाये जाते हैं और किसी की सहायता के समय बग़ल में छिपा लिये जाते हैं—वे किस काम के हैं?

उसने अपने हाथ-पैर उठाये और वृथा चिल्लाया। ईश्वर ने कहा है—"जब जहाज़ के ऊपर चढ़ो तब ईश्वर की प्रार्थना करो। जो हाथ प्रार्थना के समय फैले रहते हैं और जब किसी अनुग्रह की आवश्यकता होती है, तब बग़लों में दबा लिये जाते हैं, उन हाथों को ज़रूरत के समय ऊँचे उठाकर रोने-पीटने से क्या लाभ होगा?" दूसरों को सोना-चाँदी देकर सुखी करो और उससे तुम आप भी लाभ उठाओ। यह समझलो, कि यदि तुम इस इमारत में सोने और चाँदी की ईंटें लगाओगे; तो वह चिरकाल तक ठहरी रहेगी।

कहते हैं, कि मिस्र में उसके आत्मीय-स्वजन अति दरिद्र अवस्था में थे। वे लोग उस के बचे हुए धन से धनवान् होगये। उसके मरजाने पर, उन लोगों ने पुराने कपड़े फाड़ फेंके और रेशम तथा कमख़ाब के कपड़े बनवाये। मैंने देखा, कि उनमें से एक आदमी ख़ूब तेज़ घोड़े पर सवार था और एक देव-दूत के समान सुन्दर पुरुष उसके पीछे दौड़ रहा था। मैंने कहा—"अफ़सोस! अगर वह मृतक पुरुष अपने जातिवालों और आत्मीयों में लौट आता; तो उसके उत्तराधिकारियों को उस की सम्पत्ति वापिस देने में उसके मरने के दुःख से भी अधिक दुःख होता। उस मनुष्य से पहले मेरी मित्रता थी; इसी से मैंने उसकी आस्तीन खींचकर कहा—ऐ प्रसन्नमुखी भले आदमी! जिस धनको भूतपूर्व्व अधिकारी ने वृथा जमा किया था, उसे तू भोग।"

शिक्षा—जो धन द्वारा न भोग भोगते हैं न दूसरों की ज़रूरतें पूरी करते हैं, उनके धन का नाश हो जाता है और दूसरे आदमी उनके जमा किये धन को बड़ी बेदर्दी से ख़र्च करते हैं।

चौबीसवीं कहानी।

सय्याद न हर बार शिकारे बबरद।
बाशद के यके रोज़ पिलंगश बदरद ॥ १ ॥

एक ज़ोरावर मछली किसी कमज़ोर मछुए के जाल में फँस गई। मछुआ उसे थाम न सका। मछली उसके हाथ से जाल खींचकर भाग गई। एक लड़का नदी से जाल लाने गया। पानी की बाढ़ आई और उसे बहा लेगई। अब तक जाल सदा मछलियों को फँसाता था; किन्तु इस बार मछली भाग गयी और जाल को ले गयी। दूसरे मछुए को उसकी हानि पर दुःख हुआ। उसने उसे बुरी-भली बातें सुनाईं और कहा कि ऐसी मछली जाल में फँसी-पाकर तू उसे थाम न सका! उसने जवाब दिया—"अफ़सोस!

शिकारी सदा शिकार को ले जाता हो यह बात नहीं—कभी शिकार भी शिकारी को फाड़ डालता है।

आई, मैं क्या कर सकता था ? मेरा दिन खराब था और मछली की उम्र का एक दिन बाकी था। भाग्य बिना मछुआ दजला नदी में मछली नहीं पकड़ता और बिना समय आये मछली सूखी ज़मीन पर नहीं मरती।

शिक्षा—इस कहानी का यही साराँश है, कि बिना भाग्य रोज़ी नहीं मिलती और बिना समय आये कोई नहीं मरता।

पच्चीसवीं कहानी।

चौ आयद ज़पै दुश्मने जांसिताँ।
व बन्दद अजल पाये मर्दे दवाँ॥ १॥
दरान्दम के दुश्मन पयापय रसद।
कमाने कयानी न बायद कशीद॥ २॥

एक बे-हाथ पाँव वाले ने हज़ार पाँव वाले को मार डाला। एक महात्मा उधर से निकला। उसने यह हाल देखकर कहा—"हे ईश्वर ! इस कनखजूरे के हज़ार पाँव थे; लेकिन जब मृत्यु आ पहुँची, तब वह बे-हाथ

जब मौत का समय आजाता है, तब तेज़ भागने वाले के पैरों को भी मृत्यु बांध देती है। जब दुश्मन आ दबाता है, तब कयानी की कमान भी नहीं खिंचती।

पाँववाले से भी न बच सका। जब जान का दुश्मन आ पहुँचता है; तब तेज़ भागनेवाले के पैरों को भी मृत्यु बाँध देती है। जब दुश्मन पीठपर आ पहुँचता है; तब कियानी (अरब की प्रसिद्ध कमान) भी नहीं खिंचती।

शिक्षा—इस कहानी का साराँश यह है, कि काल आजाने पर महा बलवान् जीव भी ज़रा से कारण से मरजाता है। समय पूरा होजाने पर कोई बच नहीं सकता।

छब्बीसवीं कहानी।

शरीफ़ गर मुतज़ोफ़ शवद ख़्याल मबन्द।
के पायगाह बुलन्दश ज़ईफ़ ख़्वाहद शुद ॥ १ ॥

मैंने एक मोटा-ताज़ा अहमक़ देखा। वह बढ़िया कपड़े पहने और मिस्री सनिया कपड़े का साफ़ा सिर पर बाँधे अरबी घोड़े पर सवार था। किसी ने कहा—"ऐ सादी! इस मूर्ख जानवर के शरीर पर

खान्दानी आदमी यदि कालचक्र में फँस कर दरिद्र हो जाय तो उसकी पदवी को कम न समझना चाहिए।

ऐसी सुन्दर पोशाक आपको नज़र में कैसी लगती है?" मैंने कहा—"यह सोने के पानी से लिखे हुए दूषित लेख के समान मालूम होती है। सच पूछो तो यह मनुष्यों में भेड़िये की सूरत और आवाज़ वाला गधा है।"

यह जानवर अपनी पोशाक, पगड़ी और वाहरी सूरत एवं अपने माल, जायदाद तथा शारीरिक बल के सिवा और बातों में मनुष्य के समान नहीं है। अगर कोई भद्रवंशज मनुष्य दरिद्र हो जाय तो यह न समझना चाहिए कि उसकी पदवी घटगई है; किन्तु यदि कोई यहूदी चाँदी की चौखट में सोने की मेखें ठोके; तोभी उसे भद्र न समझना चाहिये।

शिक्षा—उच्चवशंज मनुष्य यदि निर्धन हो जावे तोभी उसकी भद्रता चली नहीं जाती और जो नीचकुल का आदमी धनी हो जावे तो वह उच्चवंशज नहीं हो जाता।

सत्ताईसवीं कहानी।

दस्ते दराज़ अज़ पये यक हब्बा सीम।
बह के बबुरंन्द बदानगी दबेमा ॥ १ ॥

एक चोर ने किसी फ़कीर से कहा—"क्या तुम्हें चाँदी के दाने के लिये हरेक कम्बख़्त कन्जूस के सामने हाथ पसारने में लाज नहीं आती?" फ़कीर ने जवाब दिया—"डेढ़ दमड़ी चुराकर हाथ कटाने की निस्बत रत्ती भर चाँदी के लिये हाथ पसारना अच्छा है।"

डेढ़ रत्ती चांदी चुरा कर हाथ कटाने की निस्वत रत्ती भर चांदी के लिए हाथ पसारना अच्छा है।

अट्ठाईसवीं कहानी ।

हुनरवर चो बख़्तश न बाशद बकाम ।
बजाये रवद कश नदानन्द नाम ॥ १ ॥

कहते हैं, कि एक पहलवान दुर्दैव के कारण अत्यन्त दरिद्र हो गया था । वह जीविका-विहीन और भूख से दुःखी होकर अपने बाप के पास जाकर रोने लगा । उसने कहा—"पिता ! यदि आज्ञा हो, तो मैं सफ़र करने जाऊँ । देखूँ, शायद अपनी भुजाओं के बल से अपनी वासनाएँ पूरी कर सकूँ । गुण और हुनर जब तक दिखाये नहीं जाते, तब तक उनकी क़दर नहीं होती । अगर को लोग आग पर रखते हैं और कस्तूरी को मलते हैं।" बाप ने कहा—"बेटा ! इन कठिन विचारों को अपने सिर से निकाल दो । सब्र के पाँव को सलामती के दामन में खींच लो। अक़्लमन्दों ने कहा है—शारीरिक चेष्टाओं से धन नहीं मिलता । अपने अभावों के दूर करने का इलाज अपनी वासनाओं—इच्छाओं—को घटा देना है । कोई भी धन का पल्ला ज़ोर से नहीं पकड़

जब भाग्य अनुकूल नहीं होता, तब हुनरमन्द जहां जाता है, उसे कोई नहीं पूछता—या वह जाता ही ऐसी जगह है, जहां उसका कोई नाम तक नहीं जानता ।

सकता। अन्धे की आँखों में दवा लगाना वेफ़ायदा है। अगर तुम्हारे सिर के हरेक बालमें दो-दो सौ हुनर हों, तो वे भी बुरा नसीब होनेसे कुछ काम न आवेंगे। भाग्य-हीन पहलवान क्या कर सकता है? क्योंकि भाग्य की बाँह बल की बाँह से अच्छी है।" पुत्र ने कहा—"पिता! सफ़र करने में कितने ही फ़ायदे हैं। सफ़र करने से दिल राज़ी होता है; लाभदायक वस्तुएँ मिलती हैं; अद्भुत-अद्भुत चीज़ें देखने में आती हैं; अपूर्व्व-अपूर्व्व बातें सुनने में आती हैं; नये-नये नगर देखने में आते हैं; तरह-तरह के मनुष्यों से बात-चीत होती है; मान की प्राप्ति होती है; देश-देश की रीत-रवाज मालूम होती है; धन मिलता है; जीविका-उपार्ज्जन का मार्ग हाथ आता है; हार्दिक सम्बन्ध जुड़ता है और संसार का अनुभव होता है। महात्माओं ने कहा है—ऐ मूर्ख! जब तक तू अपनी दूकान और अपने घर को न छोड़ेगा, तब तक तू हरगिज़ आदमी न होगा। जा, इस दुनिया को त्यागने से पहले इस की सैर करले।"

बापने कहा—"बेटा! जो तुम कहते हो, वह ठीक है। निस्सन्देह, सफ़र करने से बहुत लाभ हैं; लेकिन वह लाभ विशेष करके चार श्रेणी के लोगों के लिये होते हैं।

"प्रथम तो वह व्यापारी सफ़र से फ़ायदे उठा सकता है, जिसके पास धन-दौलत, सुन्दर-सुन्दर गुलाम और लौंडियाँ तथा कामकाजी नौकर-चाकर हों। वह हर रोज़ एक शहर

में और हर रात एक मुक़ाम में गुज़ार सकता है और क्षण-क्षणमें चित्त-विनोदकारी स्थानों में चित्त-विनोद कर सकता है। बड़ा आदमी चाहे पहाड़ पर जाय, चाहे बयाबाँ जङ्गल में जाय, कहीं अजनबी नहीं है। वह जहाँ जाता है, वहीं तम्बू गाड़कर अपना वास-स्थान बना लेता है। लेकिन जिसके पास जीवन के सुखका सामान नहीं है और अपने निर्व्वाह करने का भी वसीला नहीं है, वह अजनबी है। उसकी जन्म-भूमिके लोग भी उसे नहीं जानते।

"दूसरे, विद्वान् को सफ़र से लाभ होते हैं। वह अपने मीठे वचनों, अपूर्व्व वाक्‌शक्ति और ज्ञान भाण्डार के कारण जहाँ जाता है, वहीं उसका आदर मान और स्वागत होता है। ज्ञानी मनुष्य शुद्ध सुवर्ण के समान है; वह जहाँ जाता है, वहीं लोग उसके प्रभाव और गुण को जान जाते हैं। धनवान् पुरुष का मूर्ख लड़का चमड़े की थैली के समान है, जो किसी निर्दिष्ट नगर से रुपया लाने और लेजाने के काम में आती है; परन्तु विदेश में उसे कोई मुफ़्त भी नहीं पूछता।

"तीसरे, ख़ूबसूरत आदमी को सफ़र से लाभ होते हैं; क्योंकि भले आदमियों का दिल उस पर आया रहता है। वे उसकी संगति की बड़ी क़दर करते हैं और उसकी सेवा करने में अपना मान समझते हैं। कहावत चली आती है—'तनिक सी सुन्दरता विपुल धन से श्रेष्ठ है। सुन्दर मनुष्य घायल हृदय के लिये मरहम है और ताले से बन्द दरवाज़े के लिए चाबी

है। खूबसूरत आदमी जहाँ जाता है, वहीं उसका आदर मान होने लगता है।'

"चौथे, मीठा गानेवाला—जो अपने गलेसे दाऊद की तरह बहते हुए पानी की चाल बन्द कर देता है, उड़ती हुई चिड़िया का उड़ना बन्द कर देता है, अपने हुनर के बल से मनुष्यों के हृदय को अपने वशमें कर लेता है—सफ़र से फ़ायदा उठाता है। धर्मात्मा लोग ऐसे आदमी की संगति की इच्छा रखते हैं। सुन्दर रूप से मीठी आवाज़ अच्छी होती है; क्योंकि रूप से तो खाली इन्द्रियों को ही सुख होता है; किन्तु मीठी आवाज़ से प्राणों में सजीवता आ जाती है।

"पाँचवें, कारीगर सफ़र से फ़ायदा उठाता है; क्योंकि वह अपनी मेहनत से अपनी जीविका उपार्ज्जन कर लेता है। अक्लमन्दोंने कहाहै—'अगर कोई कारीगर अपना देश छोड़कर परदेश में जाय तो उसे किसी तरह की तकलीफ़ न होगी; किन्तु यदि नीमरज़ का बादशाह अपने राज्य से बाहर जाय तो उसे भूखा सोना पड़ेगा।' मैंने जो बातें ऊपर कही हैं वे ही सफ़र में दिल बहलानेवाली और आराम देनेवाली हैं। जिन में वे बातें नहीं हैं, वे लोग दुनिया में व्यर्थ की आशाएँ करते हैं। ऐसों का न तो कोई नाम ही लेता है और न कोई उनका चिह्न ही देखता है। जिस कबूतर को अपना घोंसला देखना बदा नहीं होता है, कज़ा उसे दाने और जाल के पास पहुँचा देती है।"

पुत्रने कहा—"हे पिता! मैं ऋषियोंकी एक और कहावत का विरोध किस तरह कर सकता हूँ। वह कहावत यह है—'जीवन की आवश्यक चीज़ें सबको दी जाती हैं; किन्तु उनके प्राप्त करने के लिए उद्योग की आवश्यकता होती है। चाहे हमारे भाग्य में विपत्ति ही बदी हो; तोभी हमें उस मार्ग से बचना चाहिए जिसमें होकर वह अन्दर प्रवेश करती है। हमें इस बात का निश्चय है, कि हमारा दैनिक भोजन अवश्य मिलेगा; तथापि उसे घरसे बाहर जाकर तलाश कर लाना हमारा कर्तव्य है। यद्यपि मृत्यु-समय आये बिना कोई मर नहीं सकता; तथापि अजगर के मुँह में जाना उचित नहीं है।' इस वक्त मैं क्रोधोन्मत्त हाथी का सामना करने की शक्ति रखता हूँ और भयङ्कर सिंह से लड़ाई कर सकता हूँ। इन बातों के सिवा मेरा सफर करने का इरादा इस मतलब से है, कि मुझसे अब दरिद्रता भोगी नहीं जाती। जब मनुष्य अपने मान और पद से हीन हो जाता है, तब उसे किसी से वास्ता नहीं रहता। वह जगत् का नागरिक हो जाता है। धनवान् रात होने पर अपने महल में चला जाता है। फ़क़ीर को जिस जगह रात हो जाती है, वही जगह उसकी सराय हो जाती है।" यह कहकर उसने पिता से आज्ञा और आशीर्वाद लेकर प्रस्थान कर दिया। चलने के वक्त, लोगोंने उसे यह कहते सुना—"वह शिल्पी जिसका भाग्य अनुकूल नहीं होता, ऐसी जगह जाता है, जहाँ कोई उसका नाम भी नहीं जानता।"

सफ़र करता-करता वह एक नदी के किनारे पहुँचा। उस नदीके जल का ज़ोर इतना तेज़ था कि उसके वेग से पत्थर आपस में टकराते थे और मीलों तक आवाज़ सुनाई पड़ती थी। वह नदी बड़ी ही भयावनी थी। उसमें जल-जीव भी कुशलपूर्वक नहीं रह सकते थे। उसकी छोटीसे छोटी लहर चक्की के पाटको किनारे से उठा फेंकने की शक्ति रखती थी। उसने कुछ आदमियों को घाट पर बैठे देखा। उन सबके पास कुछ न कुछ धन था, वे सब रास्ते के लिये अपनी-अपनी गठरियाँ बाँध रहे थे। इस जवान के पास एक पैसा भी न था। इसने सब से पैसे माँगे; पर किसी ने कुछ भी न दिया। लोगों ने कहा—"तुम यहाँ किसी पर ज़ोर-जुल्म नहीं कर सकते। अगर तुम्हारे पास रुपया है, तो ज़ोर-ज़बरदस्ती करने की कोई ज़रूरत नहीं है।" असभ्य माँझी उसकी हँसी करने लगा—"जब तुम्हारे पास रुपया नहीं है, तब तुम ज़ोरसे नदी पार नहीं कर सकते। दश आदमियों की ताक़त किस काम की? एक आदमी का रुपया निकालो।" उस जवान को मल्लाह की तानेज़नी बुरी लगी। उसने मल्लाह से बदला लेना चाहा, किन्तु उस समय नाव खुल गई थी। उसने मल्लाह से पुकार कर कहा—"अगर तुम मेरे शरीर का यह कपड़ा लेने पर राज़ी हो; तो मैं इसे बिना मूल्य देने को राज़ी हूँ। मल्लाह लोभ न सँभाल सका और नावको लौटा लाया। लोभ चालाक और मक्कारोंकी आँखें खो देता है। लोभ ही मछलियों और पक्षियों को जालमें

फँसाता है। ज्योंही उस जवान के हाथ में नाविक की दाढ़ी और गलाबन्द आये; त्योंही उसने नाविक को अपनी ओर घसीट लिया और उसे बेतरह पीटा-पटका। उसका एक साथी उसकी सहायता के लिये नाव से बाहर आया; लेकिन उसकी भी खबर बुरी तरह ली गयी। दोनों मल्लाहों ने लाचार होकर उस जवान को शान्त करना ही मुनासिब समझा और उससे नावका भाड़ा न लेनेका वादा करके मेल कर लिया। जब तुम लड़ाई देखो, तब शान्त हो जाओ, क्योंकि शान्त स्वभाव झगड़े का द्वार बन्द कर देता है। मेहरबानी की तुलना बदमिज़ाजी के साथ करो; तेज़ तलवार नर्म रेशम को न काटेगी।

मीठी बातों और नम्रता से तुम हाथीको भी बाल के सहारेसे ही मन-चाही जगह ले जा सकते हो। मल्लाहों ने कपट-पूर्ण भाव से उसके मुँह-हाथ चूमकर उसे नाव में बिठा लिया। जब वे नदी के बीच में खड़े हुए यूनानी स्तम्भ के पास पहुँचे; तब मल्लाह ने पुकार कर कहा—"नाव खतरे में है। तुममें जो सब से अधिक बलवान और साहसी हो वह इस स्तम्भ पर चढ़ जावे और नाव का रस्सा पकड़ ले तो हम नावको बचा लें।" उस जवान ने अपने बलके गर्व में भूलकर पीड़ित शत्रुके दिलकी बात पर कुछ ग़ौर न किया। कहावत प्रसिद्ध है—अगर तुम पहले किसी को सताकर, पीछे उसपर सौ-सौ मेहरबानियाँ करो तो मनमें यह खयाल मत करो, कि वह पहली बातका बदला लेना भूल जायगा। तुम ज़ख्म से खींचकर तीर निकाल

सकते हो ; लेकिन ज़ोर जुल्म की बात हृदय में सदा खटकती रहती है। यकताश ने खिलताश को क्या ही अच्छी नसीहत दी थी,—"यदि तुमने अपने शत्रु को पीड़ा पहुँचाई है तो अपने तईं रक्षित न समझो। जब कि तुमने दूसरे के दिल पर चोट पहुँचाई है तब अपने तईं कष्टरहित न समझो। क़िले की दीवार पर पत्थर न फेंको; सम्भव है, कि क़िलेकी दीवार से कोई पत्थर तुम पर भी फेंका जाय।" ज्योंही जवान बाँह में रस्सा लपेट उस स्तम्भ की चोटी पर पहुँचा; त्योंही मल्लाह ने झटका देकर उसके हाथ से रस्सा खींच लिया और नाव को आगे बढ़ा ले गया। जवान हक्का-बक्का सा हो गया। दो दिन तक उसने बड़ा कष्ट पाया। तीसरे दिन निद्रा ने उसे अपने वशमें करके नदी में गिरा दिया। एक दिन रात हो जाने पर वह किनारे पहुँचा। उस समय उसमें थोड़ी ही जान बाक़ी थी। उसने वृक्षों की पत्तियाँ और घास की जड़ें खाकर गुज़ारा किया और कुछ बल सञ्चय हो जाने पर जङ्गल का रास्ता लिया। भूख-प्यास से दुःखी होकर वह एक कुएँ पर पहुँचा। वहाँ पहुँच कर, उसने देखा कि कुएँ की चारों तरफ़ बहुत से लोग जमा हैं और पैसे दे-दे कर पानी पी रहे हैं। उस जवान के पास तो पैसा था नहीं। उसने जलके लिये सब से विनती की; परन्तु किसीने उसकी प्रार्थना स्वीकार न की। अन्तमें, उस जवान ने ज़ोर से जल पीने की चेष्टा की; किन्तु कुछ फल

न हुआ। उसने उनमें से कितनों को पटका-पछाड़ा और पीटा। शेषमें, उन लोगोंने उस जवान को अपने क़ाबू में कर लिया और निर्दयता से मारते-मारते घायल कर दिया।

हाथी में बल और साहस के होते हुए भी मच्छरों का झुण्ड उसे हैरान कर देता है। छोटी-छोटी चींटियाँ मौक़ा पाने से भयङ्कर सिंह की भी खाल उधेड़ लेती हैं। वह जवान बीमार और घायल होकर एक क़ाफ़िले के साथ हो लिया और खाने-पीने के अभाव के कारण उसी के साथ चलता रहा। सन्ध्या समय वे एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ चोरों का बहुत ज़ोर था। उस जवान ने क़ाफ़िलेवालों को भय से थर-थर काँपते हुए और क्षण-क्षण मृत्यु की प्रत्याशा करते हुए देखकर उनसे कहा—"डरो मत! मैं अकेला पचास आदमियों का सामना करूँगा और अन्यान्य लोग मेरी मदद करेंगे।" लोगों में उसके शेखी मारने से हिम्मत आगयी। उसके साथ रहने में सब कोई प्रसन्नता प्रकट करने लगे। उन्होंने उसे खाने को भोजन और पीने को जल दिया। जवान को भूख बहुत ही तेज़ लगी थी; इसलिए उसने इतना खालिया कि साँस लेने को भी जगह न रही। वह ठन्ना कर सो गया। क़ाफ़िले में एक अनुभवी बूढ़ा था। उसने कहा—"कौन जाने यह चोरोंका ही भाई-बन्धु हो। हम लोग इसके भरोसे रह कर अवश्य ही लुट जावेंगे। अतः इसे सोता हुआ छोड़कर चल दो।" सबने बूढ़े की सलाह ठीक समझी। अपना-अपना असबाब बाँधकर

चल दिये। खूब दिन चढ़ने पर जवान उठा। उसने वहाँ किसी को न देखा। रास्ता ढूँढ़ा तो वह भी न मिला। निरास उदास होकर वह वहीं ज़मीन पर पड़ गया और कहने लगा कि, मुसाफ़िर का दोस्त मुसाफ़िर ही होता है। जिसे मुसाफ़िरी के कष्टों का अनुभव नहीं होता, उससे मुसाफ़िर को बड़ा कष्ट पहुँचता है। वह ये बातें कह ही रहा था कि इतने में एक शाहज़ादा, जिसने शिकार के पीछे दौड़ते-दौड़ते अपने नौकरों को पीछे छोड़ दिया था, दैवात् उसी स्थान पर आगया। उसने जवान की उपरोक्त बातें सुन लीं। जवान का चेहरा उसे अच्छा मालूम हुआ। उसे सङ्कट में देख कर पूछा—"तुम कहाँ से आते हो? तुम्हारे आने का क्या कारण है?" जवान ने अपनी सारी कहानी संक्षेप में कह सुनाई। शाहज़ादे को उस पर दया आयी। उसने उसे कुछ कपड़े और रुपये देकर अपने एक विश्वासी नौकर के साथ कर दिया और कह दिया कि इस जवान को इसके नगर तक सकुशल पहुँचा दो। जब वह जवान अपने घर पहुँचा, तब उसका बाप उसे सकुशल लौटा हुआ देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। रातके समय, जवान ने नावकी घटना, मल्लाहों की दग़ाबाज़ी, कुएँ पर गाँववालों की ज़बरदस्ती और क़ाफ़िलेवालोंके सोता हुआ छोड़कर चले जानेकी बातें अपने बाप से कहीं। बापने कहा—"बेटा! मैंने तुझ से जाने के समय नहीं कहा था, कि बलवान् किन्तु धनहीन आदमी का हाथ बँधा

रहता है और उसके पाँव सिंह के पञ्जे के समान होने पर भी टूटे रहते हैं ? एक धनहीन मल्ल ने खूब कहा है—सुवर्ण का एक दाना पच्चीस सेर ताक़त से अच्छा होता है।" लड़के ने कहा—"पिता जी ! सच बात तो यह है, कि कष्ट भोगे बिना धन हाथ नहीं आता। अपने को ख़तरे में डाले बिना दुश्मन पर फ़तह नहीं मिलती ; बीज बोये बिना खत्ती खलियान नहीं भर सकते।

"आप देखते नहीं, कि मैं थोड़ा सा कष्ट भोगकर कितना धन ले आया हूँ। डङ्क की पीड़ा सहने से कितना मधु-भण्डार मुझे मिला है ? यद्यपि हम लोग जो कुछ हमारे भाग्य में लिखा है उससे अधिक नहीं भोग सकते ; तथापि हमें उसके प्राप्त करने में त्रुटि न करनी चाहिए। अगर ग़ोताखोर मगर के जबड़ों से डरने लगें तो उन्हें बहुमूल्य मोती न मिलें। चक्कीके नीचे का पाट नहीं चलता ; इसी से वह बहुत भारी होता है। भूखे शेर को माँदमें क्या खाना नसीब हो सकता है ? जो बाज़ उड़ नहीं सकता, क्या वह शिकार पकड़ सकता है ? अगर तुम घरमें ही बैठे हुए आहार की प्रतीक्षा किया करो ; तो तुम्हारे हाथ मकड़ी की तरह पतले पड़ जायँगे।" बापने कहा—"बेटा ! इस बार ईश्वर ने तुम्हारा साथ दिया और सौभाग्य ने तुम्हारी रक्षा की ; इसी से तुम काँटोंमें से गुलाब तोड़ लाये और अपने पैरों से काँटे निकाल सके। दैवयोगसे, एक बड़ा आदमी तुम्हें मिल गया। उसने तुमपर

दया की और तुम्हें धन देकर धनवान् बना दिया। तुम्हारी टूटी अवस्था सुधार दी। परन्तु ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते हैं। मनुष्य को चाहिए, कि आश्चर्यमयी बातों की प्रत्याशा न करे। शिकारी को हर दिन शिकार नहीं मिलता। सम्भव है, कि किसी दिन शिकारी भी शेर का शिकार हो जाय। ईरान के एक बादशाह के साथ भी ऐसी ही घटना घटी थी। बादशाह के पास बहुमूल्य रत्नों से जड़ी हुई एक अँगूठी थी। वह अपने सहचरों के साथ एक दफ़ा मुसल्लाए शीराज़ की सैर को गया। उसने हुक्म दिया, कि इस अँगूठी को अज़ूर के गुम्बद पर लगा दो। साथियों ने बादशाह के आज्ञानुसार काम कर दिया। पीछे बादशाह ने डौंडी पिटवादी, कि जो कोई शख़्स इस अँगूठी के घेरे के अन्दर होकर तीर पार कर देगा, उसे यह अँगूठी मिल जायगी। उस समय बादशाह के साथ ही कोई चार सौ अनुभवी तीरन्दाज़ थे। उन सब का निशाना चूक गया। एक लड़का मठ की छतपर खेल रहा था और अपने तीर चला रहा था। प्रातःकालकी हवा लगने से, उसका एक तीर अँगूठी के भीतर होकर निकल गया। उसे अँगूठी के सिवा और भी बहुत सी क़ीमती चीज़ें मिलीं। इसके बाद लड़के ने अपनी तीर-कमान जला डाली। लोगोंने उससे ऐसा करने का कारण पूछा। लड़के ने कहा,— "मैंने अपनी तीर-कमान इसलिए जला दी, कि मेरी यह प्रसिद्धि चिरकाल तक बनी रहे। सम्भव है, कि, बड़े तीरन्दाज़

की सफलता प्राप्त न हो और एक अनाड़ी लड़का, भूलसे, अपना तीर निशाने पर मार दे।"

मैंने देखा, कि एक फ़क़ीर संसार-त्यागी होकर गुफ़ामें रहता था। वह राजा बादशाहों की भी कुछ परवा न करता था। जो भिखारी हो जाता है, उसे जन्म भर अभाव ही रहता है। लोभ छोड़ दो और बादशाह की तरह राज्य करो; क्योंकि सन्तोषी मनुष्य की गर्दन सदा ऊँची रहती है। उस देशके किसी बादशाह ने सूचित किया, कि मैं उस फ़क़ीर की दयालुता और परोपकारिता के कारण आशा करता हूँ कि वह मेरे यहाँ भोजन करना स्वीकार करेगा। फ़क़ीर ने यह न्योता, पैग़म्बर की प्रथा के अनुसार होनेके कारण, स्वीकार कर लिया। एक दूसरे समय, जब बादशाह उससे मिलने गया; तो उसने उठकर बादशाह को गलेसे लगाया और उस पर अनुग्रह किया।

जब बादशाह चला गया, तब उस फ़क़ीर के साथियोंमें से एक ने उससे कहा—"बादशाह के प्रति ऐसा शिष्टाचार दिखाना नियमविरुद्ध है। कहिए, आपने ऐसा बर्ताव किस लिए किया?" उसने जवाब दिया—"क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी है—'जिसका खाना उसका मान करना।' कान सारी उम्र ढोल, नफ़ीरी और सारङ्गी की आवाज़ बिना रह सकता है, नेत्र बाग़-बगीचों के आनन्द बिना रह सकते हैं; गुलाब और नसरीन बिना गन्ध तेज़ हो सकते हैं; पङ्खोंसे

भरा हुआ तकिया न होने पर, सिर के नीचे पत्थर रख लेनेसे नींद आ सकती है; लेकिन इस नीच पेटको, जबकि आँतें गनगनाहट करने लगती हैं, किसी चीज़ से सन्तोष नहीं होता।

शिक्षा—इस कहानी से अनेक शिक्षाएँ मिलती हैं। तक़दीर तदबीर के पुराने झगड़े को शेख सादी ने इस कहानी में निबटाने की चेष्टा की है। उनकी राय में तक़दीर ही बड़ी चीज़ है। बिना तक़दीर की सहायता के तदबीर कैसी बढ़िया क्यों न हो—फल पैदा नहीं कर सकती। इस विषय में उर्दू के किसी कविने क्या ख़ूब कहा है :—

सब काम अपने करना तक़दीर के हवाले।
नज़दीक आक़िलों के तदबीर है तो यह है॥

चौथा अध्याय ।

चुप रहने से लाभ ।

पहली कहानी ।

नूरे गेती फरोज़ चश्मये हूर ।
ज़िश्त बाशद बचश्म मूशिके कूर ॥१॥

मैं ने अपने एक मित्र से कहा—"मैंने मौन-व्रत धारण करने की प्रतिज्ञा की है ; क्योंकि बात-चीत करने से प्रायः बुराई और भलाई दोनों हुआ करती हैं और दुश्मन की नज़र हमेशा बुराई पर ही रहती है।" उसने

संसार में प्रकाश को फैलाने वाला रोशनी का चश्मा सूर्य्य छछून्दर की दृष्टि में धुंधला मालूम होता है। भर्तृहरि भी कहते हैं—

पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम् ?

जवाब दिया—"भाई! जो भलाई पर नज़र नहीं डालता, वही सब से अच्छा दुश्मन है। दुश्मन की नज़र में भलाई सबसे बड़ा दोष है। सादी, सचमुच गुलाब का फूल है किन्तु दुश्मन की नज़र में काँटा मालूम होता है। दुश्मन अगर नेक आदमी के पास होकर भी निकलता है, तो उसपर ढोंगी होने का दोष लगाये बिन नहीं रहता। जगत् में प्रकाश फैलाने वाला, रोशनी का चश्मा, सूरज छछूंदर की नज़र में धुँधला मालूम होता है।

शिक्षा—धूर्त्त आदमी भले आदमियों में अकारण बुराइयाँ देखते हैं। उनका स्वभाव ही ऐसा है—इसमें उनका भी क्या दोष?

दूसरी कहानी ।

मगो अन्दहे ख़ेश बा दुश्मनाँ ।
के लाहौल गोयन्द शादी कुनाँ ॥१॥

किसी व्योपारी को एक हज़ार दीनारों का घाटा हुआ । उसने अपने पुत्र से कहा—"तुम यह बात किसी से न कहना ।" पुत्रने कहा—"पिता ! आपकी यही आज्ञा है, तो मैं किसी से न कहूँगा ; लेकिन कृपा करके यह तो बताइए, कि इस बात को छिपाने से क्या लाभ होगा ?" उसने कहा—"न कहने से हमें दो आपदाएँ तो न भोगनी पड़ेंगी :—एक घाटा और दूसरा पड़ोसियों का ताना ।" अपने दुःखकी बात अपने वैरियों से न कहो । क्योंकि वे लोग कहेंगे— "भगवान दुःख दूर करे और उसी वक्त तुम्हारा दुःख देखकर मनमें सुखी होंगे ।"

वञ्चनं चापमानञ्च मतिमान्न प्रकाशयेत् ।

शत्रुओं से अपने दुःख की बात मत कहो, वे प्रकाश में तो तुम्हारे साथ सहानुभूति दिखायेंगे और मन में तुम्हारी अवस्था पर खुश होंगे ।

तीसरी कहानी।

न गुफ्ता न दारद कसे बातो कार।
वलेकिन चोगुफ्ती दलीलश बयार ॥१॥
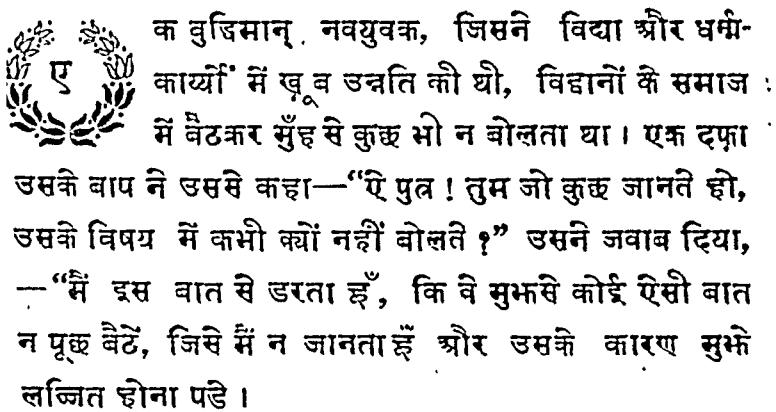
एक बुद्धिमान् नवयुवक, जिसने विद्या और धर्म्म-कार्य्यों में खूब उन्नति की थी, विद्वानों के समाज में बैठकर मुँह से कुछ भी न बोलता था। एक दफ़ा उसके बाप ने उससे कहा—"ऐ पुत्र! तुम जो कुछ जानते हो, उसके विषय में कभी क्यों नहीं बोलते?" उसने जवाब दिया,—"मैं इस बात से डरता हूँ, कि वे मुझसे कोई ऐसी बात न पूछ बैठें, जिसे मैं न जानता हूँ और उसके कारण मुझे लज्जित होना पड़े।

"क्या आपने उस सूफ़ीकी बात नहीं सुनी, जो अपनी खड़ाऊँओं में कीलें ठोक रहा था। कीलें ठोकते देखकर, एक हाकिम ने उसकी आस्तीन पकड़ ली और उससे कहा—'चलो, मेरे घोड़े के पैरों में नाल बाँध दो।' जब तुम चुप रहोगे, तब कोई तुमसे कुछ सरोकार न रक्खेगा और जब तुम बोलोगे तब तुम्हें सबूत लेकर तय्यार रहना पड़ेगा।"

शिक्षा—"कम बोलना अदा है हर आन पर नहीं।"

जब तुम चुप रहोगे तब कोई तुम से कुछ न कहेगा। जब बोलोगे तब तब हर समय प्रमाण सहित तुम को तय्यार रहना पड़ेगा।

चौथी कहानी ।

आँकस के बकुरान ख़बर जूं नरही ।
आनस्त जवाबश के जवाबश न दिही ॥१॥
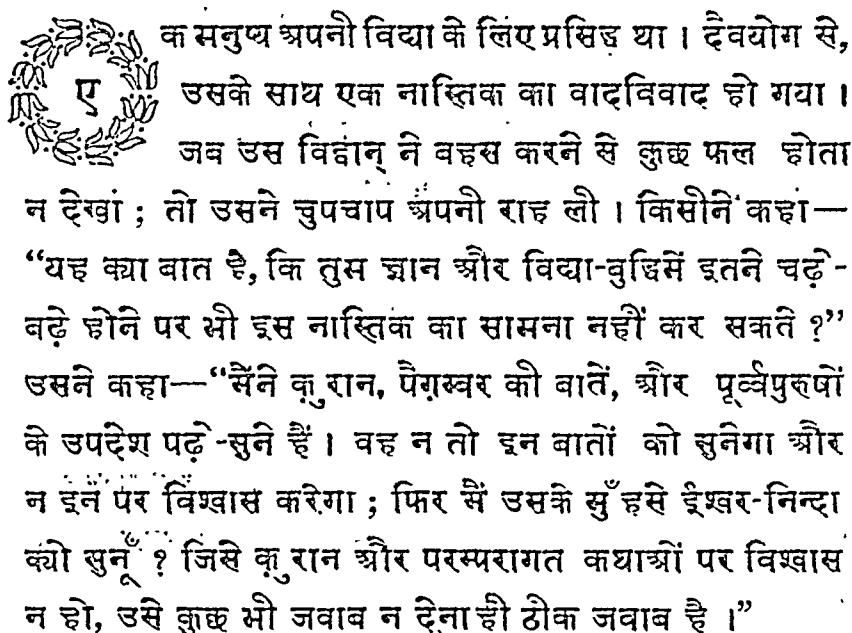
एक मनुष्य अपनी विद्या के लिए प्रसिद्ध था । दैवयोग से, उसके साथ एक नास्तिक का वादविवाद हो गया । जब उस विद्वान् ने बहस करने से कुछ फल होता न देखा; तो उसने चुपचाप अपनी राह ली । किसीने कहा— "यह क्या बात है, कि तुम ज्ञान और विद्या-बुद्धिमें इतने चढ़े-बढ़े होने पर भी इस नास्तिक का सामना नहीं कर सकते ?" उसने कहा—"मैंने क़ुरान, पैग़म्बर की बातें, और पूर्व्वपुरुषों के उपदेश पढ़े-सुने हैं । वह न तो इन बातों को सुनेगा और न इन पर विश्वास करेगा; फिर मैं उसके मुँहसे ईश्वर-निन्दा क्यों सुनूँ ? जिसे क़ुरान और परम्परागत कथाओं पर विश्वास न हो, उसे कुछ भी जवाब न देना ही ठीक जवाब है ।"

शिक्षा—मूर्खों से वाद या वितण्डावाद करके कोई फल नहीं होता । वे तुम्हारी बात मानेंगे नहीं । अकारण तुम्हारा समय नष्ट कर देंगे ।

जिसे क़ुरान और पौराणिक कथाओं पर विश्वास न हो, उसे 'जवाब न देना' ही ठीक जवाब है ।

पाँचवीं कहानी ।

यकेरा ज़िश्तख़ूये दाद दुश्नाम ।
तहम्मुल कर्द व गुफ्त ऐ नेकफ़र्जाम ॥१॥
बतरज़ानम के ख्वाही गुफ्त आनी ।
के दानम ऐवे मन चूं मन नदानी ॥२॥

जालीनूस ने एक मूर्ख को किसी बुद्धिमान् की गर्दन पकड़ कर अपमानित करते देखकर कहा—"अगर यह मनुष्य सचमुच बुद्धिमान् होता ; तो इस मूर्ख के साथ इसका झगड़ा न होता । दो बुद्धिमानों के बीच में झगड़ा-बखेड़ा नहीं होता और बुद्धिमान् आदमी मूर्ख के साथ झगड़ा नहीं करता । अगर मूर्ख आदमी अपने जङ्गलीपन के कारण कड़वी बात कहता है ; तो बुद्धिमान् उसे मीठा जवाब दे देता है । दो बुद्धिमान् एक बाल को भी नहीं तोड़ते ; किन्तु दो मूर्ख एक ज़ञ्जीरको भी तोड़ डालते हैं ।"

शिक्षा—बुद्धिमान् को चाहिए कि वह मूर्ख की बात का जवाब न दे । जवाब देने से झगड़ा बढ़ता है, घटता नहीं और मूर्ख के साथ झगड़ा करना बज़ाते खुद मूर्खता है ।

किसी मूर्ख आदमी ने किसी भद्र पुरुष को बुरा कहा । उसने सुन कर बड़े धैर्य्य से कहा—भाई, मैं जैसा कि तुम कहते हो, उस से भी बुरा हूँ । मैं जितना बुरा हूँ, उसको तुम से अधिक मैं जानता हूँ ।

छठी कहानी।

सुख़न गर्चे दिलवन्दो शीरीं बुवद।
सज़ावारे तसदीक़ो तहसीं बुवद ॥१॥
चो यकबार गुफ्ती मगो बाज़ पस।
के हलवा चो यक बार खुरदन्दो बस ॥२॥

सहबाने वायल अपनी बोलने की शक्ति के लिए बे-जोड़ समझे जाते थे; क्योंकि जब वे वक्तृता देते तो साल भरतक बराबर बोलने पर भी एक शब्द को दुबारा न कहते और जब कभी उसी बात के कहने का मौक़ा आपड़ता; तो उस बात को दूसरी तरह पर समझा देते। दरबारियों में यह गुण होता है। कोई बात कितनी ही मधुर, मनोहर और प्रशंसा-योग्य हो; उसे जब तुमने एक बार कह दिया है तो उसे फिर मत कहो। जबकि तुमने एक बार हलवा खा लिया है, तो वही काफ़ी है।

शिक्षा—किसी बात को चाहे वह कितनी अच्छी हो, बे-मौक़े और बार-बार मत कहो। मौक़ा पाकर ही बोलो और कम बोलो।

बात कैसी ही मीठी और प्यारी हो एक बार कहना चाहिए। एक बार हलवा खाना ही काफ़ी है।

सातवीं कहानी।

—:०:—

खुदावन्दे तदबीर फ़रहंगो होश।
न गोयद सुख़न ता नबीनद ख़मोश॥ १॥

मैं ने एक अक्लमन्द को कहते सुना है, कि अपनी मूर्खता को, सिवा उसके जो बात खतम होने के पहले ही बोलता है और जो दूसरे के बोलते हुए ही बोलता है और कोई स्वीकार नहीं करता। बुद्धिमानो! बात-चीत का आदि भी होता है और अन्त भी। एक बात के बीचमें दूसरी बात घुसेड़ कर गड़बड़ न फैलाओ। बुद्धिमान्, समझदार और धर्म जानने वाले लोग, जब तक दूसरा बोलने वाला चुप नहीं हो जाता, कुछ नहीं बोलते।

शिक्षा—जिस तरह तुम्हारी बात काट कर बोलने वाला तुम्हें बुरा मालूम होता है, इसी तरह तुम दूसरे को मालूम होगे। बोलने में खूब सावधान रहो।

बुद्धिमान् और विचारशील पुरुष जब तक दूसरा बोलता रहता है अपनी बात शुरू नहीं करते।

आठवीं कहानी ।

न हर सुख़न के बरआयद बगोयद अहले शनाख़्त ।
बसिर्रे शाह सरे ख़ेश्तन नशायद बाख़्त ॥ १ ॥

सुलतान महमूद के कुछ नौकरों ने हसन मैमन्दी से पूछा, कि अमुक विषय में बादशाह ने आपसे क्या कहा। उसने जवाब दिया—"क्या वह बात तुम्हें भी मालूम है ?" उन लोगों ने कहा—"आप बादशाह के प्रधान मन्त्री हैं ; बादशाह जो कुछ आपसे कहता है, उसे हमारे जैसे लोगों से कहना उचित नहीं समझता।" उसने जवाब दिया—"बादशाह जो कुछ मुझसे कहता है, वह मनमें इस बातका भरोसा करके कहता है, कि मैं उसकी बात किसी से न कहूँगा। फिर तुम लोग मुझसे क्यों पूछते हो ?" अक्लमन्द जो कुछ जानता है उसे किसी से नहीं कहता। बादशाह की गुप्त बातें प्रकट करके सिर कटवाना अक्लमन्दी का काम नहीं है।

शिक्षा—किसी के भेद मत प्रकट करो। जहाँ तक हो किसी के भेद जानने की चेष्टा मत करो।

राज्य-सम्बन्धी गुप्त बातों को बुद्धिमान् किसी से नहीं कहता, अपने हाथ से ही अपना सिर काटने को वह मूर्खता नहीं करता।

नवीं कहानी।

ख़ानयेरा के चूँतो हमसायस्त।
दह दिरम सीम कम अयार अर्ज़द ॥ १ ॥
लेकिन उम्मेदवार बायद बूद।
के पस अज़ मर्ग तो हज़ार अर्ज़द ॥२॥

मैं एक मकान का सौदा पक्का करने में आगा-पीछा सोच रहा था। उस समय एक यहूदी ने कहा,—"मैं उस महल्ले में पुराना मकानदार हूँ। उस घरका हाल मुझ से पूछिए। वह घर निर्दोष है; अतः आप उसे ख़रीद लीजिए।" मैंने कहा—"तुम्हारे पड़ोस में होने से वह मकान दस खोटे दीनारों का है, किन्तु मुझे आशा है कि तुम्हारे मरनेपर उसके एक हज़ार दीनार उठेंगे।"

शिक्षा-दुष्ट आदमी के सहवास से अच्छी चीज़ की क़ीमत भी घट जाती है। भारतवर्ष में ऐसे "मिस्र ख़्वाहमख़्वाहों" की कमी नहीं है।

दुष्ट के निकट का मकान दस खोटे दीनारों का है और उसके मर जाने पर वही हजार दीनारों का हो जाता है।

दसवीं कहानी ।

उमेद्‌वार बुवद् आदमी वखैर कसाँ ।
मरा वखैरे तो उम्मेद् नेस्त वद् मरसाँ ॥१॥

एक कवि किसी सरदार के पास गया और उसकी प्रशंसा में कविताएँ कहने लगा। डाकू-राजने आज्ञा दी, कि उसके कपड़े उतार कर उसे गाँव से निकाल दो। कुत्ते उसके पीछे लग गये। उसने पत्थर उठाने चाहे, किन्तु वे ज़मीन में जमे हुए थे। कविने दुखी होकर कहा—"ये लोग कैसे नीच हैं जो अपने कुत्तोंको तो खुला छोड़ देते हैं और पत्थरों को बाँध रखते हैं।" सरदार ने खिड़की से उसकी बात सुनी और हँस कर कहा—"ऐ अक्ल-मन्द! मुझसे कुछ इनाम माँग।" कविने जवाब दिया—"अगर आप राज़ी हैं तो मैं अपनी पोशाक ही वापिस माँगता हूँ। मनुष्य धर्मात्माओं से ही आशा करता है। आपकी ओर से मुझे कुछ आशा नहीं है। आप केवल मुझे दुःख न दीजिए। आपने मुझे चले जानेकी आज्ञा दे दी। आपकी इस नेकी से ही मैं सन्तुष्ट हूँ।" डाकू-सरदार को उस पर दया आई। उसने उसके कपड़े वापिस दिला दिये और उसके साथ एक ऊनी चुगा और कुछ दिरम भी उसे दिलवाये।

धर्मात्माओं से ही आदमी को नेकी की उम्मेद करना चाहिए।

शिक्षा—चोर और डाकुओं से दया और सहृदयता की आशा मत रक्खो।

ग्यारहवीं कहानी।

तो बर औजे फ़लक चे दानी चीस्त।
कें न दानी कें दर सराये तो कीस्त॥ १॥

एक ज्योतिषी अपने घरमें घुसा। उसने अपनी स्त्रीके पास एक अपरिचित मनुष्य को बैठा देखा। उसने अपरिचित मनुष्य को गाली-गलौज़ दीं और इतनी कड़ी बातें कहीं कि बखेड़ा हो गया। एक बुद्धिमान् ने कहा—"तुम्हें आसमानी बातों के विषय में क्या मालूम, जब तुम यही नहीं कह सकते कि तुम्हारे घर में कौन है?"

शिक्षा—अनेक धूर्त्त अपने को ज्योतिषी बता कर लोगों को धोखा देते हैं—उनसे बचने का प्रयत्न करना चाहिए।

जो ज्योतिषी अपने घर की बात को नहीं जानता, वह आसमान की बातें किस तरह जानेगा।

बारहवीं कहानी ।

को दुश्मने शोख़ चश्म बेबाक ।
ता ऐबे मरा बमन नुमायद ॥ १ ॥

एक उपदेशक की आवाज़ बहुत ही ख़राब थी; परन्तु वह अपने मनमें समझता था कि मेरी आवाज़ बहुत मीठी है; अतः वह व्यर्थ चिल्लाता फिरता था। जङ्गली कव्वे की काँव-काँव उसके गीत अथवा भजन की गठड़ी थी। क़ुरान का नीचे लिखा हुआ पद उसीके वास्ते कहा गया था—"गधे की आवाज़ वास्तव में सबसे ख़राब आवाज़ है।" जब यह उपदेशक-गधा रेंकता था तब फ़ारिस काँपने लगता था। नगर-निवासी उसके पदकी प्रतिष्ठा के कारण कष्ट सह लेते थे और उसे हैरान करना अनुचित समझते थे। एक पड़ोसी उपदेशक, जो उससे भीतर ही भीतर कुढ़ता था, उसके पास गया और बोला—"मैंने एक स्वप्न देखा है। सम्भव है कि उसका फल अच्छा हो!" उसने पूछा—"आपने क्या देखा?" उसने जवाब दिया—"मैंने देखा कि आपकी आवाज़ मीठी है और लोग आपके उपदेश सुन कर शान्ति लाभ करते हैं।" उस उपदेशक ने इस विषय में ज़रा

तेज़ नज़र दुश्मन कहाँ है, जो मेरे दोष मुझे दिखाता है ?

ग़ौर करके कहा—"आपने कैसा अच्छा सुपना देखा है, जिससे मेरा यह दोष प्रकट हो गया, कि मेरी आवाज़ सुहावनी नहीं है और लोग मेरे उपदेश देनेसे दुःख पाते हैं। मैंने प्रतिज्ञा कर ली है, कि भविष्यमें, मैं धीमी आवाज़ से पढ़ा करूँगा। मेरी मित्र-मण्डली मेरे हक़ में हानिकारक है; क्योंकि वह मेरे दोषोंको भी अच्छा ही समझती है। मेरे दोष उसे गुण मालूम होते हैं और मेरा काँटा उसे गुलाब और चमेली मालूम होता है। कहाँ है गुस्ताख़ दुश्मन, जो अपनी तेज़ नज़र से मेरे दोष दिखावे?

शिक्षा—इस कहानी से हमें दो शिक्षाएँ मिलती हैं—(१) सच्ची बात भी अच्छे ढँग से कहनी चाहिए—जिससे किसी के चित्त को पीड़ा न पहुँचे। (२) स्पष्टवादिता के लिए हमें अपने शत्रु की भी क़द्र करनी चाहिए।
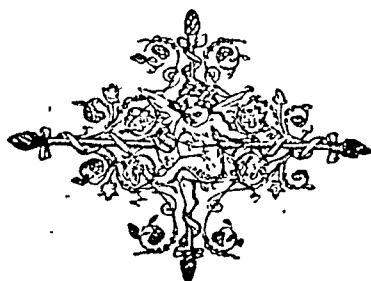
तेरहवीं कहानी ।

बतेशा कस न ख़राशद् ज़रूये खारा गिल ।
चुनां के बाँग दुरश्ते तो मीख़राशद् दिल. ॥ १ ॥

एक मनुष्य संजारिया की मसजिदमें, बिना कुछ लिये, अज़ाँ दिया करता था । उसकी आवाज़ ऐसी बुरी थी, कि जो सुनता, वही नाक-भौं चढ़ाता । मसजिद का मालिक एक अमीर आदमी था । वह बड़ा दयालु था । वह इसे दुःख देना न चाहता था । उसने कहा बच्चा! इस मसजिद में कई पुराने मुअज्जिन हैं जो पाँच-पाँच दीनार मासिक पाते हैं । मैं तुम्हें दस दीनार देता हूँ । तुम दूसरी जगह चले जाओ । वह अमीर की बात पर राज़ी होकर चला गया । कुछ समय बाद वह फिर उसी अमीर के पास आया और बोला—'ऐ मालिक! आपने मुझे दस दीनार देकर दूसरी जगह भेजकर मेरी बड़ी हानि की; क्योंकि जहाँ मैं गया, वहाँ के लोग मुझे बीस दीनार देकर दूसरी जगह जाने को कहते हैं; पर मैंने उनकी बात मञ्जूर नहीं की ।" अमीर ने हँसकर कहा—"देखो बीस दीनार में भी वहाँ से जाने को राज़ी न होना । सम्भव है, कि वे लोग

तेरी बेसुरी आवाज मेरे दिल को इस बुरी तरह से छीलती है, जिस-तरह कोई पत्थर पर लगी हुई मिट्टी को बसूले से खुरचता हो ।

तुम्हें पचास दीनार देने पर राज़ी हो जायँ। तेरी बेसुरी आवाज़ जिस तरह आत्माको छीलती है: उस तरह कोई शख्स पत्थर पर लगी हुई मिट्टीको बसूले से नहीं खुर्च सकता।

शिक्षा—जिनका गला अच्छा नहीं, उन्हें कभी भूलकर भी गायन द्वारा दूसरों को कष्ट न पहुँचाना चाहिए।

चौदहवीं कहानी।

गर तो क़ुरआँ बदीं नमत ख़्वानी।
बबरी रौनक़े मुसलमानी॥ १॥

एक भद्दी आवाज़ वाला आदमी कुरान पढ़ रहा था। एक धर्मात्मा आदमी उस ओर से निकला। उसने उससे पूछा—"तुम कितनी तनख्वाह पाते हो?" पढ़नेवाले ने जवाब दिया—"कुछ भी नहीं।" उसने कहा—"फिर तुम इतना कष्ट क्यों उठाते हो?" उसने कहा—"मैं ईश्वर की राह पर पढ़ता हूँ।" धर्मात्मा ने उत्तर दिया—"ईश्वर के लिए मत पढ़ो। अगर तुम इस ढँग से क़ुरान पढ़ोगे; तो मुसलमानी मज़हब की महिमा का नाश कर दोगे।"

यदि इस तरह से तुमने कुरान पढ़ा तो मुसलमानी धर्म की महिमा नष्ट हुई समझो।

पाँचवाँ अध्याय।

प्रेम और यौवन।

पहली कहानी।

हर के सुलताँ मुरीदे ओ बाशद।
गर हमा बद् कुनद निको बाशद ॥ १ ॥

लोगों ने हसन मैमन्दी से पूछा—"यह क्या बात है कि सुलतान महमूद अनेक सुन्दर-सुन्दर ग़ुलामों के होते हुए भी केवल अयाज़ को ही चाहता है; अयाज़ की सूरत में कोई असाधारण बात नहीं है; जबकि अन्यान्य ग़ुलाम रूप-लावण्य में उससे बहुत कुछ बढ़चढ़ कर हैं?" उसने उत्तर दिया—"जिसका असर दिल पर होता है, वही दृष्टि में सुन्दर मालूम होता है। जिस पर सुलतान का प्रेम

---

१ जिस पर बादशाहका प्रेम होता है, उसमें कितने ही दुर्गुण हों वह सब को भला ही प्रतीत होता है।

ही वह चाहे जैसे बुरे काम करे तथापि सुन्दर ही मालूम होगा। जिसे बादशाह नहीं चाहता, उसे घर का कोई आदमी प्यार नहीं करता। जो किसी को बुरी नज़र से देखता है, उसे यूसुफ़ की खूबसूरती भी बदसूरती सी मालूम होती है। अगर वह भूत को भी चाह की नज़र से देखे; तो वह भी उसकी नज़र में फरिश्ता सा मालूम होगा।"

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है, कि जिसकी नज़र में जो चढ़ जाता है, उसको वही अच्छा लगता है।

दूसरी कहानी।

गुलाम आबकश बायद व खिश्तज़न।
बुवद बन्दये नाज़नीं मुश्तेज़न॥ १॥

कहते हैं, कि किसी बड़े आदमी के पास एक बहुत ही सुन्दर ग़ुलाम था, जिसे वह बहुत ही चाहता था। उसने अपने मित्रों में से एक से कहा—"कैसे अफ़सोस की बात है, कि ऐसा सुन्दर ग़ुलाम असभ्य और गुस्ताख़ हो!" उसने उत्तर दिया—"भाई! जब तुम दोस्ती

गुलाम से वही काम लेना चाहिए, जो उसका है। उसे लाड-प्यार करके ख़राब कर देना अच्छा नहीं।

करो, तब आज्ञापालन की आशा न करो; क्योंकि प्रेमी और प्रेमिका में स्वामी और दास का सम्बन्ध नहीं रह सकता। जबकि स्वामी अपनी सुन्दरी दासी के साथ हँसता और खेलता है; तब क्या आश्चर्य है जो वह अपनी बारी में कुछ चोचलेबाज़ी करे और वह उसके नाज़ोनखरे ग़ुलाम की तरह बर्दाश्त करे। ग़ुलाम को पानी लाने और ईंट बनाने के काम में लगाना चाहिए। वह जोकि खूब छका जाता है, गुस्ताख़ हो जाता है।"

शिक्षा—नौकर को मुँह न लगाना चाहिए; क्योंकि प्रेम करने और मुँह लगाने से नौकर शोख़ हो जाता है। जब मालिक और नौकर में प्रेम हो जाता है, तब नौकर नौकर नहीं रहता।

इक्कीसवीं कहानी।

हदीसे इश्क़ज़ाँ बुत्ताल मेनोश।
के दरसख़्ती कुनद यारी फ़रामोश ॥ १ ॥

एक बड़ा प्रेमी और मिलनसार लड़का था। एक खूबसूरत लड़की से उसकी सगाई होगयी थी। सुना है, कि जब वे दोनों जहाज़ पर समन्दर में सफ़र कर रहे थे, तब दोनों एक जल-भँवर में गिर पड़े। जब मल्लाह

उन से प्रेम की कहानी मत सुनो, जो विपद् के समय अपने मित्र को छोड़ देते हैं।

उस जवान का हाथ पकड़ कर उसे बचाने लगे, तब उसने उस दुःख में बड़े ज़ोर से चिल्ला कर, लहरों के बीच से अपना हाथ निकाल कर अपनी माशूक़ा की तरफ किया और बोला—"मुझे छोड़ दो और मेरी माशूक़ा का हाथ पकड़ो," इस बात पर दुनिया भरने उसकी प्रशँसा की। उसने मरते समय कहा—"उन बेवफ़ाओं से प्रेम की कहानी मत सीखो, जो आफ़त के समय अपनी माशूक़ा को भूल जाते हैं।" इस तरह उन दोनों प्रेमियों की जीवन-लीला समाप्त होगयी। अनुभवी लोगों की बातें सुनो और उनसे शिक्षा लाभ करो। प्रेम के रास्तों से सादी वैसा ही परिचित है, जैसा अरबी भाषा से बग़दाद। जिसको तुम पसन्द करो, उसी माशूक़ा से दिल लगाओ। संसार की अन्य वस्तुओं की ओर से नेत्र-हीन बन जाओ। अगर इस समय लैला और मजनूँ होते; तो इस किताब से प्रेम की कहानी सीखते। *

---

* इस अध्याय में ऐसे-ऐसे क़िस्से हैं, जिनसे सुशिक्षा मिलने के बजाय कुशिक्षा मिलती है। इस अध्याय की प्रेम-रस से पगी कहानियाँ लड़कों और नवयुवकों को कुमार्ग में ले जानेवाली हैं, इसमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं है। देखते हैं, कि मौलवियों के मकतबों में पढ़नेवाले लड़के ऐसी-ऐसी पुस्तकें पढ़ने से ही चरित्र-हीन और अय्याश-तबीयत हो जाते हैं। सादी साहब की गुलिस्ताँ अनमोल रत्न है; किन्तु उनका यह

अध्याय इस देश के उपयोगी नहीं है। इसी से हमने तीन किस्से (पहला, दूसरा और इक्कीसवाँ) देकर शेष अठारह अश्लील क़िस्से छोड़ दिये हैं। इस अध्याय के सिवा और किसी अध्याय में हमने एक भी कहानी नहीं छोड़ी है। सादी जैसे नीतिज्ञ ने, समझ में नहीं आता, अपनी नीति-पुस्तक में इस अध्याय की क्यों अवतारणा की। फूल और काँटे का योग इसे ही कहते हैं।
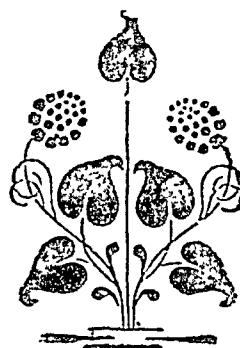
छठा अध्याय।

दुर्ब्बलता और वृद्धावस्था।

पहली कहानी।

चूँ मुरव्वत शुद एतदाले मिज़ाज।
न अज़ीमत असर कुनद न इलाज॥ १॥

दमश्क की मसजिदमें, मैं एक विद्वान् के साथ तर्क-वितर्क कर रहा था। इतने में एक जवान आदमी ने फाटक के भीतर घुसकर कहा—"क्या आप लोगों में कोई फ़ारसी जाननेवाला है?" लोगोंने मुझे बताया। मैंने पूछा—"क्या मामला है?" उसने जवाब दिया, "एक डेढ़ सौ वर्ष का बूढ़ा मृत्यु की यन्त्रणाओं में फँस रहा है। वह फ़ारसी ज़ुबान में कुछ कहता है, जो हम लोगों की

जब शारीरिक अवस्था खराब हो जाती है, तब दवा और दोआ किसी से फ़ायदा नहीं होता।

समझ में नहीं आता। अगर आप मेहरबानी करके वहाँ तक चलने की तकलीफ़ उठावें; तो आपको आपके परिश्रम का पुरस्कार मिल जायगा। शायद वह अपनी जायदाद किसी के नाम पर लिख जाना चाहता है।" जब मैं उसके तकिये के पास पहुँचा, तब उसने कहा—"मुझे आशा थी, कि मैं अपने जीवन के बाकी दिन आराम से बिताऊँगा; लेकिन मुझे साँस लेना कठिन हो गया है। अफ़सोस है, कि मैंने इस विचित्र जीवन के दस्तरख़्वान पर थोड़ा ही सा खाया और लोगोंने कहा इतना ही बहुत है।" मैंने अरबी में दमश्क के लोगोंको उसकी बात-चीत का मतलब समझा दिया। उनको इस बात से आश्चर्य हुआ, कि वह इतनी अवस्था को पहुँचने पर भी, साँसारिक जीवन के लिये दुःखी होता है। मैंने उससे पूछा कि आपकी तबीयत कैसी है। उसने जवाब दिया—"मैं क्या कह सकता हूँ? क्या आप उसके दुःखको नहीं जानते, जिसने अपना एक दाँत मुँहसे निकाल लिया हो? ख़्याल करो, उसकी क्या दशा होगी, जिसके अमूल्य शरीर से जीव निकल रहा होगा।" मैंने कहा—"आप अपने चित्त से मृत्यु का ख़्याल दूर कीजिए और कुछ भय न कीजिए। हकीमों ने कहा है—'यदि शरीर की दशा एक दम स्वस्थ हो; तोभी हमें शरीर की स्थिरता पर विश्वास न करना चाहिए और यदि भयानक बीमारी भी हो तोभी मरने का निश्चय न कर लेना चाहिए।' अगर आप आज्ञा दें तो किसी हकीम को बुलाऊँ। वह

आपको कुछ दवा देगा। सम्भव है कि आप उससे आरोग्य लाभ करें।" उसने जवाब दिया—"अफ़सोस! मकान की नींव ढीली पड़ गयी और मालिक मकान अपना कमरा सजाना चाहता है। चतुर हकीम जब बूढ़े को खप्पर की भाँति फूटा हुआ देखता है, तब दोनों हाथों को मलने लगता है। बीमार जिस समय दर्द के मारे रो रहा था, उस समय एक बुढ़िया उसके पैरोंमें चन्दनका उबटन मल रही थी। जब मनुष्य का स्वास्थ्य एक दम नष्ट हो जाता है, तब दवाइयों और तावीज़ोंसे कुछ भी लाभ नहीं होता।"

शिक्षा—मनुष्य चाहें जितनी उम्र तक क्यों न जियें, विषय-भोग की सामग्रियों को चाहें जितना क्यों न भोगें; मरणका-समय नज़दीक आनेपर उनकी विषय-भोगों को भोगने की इच्छा कम नहीं होती और जब मृत्यु-काल निकट आ जाता है, तब मनुष्य किसी प्रकार की दवा-दारू से नहीं बच सकता।

दूसरी कहानी।

वातो मरा सोख़्तन अन्दर अज़ाव।
वह के शुदन वादिगरे दर वहिश्त ॥ १ ॥

एक बूढ़ा आदमी अपनी कहानी यों कहने लगा—"मैंने एक युवती कन्यासे विवाह करके अपने कमरे को फूलोंसे ख़ूब सजाया। मैं उसके पास एकान्त में बैठा रहता और अपना दिल और अपनी आँखें उसी पर लगाये रहता। उस कन्या की लज्जा दूर करने और अपने से हिलाने के लिए मैंने कई लम्बी-लम्बी रातें, बिना नींद लिये, हँसी-मज़ाक़ में बिता दीं। एक रात को मैंने उससे कहा—'तुम्हारी तक़दीर बहुत अच्छी है जो तुम्हें बूढ़े आदमी की सुहबत मिली, जो पक्के विचार रखता है और जिसने ज़माना देखा है तथा जिसने क़िस्मत के उलट-फेर देखे हैं; जो समाज के नियम जानता है, जिसने अपने मित्र-धर्म का पालन किया है; जो प्रेमी, शीलवान्, प्रसन्नचित्त और वार्तालाप करने योग्य है। मैं आपको अपनी प्रेमिका बनाने की भरसक चेष्टा करूँगा। यदि तुम मुझसे बुरा बर्त्ताव

जिससे तबीयत मिली होती है, उस के साथ नरक में जाना भी अच्छा है और जिस से तबीयत को लगाव नहीं, उसके साथ स्वर्ग में जाना भी अच्छा नहीं।

करोगी ; तोभी मैं तुमसे अप्रसन्न न हूँगा। यदि तोते की भाँति चीनी ही तुम्हारे खाने की चीज़ होगी ; तो मैं अपने सुखमय जीवन को तुम्हारे ही प्रतिपालन में ख़र्च करूँगा। तुम्हारा बदमिज़ाज, नासमझ गँवार युवक से पाला नहीं पड़ा है, जो क्षण-क्षणमें अपने इरादे बदलता है, हर रातको नयी जगह में सोता है और हरदिन नयी दोस्ती पैदा करता है। जवान आदमी दिलचस्प और ख़ूबसूरत होते हैं ; परन्तु उनकी मुहब्बत क़ायम नहीं रहती। उनसे वफ़ा की उम्मेद न करो, जो बुलबुल की सी आँखों से कभी इस गुलाब की झाड़ी पर और कभी उस गुलाब की झाड़ी पर गाते फिरते हैं। बूढ़े लोग जवानी की नादानी और चञ्चलता में अपना समय नहीं बिताते ; किन्तु दानाई और नेकचलनी में अपना वक़्त लगाते हैं। अपनी अपेक्षा अच्छा आदमी ढूँढ़ो, जो पा जाओ तो अपने तईं भाग्यवान् समझो। क्योंकि अगर अपने समान मनुष्य के साथ रहोगी ; तो तुम अपने जीवन में उन्नति न कर सकोगी।' " उसने कहा—"मैंने इसी तरह अनेक बातें कहीं और मनमें समझा कि मैंने उसके दिलपर फ़तह पा ली है ; इतने ही में, उसने, हृदयकी तली से सर्द आह खींच कर, जवाब दिया—'आपने जितनी अच्छी-अच्छी बातें कही हैं, उन सबका मेरे विचार की तराज़ू पर उतना वज़न नहीं है, जितना कि उस एक वाक्य का जो मैंने अपनी दाई से सुना था,—अगर तुम किसी जवान औरत के पहलू में तीर

लगाओ, तो उसे उस तीर से इतना दुःख न होगा, जितना बूढ़े की सुहबत से।" उसने कहा—"बहुत बात बढ़ाने से क्या, हम दोनों आपस में राज़ी न हुए और मन में भेद होने के कारण दोनों अलग-अलग हो गये।"

क़ानूनी मीयाद पूरी होजाने पर, उसने एक तेज़मिज़ाज, बदचलन और कङ्गाल जवान के साथ विवाह कर लिया। नतीजा यह निकला, कि उसे मारपीट और दरिद्रता के दुःख भोगने पड़े; तिस पर भी उसने अपने भाग्य की सराहना की और कहा—"ईश्वर को धन्यवाद है, कि मैं नरक-यातना से बच गयी और मुझे चिरस्थायी सुख मिला। मैं तुम्हारे नख़रों को बरदाश्त कर लूँगी, क्योंकि तुम ख़ूबसूरत हो। तुम्हारे साथ नरक में जलना अच्छा, पर बूढ़े के साथ स्वर्ग में रहना अच्छा नहीं। ख़ूबसूरत आदमी के मुँह से निकली हुई प्याज़ की ख़ुशबू भी अच्छी मालूम होती है; लेकिन बदसूरत आदमी के हाथ के गुलाब के फूल की ख़ुशबू भी उतनी अच्छी नहीं मालूम होती।"

शिक्षा—बूढ़े को जवान स्त्री बहुत प्यारी मालूम होती है लेकिन जवान स्त्री को बूढ़ा किसी तरह पसन्द नहीं आता। बुढ़ापे में जो शादी करते हैं, उनकी बदनामी ही होते देखी जाती है। बूढ़ा आदमी सभी को बुरा मालूम होता है। जिसमें स्त्रियाँ तो यौवन, रूप और लावण्य की ही चाहने वाली होती हैं।

तीसरी कहानी।

तो बजाये पिदर चे करदी ख़ैर।
ता हुमाँ चश्मदारी अज़ पिसरत ॥१॥

दियाबक्र में, मैं एक अमीर बूढ़े आदमी का मिहमान था। उसके एक सुन्दर पुत्र था। एक रात, उसने कहा—"सारी उम्र में सिवाय इस लड़के के मेरे और बच्चा न हुआ। इस स्थान के पास एक पवित्र वृक्ष है। लोग उसके पास अपनी अर्ज़ियाँ देने जाते हैं। कितनी ही रातों, मैंने इस वृक्ष के नीचे ईश्वर की विनती की; तब मुझे यह पुत्र प्राप्त हुआ।" मैंने सुना कि लड़का धीरे-धीरे अपने मित्रों से कह रहा था—"यदि मुझे उस वृक्ष का पता मालूम हो जाय तो बड़ा आनन्द हो। उसके नीचे बैठ कर, मैं अपने पिता की मृत्यु के लिए ईश्वर से विनती करूँ।" पिता अपने पुत्र की बुद्धिमानी पर प्रसन्न हो रहा था; लेकिन लड़का अपने बाप की निर्बलता और वृद्धावस्था से घृणा करता था। बहुत दिन हुए, तुम अपने पिता की क़ब्र देखने नहीं गये; तुमने अपने

जो अपने पिता से भक्तिपूर्वक व्यवहार नहीं करते, उन्हें अपने पुत्रों से यह आशा नहीं रखना चाहिए कि वे उनकी सेवा करेंगे।

माता-पिता को क्या भक्ति दिखाई है, जो तुम अपने पुत्र से आज्ञापालन की आशा करते हो ?"

शिक्षा—जैसा तुम्हारा दूसरों के साथ व्यवहार है दूसरों से भी अपने लिए वैसे ही व्यवहार की आशा रक्खो—उस से अच्छे व्यवहार की नहीं।

चौथी कहानी

अस्पे ताज़ी दोतक रवद् बशिताब।
उश्तर आहिस्ता मीरवद् शबोरोज़ ॥१॥

एक दफ़ा भर पूर जवानी में, मैंने लम्बा सफ़र किया और रात के समय थक कर एक पहाड़ की तलहटी में आराम किया। एक दुर्बल बूढ़ा आदमी क़ाफ़िले के पीछे आया। उसने कहा—"तुम क्यों सोते हो ? उठो, यह आराम करने की जगह नहीं है।" मैंने उस से कहा—"मैं अपने पैरों को बिना काम में लाये आगे कैसे चल सकता हूँ ?" उसने जवाब दिया—"क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी है, कि दौड़ कर चलने और थक जाने की अपेक्षा

अरबी घोड़ा २-४ कोस दौड़ लगा सकता है पर ऊंट धीमी चाल से रात-दिन चला करता है।

आगे बढ़ना और ठहर जाना अच्छा है?" तू, जो अपने मुक़ाम पर पहुँचना चाहता है जल्दी न कर। मेरी नसीहत सुन और सब्र करना सीख। अरबी घोड़ा पूरी तेज़ी से दो-चार दौड़ें लगा सकता है; लेकिन ऊँट धीरे-धीरे दिन और रात सफ़र करता है।

शिक्षा—उसी काम से उन्नति होती है, जो चाहे कम हो पर हो नियमपूर्वक।

पाँचवीं कहानी।

मूये वतलबीस सियाहकर्दी गीर।
रास्त न ख़्वाहद शुदन ईं पुश्तकूज़॥ १॥

हमारी प्रसन्नमण्डली में, एक प्रसन्नवदन युवक था। रञ्ज उसके दिल में किसी तरह न घुस सकता था और हँसी उसका मुँह न बन्द होने देती थी। उस से मेरी मुलाक़ात हुए बहुत दिन हो गये थे। कुछ रोज़ बाद, मैंने उसे बीबी और बच्चे सहित देखा। उसका हँसना

बूढ़ी, बाल काले करके तू लोगोंको धोखा नहीं दे सकती; तेरी झुकी हुई कमर तेरे बुढ़ापे को साफ बता रही है—उसका क्या इलाज तूने सोचा है?

खिलकना बन्द हो गया था और उसकी सूरत बहुत कुछ बदल गई थी। मैंने उससे पूछा कि क्या हाल है। उसने जवाब दिया—"मैं ने बच्चों का बाप हो जाने पर, बच्चों का सा खेल छोड़ दिया। जब तुम वृद्ध हो जाओ, तब किशोरपन को छोड़ दो और जवानों के साथ हँसी-मज़ाक़ करना बन्द कर दो। बूढ़े हो जाने पर, जवानी की सी ज़िन्दादिली की आशा न करो; क्योंकि नदी फिर अपने निकास की ओर नहीं लौटती। जबकि अनाज का खेत काटने लायक़ हो जाता है, तब वह हवा में इतने ज़ोर से नहीं हिलता, जितना कि वह हरा रहने के समय हिलता था। जवानी का समय बीत गया है। अफ़सोस! वे दिन जो दिल को ज़िन्दा करते थे कहाँ गये! शेर ने अपने पञ्जे का बल गँवा दिया है और मैं बूढ़े तेंदुए की तरह ज़रा सी पनीर से ही राज़ी रहता हूँ। एक बुढ़िया ने अपने बाल रँगे। मैंने उससे कहा—ऐ मेरी छोटी बूढ़ी माँ! तुमने अपने बाल तो काले कर लिये हैं; लेकिन तुम अपनी झुकी हुई कमर को सीधी नहीं कर सकतीं।"

शिक्षा—अवस्थानुकूल ही सब बातें शोभा देती हैं।

छठी कहानी।

गर ज़ अहद खुर्दियत याद आमदी।
के वेचारा वूदी दर आग़ोश मन॥ १॥
नकरदी दरीं रोज़ वर मन जफ़ा।
के तू शेर मरदी व मन पीरे ज़न॥ २॥

एक दिन जवानी की नादानी के कारण, मैं अपनी माँ से तेज़ी से बोला। मेरी बात से माँ का दिल दुःखी हुआ। वह एक कोने में बैठ कर रोने और कहने लगी—"क्या तुम उन सब कष्टों को भूल गये, जो तुमने मुझे बचपन में दिये थे? भूल जाने के कारण से ही, तुम मुझ से ऐसा बुरा व्यवहार करते हो।" उस बूढ़ी ने जब अपने बेटे को शेर के वश में करने योग्य और हाथी के समान बलवान् देखा, तब उसने क्या ही अच्छी बात कही—"अगर तुम्हें अपने बचपन का समय याद होता, जबकि तुम बेवसी की हालत में मेरी गोद में पड़े रहते थे, तो तुम मुझ से ऐसा कड़ा वर्त्ताव न करते। अब तुम में शेर की सी ताक़त है और मैं बूढ़ी औरत हूँ।"

शिक्षा—माता के पुत्र पर असंख्य अहसान हैं। जो पुत्र माता को कष्ट देते हैं वे अवश्य नारकी जीव हैं।

ऐ जवान लड़के! यदि तुझे अपना बचपन याद होता तो तू मेरे ऊपर यह बुरा वर्ताव न करता। उस समय तू बेवसी की हालत में मेरी गोद में पड़ा रहता था। पर अब तू शेर है और मैं बेवस बूढ़ी हूँ।

सातवीं कहानी ।

व दीनारे चो ख़र दर गिल बमानन्द ।
दर अलहमदे बख़्वाही सद बख़्वानन्द ॥ १ ॥

एक धनवान् कञ्जूस का बेटा बीमार था। उसके मित्र ने कहा,—"या तो तुम क़ुरान का आदि से अन्त तक पाठ करवाओ या बलिदान दो; जिस से ईश्वर तुम्हारे बेटे को आराम कर दे।" उस कञ्जूस ने थोड़ी देर तक विचार कर कहा—"क़ुरान पढ़ना अच्छा है, क्योंकि वह पास ही है लेकिन भेड़ों का झुण्ड दूर है।" एक साधू ने यह बात सुन कर कहा—"वह क़ुरान का पढ़ना इसलिए पसन्द करता है, कि उसके शब्द उसकी जीभ की अनी पर हैं लेकिन रुपया उसके दिलके अन्दर है। अफ़सोस! अगर कोई धर्म का काम ख़ैरात के साथ होता है तो लोग दलदल में फँसे हुए गधे की तरह रह जाते हैं; लेकिन यदि केवल क़ुरान के पहले अध्याय के पाठ करने की आवश्यकता होती है तो वे उसके सौ पाठ कर डालते हैं।"

शिक्षा—धर्म्म के जिस काम में पैसा ख़र्च न हो, उसे लोग बड़े चाव से करते हैं; पर जहाँ पैसे का प्रश्न उठता है वहाँ उनका मुँह सूख जाता है।

कंजूस आदमी दान करते समय कीचड़ में गधे की तरह किंकर्त्तव्य-विमूढ़ होजाता है पर किसी स्तोत्र के पाठके लिए वह तय्यार रहता है।

आठवीं कहानी।

लोगों ने एक बूढ़े से पूछा—"तुम शादी क्यों नहीं करते?" उसने जवाब दिया—"मुझे बूढ़ी औरत पसन्द नहीं है।" लोगों ने कहा—"तुम्हारे पास तो माल है, तुम जवान औरत से शादी कर सकते हो।" उसने जवाब दिया—"जब मैं बूढ़ा होकर बूढ़ी औरत को पसन्द नहीं करता; तब मैं किस तरह आशा कर सकता हूँ कि जवान औरत मुझ से मुहब्बत करेगी?"

शिक्षा—वही बात अच्छी है जिसे हम अच्छी समझते हैं जब यह यह नियम है तब यह भी नियम होना चाहिए कि वही बात बुरी है जो दुःखद है चाहे दूसरे के लिए ही हो।

नवीं कहानी ।

तुरा के दस्त वलरज़द गुहर चे दानी सुफ़्त ॥१॥

मैं ने सुना है, कि एक दुर्बल बूढ़े ने बुद्धि के नाश होने के कारण विवाह करने का विचार किया। उसने गौहर नाम की ख़ूबसूरत लड़की से, जो रत्नों के डब्बों की भाँति लोगों की नज़र से छिपा कर रक्खी गयी थी, शादी की। विवाह-कार्य्य बड़ी ख़ूबी और ठाटबाट से पूरा किया गया। थोड़े दिन बाद ही, उसने अपने मित्रों से शिकायत करनी शुरू की कि उस गुस्ताख़ लड़की ने मेरे कुल का नाम डुबो दिया है। उन दोनों में ऐसा झगड़ा उठ खड़ा हुआ, कि अन्त में वह मामला पुलिस सुपरिनटेण्डेण्ट क़ाज़ी के सामने पहुँचा। यह हाल देख कर सादीने कहा—"इस मामले में लड़की का कोई दोष नहीं है। तुम काँपते हुए हाथों से मोती में छेद किस तरह कर सकते हो?"

शिक्षा—क्या ख़ूब, मणिकाञ्चन संयोग ही ठीक है।

"तू काँपते हुए हाथों से मोती को नहीं छेद सकता।"

सातवाँ अध्याय ।

शिक्षाका फल ।

पहली कहानी ।

ख़रे ईसा गरश ब मक्का बरन्द ।
चूँ बयायद हनोज़ ख़र बाशद ॥१॥

किसी वज़ीर के एक मूर्ख लड़का था। उसने उसे शिक्षा दिलाने की इच्छा से एक पण्डित के पास भेजा। उसे आशा थी, कि शिक्षासे उसकी योग्यता बढ़ जायगी। कुछ दिन शिक्षा देने पर, जब कुछ फल न हुआ तब पण्डित ने उसके पास यह ख़बर भेजी—"तुम्हारे पुत्रमें बिल्कुल योग्यता नहीं है। उसने मुझे क़रीब-क़रीब हैरान कर दिया है। जब ईश्वर योग्यता देता है, तब शिक्षा का फल होता है। जो लोहा अच्छा नहीं होता, वह पालिश करने से

---

१ ईसा का गधा मक्के जाकर भी गधा ही रहता है।

भी अच्छा नहीं हो सकता। कुत्ते को सात नदियों में स्नान न कराओ; क्योंकि वह जब भाग जायगा तो और भी मैला हो जायगा। अगर वह गधा जो ईसा मसीह को ले गया था मक्के को लाया जाता, तो लौटने पर वह गधेका गधा ही रहता।

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम् ।

दूसरी कहानी ।

एक विद्वान् अपने पुत्रों को इस भाँति उपदेश दे रहा था—"मेरे प्यारे बच्चे! ज्ञान प्राप्त करो; क्योंकि सांसारिक धन-दौलत और मिलकियत का कुछ भरोसा नहीं है; ओहदा तुम्हारे ख़ास मुल्क के सिवा और जगह किसी काम न आवेगा; सफ़र में दौलत के खो जाने का भय रहता है; सम्भव है कि या तो चोर उसे चुरा ले जायँ अथवा धन का मालिक उसे धीरे-धीरे खा डाले। लेकिन 'ज्ञान' रूप धन कभी नष्ट न होने वाला झरना है। अगर शिक्षित मनुष्य धनवान् न हो, तो उसे दुःखी न होना चाहिये, क्योंकि 'ज्ञान', स्वयं धन है। विद्वान् जहाँ जाता है उसका वहीं आदर होता है, और वह सर्वोच्च

स्थान पर बैठता है। किन्तु मूर्ख को सिर्फ़ थोड़ा सा स्थान मिलता है और वह मुसीबत उठाता है। हुकूमत करने के बाद, हुक्म मानने के लिए लाचार किये जाने से बड़ा कष्ट होता है। जो सदा से लाड़-प्यार में रहा है, वह दुनिया का कड़ा बर्त्ताव सहन नहीं कर सकता।"

एक समय दमश्क में ग़दर हो गया। लोगोंने अपने घर छोड़ दिये। किसी किसान के बुद्धिमान् लड़के बादशाह के वज़ीर हो गये और वज़ीर के मूर्ख लड़के ऐसी हीनावस्था को पहुँच गये कि गली-गली में भीख माँगने लगे। अगर तुम्हें बापकी बपौती की दरकार हो, तो अपने बाप का इल्म हासिल करो; क्योंकि बाप की दौलत तो दस दिन में ही ख़र्च हो जा सकती है।

शिक्षा—सब धनों की अपेक्षा विद्याधन ही श्रेष्ठ है—अतएव उसको प्राप्त करने के लिए प्राण-पण से चेष्टा करनी चाहिए।

तीसरी कहानी ।

चोवे तररा चुनाँके ख़्वाही पेच ।
न शवद् खुश्क जुज़ व आतिश रास्त ॥ १ ॥

एक विद्वान् किसी राजा के लड़के को पढ़ाया करता था। वह उस राज-पुत्रको निर्दयता से पीटता और उसके साथ बहुत ही सख़्ती से पेश आता था। लड़के से जब ऐसा कड़ा बर्त्ताव न सहा गया; तब उसने अपने बाप से शिकायत की और अपने कपड़े उतार कर चोट के निशान दिखाये। राजा के दिलमें दुःख हुआ। उसने शिक्षक को बुलाया और कहा—"तुम मेरे लड़के के साथ ऐसी निर्दयता का बर्त्ताव करते हो, जैसा मेरी प्रजाओं के लड़कों के साथ भी नहीं करते। इसका क्या सबब है?" शिक्षक ने उत्तर दिया—"योग्यता के साथ बात-चीत करना और चित्त प्रसन्न करने वाला नम्र स्वभाव रखना, साधारणतया सभी मनुष्यों में होना चाहिए; परन्तु राजाओं में इसकी विशेष आवश्यकता है; क्योंकि राजा लोग जो कुछ करते या कहते हैं, वह प्रत्येक मनुष्य की ज़बान पर रहता है; किन्तु साधारण मनुष्यों की बातें और उनके कार्य्य इतने महत्त्व के नहीं होते। अगर

गीली लकड़ी को जितना चाहे मोड़ सकते हो—सूखी को नहीं। सूखी हुई लकड़ी को झुकाने के लिए आग में देने की जरूरत पड़ती है।

कोई फ़क़ीर एक सौ अनुचित काम भी करे; तो उसके साथी उनमें से एक पर भी ध्यान न देंगे; लेकिन अगर राजा एक भी अनुचित काम करे; तो उसकी चर्चा अनेक राज्यों में फैल जायगी। अतः राज-पुत्रों का चरित्र-गठन करने में नीचे लोगों की अपेक्षा उन पर अधिक परिश्रम का भार डालना और उन्हें अधिक कष्ट देना ज़रूरी है। जिसे बचपन में सत् चरित्र की शिक्षा नहीं मिलती, उसमें बड़े होने पर कोई अच्छा गुण नहीं होता। हरी लकड़ी को जितना चाहो उतना मोड़ सकते हो, पर सूख जाने पर वह सीधी नहीं हो सकती। यह बात सच है, कि नाज़ुक डालियों को मनुष्य बट सकता है; किन्तु सूखी लकड़ी को सीधी करने की कोशिश करना व्यर्थ है।" राजा ने शिक्षक के भले उपदेश और उसके व्याख्यान देने के ढंग को पसन्द करके उसे ख़िलअ़त और इनाम दिया एवं उसकी पदवृद्धि की।

शिक्षा—शिक्षक का अदब करना ज़रूरी है—यही बात इस कहानी से निकलती है। किन्तु आज-कल मारपीट कर पढ़ाने का सिद्धान्त दूषित समझा जाता है। शिक्षकों का यह गुण अनुकरणीय नहीं।
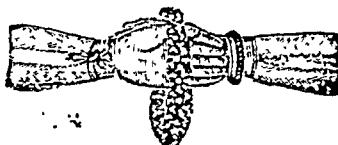
चौथी कहानी ।

बर सरे लौह ओ नविश्तह बज़र ।
जौरे उस्ताद बह ज़े मेहरे पिदर ॥

मैं ने अफ्रि.का में एक पाठशाला का शिक्षक देखा । उसकी सूरत घिनावनी और उसकी ज़बान कड़वी थी । वह मनुष्यता का वैरी था और नीच स्वभाव और क्रोधी था । उसकी सूरत देखने से मुसलमानों की खुशी हवा हो जाती थी और उसके कुरान पाठ करने से मनुष्यों का मन विचलित हो उठता था । कुछ सुन्दर लड़के और कुछ नाज़ुक कन्याएँ उसकी अत्याचारी भुजा के अधीन थीं । वे सब उसके सामने हँसने और बोलने का साहस न करते थे ; क्योंकि वह कभी किसी के चाँदी से चमकदार गालों को नोच लेता और कभी किसी की बिल्लौर के समान सुन्दर टाँगों को काठ में बन्द कर देता था ।

बहुत क़िस्सा बढ़ाना ठीक नहीं । मैंने सुना है, कि जब लोगों को उसका यह हाल मालूम हुआ, तब उन्होंने उसे मार-पीट कर निकाल दिया । पाठशाला को एक अच्छे

यह बात सोने के अक्षरों में लिखी जाने योग्य है कि मा-बाप के लाड़ से शिक्षक की ताड़ना अच्छी है ।

धार्म्मिक मनुष्य के सिपुर्द किया। वह बहुत ही नम्र और सहनशील था। वह लाचारी के सिवा कभी एक शब्द भी न बोलता था। उसकी ज़ुबान से कोई ऐसी बात न निकलती, जिससे किसीको दुःख होता। लड़कों के सिर से पहले शिक्षक का भय निकल गया। नये शिक्षक को देव-स्वभाव का आदमी समझ कर, वे एक दूसरे से लड़ने-झगड़ने लगे। उसकी सहनशीलता का भरोसा करके उन्होंने पढ़ने-लिखने से ध्यान हटा लिया। वे लोग अधिकांश समय खेल-कूदमें लगाने लगे और अपनी कापियाँ बिना पूरी किये ही एक दूसरे के सिर पर अपनी तख़्तियाँ तोड़ने लगे। जब शिक्षक शिक्षा देने में ढीला रहता है, तब लड़के बाज़ार में जाकर कबड्डी खेला करते हैं।

एक पखवारे के बाद, मैं मसजिद के फाटक के पास होकर निकला और देखा कि लोगोंने उसी पुराने शिक्षक को उत्साहित करके उसको पुरानी जगह पर नियुक्त कर दिया है।

सच बात तो यह है कि मुझे बड़ी चिन्ता हुई और मैंने ईश्वर को पुकार कर कहा—"लोगोंने फरिश्तों के लिए फिर से दुबारा शैतान शिक्षक क्यों मुक़र्रर किया है?" एक अनुभवी बूढ़ा आदमी मेरी बात सुनकर हँसा और कहने लगा—"क्या तुमने यह बात नहीं सुनी? एक राजा ने अपने पुत्र को पाठशाला में भेजा और चाँदी की तख़्ती उसकी बग़लमें दे दी। तख़्ती पर सामने ही सुनहरी अक्षरों में यह लिखा

हुआ था—'बापके लाड़ प्यार से उस्ताद की सख़्ती बेह-तर।"

शिक्षा-निस्सन्देह लाड़-प्यार से बच्चे बिगड़ जाते हैं, पर मारने-पीटने से भी लड़कों में अनेक दुर्गुण पैदा होते हुए देखे गये हैं।

पाँचवीं कहानी।

दरख़्त अन्दर बहारां बरफ़िशानद।
ज़मिस्ताँ लाजरम बेबर्ग मानद॥ १॥

एक धार्मिक मनुष्य का पुत्र, चचाके मरने पर उसके विपुल धन का अधिकारी हो कर, बड़ा ही ख़र्चीला और अय्याश हो गया। ऐसा कोई पाप ही न था जो उसने न किया हो और ऐसा कोई नशा न था जो उससे बचा हो। एक बार मैंने उससे उपदेश के तौर पर यह कहा—"पुत्र! दौलत बहती हुई नदी के समान है और सुख चक्की के पाट की तरह घूमता है। बेहिसाब ख़र्च करना उसे ही शोभा

वसन्त-ऋतु में जो दरख़्त फूलों से लदा रहता है, जाड़े में उस पर एक पत्ता भी नहीं रहता।

देता है, जिसको कुछ आमदनी हो। जबकि तुम्हारी आमदनी का ज़रिया न हो; तब ख़र्च करने में किफ़ायतशआरी से काम लो। मल्लाह लोग एक गीत गाया करते हैं। उसका मतलब यह है—अगर पहाड़ों पर पानी न बरसे, तो दजला नदीमें एक साल में ही बालू ही बालू हो जाय। बुद्धिमानी और सच्चरित्रता से काम करो और भोग-विलास को छोड़ो। क्योंकि जब तुम्हारा धन ख़र्च हो जायगा, तब तुम विपद् में फँसोगे और लज्जित होगे।" वह जवान गाने बजाने और शराब-ख़ोरीमें ऐसा भूला हुआ था, कि उसने मेरी नसीहत पर कान न दिया, किन्तु मेरी बातों के विरुद्ध यह कहा—"भविष्य के भयसे, वर्त्तमान सुख-चैन में बाधा डालना महात्माओं के ज्ञानके विरुद्ध है। जिनके पास धन हो वे दुःखकी आशा करके कष्ट क्यों सहें। ऐ मेरे मनोमोहन मित्र! कल क्या होगा, उसके लिए हमें आज दुःखित न होना चाहिए। मैं उदारता के उच्चतम स्थानपर बैठा हूँ और मैंने दातारी से दोस्ती कर ली है; इससे मेरी दानशीलता की चर्चा सब लोगोंकी बात-चीत का मुख्य विषय है, तब मेरे लिए वैसा करना किस तरह मुनासिब है।"

जब कि मनुष्य ने उदारता और दानशीलता में नाम कमा लिया है तब उसे अपनी थैलियों का मुँह बन्द रखना शोभा नहीं देता। जब कि गली भरमें तुम्हारी नेक-नामी फैल गई हो; तब तुम अपना दरवाज़ा बन्द नहीं रख सकते। मैंने

देखा कि उसे मेरा उपदेश नहीं भाया और मेरी गर्म साँस ने उसके शीतल लोहेपर कुछ भी असर नहीं किया ; तब मैंने उसे उपदेश देने से अपना मुँह मोड़ लिया और उसका साथ छोड़ कर निरापद स्थान में लौट आया। अक़्लमन्दों ने कहा है—"लोग तुम्हारी बातें सुनें या न सुनें इससे तुम्हारा कुछ भी सम्बन्ध नहीं है ; लेकिन उपदेश देना तुम्हारा कर्त्तव्य है। अगर तुम जानो कि लोग तुम्हारी बातें न सुनेंगे तोभी जो अच्छा समझो वह अवश्य कहो। तुम शीघ्र ही देखोगे, कि उस मूर्ख का पैर काठ में बन्द है और वह हाथ मल मलकर कहता है—अफ़सोस ! मैंने अक़्लमन्द आदमी की नसीहत पर ध्यान न दिया।"

कुछ समय के बाद, जैसा मैंने कहा था, वैसा ही हुआ। वह चिथड़े लपेटे हुए रोटी के टुकड़े माँगता फिरता था। मुझे उसकी दुर्दशा देखकर बड़ा दुःख हुआ। मैंने उस फ़क़ीर के घावपर नमक मलना या उसे बुरी-भली बातें कहकर दुःखित करना ना-मुनासिब समझा। लेकिन मैंने अपने दिलमें कहा,—"दुराचारी लोग जब आनन्द में मस्त रहते हैं, तब उन्हें कङ्गाली के दिनों का ख्याल नहीं आता। जो वृक्ष गरमी के मौसम में फलों से लदा-भरा रहता है, उसमें जाड़े के दिनों में पत्तियाँ भी नहीं रहतीं।"

शिक्षा—इस कहानी से यह नसीहत मिलती है, कि मनुष्य को सदा अपनी आमदनी देखकर खर्च करना चाहिए। जो

देख-समझकर खर्च नहीं करते, वे एक दिन महा दुःख भोगते हैं। अगर जमा किया हुआ धन हिमालय पर्वत की बराबर हो; तो भी वह बराबर खर्च करते रहने से एक दिन बिल्कुल चुक जायगा। जिस कुएँ में पानी का सोता न हो, अगर उससे हम जल निकाले ही जायँ तो वह एक दिन रीता हो जायगा। जिनके अस्सी की आमदनी और चौरासी का खर्च होता है, उन का एक न एक दिन दिवाला अवश्य निकलता है और जो बाप दादे की दौलत को दिल खोलकर उड़ाते हैं और आप एक कौड़ी भी नहीं कमाते, वे एक दिन रोटी के टुकड़ों के लिए दर-दर मारे-मारे फिरते हैं।

छठी कहानी।

गर्चे सीमो ज़र ज़े संग आयद हमी ।
दर हमा संग न बाशद ज़रोसीम ॥ १ ॥

एक दिन एक बादशाह ने अपने लड़के को एक शिक्षक को सौंपकर कहा, "यह आप का पुत्र है। इसे अपने ही पुत्र की तरह शिक्षा दीजिए।" शिक्षक ने एक वर्ष तक उसके साथ मेहनत की, परन्तु फल कुछ न हुआ ; लेकिन उसके खुद के लड़के विद्या और गुणों में परिपूर्ण हो गये। बादशाह ने उसे डाँटकर कहा—"तुमने अपना वादा तोड़ दिया और नमकहरामी का काम किया है।" शिक्षक ने जवाब दिया—"ऐ बादशाह! मैंने सबको एक ही तरह शिक्षा दी थी किन्तु सबका ज़ेहन एक सा नहीं था। यद्यपि सोना और चाँदी दोनों पत्थरों में पाये जाते हैं ; तथापि ये दोनों धातुएँ प्रत्येक पत्थर में नहीं मिलतीं। अगस्त का तारा तमाम दुनिया पर चमकता है, किन्तु ख़ुशबूदार चमड़ा यमन से ही आता है।"

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है, कि योग्यता सभीमें

सोने और चांदी की काने कहीं पर ही होती हैं ; हर एक पहाड़ पर सोना और चांदी नहीं मिलता।

नहीं होती। जिनमें स्वाभाविक योग्यता होती है, वही सब कुछ सीख सकते हैं। जिनमें स्वाभाविक बुद्धि नहीं होती, उनको विद्या नहीं आती।

सातवीं कहानी।

कुनोपिन्दारि ऐ नाचीज़ हिम्मत।
के ख़्वाहद करदनत रोज़ो फ़रामोश ॥ १ ॥

मैंने सुना है, कि एक विद्वान् बूढ़ा आदमी अपने चेलोंमें से एक से कह रहा था—"आदमी अपने दिलको जितना साँसारिक पदार्थों में फँसाता है अगर उतना ईश्वर में फँसावे तो वह देवताओं से भी बढ़ जावे। जब तुम गर्भ में थे, जब तुम्हारे हाथ-पाँव भी नहीं बने थे, तब भी ईश्वर तुम्हें नहीं भूला। उसने तुममें जीव डाला और तुम्हें विवेचना-शक्ति, प्रकृति, बुद्धि, सुन्दरता, बोली और इन्द्रिय-ज्ञान दिया। उसने तुम्हारे हाथोंमें दस अँगुलियाँ और कन्धों पर दो भुजाएँ लगायीं। ऐ नालायक! क्या तू

ऐ नाचीज़ हिम्मत! ऐसा मत समझ कि ईश्वर तेरी रोज़ी बन्द कर देगा।

समझता है कि वह तुझे तेरा दैनिक भोजन—रोज़का खाना—भी न देगा।

शिक्षा--मनुष्य को अपने पेट के लिए कदापि न घबराना चाहिए। पैदा करनेवाले भगवान् सब की ख़बर रखते हैं। वह चींटी को कन और हाथी को मन पहुँचाते हैं। मनमें समझना चाहिए कि जिसने चोंच दी है वह क्या चुग्गा न देगा। किसीने क्या ख़ूब कहा है—"जब दाँत नहीं तब दूध दियो, अब दाँत भये तो क्या अन्न न देहैं।"

आठवीं कहानी।

बा अज़ीज़े नशिस्त रोज़े चन्द।
लाजरम हम चो ओ गिरामी शुद॥ १॥

मैं ने एक अरब को देखा जो अपने बेटेसे यह कह रहा था—"ऐ मेरे बच्चे! क़यामत के दिन तुमसे यह पूछा जायगा कि तुमने दुनिया में क्या किया; लेकिन यह कोई न पूछेगा कि तुमने किस के यहाँ जन्म

योग्य पुरुष के पास कुछ ही दिन बैठ कर मनुष्य योग्य बन जाता है।

लिया। यानी वे लोग तुमसे तुम्हारे गुणों के विषयमें पूछेंगे ; किन्तु तुम्हारे बापके विषय में न पूछेंगे। वह कपड़ा जो काबे पर ढका रहता है और जिसे लोग चूमते हैं रेशमी होने के कारण प्रसिद्ध नहीं है। उसने कुछ रोज़ एक आदरणीय पुरुष का सङ्ग किया है ; इसीसे वह उसी पुरुष की भाँति हो गया है।"

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि संसार में गुणों का मान होता है, किन्तु वंश को कोई नहीं पूछता।

नवीं कहानी।
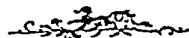
हर के बा अहले खुद वफ़ा न कुनद।
न शवद दोस्त रूये दानिशमन्द॥ १॥

महात्माओं ने लिखा है, कि बिच्छू अन्यान्य जीवों की तरह पैदा नहीं होते। वे अपनी मा की अँतड़ियों को खा जाते हैं और पेट फाड़ कर जङ्गल को निकल भागते हैं। बिच्छू के बिल में चमड़ा पाया जाता

जो मनुष्य आत्मीय जनों के साथ अच्छा वर्ताव नहीं करता, उसे अच्छे आदमी मित्र नहीं बनाते।

है वही इस बात के सबूत के लिये काफ़ी है। मैंने यह असाधारण बात एक बुद्धिमान् से कही। उसने कहा—"इस बात का सच्चा प्रमाण मेरे दिलमें है। वह किसी तरह भूँठा नहीं हो सकता। बचपनमें, वे अपने मा बाप से ऐसा बर्त्ताव करते हैं इसी से बड़े होने पर लोग उनको इतना नहीं चाहते हैं। (उनको देखते ही मार डालते हैं)। एक पिताने अपने पुत्रको उपदेश देते हुए कहा—'ऐ जवान, इस नसीहत को याद रख, कि जो शख्स अपने आदमियों का कृतज्ञ नहीं होता, उसका भाग्य कभी नहीं चेतता।' किसीने एक बिच्छू से पूछा कि तुम जाड़े में बाहर क्यों नहीं निकलते? उसने जवाब दिया—मैं गरमी में क्या नाम पैदा करता हूँ, जो जाड़ेमें बाहर निकलूँ।

शिक्षा—इस कहानी का साराँश यह है, कि मनुष्य को अपने जनक-जननी के प्रति कदापि अकृतज्ञ न होना चाहिए। जो अपने माता-पिता के कष्टोंको भूल जाते हैं, उन पर ज़ोर-ज़ुल्म करते हैं, उन्हें तरह-तरह की पीड़ाएँ देते हैं, वे कभी सुखी नहीं होते। किन्तु जो माता-पिताके कृतज्ञ हैं उनको हर तरह सुख देते हैं, वे सदा सुख भोगते हैं और लक्ष्मी भी उनका साथ देती है। माता-पिता संसार में सबसे अधिक प्रतिष्ठा और मान पाने के अधिकारी हैं—वे जीवन्त देवता हैं।

दसवीं कहानी ।

ज़नाने बारदार ऐ मर्द हुशियार ।
अगर वक्ते विलादत मार जायँद ॥
अज़ाँ बेहतर के नज़दीके ख़िरदमन्द ।
के फर्ज़न्दाने नाहमवार ज़ायेन्द ॥ २ ॥

एक साधु की स्त्री गर्भवती थी । बच्चा होने का दिन बिल्कुल नज़दीक आ गया था । साधु जिसके कि अब तक कोई पुत्र न हुआ था, बोला—"अगर सर्व्वशक्तिमान् ईश्वर मुझे पुत्र देगा तो मैं अपना सर्वस्व दान कर दूँगा ; केवल धार्म्मिक पोशाक अपनी पीठ पर रक्खूँगा । ईश्वर की कृपासे उसकी स्त्रीके पुत्र पैदा हुआ ; इससे वह बड़ा खुश हुआ और उसने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अपने मित्रों को भोज दिया । कुछ वर्ष बाद, जब मैं दमश्क की यात्रा से लौटा; तब उस साधुके घरकी तरफ़ होकर निकला और पूछा कि साधु का क्या हाल है । लोगोंने कहा कि वह नगर के जेलखाने में क़ैद है । मैंने इसका कारण पूछा । लोगोंने कहा—"उसके पुत्रने शराब पीकर झगड़ा फ़िसाद किया

कुपुत्र जनने की अपेक्षा जननी यदि सर्प जने तो बुद्धिमान उसको अच्छा समझता है ।

और एक आदमी का ख़ून करके शहर छोड़कर भाग गया; इस वजह से लोगोंने उसे हथकड़ी बेड़ी पहना दी है।" मैंने कहा—"स्वयं उसीकी प्रार्थना से यह विपत्ति उस पर पड़ी है। ऐ समझदारो! बुद्धिमानों की रायमें, स्त्रीका कपूत जनने की अपेक्षा, सर्प जनना कहीं अच्छा है।"

शिक्षा—पुत्र न होने में सिर्फ़ एक दुःख है किन्तु कुपुत्र होने से अनेक दुःख उठाने पड़ते हैं।

ग्यारहवीं कहानी।

चूँ इन्साँरा नबाशद फ़ज़लो ऐहसाँ।
चे फ़र्क़ज़ आदमी ता नक़्शदीवार ॥ १ ॥

जब मैं बालक था, तब एक साधु से जवानी के विषय में बात-चीत कर रहा था। उसने जवाब दिया—"पूर्णवयस्क होने का सबसे बड़ा सबूत, अपनी साँसारिक वासनाओं को पूर्ण करने की अपेक्षा, ईश्वर की

यदि मनुष्य में गुण और परोपकार करने की इच्छा नहीं है तो उसमें और दीवार पर खिंचे चित्र में क्या अन्तर है?

प्रसन्न करने के उद्योग में लगा रहना है।" उसने और कभी कहा—"जिसमें यह बात नहीं होती, उसे विद्वान् पूर्णवयस्क नहीं समझते। एक पानी के बूँद ने चालीस दिन तक पेटमें रहकर मनुष्य का रूप प्राप्त किया। लेकिन अगर किसी वयस्क मनुष्य में समझ और सच्चरित्रता न हो, तो उसे मनुष्य न कहना चाहिये। जवानी वह है जिसमें उदारता और परोपकारिता हो। यह न समझो, कि स्थूल रूप का नाम ही जवानी है। जवानी में धर्मको भी आवश्यकता है। मनुष्य की मूर्त्ति महल के फाटक पर सिन्दूर और जंगाल से बनायी जा सकती है। गुण, धर्म और परोपकारिता-हीन मनुष्य में और दीवार के चित्र में क्या फ़र्क़ है? संसारी धन प्राप्त करना बुद्धिमानी का काम नहीं है; परन्तु पराये एक दिल को भी मोहित कर लेना निस्सन्देह बुद्धिमानी है।"

शिक्षा-विद्या-बुद्धि-हीन मनुष्य महाराज भर्तृहरि के शब्दों में "पुच्छ विषाणहीन" पशु है।

बारहवीं कहानी।

हाजी तो नेस्ती शुतरस्त अज़ बराये आँके।
बेचारा ख़ार मी ख़ुरद व बार मी बरद॥ १॥

एक साल, मक्के को पैदल जाने वाले यात्रियों में झगड़ा हुआ। मैं भी उन्हीं लोगों में था। वे लोग एक दूसरे पर दोष लगा रहे थे। अन्तमें मैंने उनका झगड़ा मिटा दिया। मैंने एक मनुष्य को घास के बिछौने पर यह कहते सुना—"कैसे अचम्भे की बात है, कि शतरञ्ज के खेल में हाथीदाँत के मोहरे शतरञ्ज के मैदान को पार करके वज़ीर (फ़रज़ी) बन जाते हैं; परन्तु मक्के के पैदल यात्री तमाम जङ्गल पार करके पहले से भी बुरे होगये हैं। उस हाजी से, जो अन्य जीवों के चमड़े को चीरकर टुकड़े-टुकड़े करता है, मेरी यह बात कह दो कि तू वैसा सच्चा यात्री नहीं है जैसा कि ऊँट, जो भटकटैया—काँटे—खाता है और बोझ ढोकर चलता है।"

शिक्षा—चाहे मक्के जाओ, चाहे काबे के दर्शन करो; जब तक तुम्हारा दिल साफ़ न होगा, जबतक तुम्हारे दिल से ईर्ष्या

जिस हाजी में दया आदि सद्गुण नहीं है उस से वह ऊंट अच्छा है जो काँटे खा कर बोझ ढोता है।

द्वेष और क्रोध आदि न निकल जायँगे, तब तक तुम्हारा उक्त पवित्र स्थानों में यात्रा करना व्यर्थ है। उसीकी तीर्थ-यात्रा सफल है, जो ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, मत्सरता आदि को छोड़ देता है। लेकिन आजकल ऐसे सच्चे यात्री बहुत कम हैं।

तेरहवीं कहानी

एक हिन्दुस्तानी दूसरों को पटाखे बनाने सिखा रहा था। एक बुद्धिमान् आदमी ने उससे कहा—"यह खेल तुम्हारे लायक़ नहीं है; क्योंकि तुम सरकी के बने हुए मकान में रहते हो। जब तक तुम्हें यह विश्वास न हो जाय कि बात बिलकुल ठीक है, तब तक न बोलो और जिस प्रश्नका मन-चाहा उत्तर मिलने की आशा न हो, उसे मत पूछो।

चौदहवीं कहानी।

बोरियाबाफ़ गर्चे बाफ़न्दा अस्त।
नबरन्दश बकार गाहे हरीर॥ १॥

एक छोटा आदमी आँखों के दर्द से दुःखी होकर सालोत्री के पास गया और उससे आँखोंमें दवा लगाने के लिए कहा। सालोत्री ने उसकी आँखोंमें वही दवा लगादी जो वह चौपायों की आँखोंमें लगाया करता था। आदमी अन्धा हो गया। उसने मैजिस्ट्रेट के पास नालिश की। मैजिष्ट्रेट ने कहा—"निकल जाओ। उस का कुछ अपराध नहीं है। अगर यह आदमी गधा न होता, तो सालोत्री के पास न जाता।" इस कहानी का यह मतलब है, कि जो कोई नातजरुबेकार आदमी को भारी काम सौंपता है, वह पछताने के सिवा अक़्लमन्दों की नज़र में बेवक़ूफ़ ठहरता है। होशियार और अक़्लमन्द आदमी अयोग्य मनुष्य को भारी काम नहीं सौंपते। चटाई बनानेवाला यद्यपि बिननेवाला है; तथापि वह रेशम के कारख़ाने में मुक़र्रर नहीं किया जाता।

शिक्षा--इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है, कि जो आदमी जिस काम को जानता हो, उसे उसी काममें लगाना चाहिये।

बोरिया बिननेवाला भी बिनना जानता है किन्तु उसे रेशम बिनने का काम नहीं सौंपा जा सकता।

जो शख़्स अयोग्य आदमी के हाथमें बड़ा काम सौंपते हैं, वे अन्तमें पछताते और अपनी लोग-हँसाई कराते हैं।

पन्द्रहवीं कहानी

किसी बड़े आदमी का एक योग्य पुत्र मर गया। लोगोंने पूछा कि उसकी क़ब्र पर क्या लिखवाना चाहिये। बापने जवाब दिया,—"क़ुरान के पद इतने पवित्र हैं कि वे ऐसे स्थान पर लिखवाये नहीं जा सकते; क्योंकि वहाँ हरेक आदमी के पैर पड़ते हैं और कुत्ते उस स्थान को अपवित्र करते हैं। अगर कुछ लिखवाना ही ज़रूरी है तो यह पद लिखवाना यथेष्ट है—'अफ़सोस। जब कि बाग़में हरियाली छाई हुई थी, तब मेरा दिल कैसा खुश था! मित्र, वसन्त ऋतु में इधर आना। उस समय तुम्हें मेरी मिट्टी पर हरियाली फैली हुई मिलेगी।'"

सोलहवीं कहानी ।

बरचन्दा मगीर ख़श्म बिसियार ।
जौरश मकुन व दिलश मयाजार ॥ १ ॥
ओरा तो बदह दिरम ख़रीदी ।
आख़िर न ब क़ुदरत आफ़रीदी ॥ २ ॥

एक साधु किसी धनवान् के पास होकर निकला जो एक ग़ुलाम के हाथ-पैर बाँध कर उसे सज़ा देता था। साधु ने कहा—"बेटा! ईश्वर ने तेरे जैसे ही मनुष्य को तेरे अधीन किया है और तुझे उसका मालिक बनाया है। इसके लिये ईश्वर को धन्यवाद दे और ज़ोर-ज़ुल्म न कर। यह बात अच्छी न होगी, कि कल क़यामत के दिन यह ग़ुलाम तुझ से अच्छा हो और तुझे लज्जित होना पड़े।" अपने ग़ुलाम पर अत्यन्त क्रोध न करो; उसे तकलीफ़ न दो और उसका दिल न दुखाओ। तूने उसे दस दीनार में ख़रीदा है; किन्तु तूने उसे पैदा नहीं किया है। तेरा यह घमण्ड, गुस्ताख़ी और गुस्सा कहाँ तक चलेगा?

अपने ख़रीदे गुलाम पर (शुभ है कि यह नीच प्रथा प्रायः सब सभ्य देशों से उठ गई है) ज़ुल्म मत करो—उसका दिल मत दुखाओ—तुमने उसे दश दीनारों में ख़रीदी जरूर है पर उसे बनाया नहीं है।

तेरे ऊपर तुझ से भी बड़ा मालिक है। अरसलाँ और आग़ोश नामक ग़ुलामों के मालिक! अपने बड़े मालिक को मत भूल। पैग़म्बर ने कहा है—"विचार के दिन बड़ा भारी दुःख होगा, जबकि नेक ग़ुलाम स्वर्ग में पहुँचाया जायगा और बदमाश मालिक नरक में डाला जायगा।" अपने ग़ुलाम पर, जो तुम्हारी आज्ञाके अधीन है, बेहद सख़्ती और ख़ामख़याली मत करो। हिसाब के दिन तुमसे तुम्हारे कर्मों का हिसाब लिया जायगा। उस दिन मालिक को हथकड़ियाँ पहने और ग़ुलाम को छुटकारा पाया हुआ देखने से लज्जा आवेगी।

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है, कि अपने अधीन लोगों, नौकरों और ग़ुलामों पर अत्याचार न करना चाहिए। उनको अधिक कष्ट देना अच्छा नहीं है। जो अपने अधीन लोगों पर ज़ुल्म नहीं करते, उनसे अच्छा बर्त्ताव करते हैं, उनके मनको दुःखित नहीं करते, उन के दुःख-सुखको अपने दुःख-सुख के समान समझते हैं, वह सच्चे सत्पुरुष हैं। ईश्वर उन्हीं से प्रसन्न रहता है; और अन्त समय में उन्हीं का भला होता है।

सत्रहवीं कहानी।

जवाँ अगर्चे क़वीवालो पीलतन बाशद।
बजंगे दुश्मनश अज़ हौल बिगसलद पैवन्द॥१॥

एक साल, मैं दमश्क़ के कुछ लोगों के साथ बलख़ से चला। राहमें लुटेरों का बड़ा ज़ोर था। हमलोगों के दलमें एक जवान आदमी था। वह बड़ा ज़बरदस्त तीरन्दाज़ और हर तरह के हरबे-हथियार चलाने में निपुण था। वह इतना बलवान् था, कि दस आदमी उसके धनुष को नहीं खींच सकते थे। पृथ्वी के बड़े-बड़े बलवान् भी उसकी पीठ को ज़मीन न दिखा सकते थे। किन्तु वह अमीर था और साये में पला था। उसने न ज़माना ही देखा था और न कभी सफ़र ही किया था, न युद्ध के ढोल की आवाज़ ही उसके कानोंमें कभी पहुँची थी, न घुड़-सवारों की तलवारों की चमक ही उसकी आँखों ने देखी थी, न वह कभी शत्रु द्वारा क़ैद किया गया था और न उस पर तीरों की वर्षाही हुई थी। वह और मैं दोनों एक साथ दौड़ रहे थे। हरेक दीवार जो उसकी राह में आई, उसने ढाह दी और प्रत्येक वृक्ष जो उसकी नज़र तले आया, उसने जड़से उखाड़ लिया। वह शेख़ी मारता

बलवान् जवान आदमी भी लड़ाई में भय से काँप उठाता है।

और कहता था—"हाथी कहाँ है, जो तुम इस वीरके कन्धोंको देखो ? शेर कहाँ है, जो तुम इस बहादुर की उँगलियों और हथेलियों की ताक़त को देखो।" हम दोनों जब इस अवस्था में थे, तब दो हिन्दुस्थानियों ने चट्टान के पीछेसे हमें मार डालने के लिये अपने सिर उठाये। एक के हाथमें लाठी थी और दूसरे को बग़ल में गोफ़न थी। मैंने उस उस जवान से कहा—"क्यों रुकते हो ? अब अपना बल पराक्रम दिखाओ। दुश्मन अपने ही पांवोंसे क़ब्रमें आरहा है।" मैंने देखा, उसके हाथ से तीर-कमान गिर पड़े और उसके जोड़ काँपने लगे। जो मनुष्य बकतर को छेद डालने वाले तीरसे बाल को चीर सकता है, वह युद्धके दिन योद्धा का सामना नहीं कर सकता। हमलोगों को अपना अस-बाब और अपने हथियार छोड़कर, अपनी जान ले भागने के सिवा और कोई उपाय न था। किसी बड़े काम में अनुभवी आदमी को नियुक्त करो, जो फाड़ खाने वाले शेरको भी फन्दे में फँसा ले। जवान आदमी जिसकी भुजाओं में बल हो और जो हाथी के समान ताक़तवर हो, लड़ाई के दिन भयके मारे काँपने लगेगा। जिस तरह विद्वान् आदमी क़ानूनी मुक़-दमे की तशरीह कर सकता है, उसी तरह जिसे लड़ाई का अनुभव है वही युद्धमें अच्छी योग्यता दिखा सकता है।

शिक्षा—हर काममें अनुभवी आदमी का मुक़र्रर करना अच्छा है। जिसने जो काम नहीं किया है या जिस कामको नहीं देखा है, वह उस कामको हरगिज़ नहीं कर सकता। हर

कालमें अनुभवी आदमी अच्छा होता है। इसलिये भारी कामोंमें अनुभवी आदमीको ही नियुक्त करना अच्छा है। जो अनजान, नातजरुबेकार आदमियों के हाथों में भारी और जोखिमके काम सौंप देते हैं, वे पीछे पछताते और अपनी हँसी कराते हैं।

अठारहवीं कहानी।

वहमा हाल असीरे कैज़ वन्दी वजेहद।
खुशतरश दाँ ज़े अमीरे के गिरफ़्तार आयद ॥१॥

मैं ने एक अमीर के लड़केको देखा, जो अपने बापकी क़ब्र के पास बैठा हुआ एक फ़क़ीर के लड़के के साथ वादविवाद कर रहा था। वह कहता था—"मेरे पिताका स्मृति-स्तम्भ पत्थर का है और उस पर सुवर्णाक्षरोंमें नाम लिखा हुआ है। फ़र्श संगमर्मर का बना हुआ

क़ैद से छूटा हुआ आदमी उस बड़े आदमी से अच्छा है, जो क़ैद में डाला गया है।

है और उसमें फ़ीरोज़ी और भूरे रङ्गकी ईंटें लगी हुई हैं। तुम्हारे बापकी क़ब्र क्या है! दो ईंटें जमा करके उन पर मुट्ठी भर मिट्टी डाल दी गई है।" फ़क़ीर के लड़के ने यह बात सुनकर कहा—"चुप रहो, तुम्हारे बाप के इस भारी पत्थर के नीचे से हिलने के पहिले ही मेरा बाप स्वर्ग में पहुँच जायगा।" पैग़म्बरकी एक कहावत चली आती है—"ग़रीब को मृत्यु सुखदायिनी है।" वह गधा जिस पर हलका भार होता है, आसानी से सफ़र करता है; इसी तरह वह फ़क़ीर जो कङ्गाल होता है, मृत्यु-द्वारमें आसानी से घुस जाता है लेकिन जो सुख-चैन और ऐश-आराम में ज़िन्दगी बिताता है, बड़े कष्टसे प्राण त्याग करता है। क़ैद से छुटकारा पाया हुआ क़ैदी उस भले आदमी से अधिक सुखी है जो क़ैद में डाला गया हो।

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है कि जो लोग ग़रीब होते हैं; जिनके हाथी, घोड़े, महल मकान और बड़ा परिवार नहीं होता; वे सहज में देह त्याग कर जाते हैं अर्थात् उनको मृत्यु-समय भयङ्कर कष्ट नहीं उठाना पड़ता; किन्तु जो मालदार होते हैं; जिनके ज़मीन-जायदाद, महल-मकान, गाड़ी-घोड़े और सुन्दरी स्त्रियाँ होती हैं, वे बड़े कष्ट से प्राण त्याग करते हैं। यही कारण था, कि पहले ज़माने के भारतवासी जवानी पार करते ही सब ऐश-आराम, राज-पाट छोड़कर वनवासी हो जाते थे और साधारण लोगोंकी तरह जीवन बिताते थे; ताकि उन्हें मृत्यु-समय मोहके कारण भारी कष्ट न

उठाने पड़ें। मतलब यह है, कि निष्पाप और निर्धन मनुष्य सुखसे मरता है; लेकिन पापी और धनवान् बड़े-बड़े कष्ट सह-कर देह छोड़ता है। हमारे यहाँ के राजाओं के विषय में लिखा है—

योगेनान्ते तनुत्यजाम्।

उन्नीसवीं कहानी।

फ़रिश्ता खुये शवद आदमी बकम खुरदन।
वगर खुरद चोबहायम बयोफ़्तद चोजमाद ॥१॥

किसी ने एक धार्म्मिक मनुष्य से इस परम्परागत जन-श्रुतिका अर्थ पूछा,—"मस्ती—काम—से बढ़कर तुम्हारा दूसरा दुश्मन नहीं है जो तुम्हारे अन्दर ही रहता है।" उसने जवाब दिया—"जिस दुश्मन के साथ तुम मेहरबानी का बर्त्ताव करोगे, वही तुम्हारा दोस्त हो जायगा; लेकिन मस्ती या कामको जितना चाहोगे, वह उतनीही दुश्मनी बढ़ावेगा। उपवास करने से मनुष्य देवताओं का स्थान प्राप्त

कम खाने से आदमी में अच्छे गुण पैदा हो जाते हैं, पर जो पशुओं की तरह बहुत सा खाते हैं, वे पत्थर बन जाते हैं।

कर सकता है; लेकिन जो पशुओं की भाँति खाता है, वह निर्जीव पत्थर के समान हो जाता है। जिसे तुम खुश रक्खोगे, वही तुम्हारे हुक्म पर चलेगा; लेकिन 'काम' प्यार करने से विद्रोहकारी हो जायगा।

शिक्षा—स्त्री-इच्छा पैदा करनेवाली इन्द्रिय मनुष्य की बड़ी भारी बुराई करनेवाली है। इसको मनुष्य जितना प्यार करता है, वह उतनीही प्रबल होती और मनुष्य का अनिष्ट साधन करती है। इस इन्द्रिय पर ही कोई बात नहीं है, सभी इन्द्रियाँ स्वतन्त्र होने से मनुष्य का नाश कर देती हैं। अतः चतुर मनुष्य को चाहिए कि इन्द्रियों को, विशेष कर कामेन्द्रिय को, वशमें रक्खे।

बीसवीं कहानी।

दीदये अहलेतमा बनामते दुनिया।

पुर नशवद हम चुनाँ के चाह व शबनम ॥ १ ॥

मैंने एक मण्डली में एक मनुष्य को बैठा हुआ देखा। वह फ़क़ीरों की सी पोशाक पहने हुए था; किन्तु उसका स्वभाव फ़क़ीरों का जैसा न था। उसका इरादा गिलागुज़ारी करनेका था; इसलिए उसने गिला-गुज़ारी की किताब खोली और धनवानों की निन्दा करने लगा। उसकी बात-चीत का आशय यह था—"फ़क़ीरों के पास धन नहीं है और अमीर लोग ग़रीब-परवर बनना नहीं चाहते। जो उदार-चित्त हैं, उनके पास धन नहीं है और दौलतमन्द दुनियादारों में सख़ावत—उदारता—नहीं है।"

मैं धनवानों की उदारता का ऋणी हूँ; अतः मुझे उसकी वह बात अच्छी न लगी। मैंने कहा—"ऐ दोस्त! अमीर लोग ग़रीबों के लिए मालगुज़ारी, एकान्तवासी योगियों के लिये भाण्डार, यात्रियों के लिये आशा, मुसाफ़िरों के लिये धर्मभवन हैं। वे लोग दूसरों के सुखके लिए बोझ ढोनेवाले हैं। वे

लोभी और लालची पुरुष की आँख दुनिया की चीजों से ओस से कुएं की तरह कभी नहीं भरती।

अपने नौकर-चाकरों और अधीनों को साथ लेकर भोजन करते हैं। उनकी बाक़ी सख़ावत—उदारता—विधवाओं, वृद्धों, सम्बन्धियों और पड़ोसियों की सहायता में लगती है। धन-वानों पर ही चढ़ावा चढ़ाने, प्रतिज्ञा पालन करने, आतिथ्य सत्कार करने, दान और बलिदान करने, ग़ुलामों को छोड़ने और पुरस्कार वग़ैरः देने का भार रहता है। तुम सैकड़ों कष्ट उठा कर केवल अपना भजन ही कर सकते हो, तुम उनलोगों के समान शक्तिशाली किस तरह हो सकते हो? धनवान् लोग नैतिक और धार्म्मिक दोनों काम पूर्णता से करते हैं; क्योंकि उनके पास धन होता है। धनसे वे दान करते हैं। उनके कपड़े साफ़, उनका यश निष्कलङ्क और उनका चित्त चिन्तारहित रहता है। आज्ञाकारिता का प्रभाव अच्छे भोजन में और उपासना की सत्यता साफ़-सुथरी पोशाक में देखी जाती है। भूखे मनुष्य में ताक़त नहीं होती और ख़ाली हाथ से दान नहीं होता। जिसके पैर में बेड़ियाँ हैं, वह किस तरह चल सकता है? भूखे पेट से दान की क्या आशा की जा सकती है? जो शख़्स कल के लिए पहले से खाने-पीने का सामान नहीं जुटा सकता, वह रात को सुख से नहीं सो सकता। चींटियाँ जाड़े में सुखपूर्व्वक गुज़ारा करने के लिए, गरमी के मौसम में, खाने का सामान इकट्ठा कर लेती हैं। जो दरिद्र हैं, उन्हें फ़ुरसत नहीं मिलती और जो दुःखी हैं उन्हें सन्तोष नहीं होता। एक सन्ध्या की नमाज़ तक खड़ा रहता है,

दूसरा रात के खाने की चिन्ता में बैठा रहता है। इन दोनों की तुलना किस तरह की जा सकती है ? जिसके पास धन है, वह ईश्वरोपासना में लगा रहता है और जो तङ्गहाल है, उसका चित्त विचलित रहता है। धनवानों की ईश्वरोपासना अच्छी होती है, क्योंकि उनका चित्त शान्त रहता है। धनवानों के पास खाने-पीने का सब सामान मौजूद होता है ; इसलिये वे अपने मन को सब ओर से हटाकर उपासना की ओर लगा सकते हैं। अरब लोग कहते हैं :—ईश्वर दुःखद कङ्गाली से मेरी रक्षा करे और जो मेरी इच्छा के अनुसार नहीं है, उस पड़ोसी से मुझे बचावे। पैग़म्बर की परम्परागत जन-श्रुति है कि दरिद्रता का मुँह दोनों लोक में काला है।"

मेरे विरोधी ने पूछा—"क्या तुमने नहीं सुना है कि पैग़म्बर ने कहा था कि दरिद्रता ही मेरी शोभा है।" मैंने उत्तर दिया—"चुप रहो, पैग़म्बर का मतलब उन लोगों से है जो मानसिक दरिद्रता भोगते हैं और भाग्यवानों के अधीन रहते हैं ; किन्तु उन से नहीं है जो धार्मिक कपड़े पहन कर खैरात के टुकड़ों को बेचते हैं। ऐ ज़ोर से बोलनेवाले ख़ाली ढोल ! कूच में बिना रसद के तेरा काम कैसा चलेगा ? अगर तू मनुष्य है तो हज़ार दानों की माला फेरने के बजाय अपने तईं दुनिया के लोभ—लालच—से बचा। जो कङ्गाल है, उसे ईश्वर-निन्दा का भय है। धनहीन होने की वजह से तुम नङ्गों को वस्त्र नहीं दे सकते और न क़ैदियों को क़ैद से छुड़ा

सकते हो। हमारे जैसे मनुष्य उस दर्जे पर कैसे पहुँच सकते हैं? देनेवाले और लेनेवाले हाथ की तुलना किस तरह हो सकती है? क्या तुम नहीं देखते कि ईश्वर ने क़ुरान में स्वर्ग-वासियों के सुख को हमारे सामने वर्णन किया है। आनन्द-बाग़ के फल उन्हीं स्वर्गवासियों के लिए हैं। जिन्हें रोज़ी का अभाव है, उन्हें ये सुख नहीं मिलते। चित्त की शान्ति के लिये बँधी हुई रोज़ी की ज़रूरत है।

"प्यासों के लिए सारी दुनिया में पानी ही पानी दीखता है। जिधर नज़र डालोगे उधर ही देखोगे कि विपद्ग्रस्त या दुःखी लोग ही दिल खोलकर अत्यन्त बुरे काम करते हैं; उन लोगों को भविष्यत् में दण्ड भोगने का भय नहीं होता। वे लोग न्याय-अन्याय अथवा उचित-अनुचित को नहीं समझते। अगर किसी कुत्ते के सिर पर मिट्टी का ढेला फेंका जाता है, तो वह उसे हड्डी समझ कर प्रसन्न होता है। अगर दो आदमी अपने कन्धों पर लाश ले जाते हैं, तो नीच लोग उसे खाने-पीने के सामान से भरा हुआ थाल समझते हैं। किन्तु धनवान्, जिस पर ईश्वर की दया-दृष्टि होती है, अन्याय-कार्य्य नहीं करता। यद्यपि मैंने इस विषय पर पूरे तौर से तर्क-वितर्क नहीं किया है और न अपनी दलील के पक्का करने के लिए कोई सबूत ही दिया है; तथापि मैं तुम्हारे न्याय पर ही निर्भर करता हूँ। क्या तुमने कभी बिना दरिद्रता में पड़े किसी साधु की मुश्कें बँधी हुई या उसे जेल भोगते हुए देखा है? क्या कोई बिना

दरिद्रता के चोरी करता और हाथ कटाता हुआ देखा गया है ? सिंह के समान निर्भय मनुष्य दरिद्रता के कारण लोगों के घरों में सेंध लगाते हैं और अन्तमें उनके पैरों में बेड़ियाँ पड़ती हैं। फ़क़ीर काम-वश होकर और उसके रोकने में असमर्थ होकर पाप-कर्म कर सकता है। जिसके पास स्वर्ग की अप्सराएँ हैं, उसे अग़मा की कन्याओं की क्या ज़रूरत है ? जिसके हाथों में मन-चाहे छुहारे रहते हैं वह वृक्ष के गुच्छों पर पत्थर फेंकने का विचार भी नहीं करता।

"साधारणतया, दरिद्र लोगों में पवित्रता का अभाव रहता है। जो भूखे मरते हैं, वही रोटियाँ चुराते हैं। क्षुधातुर लेंडी कुत्ता जब माँस पाता है, तब वह यह नहीं पूछता कि यह सालेह के ऊँट का माँस है या दज्जाल के गधे का। बहुत से अच्छे स्वभाव के मनुष्यों ने दरिद्रता के वश में होकर अनेक पाप-कर्म किये हैं और अपने नेक नाम को बदनामी की हवा के हवाले किया है। भूख की इच्छा रहने पर उपवास नहीं हो सकता। दरिद्रता ईश्वर-भक्ति के हाथ से लगाम छीन लेती है।" जिस समय मैंने यह बात कही, उस समय उस फकीर को धैर्य न रहा। उसने अपनी सारी वितण्डाशक्ति से मुझ पर आक्रमण करके कहा—"तुमने उनकी इतनी अधिक तारीफ़ की है और इस विषय को इतना बढ़ाकर कहा है, कि लोग उसे दरिद्रता के ज़हर को उतारनेवाली दवा और ईश्वर के भाण्डार की कुञ्जी समझेंगे। धनवान् लोग घमण्डी, मग़रूर,

आत्माभिमानी, पापी और घृणा करने योग्य हैं। वे लोग अपनी दौलत और दर्जे के नशे में रहते हैं। वे गुस्ताखी बिना बात नहीं करते और कङ्गालों को हिक़ारत की नज़र से देखते हैं। वे विद्वानों को भिखारी कहते हैं और दरिद्रों की निन्दा करते हैं। वे अपने धन और पद के अभिमान में भूल कर अपने तईं बड़ा समझते हैं और सब को अपने से नीचा समझते हैं। वे किसी पर दया-दृष्टि रखना अपना धर्म नहीं समझते। वे लोग महात्माओं के इस वचन को नहीं जानते, कि जो ईश्वर-निष्ठा में कम है, वह धन में बड़ा होने पर भी असल में निर्धन ही है। अगर कोई मूर्ख अपनी दौलत के कारण किसी अक़्लमन्द के साथ अभिमानपूर्व्वक बात-चीत करे, तो उसे गधा ही समझना चाहिये; चाहे वह अम्बर का बैल ही क्यों न हो।"

मैंने कहा—"उन लोगों की बुराई मत करो; क्योंकि वे उदारता के घर हैं।" उसने जवाब दिया—"तुम्हारा कहना ग़लत है, वे लोग तो रुपये के ग़ुलाम हैं। अगर वे अगस्त महीने के बादलों की तरह दान की वर्षा करें तो उनसे क्या फ़ायदा? जो रोशनी के चश्मे हैं किन्तु किसी पर रोशनी नहीं डालते, उनसे क्या लाभ? जो शक्ति के घोड़े पर सवार हैं लेकिन कुछ नहीं करते, उनका होना न होना वृथा है। धनी ईश्वर की सेवा में एक पैंड भी नहीं चलते, बिना किसी को कृतज्ञ बनाये एक कौड़ी भी नहीं देते। वे धन संग्रह करने के लिए

परिश्रम करते हैं, लोभवश उसकी रक्षा करते हैं, और उसे त्याग करते समय दुःखी होते हैं। महात्माओं ने कहा है—'सूम का धन पृथ्वी से उस समय निकलता है जब वह खुद पृथ्वी में जाता है। एक आदमी दुःख भोग कर धन जमा करता है और दूसरा बिना कष्ट पाये ही उसे लेजाता है।'"

मैंने जवाब दिया—"तुम दौलतमन्दों की कञ्जूसी के विषयमें, भिक्षुकता के कारण के सिवा और तरह, कुछ नहीं जानते। जो लालच को त्याग देता है उसे सखी और सूम में कुछ अन्तर नहीं मालूम होता। सोनेकी परीक्षा कसौटी पर होती है और महा कञ्जूस की जाँच फ़क़ीर द्वारा होती है।" उसने कहा—"मैं लोगों से अपने अनुभवकी बात कहता हूँ। धनी लोग दरवाज़े पर पहरा रखते हैं और ऐसे गँवार और कड़े आदमियों को रखते हैं जो प्यारे से प्यारे मित्रको अन्दर नहीं जाने देते। वे अच्छे-अच्छे आदमियों को गरदन में हाथ डालकर कह देते हैं कि घरमें कोई नहीं है। वास्तव में वे सच कहते हैं। जिसमें बुद्धिमानी, उदारता, दूरदर्शिता और विचार नहीं है, उसके विषय में यों कहना कि—घरमें कोई नहीं है ; बहुत ही ठीक है।" मैंने जवाब दिया—"इसके लिए वे क्षन्तव्य हैं ; क्योंकि माँगनेवालों के माँगने और फ़क़ीरों के सवालों से उनकी जान दुःखी हो जाती है। ऐसा ख्याल करना बुद्धिमानी के विपरीत है, कि अगर जङ्गल की बालू के दाने मोती हो जाते तो फ़क़ीरों को सन्तोष हो जाता।

"जिस तरह ओस से कुआँ नहीं भरता, उसी तरह लालची की आँख धन से सन्तुष्ट नहीं होती। हातिम ताई जङ्गल का रहने वाला था। अगर वह शहर में रहता होता, तो भिक्षुकों के माँगने से तङ्ग हो जाता। भिखारी उसके बदन के कपड़े तक फाड़ लेते।" उसने कहा—"मुझे उनकी हालत पर तर्स आता है।" मैंने जवाब दिया—"यह बात नहीं है, क्योंकि तुम उनका धन देखकर कुढ़ते हो।" हम इस तरह वाद-विवाद कर रहे थे कि इसी बीचमें उसने शतरञ्ज का प्यादा आगे बढ़ाया। मैंने उसे मार लेने की चेष्टा की। उसने मेरे बादशाह को शह दी, तो मैंने वज़ीर से उसे छुड़ा लिया। अन्तमें उसकी थैली में एक भी सिक्का न रहा। इस तरह उसके झगड़े के तरकश के तमाम तीर खर्च हो गये। ख़बरदार, जब किसी ऐसे वक्ता से लड़ाई हो जिसने इधर-उधर से लबारी सीख ली है, तो उसके सामने अपनी ढाल न गिरा दो। धर्म पर चलो, ईश्वर की सेवा करो; क्योंकि बकवादी लोग द्वार पर से हथियार दिखाते हैं; लेकिन गढ़ी के भीतर कोई नहीं है। अन्तमें जब उसके पास कोई दलील न रही, तब वह निहायत ग़ुस्सा होकर बे सिर पैर की बातें कहने लगा। मूर्खों की यही रीति है, कि जब वे विपक्ष की दलीलों से घबरा जाते हैं, तब दङ्गा-फिसाद करने पर उतारू हो जाते हैं। अज़र नामक मूर्त्ति बनानेवाले ने भी ऐसा ही किया था। जब वह अपने बेटे इबराहीम को दलीलों से क़ायल न कर

सका, तब उससे झगड़ा करने लगा। ईश्वरने कहा है—"अगर सचमुच तू इस बात को न छोड़ेगा तो मैं तुझे पत्थर से मारूँगा।" उसने मुझे गाली दी। मैंने भी उससे कड़ी बात कही। उसने मेरे अँगरखे का गला फाड़ दिया और मैंने उसकी दाढ़ी पकड़ कर खींच ली। हम दोनों एक दूसरे पर टूट रहे थे। लोग हमारे पीछे-पीछे दौड़ते और हमारे ढँगको देखकर हँसते थे। सारांश यह है, कि हम दोनों क़ाज़ी के पास गये और स्वीकार किया कि वह जो न्याय करेगा हम दोनों को मञ्जूर होगा। जब क़ाज़ीने हमारी सूरतें देखीं और हमारी बातें सुनीं तो वह विचार-सागरमें गोते खाने लगा। बहुत कुछ सोच-विचार कर उसने अपना सिर ऊँचा उठाया और कहा—"अमीरों की तारीफ़ करने वाले! मैं तुझे बतलाता हूँ कि काँटे बिना कोई गुलाब नहीं है। शराब के साथ नशा लगा हुआ है। छिपे हुए ख़ज़ाने पर अज़दहे रहते हैं। जिस स्थान पर शाही मोती होते हैं, वहाँ क्षुधातुर मगर रहते हैं। संसारी सुखोंके साथ मृत्यु का डङ्क है। स्वर्गीय रोशनी की राहें मक्कार शैतान ने रोक रक्खी हैं। जिसे मित्रका सुख भोगना हो, वह दुश्मन के ज़ोर-ज़ुल्मों को बरदाश्त करे; क्योंकि ख़ज़ाना और अज़दहा, गुलाब और काँटा, रञ्ज और ख़ुशी एक साथ बँधे हुए हैं। क्या तुम नहीं देखते कि बाग़ में सुगन्धित वृक्ष भी हैं और सूखे हुए वृक्षों के ठूँठ भी। इसी तरह धनवानों में कृतज्ञ भी हैं और अकृतज्ञ भी। फ़क़ीरों में भी कुछ ऐसे हैं जो सन्तोष करते हैं

और कुछ ऐसे हैं जिन्हें सन्तोष नहीं है। अगर हरेक ओला मोती होता तो उनसे बाज़ार कौड़ियों की तरह भर जाता। वे धनवान् ईश्वर के प्यारे हैं, जिनका मिज़ाज फ़क़ीरों का सा है। सबसे बड़ा धनवान् वह है जो ग़रीबों का दुःख दूर करता है और सबसे अच्छा फ़क़ीर वह है जो अपने गुज़ारे के लिए अमीरों के मुँह की तरफ़ नहीं देखता। ईश्वर ने कहा है—"जो ईश्वर पर विश्वास करता है उसे दूसरे लोगों की सहायता की दरकार नहीं होती।" क़ाज़ीने मुझे बुरा-भला कहकर फ़क़ीर से कहा—"तुमने कहा है कि बड़े आदमी कुकर्मों में अपना समय नष्ट करते हैं, ऐश-आराम में मस्त रहते हैं। तुम्हारा यह कहना सच है। ऐसे लोग ईश्वर के प्रति अकृतज्ञ हैं, वे रुपया जमा करते हैं। उसे आप भोगते हैं परन्तु दूसरों को नहीं देते। अगर संसार में सूखा पड़ जावे या दुनिया जलमें डूब जावे तो वे अपने धन में मस्त रहकर ग़रीबों के दुःखकी बात भी न पूछेंगे और न ईश्वरसे ही भय करेंगे। उनका ख़्याल ऐसा है, कि दूसरा मरे तो मरे, मैं तो ज़िन्दा हूँ। हंसको जल-प्रलय से क्या भय? जो औरतें ऊँट पर सवार रहती हैं, वे अपनी काठी में बैठी हुई बालू में मरने वाले के कष्टका अनुमान नहीं कर सकतीं। नीच लोग जब अपने कम्बल सहित बच जाते हैं तब कहते हैं—'अगर सारा संसार मर जाय तो हमें क्या।' चन्द लोग इस क़िस्म के हैं और कुछ ऐसे हैं जो अपनी उदारता का थाल बिछाकर प्रसन्नचित्त से यश लूटने के

लिए ख़ैरात करने की घोषणा कराते हैं; ईश्वर से क्षमा माँगते हैं; इस लोक और परलोक के सुखोंको भोगते हैं।" जब क़ाज़ीकी बात बहुत बढ़ गयी और उसने हमारी आशासे बढ़ कर वक्तृता दी; तब हमने उसकी बात मान ली और एक दूसरे से माफ़ी माँगकर सुशीलता की राह पकड़ी। हमने अपना ही दोष समझ कर एक दूसरे के हाथ और मूँह चूमे। हमारा झगड़ा इस बातके साथ तय हो गया—"ऐ फ़क़ीर! संसार की गरदिश का रोना मत रो, क्योंकि अगर तू इसी खयाल में मर जायगा तो दुःखी होगा। ऐ अमीर आदमी! अगर तेरा हाथ और तेरा दिल तेरे क़ब्ज़े में है तो तू सुख भोग और दान कर; जिस से तुझ पर इस जीवन और भावी जीवन में ईश्वर की मेहरबानी रहे।"

शिक्षा—धन अहङ्कार करने के लिए नहीं, दान के लिए है। ज़रूरतमन्द ग़रीबों का जिससे निर्वाह होता है—वही धन है; नहीं तो मिट्टी का ढेला है। धनवानों की निन्दा नहीं करनी चाहिए। उन्हींकी कृपा-कटाक्ष से ग़रीबों के दुःख दूर होते हैं—जो धनी ग़रीबों का ध्यान नहीं करते, वे ईश्वर के सामने पापी हैं।

आठवां अध्याय।

(६१ नुसखे)

१

माल ज़िन्दगी के आराम के वास्ते है ; किन्तु ज़िन्दगी माल जमा करने के वास्ते नहीं है। मैंने एक बुद्धिमान् मनुष्य से पूछा,—"कौन भाग्यवान् और कौन भाग्यहीन है?" उसने उत्तर दिया :—"जिसने खाया और बोया वही भाग्यवान् है, किन्तु जिसने भोगा नहीं लेकिन छोड़ कर मरगया वह भाग्य-हीन है।" उस शख्स के लिये ईश्वर से दोआ मत माँगो, जिसने ईश्वर-भक्ति या परोपकार का काम न किया, तमाम उम्र रुपया जमा करने में बिता दी और उसको काम में भी न लाया।

२

पैग़म्बर मूसा ने कारूँ को इस तरह उपदेश दिया—"तू लोगों के साथ उसी भाँति भलाई कर, जिस भाँति ईश्वरने तेरे साथ भलाई की है।" कारूँ ने उसकी नसीहत पर कान न

दिया। पीछे जो कुछ नतीजा निकला वह तुम लोगों ने सुना ही है। जिसने धन से परोपकार न किया, उसने धन संग्रह करने के ख़्याल में अपनी भावी आशाओं पर भी पानी फेर दिया। अगर तू संसारी धन से लाभ उठाना चाहता है, तो ईश्वरने जिस तरह तुझ पर मेहरबानी की है तू भी मनुष्यों पर दया कर। अरब लोग कहते हैं—"दान करो, किन्तु ऐहसान मत रक्खो। निश्चय रक्खो, तुमको नफ़ा ज़रूर मिलेगा।" जहाँ परोपकार का वृक्ष जड़ पकड़ लेता है, वहीं से उस की शाखें आस्मान तक पहुँचती हैं। अगर तुम फल खाने की उम्मीद रखते हो, तो मेहरबानी के साथ दरख़्त को लगाओ और उसकी जड़ पर आरा मत चलाओ। ईश्वर को धन्यवाद दो कि उसने तुम्हारे ऊपर मेहरबानी की और तुम्हें अपनी सख़ावत से वञ्चित न रक्खा। इस बात की शेख़ी न मारो, कि हम राजा के यहाँ चाकरी करते हैं; किन्तु ईश्वरको धन्यवाद दो कि उसने तुम्हें राजा की सेवा में नियुक्त किया है।"

धन वही सार्थक है जिस से परोपकार किया जाय। जिस धन से मनुष्यों की भलाई न हो, उस धन का होना ही व्यर्थ है। इसमें सन्देह नहीं है, कि परोपकार का फल हाथों हाथ मिलता है। सत्पुरुषों का सर्वस्व ही परोपकार के लिये होता है। परोपकार के लिये ही वृक्षों में फल लगते हैं, परोपकार के लिये ही नदियाँ बहती हैं, परोपकार के लिये ही चाँद सूर्य्य का उदय-अस्त होता है, परोपकार के लिये ही मेघ जल बरसाते हैं। साराँश यह है, कि संसार में परोपकार करना ही सबसे बड़ा धर्म है।

३

दो शख़्सों ने वृथा कष्ट उठाया और व्यर्थ उद्योग किया:—एक तो वह जिसने धन जमा किया, किन्तु उसे भोगा नहीं; दूसरा वह जिसने अक़्ल सीखी, मगर उसका अभ्यास न किया। चाहे जितनी विद्या क्यों न पढ़ लो, अगर तुम उस पर अमल नहीं करते तो तुम नादान हो। वह जानवर जिस पर किताबें लदी हुई हैं, न तो विद्वान् है न बुद्धिमान्। उस मूर्ख को क्या ख़बर, कि उसके ऊपर किताबें लदी हैं या ईंधन।

४

विद्या धर्म्म-रक्षा के लिए है न कि धन जमा करने के लिए। जिसने धन कमानेके लिए अपनी नामवरी और विद्या ख़र्च कर दी, वह उसके समान है जिसने खलियान बनाया और उसे बिल्कुल जला डाला।

५

विद्वान् जो संयमी—परहेज़गार—नहीं है अन्धा मशालची है। वह दूसरों को राह दिखाता है; किन्तु उसे आपको राह नहीं मिलती। जिसने अपनी उम्र बेख़बरी से गँवादी, वह उसके माफ़िक़ है जिसने रुपया तो डाला मगर कुछ चीज़ न ख़रीदी।

६

बादशाहत की नामवरी अक़्लमन्दों से होती है और धर्म

धर्माल्माओं से पूर्णता प्राप्त करता है। अक़्लमन्दों को राजदरबार में नौकरी पाने की जितनी ज़रूरत है, उससे बादशाहों को अक़्लमन्दों की अधिक ज़रूरत है। ऐ बादशाह! ध्यान देकर मेरी नसीहत सुन, तेरे दफ़्तर में इस से अधिक क़ीमती नसीहत नहीं है :—"अपना काम अक़्लमन्दों के सिपुर्द कर; यद्यपि सरकारी काम करना अक़्लमन्दों का काम नहीं है।"

७

तीन चीज़ें, तीन चीज़ों के बिना, क़ायम नहीं रहतीं :—दौलत बिना सौदागरी के, इल्म बिना बहस के और बादशाहत बिना दहशत के।

८

दुष्टों पर दया करना, सज्जनों के ऊपर ज़ुल्म करना है। ज़ालिमों को माफ़ करना, सताये हुओं पर ज़ुल्म करना है। अगर तुम कमीनों के साथ मेल-जोल रक्खोगे और उन पर मेहरबानी करोगे, तो वे तुम्हारी हिमायत से अपराध करेंगे और तुमको उनके अपराधों का हिस्सेदार बनना पड़ेगा।

९

बादशाहों की दोस्ती और लड़कों की मीठी-मीठी बातों पर भरोसा न करना चाहिए; क्योंकि बादशाहों की दोस्ती ज़रा से शक पर टूट जाती है और लड़कों की प्यारी-प्यारी बातें रात भर में बदल जाती हैं। जिसके हज़ार चाहनेवाले

हैं, उसे अपना दिल मत दो ; अगर दो, तो जुदाई की तकलीफ़ें सहने को तय्यार रहो।

१०

मित्र के सामने अपना सारा गुप्त भेद मत खोल दो ; कौन जाने वह कब तुम्हारा शत्रु होजावे ? इसी भाँति शत्रु को भी हर तरह की तकलीफ़ें मत दो ; कौन जाने वह कभी तुम्हारा मित्र ही हो जावे ? वह भेद जिसे तुम गुप्त रखना चाहते हो किसी को भी मत बताओ, चाहे वह विश्वास-योग्य ही क्यों न हो। अपनी गुप्त बात जितनी अच्छी तरह तुम खुद छिपा सकते हो दूसरा हरगिज़ न छिपा सकेगा। किसी की गुप्त बातों को एक शख़्स से कहना और उसे दूसरे से कहने की मनाही करने से एकदम चुप रहना भला है। ऐ भले आदमी! पानी को निकास पर ही रोक। जब वह नदी के रूप में बहने लगेगा तब तू उसे न रोक सकेगा। जो बात सब लोगों के सामने कहने लायक़ नहीं है, उसे पोशीदगी में भी मत कह।

११

अगर कोई निर्बल शत्रु तुम्हारे साथ मित्रता करे और तुम्हारी आज्ञा अनुसार चले, तो तुमको समझना चाहिये कि वह अपना बल बढ़ाना चाहता है। क्योंकि कहा है :—"मित्रों की सचाई पर भी विश्वास न करना चाहिए ; तब शत्रुओं की लल्लो-चप्पो से क्या भली उम्मीद की जा सकती है ?" जो निर्बल शत्रु को तुच्छ समझता है, वह उसके माफ़िक़ है जो आग को

छोटी सी चिनगारी की परवा नहीं करता। अगर तुम में शक्ति है तो आग को आज ही बुझा दो; क्योंकि जब वह प्रचण्ड रूप धारण करेगी, तब संसार को जला देगी। जब कि तुझ में शत्रु को बाण से छेदने की शक्ति हो, तब तू उसको कमान खींचने का मौक़ा मत दे।

दिल्लीश्वर महाराज पृथ्वीराज चौहान अगर इस नसीहत पर अमल करते और शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी को पकड़-पकड़ कर न छोड़ देते; तो वह क्यों बल संग्रह करने पाता और क्यों हिन्दुओं का राज्य नष्ट होकर मुसलमानों का राज्य होता। दुश्मन को हरगिज़ बलहीन न समझना चाहिए।

१२

दो दुश्मनों के दरमियान अगर कुछ बात कहो, तो इस भाँति कहो कि यदि वे आपस में दोस्त भी होजावें तोभी तुम्हें लज्जित न होना पड़े। दो मनुष्यों की दुश्मनी आगके समान है और जो बातें बनाता है, वह आग में ईंधन डालता है। जब दो दुश्मन आपस में सुलह कर लेते हैं तब वे दोनों ही चुग़लख़ोर को बुरी नज़र से देखते हैं। जो शख़्स दो आदमियों के बीच में आग लगाता है, वह ख़ुद अपने तईं उसमें जलाता है। अपने मित्रों से इस तरह चुपचाप बात करो, कि तुम्हारे ख़ूनके प्यासे शत्रु तुम्हारी बात न सुन लें। अगर दीवार के सामने भी कुछ बात कहो; तो होश रक्खो कि दीवार के पीछे कान न लग रहे हों।

१३

जो मनुष्य अपने मित्र के शत्रुओं से मित्रता करता है वह अपने मित्र को नुक़सान पहुँचाना चाहता है। ऐ बुद्धिमान् मनुष्य ! तू उस मित्र से हाथ धो ले, जो तेरे शत्रुओं से मेल-जोल रखता है ।

१४

जब तुम्हें किसी काम के आरम्भ करने के समय ऐसा सन्देह उठ खड़ा हो, कि इस काम को किस ढँग से जारी करें, तब तुम्हें वह ढँग अख्तियार करना चाहिए, जिस से तुम्हें नुक़सान न पहुँचे। कोमल स्वभाव के मनुष्य से कड़ाई से बातें न करो और वह शख़्स जो तुम से मेल रखना चाहता है, उससे लड़ाई-झगड़ा मत करो ।

१५

जब तक रुपया खर्च करने से काम निकल सके, तब तक जान को ख़तरे में न डालना चाहिए। जब हाथ से किसी तरह काम न निकले, तब तलवार खींचना ही मुनासिब है ।

१६

बलहीन शत्रु पर दया मत करो ; क्योंकि यदि वह बलवान् हो जायगा तो तुम्हें हरगिज़ न छोड़ेगा। जब तुम किसी दुश्मन को कमज़ोर देखो, तब अपनी मूछों पर ताव मत दो ; क्योंकि हर हड्डी में गूदा और हर लिबास में मर्द है। जो शख़्स दुष्ट को मार डालता है, वह दुनिया को उसकी

दुष्टताओं से बचाता है और अपने तईं ईश्वर के कोप से छुड़ाता है। क्षमा प्रशंसा-योग्य है; तथापि अत्याचारी—ज़ालिम—के ज़ख़्म पर मरहम न लगाओ। जो साँप की जान बख़्शता है, वह यह नहीं जानता, कि मैं आदम की औलाद को नुक़सान पहुँचाता हूँ।

१७

शत्रु की सलाह के माफ़िक़ काम मत करो, किन्तु उसकी बात अवश्य सुनो। शत्रु की सलाह के विरुद्ध काम करना ही बुद्धिमानी है। शत्रु जिस काम के करने को कहे, वह काम मत करो। अगर तुम उसकी सलाह के माफ़िक़ काम करोगे, तो तुम्हें रञ्ज करना और पछताना पड़ेगा। अगर शत्रु तुम्हें तीर के समान सीधी राह भी दिखावे; तोभी तुम उस राहको छोड़ दो और दूसरी राह अख़्तियार करो।

१८

अधिक क्रोध करने से भय पैदा होता है और अधिक मेह-रबानी से रौब नहीं रहता। न तो इतनी सख़्ती करो कि लोग तुम-से नफ़रत करने लगें और न इतनी नरमी अख़्तियार करो कि लोग तुम्हारे सिर पर चढ़ें। सख़्ती और नरमी, उस ज़र्राह के माफ़िक़ काममें लानी चाहिए, जो पहले तो चीरा देता है किन्तु साथ ही मरहम भी लगाता है। बुद्धिमान् आदमी न तो अत्यधिक कड़ाई ही करता है और न इतनी नर्मी ही करता है कि उसकी क़दर ही घट जाय।

एक जवान ने अपने पिता से कहा :—"आप बुद्धिमान् हैं, अपने अनुभव से मुझे कुछ उपदेश दीजिए।" उसने उत्तर दिया :—"सिधाई और भलमनसई से काम ले; मगर इतनी सिधाई मत रख कि लोग भेड़िये के से तेज़ दाँतों से तेरा अपमान करें।"

१८

दो शख्स बादशाहत और मज़हब के दुश्मन हैं; निर्दय बादशाह और निरक्षर फ़क़ीर। ईश्वर की आज्ञा को न पालने वाला बादशाह किसी मुल्क में न होवे!

२०

राजा को उचित है कि अपने शत्रुओं पर उतना क्रोध न करे कि जिससे मित्रों के मनमें भी खटका हो जाय। क्रोधाग्नि पहले क्रोध करनेवाले के सिर पर ही पड़ती है। पीछे शत्रु तक पहुँचे या न पहुँचे इस में सन्देह है। ख़ाक से बनी हुई आदम की औलाद को अभिमान, निठुरता और मिथ्या बड़ाई से बचना चाहिए। तुम में इतना उत्ताप और हठ है कि मैं नहीं जानता तुम आग से बने हो या ख़ाक से। बलकान देश में, मैंने एक फ़क़ीर को देखा। मैंने उससे कहा—"अपने उपदेश से मेरी अज्ञता को दूर करो।" उसने जवाब दिया—"जा, ख़ाक की तरह बर्दाश्त कर और जो कुछ तू ने पढ़ा है उसे ख़ाक में दबा दे।"

मनुष्य को चाहिए कि क्रोध को परित्याग करे। क्रोध पहले क्रोध करने

वाले का ही नाश करता है। मनुष्य मिट्टी से बना हुआ है। उसे मिट्टी की भाँति सहनशील होना चाहिए और अभिमान, हठ एवं निर्दयता को हृदय में स्थान न देना चाहिए।

२१

दुष्ट मनुष्य सदा शत्रु के हाथ में गिरफ़्तार है। वह चाहे कहीं जावे, किन्तु अपनी सज़ा के चुङ्गलों से रिहाई नहीं पा सकता। अगर दुष्ट आदमी आफ़त से बचने के लिए आस्मान पर भी चला जावे, तोभी अपनी दुष्टता के कारण आफ़त से नहीं बच सकता।

२२

जब शत्रु की सेना में फूट देखो, तब ख़ूब साहस करो; किन्तु यदि वे आपस में मिले हुए हों तो तुम ख़बर्दार रहो। जब तुम दुश्मनों के दरमियान लड़ाई-झगड़ा देखो, तब चैन से दोस्तों के पास जा बैठो; किन्तु जब तुम उन्हें एक-दिल देखो; तब कमान पर चिल्ला चढ़ाओ और क़िले की दीवारोंपर पत्थर जमा करो।

२३

जब दुश्मन की कोई चाल काम नहीं करती, तब वह दोस्ती पैदा करता है; क्योंकि दोस्ती के बहाने से, वह उन सब कामों को कर सकता है, जिनको वह दुश्मनी की हालत में न कर सका था

२४

साँप के सिर को अपने दुश्मन के हाथ से कुचलो। ऐसा करने से दो लाभों में से एक तो अवश्य ही होगा। अगर दुश्मन साँप को जीत ले तब तो तुमने साँपको मार लिया और अगर साँप तुम्हारे दुश्मन को जीतले तो तुमने अपने दुश्मन से रिहाई पाई। युद्ध के दिन, शत्रु को निर्बल देखकर निर्भय मत रहो; क्योंकि जो जान पर खेलेगा, वह शेर का भेजा भी निकाल लावेगा।

२५

जब तुम्हें किसी को ऐसी ख़बर देनी हो, जो उसका (जिसे ख़बर दी जाती है) दिल बिगाड़े; तब तुम्हें उचित है कि उसे वह ख़बर मत दो। तुम चुप्पी साध जाओ। उस बुरी ख़बर को वह किसी दूसरे शख़्स से ही सुन लेगा। ऐ बुलबुल! मौसमे बहार की ख़ुश-ख़बरी ला। बुरी ख़बर उल्लू के लिए छोड़ दे।

२६

किसी की चोरी की बात बादशाह से मत कहो; सिवा उस हालत के, जबकि तुम्हें यह विश्वास हो कि वह तुम्हारी बात पसन्द करेगा; अन्यथा तुम अपने ही नाश का सामान करोगे। जब तुम्हें किसी से कोई बात कहनी हो, तब पहले यह निश्चय करो कि तुम्हारी बात का असर होगा या नहीं। अगर असर होने की उम्मीद दीखे तो मुँह से बात निकालो।

२७

जो शख़्स ख़ुद-पसन्द—घमण्डी—आदमी को नसीहत देता है, वह खुद नसीहत का मुहताज है।

२८

दुश्मन के धोखे में मत फँसो और खुशामदी की लल्लो-चप्पो से फूलकर कुप्पा न हो जाओ। उसने बारीक जाल और इसने लालच का पल्ला फैलाया है। मूर्ख को तारीफ़ अच्छी मालूम होती है। ख़बर्दार रहो और ख़ुशामदी की बातें मत सुनो; क्योंकि वह, अपनी थोड़ीसी पूँजी लगाकर तुम से अधिक नफ़े की आशा करता है। अगर तुम एक दिन भी उस की इच्छा पूर्ण न करोगे, तो वह तुम में दो सौ ऐब—दोष—निकालेगा।

२९

जब तक कोई शख़्स किसी बात करनेवाले के दोष नहीं पकड़ता, तबतक उसकी बात दुरुस्त नहीं होती। मूर्ख की तारीफ़ और अपने विचार-बल पर निर्भर होकर अपनी बात की सुन्दरता पर घमण्ड मत करो।

३०

हर शख़्स अपनी अक़्ल को कामिल और अपने बच्चे को ख़ूबसूरत समझता है। एक यहूदी और एक मुसलमान, आपस में, इस ढँग से झगड़ रहे थे कि मुझे हँसी आगई। मुसलमान ने गुस्से में भरकर कहा:—"अगर मेरा यह क़ौल दुरुस्त

न हो तो खुदा मुझे यहूदी की मौत मारे?" यहूदी ने कहा :—"मैं तौरेत की क़सम खाता हूँ, अगर मेरी बात तेरी तरह झूँठी हो तो मैं तेरी तरह मुसलमान हूँ।" अगर संसार में अक़्ल न होती, तो कोई अपने नादान होने का गुमान भी न करता।

३१

दस आदमी एक थाली में बैठकर खालेंगे; मगर दो कुत्ते एक मुर्दार—लाश—से सन्तुष्ट न होंगे। अगर लालची आदमी के हुक्म में तमाम दुनिया भी हो तोभी वह भूखा ही है; किन्तु जो सन्तोषी है, वह एक रोटी से ही राज़ी रहता है। तङ्ग पेट, बिना गोश्त के, एक रोटी से ही भर जाता है; किन्तु तङ्ग नज़र तमाम दुनिया की दौलत से सन्तुष्ट नहीं होती। मेरे पिता ने, मरते समय, मुझे यह नसीहत दी :—"शहवत—मस्ती—आग है, उस से बचो। नरक की आग को तेज़ मत करो; क्योंकि तुम उस आग को सह न सकोगे। सन्तोषरूपी जल से वर्त्तमान आग को ही बुझादो।"

३२

जो मनुष्य शक्ति—अधिकार—रहते हुए भलाई नहीं करता, उसे शक्ति-हीन—अधिकार-हीन—होने पर दुःख भोगना पड़ेगा। अत्याचारी से बढ़कर अभागा और कोई नहीं है; क्योंकि विपद् के समय कोई उसका दोस्त नहीं होता।

३३

ज़िन्दगी एक साँस पर क़ायम है और साँसारिक जीवन दो अवस्थाओं के बीच में है। वे जो दीन को दुनिया के लिए बेचते हैं गधे हैं। वे यूसुफ को बेचते हैं और बदले में कुछ नहीं पाते। "ऐ आदम के पुत्रो! क्या मैंने तुम्हारे साथ क़ौल नहीं किया था कि तुम शैतान की पूजा न करो? दुश्मन की सलाह से तुम अपने दोस्त का वादा तोड़ते हो। देखो, किस से तुम जुदा हुए हो और किस से मिले हो।"

३४

धर्मात्माओं पर शैतान का ज़ोर नहीं चलता और ग़रीबों पर बादशाह की प्रबलता नहीं होती। जो नमाज़ नहीं पढ़ता, चाहे उसका मुँह रोज़ों के मारे खुला ही रहता हो किन्तु उसका भरोसा मत करो। जो ईश्वरोपासना नहीं करता, उसे तेरे क़र्ज़ की भी फ़िक्र नहीं रह सकती।

जिनके दिल में धर्म है, जो धर्म को ही सब कुछ समझते हैं, उन्हें पाप की हूत नहीं लगती। जो ईश्वर-भजन नहीं करता, जो ईश्वर के प्रति अकृतज्ञ है, उसका विश्वास न करना चाहिए।

३५

मैंने सुना है कि पूरबी देशों में चालीस साल में चीनी का एक बरतन बनाते हैं; लेकिन बग़दाद में एक दिन में ही सौ बरतन बना लेते हैं; इसीलिए उनकी क़ीमत कम होती है। मुर्ग़ी का बच्चा ज्योंही अण्डे से बाहर निकलता है,

त्योंही अपनी ख़ुराक की तलाश करता है; किन्तु आदमी के बच्चे में बुद्धि और विचार नहीं होते। जो एक दम कोई चीज़ हो जाता है, वह पूर्णता को नहीं पहुँचता; किन्तु जो धीरे-धीरे होता है, वह शक्ति और उत्तमता में सब से बढ़ जाता है। काँच सब जगह मिलता है; अतः उसका कुछ मोल नहीं है; किन्तु लाल कठिनता से मिलता है इसलिए वह बहुमूल्य है।

इस शिक्षा का यह सारांश है कि जो चीज़ देर में तय्यार होती है और कठिनता से मिलती है, वह अच्छी और महँगी होती है; लेकिन जो चीज़ जल्द तय्यार होती है और हर जगह मिलती है वह कम-क़दर और कम-क़ीमत होती है।

२६

धैर्य्य से काम बन जाते हैं; किन्तु जल्दबाज़ी से बिगड़ जाते हैं। मैंने एक जङ्गल में अपनी आँखों से दो आदमी देखे। एक जल्द-जल्द चलता था और दूसरा धीरे-धीरे। धीरे-धीरे चलनेवाला तेज़ चलनेवाले से पहिले ही अपनी मञ्ज़िल पर पहुँच गया। तेज़ घोड़ा मैदान दौड़ता-दौड़ता थक गया; जबकि ऊँट धीरे-धीरे चला ही गया।

२७

मूर्ख के लिए 'मौन' से बढ़कर दूसरी अच्छी चीज़ नहीं है। अगर मूर्ख इस बात को जानता तो मूर्ख न बनता। अगर तुम में कोई ख़ूबी और होशियारी नहीं है, तो अपनी ज़ुबान को अपने दाँतों के भीतर ही रक्खो। ज़ुबान ही

मनुष्य की बेइज़्ज़ती कराती है । अखरोट बिना गुठली के हल्का होता है । एक अज्ञान मनुष्य, एक गधे को तालीम देने में, अपना सारा समय नष्ट किया करता था । किसी ने कहा :— "ऐ नादान ! तू किस लिये इतनी कोशिश करता है, इस अज्ञानता पर तुझे धिक्कार है ! जानवर तो तुझसे बोलना न सीखेंगे, किन्तु तू जानवरों से चुप रहना सीख । जो मनुष्य उत्तर देनेसे पहले विचार नहीं करता, उसके मुँह से ठीक बात नहीं निकलती । या तो बुद्धिमान् की भाँति अपने शब्दों को दुरुस्त करके बोलो अथवा जानवरों की भाँति चुप्पी साध लो ।

"विभूषणं मौनमपण्डितानाम् ।"

३८

यदि तुम दूसरों को अपनी बुद्धिमानी दिखाने और वाह-वाही लूटने की ग़रज़ से, अपने से अधिक बुद्धिमान् से वाद-विवाद करोगे तो उलटी तुम्हारी ही मूर्खता प्रकट होगी । जब कोई शख्स तुम्हारी अपेक्षा अच्छी बात कहे और तुम खुद भी उस बात को भली भाँति जानो ; तब ऐतराज़ मत करो ।

३९

जो बुरों की संगति करता है, वह नेकी नहीं देखता । अगर कोई फ़रिश्ता किसी देवकी सँगति करे तो वह भय, चोरी और धूर्त्तता ही सीखेगा । तुम बुरों से नेकी नहीं सीख सकते । भेड़िया चमार का काम नहीं करता ।

४०

आदमियों के छिपे हुए ऐब ज़ाहिर मत करो; क्योंकि उनकी बदनामी करने से तुम्हारी भी बेऐतबारी हो जायगी।

४१

जिसने इल्म पढ़ा किन्तु उस पर अमल न किया, वह उस मनुष्य के समान है जिसने ज़मीन तो जोती मगर बीज न बोया।

४२

जो शख्स लड़ाई झगड़ा करने में तेज़ है, काम करने में दुरुस्त नहीं हो सकता। चादर से ढकी हुई सूरत बहुत सुन्दर मालूम हो सकती है; किन्तु चादर हटाते ही नानी नज़र आवेगी।

४३

अगर तमाम रातें क़दर के लायक़ होतीं, तो क़दर करने लायक़ रातें भी बेक़दर हो जातीं; अगर हरेक पत्थर बदख्शाँ का लाल होता, तो लाल और पत्थरों का मोल एक समान होता।

४४

हरेक सुन्दर सूरत वाले का मिज़ाज भी अच्छा हो, यह कठिन बात है; क्योंकि भलाई दिल के अन्दर होती है न कि सूरत में। तुम आदमी के तौर-तरीक़े देख कर, एक दिन में, यह जान सकते हो कि इसने कितना इल्म हासिल किया

है अर्थात् वह कितना विद्वान् है ; मगर उसके दिल की तरफ़ से निश्चय मत रक्खो और अपनी पहचान का घमण्ड न करो ; क्योंकि मनुष्य की दुष्टता का पता बरसों में लगता है ।

४५

जो शख़्स बड़े लोगों से लड़ाई करता है वह स्वयं अपना ख़ून बहाता है । जो अपने तईं बड़ा ख़याल करता है, वह उसके समान है जो कनखियों से देखता है मगर दूना देखता है । अगर मेढ़े के सिरके साथ खेल करोगे तो अपने सिर को जल्द ही टूटा हुआ देखोगे ।

४६

शेर के साथ पञ्जा लड़ाना और तलवार पर मुट्ठी मारना, अक़्लमन्दों का काम नहीं है । ज़बरदस्त के साथ ज़ोर-आज़-माई और लड़ाई न करो । जब ज़बरदस्त का सामना हो जाय तब अपने हाथों को बग़लों के नीचे दबालो ।

४७

जो कमज़ोर आदमी ज़बरदस्त के साथ लड़ाई या ज़ोर-आज़माई करता है वह अपने दुश्मन का दोस्त बनकर अपनी मौत आप बुलाता है । जो छाया में पला है, वह योद्धाओं के साथ युद्ध-भूमि में कैसे जा सकता है ? जिसकी भुजाओं में बल नहीं है, यदि वह लोहे की कलाई वाले का सामना करे तो वह मूर्ख है ।

४८

दुर्जन लोग सज्जनों को उसी तरह नहीं देख सकते, जिस तरह बाज़ारू कुत्ते शिकारी कुत्ते को देख कर भौंकते और गुर्राते हैं; मगर उसके पास जाने की हिम्मत नहीं करते।

४९

जब कोई नीच मनुष्य गुणों में किसी दूसरे की बराबरी नहीं कर सकता; तब वह अपनी दुष्टता के कारण उसमें दोष लगाने लगता है। नीच और पर-गुणद्वेषी मनुष्य गुणवान् की निन्दा उसकी नामौजूदगी में ही करता है; लेकिन जब सामना हो जाता है, तब उसकी बोलती बन्द हो जाती है।

५०

जो पेट न होता तो चिड़िया चिड़ीमार के जाल में न फँसती और चिड़ीमार भी अपना जाल न फैलाता। पेट हाथों की हतकड़ी और पैरों की बेड़ी है। जो पेट का गुलाम है वह ईश्वर की उपासना नहीं करता।

५१

बुद्धिमान् देर से खाते हैं, धर्मात्मा आधे पेट भोजन करते हैं, योगी लोग सिर्फ़ उतना खाते हैं, जितने से ज़िन्दगी क़ायम रह सके, जवान लोग जो कुछ थाली में होता है सब खा जाते हैं, बूढ़ों के जब तक पसीना नहीं निकलता तब तक खाते ही रहते हैं, किन्तु कलन्दर इतने भुखमरेपन से खाते हैं

कि पेट में साँस चलने को भी जगह नहीं रहती और थाली में एक टुकड़ा भी दूसरों की जीविका को नहीं रहता। जो शख़्स पेट का गुलाम होता है, उसे दो रात नींद नहीं आती; एक रात तो पेट के बोझ के मारे और दूसरी रात भूख की फ़िक्र से।

भूख से ज़्यादा भोजन करना रोगों को न्यौता देकर बुलाना है।

५२

स्त्रियों के साथ सलाह करने से बरबादी होती है और उपद्रवियों अथवा राजद्रोहियों के प्रति दातारी करने से अपराध लगता है। जो चीते पर रहम करता है वह बकरियों पर ज़ुल्म करता है। अगर तुम दुष्टों पर दया करते हो और उनकी हिमायत लेते हो; तो तुम भी उनके किये हुए पापों के अपराधी हो।

बुद्धिमान् को चाहिए कि कभी ऐसा काम न करे जिस से राजा असन्तुष्ट हो। राजद्रोहियों को सहायता देना भी राजद्रोही होना है। राजा देशी हो या विदेशी, ईश्वर-तुल्य है; क्योंकि वह ईश्वर की आज्ञा से ही उस पद पर बैठा है, अतः राजा के विरुद्ध काम करना, ईश्वर के विरुद्ध काम करना है। राजद्रोही इस लोक और परलोक दोनों में सुख नहीं पाते। अगर पड़ोस में राजद्रोही हो तो वह पड़ोस त्याग देना चाहिये; अगर गाँव में हो तो गाँव त्याग देना चाहिए। उनको साहाय्य तो किसी दशा में भी न देना चाहिए। भारतवासियों को शैख़ सादी की यह अनमोल शिक्षा अपने हृदय-पट पर अङ्कित कर लेनी चाहिए।

५३

जो कोई अपने दुश्मन को, अपने क़ाबू में पाकर भी, मार नहीं डालता, वह ख़ुद अपना दुश्मन है। अगर पत्थर हाथ में हो और साँप पत्थर के तले हो; तो उस समय पशोपेश करना और देर करना बेवक़ूफ़ी है। चीते के तेज़ दाँतों पर रहम करना, भेड़ों पर ज़ुल्म करना है। किन्तु दूसरे लोग इस विचार के विरुद्ध हैं और कहते हैं कि क़ैदियों के मार डालने में विलम्ब करना अच्छा है; क्योंकि पीछे भी उनका मारना या छोड़ना हाथ में है; क्योंकि यदि कोई बिना विचारे मार डाला जावे और पीछे कोई ऐसी बात निकल आवे जिससे उसका मारडालना अनुचित जँचे, तब वह ज़िन्दा नहीं हो सकता। मार डालना आसान है, मगर ज़िन्दा करना नामुमकिन—असम्भव—है। तीरन्दाज़ का सब्र करना अक़्लमन्दी है; क्योंकि जो तीर कमान से निकल जायगा वह फिर लौटकर न आवेगा।

विवेकबुद्धि से जाँच कर सब काम करने चाहिएं।

५४

अगर कोई बुद्धिमान् मूर्खों के साथ, किसी विषय पर वादविवाद करे; तो उसे अपनी इज्जत की आशा त्याग देनी चाहिए। अगर कोई मूर्ख किसी अक़्लमन्द को हरा दे तो आश्चर्य न करना चाहिए; क्योंकि मामूली पत्थर भी तो मोती को तोड़ डालता है। जिस समय, एक ही पिञ्जरे में, कोयल

के साथ काव्वा हो, उस समय यदि कोयल न गावे तो आश्चर्य की क्या बात है ? यदि कोई हरामज़ादा किसी बुद्धिमान् पर ज़ुल्म करे तो बुद्धिमान् को चाहिए कि कुपित और शोकार्त्त न हो। अगर एक निकम्मा पत्थर बेश-क़ीमत सोने के प्याले को तोड़ दे, तो पत्थर बेश-क़ीमत और सोना कम-क़ीमत न हो जायगा।

५५

अगर कोई अक़्लमन्द कमीनों की मण्डली में पड़ कर, उन पर अपने उपदेश का असर न डाल सके अथवा उनका प्रशंसा-भाजन न बन सके तो इसमें आश्चर्य की कौन बात है? बीन की आवाज़ ढोल की आवाज़ को दबा नहीं सकती; किन्तु बदबू-दार लहसन अम्बर की खुशबू को परास्त कर देता है। मूर्ख को अपनी ऊँची आवाज़ का घमण्ड हुआ, क्योंकि उसने गुस्ताख़ी से एक अक़्लमन्द को घबरा दिया। क्या नहीं जानते, कि हिजाज़ के बाजे की आवाज़ नट के ढोल से दब जाती है। अगर एक रत्न कीचड़ में गिर पड़े तो भी वह वैसा ही नफ़ीस बना रहता है और यदि गर्द आसमान पर चढ़ जावे तो भी अपनी असली नीचता को नहीं छोड़ता। लियाक़त बिना तालीम के और तालीम बिना लियाक़त के बेकार है। शक्कर की क़ीमत गन्ने से नहीं है किन्तु उसकी अपनी ख़ासियत से है। कस्तूरी वह है जो आप खुशबू दे, न कि अत्तार के कहने से। अक़्लमन्द अत्तार के तबले—डब्बे—के समान है, जो

चुपचाप रहता है लेकिन गुण दिखाता है। मूर्ख नटके ढोल के समान है जो शोर बहुत करता है, किन्तु भीतर से पोला है। अन्धों के बीच में सुन्दरी कन्या और काफ़िरों के घर में क़ुरान की जो गति है वही गति बुद्धिमान् की मूर्खों में है।

५६

जिस दोस्त को तुम एक मुद्दत में अपने हाथ में लाये हो, उससे एक दम में नाराज़ न हो जाओ। पत्थर जो बरसों में लाल हुआ है उसे एक क्षण में पत्थर से न तोड़ डालो।

५७

बुद्धि, ज्ञान-शक्ति के इस भाँति अधीन है जिस भाँति एक सीधा सादा पुरुष चालाक स्त्री के वश में। उस सुखदायी घर के दरवाज़े को बन्द कर दो जिसके अन्दर औरत की आवाज़ गूँजती है।

५८

बुद्धि, बिना बल के छल और कपट है और बल बिना बुद्धि के मूर्खता और पागलपन है। सबसे पहले विचार, उद्योग और बुद्धिमानी की आवश्यकता है, इन के पीछे राज्य की। क्योंकि मूर्खों के हाथ में हुकूमत और दौलत देना, स्वयं अपने विरुद्ध हथियार देना है।

५९

वह उदार पुरुष जो खाता और दान करता है, उस धर्म्मा-

त्मा से अच्छा है जो निराहार रहता और सञ्चय करता है। जो पुरुष लोगों का प्रशंसापात्र होने के लिए विषय-भोगों का त्याग करता है, वह उचित को छोड़ कर अनुचित रीति से विषय-वासना पूरी करता है। वह साधु जो ईश्वर-भजन के लिए एकान्त-वास नहीं करता, वह विचारा धुँधले शीशे में क्या देखेगा ? थोड़ा-थोड़ा करके बहुत हो जाता है और बूँद-बूँद से नदी बन जाती है।

६०

अक़्लमन्द आदमी को मामूली आदमी की गुस्ताख़ी और लापरवाही दरगुज़र न करनी चाहिए; क्योंकि इस से दोनों तरफ़ नुक़सान पहुँचता है; अक़्लमन्द का रोब कम होता है और मूर्ख की मूर्खता बढ़ती है। अगर तुम नीच मनुष्य के साथ मेहरबानी और ख़ुशी से बातें करोगे तो उसका घमण्ड और हठ और भी बढ़ जायगा।

६१

पाप, किसी के भी द्वारा क्यों न किया जावे घृणोत्पादक है; लेकिन विद्वानों में और ज़ियादा; क्योंकि विद्या शैतान से युद्ध करने का शस्त्र है। अगर कोई हथियारबन्द आदमी क़ैद में पड़ जावे तो उसे बहुत ही लज्जित होना पड़ेगा। दुश्चरित्र मूर्ख दुश्चरित्र पण्डित से अच्छा है; क्योंकि मूर्ख ने तो अन्धे होने के कारण राह खोई, किन्तु पण्डित दो आँखों के होते हुए भी कुएँ में गिर पड़ा।

६२

वह शख़्स जिसकी रोटी लोग उसके जीते जी नहीं खाते, उसके मरने पर उसका नाम भी नहीं लेते। जब मिस्र देश में अकाल पड़ा तब यूसुफ़ ने भरे-पूरे भाण्डार से कुछ न खाया; क्योंकि खाने से उसे भूखों के भूल जाने का अन्देशा था। बेवा अँगूर चखती है न कि बाग़ का मालिक। जो सुख-सम्पद की अवस्था में रहता है वह किस भाँति जान सकता है कि भूखा रहना कैसा होता है? जो आप दुःखी है वही दुःखियों की दशा जानता है। ऐ मनुष्य! तू जो तेज़ घोड़े पर चढ़ा हुआ है उस गधे का विचार कर जो काँटों से लदा हुआ कीचड़ में फँसा हुआ है। अपने पड़ोसी फ़क़ीर से आग मत माँग, क्योंकि उसकी चिमनी से जो कुछ निकलता है, वह उसके दिल का धुआँ है।

६३

अकाल और सूखे के समय किसी तङ्ग-हाल फ़क़ीर से यह मत पूछो कि किस तरह गुज़र होती है; यदि पूछना ही हो तो उस हालत में पूछो जबकि तुम्हारा इरादा उसे जीविका देकर उसके घाव पर मरहम लगाने का हो। जब तुम किसी लदे हुए गधे को कीचड़ में फँसा हुआ देखो, तब उस पर रहम करो और किसी भाँति उसके सिर पर होकर न निकलो। अगर तुम आगे बढ़ो और पूछो कि कैसे गिरा; तो कमर बाँधो और मर्दों के मानिन्द उसकी पूँछ पकड़ कर खींचो।

६४

दो बातें असम्भव हैं,—एक तो भाग्य में लिखे से अधिक खाना और दूसरे नियत समय से पहले मरना। होनहार, हमारे हज़ारों बार रोने-पीटने या खुशामद और शिकायतें करनेसे टल नहीं सकती। हवाके खज़ाने के फरिश्ते को क्या परवा, यदि एक बेवा बुढ़िया का चिराग़ बुझ जावे।

६५

ऐ रोज़ी—जीविका—माँगनेवाले! भरोसा रख, तू बैठकर खायगा और तू जिसको मौतका बुलावा आगया है भाग मत; क्योंकि भागकर तू अपनी जान बचा न सकेगा। बैठा रह या उद्योगकर, भगवान् तेरी रोज़ की रोटी अवश्य भेजेंगे। तू शेर या चीतेके मुँहमें भी क्यों न चला जावे, यदि तेरे मरने का दिन न आया होगा तो वे भी तुझे हरगिज़ न खा सकेंगे।

६६

जो तेरे भाग्यमें नहीं है वह तुझे न मिलेगा और जो तेरे भाग्यमें है वह तुझे जहाँ तू होगा वहाँ ही मिल जायगा। सुना है कि सिकन्दर बड़ी मेहनत से अँधेरी दुनियामें गया; किन्तु वहाँ पहुँच जाने पर भी अमृत न चख सका।

६७

मछुआ बिना रोज़ी के दजला (नदी) में मछली नहीं पकड़ सकता और मछली बिना मौतके खुश्की—स्थल—पर नहीं मर सकती। लालची मनुष्य, जीविकाकी फ़िक्रमें, तमाम दुनि-

यामें दौड़ता फिरता है और मृत्यु उसकी एड़ियों के पीछे-पीछे लगी घूमती है।

६८

द्वेषी मनुष्य निरपराध मनुष्यों से शत्रुता रखता है। मैंने एक मूर्ख को एक प्रतिष्ठित मनुष्य का अपमान करते देखा। मैंने उससे कहा,—"महाशय! अगर आप भाग्य-हीन हैं तो इसमें भाग्यवानों का क्या दोष है?" जो तुमको देखकर जले, तुम उसका बुरा मत चेतो; क्योंकि वह अभागा स्वयँ आफ़त में फँसा हुआ है। जिसके पीछे ऐसा शत्रु (दूसरे को देखकर कुढ़नेवाला) लग रहा है उसके साथ शत्रुता करने की क्या आवश्यकता?

६९

श्रद्धाहीन विद्यार्थी निर्धन प्रेमी है; अनजान यात्री पङ्ख-हीन पक्षी है; अनभ्यस्त विद्वान् फल-हीन वृक्ष है और विद्या-हीन साधु बिना द्वार का घर है। अर्थात् ये सब असम्पूर्ण हैं अतएव बेकार हैं।

७०

क़ुरान इस ग़रज़ से प्रकाशित किया गया था कि लोग उससे अच्छी-अच्छी नसीहतें सीखें, न कि इस मतलब से कि लोग उसका पाठ मात्र किया करें। निरक्षर योगी पैदल मुसाफ़िर के समान है और सुस्त विद्वान् सोते हुए सवार के माफ़िक़ है। वह पापी जो हाथ उठाकर ईश्वर से आशीर्वाद माँगता है उस

साधु से अच्छा है जो अभिमान करता है। वह फ़ौजी अफ़सर जो शान्त शील और मिलनसार है, उस क़ानून जाननेवाले से अच्छा है जो लोगों पर ज़ुल्म करता है।

७१

वह विद्वान् जो शास्त्रोंको पढ़कर उनके अनुसार नहीं चलता उस बर्रे के समान है जो डङ्क मारती है, किन्तु मधु नहीं देती। कठोर और गँवार बर्रे से कह दो,—'जब तू मधु नहीं दे सकती तब डङ्क न मार।'

७२

जिस पुरुष में पुरुषत्व नहीं है वह औरत है। जो साधु लालची है वह बटमार—लुटेरा—है। जिस मनुष्य ने लोगों की दृष्टि में पवित्र बनने के लिए सफ़ेद कपड़े पहने हैं उसने अपना ऐमालनामा (कर्म्मखाता) काला किया है। हाथको सांसारिक वस्तुओं से रोकना चाहिए। आस्तीनों के लम्बी अथवा छोटी होनेसे क्या ?

७३

दो मनुष्यों के दिलसे रञ्ज नहीं जाता; एक तो व्यापारी जिसका जहाज़ समुद्र में डूब गया है और दूसरा वह जिसका वारिस—उत्तराधिकारी—क़लन्दरों—धन-उड़ाऊ लोगों—के साथ बैठा हुआ है। यद्यपि बादशाह की दी हुई खिलअत क़ीमती होती है; किन्तु अपने मोटे-झोंटे और फटे-पुराने कपड़े उससे कहीं बढ़कर होते हैं। यद्यपि बड़े आदमियों का

खाना—भोजन—मज़ेदार होता है ; तथापि अपनी झोली का टुकड़ा उससे ज़ियादा सुस्वादु होता है। सिरका या साग-पात जो अपनी मेहनत से जुटाया जाता है वह गाँवके सर्दारके दिये हुए भेड़के बच्चे और रोटी से अच्छा होता है।

७४

जिस दवा पर भरोसा न हो वह दवा खाना और बिना देखी हुई राहपर, बिनां क़ाफ़लेके, अकेले चलना,—ये दोनों बातें बुद्धिमानों की मति के विरुद्ध हैं।

७५

लोगों ने एक बड़े भारी विद्वान् से पूछा,—"आप ऐसे विद्वान् किस तरह हुए?" उसने कहा :—"मैं जिस बात को न जानता था उसको दर्य़ाफ़्त करने में शर्म न करता था।" अगर तुम चतुर वैद्य को नाड़ी दिखाओगे तो आराम होनेकी आशा कर सकोगे। हर चीज़ के विषय में जिसे तुम नहीं जानते, पूछो ; क्योंकि पूछने की थोड़ी सी तकलीफ़ से तुम्हें विद्या की प्रतिष्ठित राह मिल जायगी।

७६

जब तुम्हें इस बातका निश्चय हो कि अमुक बात मुझे उचित समय पर आप ही मालूम हो जायगी ; तब तुम उस बात के जानने के लिए जल्दी मत करो। अगर थोड़ा सब्र न करोगे और जल्दबाज़ी करोगे तो तुम्हारी इज़्ज़त और तुम्हारे रोब में कमी आ जायगी। जब लुक़मान ने देखा, कि दाऊदके

हाथमें लोहा, करामात के बल से, मोम हो गया ; तब उसने यह समझकर कि मुझे यह भेद बिना पूछे ही मालूम हो जायगा, उससे कुछ न पूछा ।

७७

सामाजिक योग्यताओं में यह बात ज़रूरी है, कि या तो तुम घर-धन्धेमें लगो या एकान्त में बैठकर ईश्वर-भजन करो। जब किसी से कोई बात कहो तब पहले यह विचारो, कि यह बात उसे रुचेगी या नहीं और उसका ध्यान मेरी ओर है या नहीं । अगर उसका ध्यान तुम्हारी तरफ़ हो तो उसके मिज़ाज के माफ़िक़ बात कहो । जो बुद्धिमान् मजनूँ के पास बैठेगा; वह लैला के ज़िक्र के सिवा और बात न कहेगा ।

७८

अगर कोई आदमी ईश्वर-भजन करने के लिए किसी शराब की दूकान में जाय, तो लोग सिवा इस बातके कि वह वहाँ शराब पीने गया था और कुछ न कहेंगे । इसी भाँति जो मनुष्य दुष्टों की संगति करता है, चाहे वह दुष्टों के से आचरण न करे ; तोभी लोग उस पर दुष्टों की सी चाल चलने का दोष लगावेंगे । अगर तुम नादानों की सुहबत करोगे तो तुम पर नादानी का कलङ्क लगेगा । मैंने एक अक़्लमन्द से कहा कि मुझे कुछ नसीहत दो । उसने कहा,—"अगर तुम विचारवान् और बुद्धिमान् हो तो मूर्खों की संगति मत करो ; क्योंकि उनकी सुहबत से तुम गधे हो जाओगे और

अगर तुम मूर्ख हो तो तुम्हारी अज्ञानता और भी बढ़ जायगी।"

७९

अगर किसी सीधे ऊँटकी मुहरी एक बालक के भी हाथमें हो तो ऊँट उसे १०० कोस तक राज़ी-राज़ी लिये चला जायगा। किन्तु अगर रास्ते में एक ऐसा खन्दक आजावे जिसमें जान जाने का भय हो और बालक अज्ञानता-वश ऊँट को उसी खन्दक पर ले जाना चाहे; तो ऊँट उस समय बालक के हाथसे मुहरी छुड़ा लेगा और उसकी आज्ञानुसार कदापि न चलेगा ; क्योंकि आफ़त के समय मेहरबानी करना बुरा है। कहते हैं, कि मेहरबानी से दुश्मन दोस्त नहीं होता ; बल्कि दुश्मनी और भी बढ़ाता है। जो मनुष्य तुम पर मेहरबानी करे, उसके साथ नम्र रहो और जो तुमसे विरुद्ध आचरण करे, उसकी आँखों में धूल झोंको। कठोर और सख़्त-मिज़ाज आदमी के साथ मेहरबानी और नर्मी से बात-चीत न करो ; क्योंकि ज़ङ्ग खाया हुआ लोहा घिसी हुई रेती से साफ़ नहीं होता।

८०

जो शख़्स, अपनी बुद्धिमानी दिखाने के लिए, दूसरों की बातों के बीच में बोलता है, वह अपनी नादानी प्रकट करता है। होशियार आदमी से जब तक कुछ पूछा न जाय तब तक वह

जवाब नहीं देता। बात चाहे जैसी साफ़ क्यों न हो, उसका दावा करना कठिन है।

८१

झूँठ कहना ज़ख़्म करना है, अगर घाव आराम भी हो जाय तोभी निशान बना रहता है। यूसुफ के भाई झूँठ बोलने में बदनाम हो गये थे; जब वे सच बोले तब भी किसी ने उनका विश्वास न किया। जिसको सच बोलने की आदत है, वह अगर कभी ग़लती से झूँठ भी बोले; तथापि उसका क़ुसूर साफ़ हो सकता है; किन्तु वह शख़्स जो झूँठ बोलने के लिए प्रसिद्ध है, यदि सच भी बोले तोभी आप उसे झूँठा कहेंगे।

८२

यह बात संशय-रहित है, कि सृष्टि में मनुष्य सब जीवों से ऊँचा और कुत्ता सब से नीच जानवर है; लेकिन अक़्लमन्द कहते हैं, कि कृतज्ञता न माननेवाले आदमी से कृतज्ञता स्वीकार करनेवाला कुत्ता अच्छा है। अगर कुत्ते को एक टुकड़ा रोटी का दे दो और पीछे तुम उसको सौ पत्थर भी मारो, तोभी वह रोटी के टुकड़े को न भूलेगा। यदि तुम एक नीचको चिरकाल तक पालो, तोभी वह एक तुच्छ सी बात पर तुमसे लड़ने को मुस्तैद हो जायगा।

८३

वह फ़क़ीर जिसका अन्त अच्छा है, उस बादशाह से भला

है, जिसका अन्त बुरा है। सुखसे पहले दुःख भुगतना अच्छा है, किन्तु सुखके पीछे दुःख भोगना अच्छा नहीं है।

८४

आस्मान ज़मीन को वृष्टि से उपजाऊ बनाता है; किन्तु ज़मीन उसे बदले में धूल के सिवा कुछ नहीं देती। घड़े में जो कुछ होता है घड़ा उसी को टपका देता है। अगर तुम्हारी नज़र में मेरा स्वभाव अच्छा न जँचे, तो तुम अपने स्वभाव की उत्तमता को न छोड़ो। सर्व्वशक्तिमान् भगवान् पापी के पाप-कर्म्म को देखते हैं किन्तु उसके पाप को छिपाते हैं। परन्तु पड़ोसी देखता नहीं है बल्कि शोर करता है। भगवान् रक्षा करें! अगर आदमी आदमी के गुप्त कामों को जानता तो कोई किसी की दस्तन्दाज़ी से न बचता।

८५

सोना खानसे खोदकर निकाला जाता है, किन्तु सूम से उसकी जान खोदने से। कमीने लोग ख़र्च नहीं करते, किन्तु ख़बरदारी से जमा करते हैं। उन लोगोंका कहना है, कि ख़र्च कर देनेसे ख़र्च करने की उम्मेद अच्छी है। कमीने को तुम एक दिन शत्रुओं के लिए रुपया छोड़ कर मरा हुआ देखोगे।

८६

जो निर्बलों पर दया नहीं करता उसे बलवानों के अत्याचार सहने पड़ेंगे। ऐसा सदा ही नहीं होता, कि बलवान्

भुजा निर्बल भुजा को परास्त ही करती रहे। निर्बल का दिल न दुखाओ; अन्यथा कोई तुमसे अधिक बलवान् तुमको अवश्य नीचा दिखावेगा।

८७

एक फ़क़ीर अपनी ईश्वर-उपासना के समय कहा करता था,—"हे भगवन्! बुरों पर दया करो, क्योंकि नेकों पर दया करके तुमने उन्हें नेक बनाया है!"

८८

अक़्लमन्द झगड़ा देखकर दूर हट जाता है और जब शान्ति देखता है तब लङ्गर डाल देता है; क्योंकि झगड़े के समय दूर रहने में कुशल है और शान्ति के समय बीच में रहने में सुख है।

८९

बादशाह ज़ालिमों के दूर करने के लिए, कोतवाल ख़ून करने वालों की ख़बरदारी के वास्ते और क़ाज़ी चोरी के मुक़द्दमे सुनने के लिए है। दो ईमानदार आदमी अपनी नालिश करने क़ाज़ी के पास नहीं जाते। जो तुम्हें हक़ मालूम हो उसे दे दो। झगड़े-तकरार के साथ देनेसे राजी से देना भला है। यदि कोई मनुष्य राज़ीसे सरकारी टैक्स नहीं देगा तो हाकिम के नौकर ज़ोरसे लेलेंगे।

९०

बूढ़ी वेश्या सिवा फिर पाप न करने की प्रतिज्ञा के और

क्या कर सकती है ? पदच्युत कोतवाल मनुष्यों पर फिर ज़ुल्म न करने के इक़रार के सिवा और क्या कर सकता है ? वह मनुष्य जो, जवानी में, एकान्तमें बैठकर ईश्वर में चित्त लगाता है ईश्वर की राह में शेर-मर्द है ; क्योंकि वृद्ध मनुष्य तो अपने कोने से सरक नहीं सकता ।

८१

दो मनुष्य मरते समय अपने साथ शोक ले गये :—एक वह जिसने जमा किया, किन्तु भोगा नहीं ; दूसरा वह जिसने विद्या पढ़ी, किन्तु उसे काम में न लाया । किसीने ऐसा कञ्जूस विद्वान् नहीं देखा, जिसके दोष ढूँढने की लोगोंने कोशिश न की हो । लेकिन अगर एक दातार मनुष्य में दो सौ ऐब भी हों तथापि उसकी दातारी उन को छिपा देती है ।

दाता का दोष इसी तरह छिप जाता है जिस तरह चन्द्र के किरण-जाल में उसका कलङ्क ।
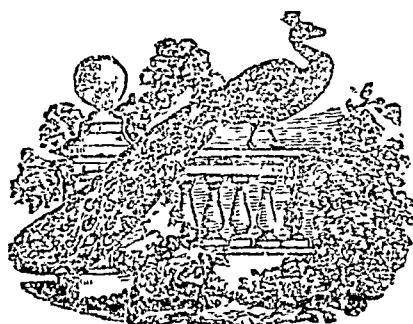
नीति-वाटिका के कुछ टटके फूल।

इल्म चन्दाँ कि बेश्तर ख़्वानी।
चूँ अमल नेस्त दर तो नादानी ॥ १ ॥
न मुहक़्क़िक़ बुवद न दानिशमन्द।
चारपाये बरो किताबे चन्द ॥ २ ॥

जो पढ़े-लिखे मनुष्य मूर्खों जैसे कर्म करते हैं—वे पढ़े-लिखे मूर्ख हैं। किसी पशु पर यदि कुछ पुस्तकें लाद दी जायँ तो क्या वह उनसे विद्वान् या बुद्धिमान् बन सकता है? कभी नहीं।

हर कि परहेज़ो इल्मो ज़ुह्द फ़रोख़्त।
ख़िरमने गर्द कर्दो पाक बिसोख़्त ॥ ३ ॥

जिसने अपनी विद्या को, धर्म्म को, निष्ठा को, सांसारिक किसी लाभ के लिए बेच डाला उसने मानो बड़े कष्ट से पैदा किये अन्न के ढेर में स्वयं आग लगा दी।

पन्दे अगर बिशनवी ऐ बादशाह!
दर हमा दफ़्तर बेह अज़ीं पन्द नेस्त ॥ ४ ॥

जुज़ बख़िरदमन्द म फ़रमा अमल।
गर्चे अमल कारे ख़िरदमन्द नेस्त ॥ ५ ॥

राजन्, मेरी बातको ध्यानपूर्वक सुनिए—ऐसी बात कहने वाला आपके यहाँ दूसरा नहीं। अपने सब काम बुद्धिमानों के हाथ में दे दीजिएगा, यद्यपि बुद्धिमान् ऐसे काम करना पसन्द नहीं करते हैं।

माशूक़ हज़ारदोस्त रा दिल न दिही।
वरमेदिही आं दिल ब जुदाई बिनही ॥ ६ ॥

जिसके हज़ार दोस्त हैं उससे मित्रता मत करो—उसे अपना दिल मत दो—यदि देते हो तो विरह की व्यथा बर्दाश्त करने के लिए तय्यार रहो।

सुख़ने दर निहां न बायद गुफ़्त।
काँ सुख़न बरमला न शायद गुफ़्त ॥ ७ ॥

जिस बात को तुम सब के सामने कहने में हिचकते हो उसको किसी से एकान्त में भी मत कहो।

दर सुख़न बादोस्ताँ आहिस्ता बाश।
ता नदारद दुश्मने ख़ूंख़ार गोश ॥ ८ ॥
पेश दीवारां चे गोई होशदार।
ता न बाशद दर पसे दीवार गोश ॥ ९ ॥

तुम अपने मित्रों से भी इस तरह चुपचाप बात करो कि

तुम्हारे खूनके प्यासे दुश्मन तुम्हारी बात न सुन सकें। दीवार से बात कहते समय भी तुम्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि कहीं दीवार के पीछे कान न लग रहे हों ।

विशो ऐ खिरदमन्द ज़ाँ दोस्त दस्त ।
कि बा दुश्मनानत बुवद हमनशस्त ॥ १० ॥

जो तेरे दुश्मनों से मित्रता रखता है ऐसे अपने मित्र से तू हाथ धोले ।

चो दस्त अज़ हमा हीलते दरगिकस्त ।
हलालस्त बुर्दन ब शमशेर दस्त ॥ ११ ॥

जब किसी तरह से काम न निकले तब तलवार खींचना उचित है ।

पसन्दीदस्त बखशायश वलेकिन ।
मनह बर रेश खल्क़आज़ार मरहम ॥ १२ ॥
नदानस्त आँके रहमत कर्द बर मार ।
के आँ ज़ुल्मस्त बर फ़र्ज़न्दे आदम ॥ १३ ॥

क्षमा करना बहुत अच्छा है पर दुष्ट के घावों पर मरहम लगाना कभी अच्छा नहीं। सांप की जान बचानेवाला यह नहीं जानता कि वह आदम की सन्तति को हानि पहुँचा रहा है ।

जवाने बा पिदर गुफ़्त ऐ खिरदमन्द ।
मरा तालीम दह पीराना यक पन्द ॥ १४ ॥

वगुफ़्ता नेकमर्दी कुन न चन्दाँ ।
कि गरदद चीरा गुर्गे तेज़दन्दाँ ॥ १५ ॥

एक नव-युवकने अपने पिता से कहा—आप बुद्धिमान् और वृद्ध हैं, इस लिए मुझे कुछ उपदेश कीजिए। उसने कहा—भला बन, पर इतना सीधा मत बन कि लोग भेड़िये के से तेज़ दाँतों से तेरा अपमान करने लगें ।

नशायद बनीआदमे पाक ज़ाद ।
के दर सर कुनद किब्र तुन्दी ओ बाद ॥ १६ ॥
तुरा वा चुनीं तुन्दियो सरकशी ।
न पिन्दारमज़ ख़ाकी अज़ आतिशी ॥ १७ ॥

ख़ाक से बनी आदम की सन्तान को अभिमान, कठोरता आदि से बचना चाहिए। तुम में इतनी सरकशी और तेज़ी है कि मैं नहीं समझता कि तुम ख़ाक से बने हो या आग से ?

बुलबुला ! मुज़दये बहार बियार ।
ख़बरे बद बबूम बाज़गुज़ार ॥ १८ ॥

बुलबुल ! तू वसन्त की बात कह—बुरी ख़बर उल्लू के लिए छोड़ दे ।

मशो गुर्रा बर हुस्ने गुफ़्तारे ख़ेश ।
व तहसीने नादाँ व पिन्दारे ख़ेश ॥ १९ ॥

मूर्ख की तारीफ़ से और अपने मन से ही अपनी बात के सौन्दर्य्य पर घमण्ड न करना चाहिए ।

गर अज़ बसीते ज़मीं अक़्ल मुनअदम गर्दद।
बख़ुद गुमाँ न बरद हेच कस कि नादानम॥ २०॥

यदि संसार से बुद्धि लोप हो जाय तो कोई अपने को मूर्ख समझने का सन्देह भी न करे।

बद अख़्तर तरज़ मरदुमाज़ार नेस्त।
कि रोज़े मुसीबत कसश यार नेस्त॥ २१॥

अत्याचारी से बढ़कर अभागा आदमी और कोई नहीं है; क्योंकि विपद् के समय उसका कोई मित्र नहीं होता।

आबगीना हमा जा याबी अज़ां बेमहलस्त।
लाल दुश्वार बदस्त आयद अज़ानस्त अज़ीज़॥ २२॥

जानते हो काँच की क़द्र क्यों नहीं है और लाल को क्यों लोग अधिक चाहते हैं? इसका कारण यह है कि पहला हर जगह मिलता है और दूसरा कहीं-कहीं मिलता है और कम मिलता है।

ख़रेरा अबलहे तालीम मेदाद।
बरो बर सर्फ़ करदे सई दायम॥ २३॥
हकीमे गुफ़्तश ऐ नादाँ चे गोई।
दरीं सौदां बितर्स अज़ लोमे लायम॥ २४॥
नयामोज़द बहायम अज़ तो गुफ़्तार।
तो ख़ामोशी बयामोज़ अज़ बहायम॥ २५॥

कोई मूर्ख आदमी किसी गधे को शिक्षा देने में अपना सारा समय नष्ट किया करता था। यह देख कर किसी बुद्धिमान् आदमी ने उससे कहा—"ऐ मूर्ख! तू किस लिए यह व्यर्थ श्रम कर रहा है। तेरी मूर्खता पर धिक्कार है। जानवर तुझ से कभी बोलना न सीखेंगे, किन्तु तू चाहे तो जानवरों से चुप रहना सीख सकता है।

गर संग हमा लाल बदख़्शाँ बूदे।
पस क़ीमते लालो संग यकसां बूदे ॥ २६ ॥

यदि सभी पत्थर बदख़्शाँ के लाल होते तो लाल और पत्थरों का भाव (मूल्य) भी एक ही हो जाता। मतलब यह है कि लाल की क़ीमत इसी लिए है कि वह दुष्प्राप्य है। पत्थर की तरह लाल भी जहाँ-तहाँ मिलने लगे तो फिर कौन उसके लिए लाखों रुपये ख़र्च करे।

तवाँ शनाख़्त बयक रोज़ दर शुमायूले मर्द।
के ता कुजाश रसीदस्त पायगाहे उलूम ॥ २७ ॥
वले ज़ बातिनश ऐमन मबाशो गुर्रा मशो।
कि ख़ुब्से नफ़्स न गर्दद बसालहा मालूम ॥ २८ ॥

किसी आदमी की विद्याबुद्धि का हाल तुम एक दिन में भले ही मालूम कर लो, पर उसके मानसिक दोषोंका पता तुम्हें वर्षों तक नहीं लग सकता। इसलिए किसी की विद्या आदि पर मोहित हो कर उसपर एक साथ विश्वास मत करो।

जंगो ज़ोरावरी मकुन वा मस्त ।
पेशे सर पंजा दर बग़ल नेह दस्त ॥ २६ ॥

ज़बरदस्त के साथ लड़ाई मत ठानो । ज़बरदस्त के सामने अपने हाथ बग़ल के नीचे दबा लो ।

कुनद हर आईना ग़ीबत हसूद कोतहे दस्त ।
कि दर मुक़ाबला गुंगश बुवद ज़ुबाने मिक़ाल ॥३०॥

नीच और ईर्षालु आदमी गुणवान् पुरुष को उसके पीछे निन्दा करता है, किन्तु सामने आते ही उसकी ज़ुबान कुण्ठित हो जाती है ।

असीर बन्द शिकमरा दोशब नगीरद ख़्वाब ।
शबे ज़े मेदये संगी शबे ज़े दिलतंगी ॥ ३१ ॥

जो आदमी पेटू है उसे दो रातें नींद नहीं आती । एक रात तो पेटके बोझ के कारण और दूसरी रात भूख की चिन्ता से ।

तरहहुम बर पिलंगे तेज़दन्दाँ ।
सितमगारी बुवद बर गोसिफ़न्दाँ ॥ ३२ ॥

जो चीते पर दया दिखाता है वह बकरियों पर ज़ुल्म करता है ।

शर्ते अक़लस्त तीर सब्र अन्दाज़ ।
के चो रफ़तज़ कमाँ नयायद बाज़ ॥ ३३ ॥

विचार कर काम करना चाहिए । तीरन्दाज़ को धैर्य

धारण करना उचित है। उसकी कमान से जो तीर निकल जायगा वह फिर वापिस नहीं आयेगा।

संगे बदगौहर अगर कासये ज़रीं शिकनद।
क़ीमते संग नयफ़ज़ायद व ज़र कम नशवद ॥३४॥

यदि एक बेकार पत्थर सोनेके मूल्यवान प्याले को तोड़ दे तो पत्थर मूल्यवान और सोना मूल्य-हीन नहीं हो जायगा।

आलिम अन्दर मयाने जाहिल रा।
मस्ले गुफ़्तह अन्द सद्दीक़ाँ ॥ ३५ ॥
शाहिदे दर मयाने कोरानस्त।
मसहफ़े दरमयाने ज़िन्दीक़ाँ ॥ ३६ ॥

विद्वान् की मूर्खों में वही दशा होती है जो किसी सुन्दरी की अन्धों में और धर्म्म-पुस्तक की नास्तिकों में।

संगे बचन्द साल शवद लाल पारए।
ज़िन्हार ता बयक नफ़सश न शिकनी बसंग ॥३७॥

पत्थर सैकड़ों वर्षों में कहीं लाल बन पाता है। उसे एक क्षण में पत्थर से नहीं तोड़ डालना चाहिए।

अक़्ल दर दस्त नफ़्स चुनां गिरफ़्तारस्त।
कि मर्दे आजिज़े दर दस्त ज़न गज़ पर ॥ ३८ ॥

बुद्धि आत्मा के इस प्रकार अधीन है, जिस तरह कोई भोला पुरुष किसी चालाक स्त्री के वशमें।

आबिद कि न अज़ बहरे खुदा गोशानशीनद ।
बेचारा दर आईनये तारीक चे बीनद ॥ ३९ ॥

जो साधु ईश्वर-भजन के लिए एकान्त-वास नहीं करता, उसका एकान्त-वास धुंधले शीशे की तरह है, जिसमें कुछ दिखाई नहीं देता ।

चो बासिफ़ला गोई बलुत्फ़ो खुशी ।
फ़िज़ूं गर्द वश किब्रो गर्दनकशी ॥ ४० ॥

कमीना आदमी अच्छा व्यवहार करने से नहीं सम्हलता । ऐसा करने से उसका घमण्ड और बढ़ जाता है ।

जाहिले नादां परेशां रोज़गार ।
बह ज़े दानिशमन्द नापरहेज़गार ॥ ४१ ॥
कां बनाबीनाई अज़ राह ओफ़्ताद ।
वीं दोचश्मश बूदो दर चाह ओफ़्ताद ॥ ४२ ॥

चरित्र-हीन मूर्ख चरित्र-हीन विद्वान् से अच्छा है, क्योंकि मूर्ख तो अन्धा होनेके कारण पथभ्रष्ट हुआ, पर विद्वान् दो आँखें रखते हुए भी कुएँ में गिरा ।

आतिशअज़ खानये हमसायये दरवेश मख़ाह ।
कि आंचे अज़ रोज़ने ओ मीगुज़रद दूदे दिलस्त ॥४३॥

अपने पड़ोसी भिक्षुक से आग मत मांग, उसकी चिमनी से जो धुआँ तू निकलता देखता है, वह लौकिक आगका नहीं बल्कि उसके हृदय में सुलगी हुई दुःखरूप आगका है ।

वर रवी दर दहाने शेरो पिलंग।
नखुरन्दत मगर बरोज़े अजल ॥ ४४ ॥

यदि तेरा मृत्यु-समय उपस्थित नहीं हुआ है, तो शेर या चीते के मुँह में पहुँच कर भी तू ज़िन्दा रह सकता है।

इला ता न ख्वाही बलावर हसूद।
के आं बक़तवर्गश्ता खुद दर बलास्त ॥ ४५ ॥
चे हाजत के बावी कुनी दुश्मनी।
के वीरा चुनाँ दुश्मनन्दर क़फ़ास्त ॥४६॥

जो दूसरे को देख कर जलता है उस पर जलने की ज़रूरत नहीं; क्योंकि दाह रूप शत्रु उसके पीछे लग रहा है। उससे शत्रुता करने की हमें फिर क्या ज़रूरत है?

ज़म्बूर दरश्त बेमुरव्वत रा गो।
बारे चो अस्ल न मेदिही नेश मज़न ॥ ४७ ॥

कठोर और बेवक़ूफ़ बर्र से कह दो कि जब तू शहद नहीं देती तो डङ्क भी मत मार।

ऐ बनामूस जामा कर्दा सफ़ेद।
बहर पिन्दारे ख़ल्क़ नामा स्याह ॥ ४८ ॥
दस्त कोताह बायदज़ दुनिया।
आस्तीं ख़ाह दराज़ ख़ाह कोताह ॥ ४९ ॥

जिसने लोगोंको धोखा देनेके लिए सफ़ेद कपड़े पहने हैं; उसने अपना भाग्य काला किया है। साँसारिक विषयों से हाथ

को रोकना चाहिए। आस्तीन छोटी हो या बड़ी—एक ही बात है।

सिरका अज़ दस्त रंज खेशो तरा।
बेहतरज़ नान दह खुदायो बरह ॥ ५० ॥

अपने परिश्रम से जुटाया हुआ सिरका और साग रोटी से अच्छा है जो ग्राम के सरदारने दी है।

कसेकि लुत्फ़ कुनद बा तो ख़ाक पायश बाश।
वगर ख़िलाफ़ कुनद दर दो चश्मशागन ख़ाक ॥ ५१ ॥
सुख़न बलुत्फ़ो करम बा दरश्तख़ूये मगोय।
कि ज़ंगख़ुर्दा न गर्दद मगर बसोहाँ पाक ॥ ५२ ॥

जो तुम पर दया करे तुम अपने को उसके चरण की धूलि समझो और जो तुम्हारा अपकार करे उसकी आँखों में ख़ाक झोंक दो। धूर्त्त मनुष्य के साथ सभ्यता से बात-चीत मत करो, क्योंकि मोर्चा लगा हुआ लोहा रेती से साफ़ नहीं होता है।

यके राकि आदत बुवद रास्ती।
ख़ताये रवद दर गुज़ारन्द अज़ो ॥ ५३ ॥
वगर नामवर शुद बक़ौले दरोग़।
वगर रास्त बावर नदारन्द अज़ो ॥ ५४ ॥

जो सच बोलने के लिए प्रसिद्ध है, उसका झूठ भी सच हो जाता है और वह झूठ क्षम्य भी है; पर जो मनुष्य झूठ

बोलने के लिए प्रसिद्ध है, वह यदि सच भी बोले तो भी झूठ ही समझा जाता है।

ग़मे कज़पेश शादमानी बरी।
बह अज़ शादी किज़ पसश ग़मखुरी ॥ ५५ ॥

सुख से पहले दुःख पाना अच्छा है, बनिस्बत सुख के पीछे दुःख भोगने के।

गरत खूये मन आमद ना सज़ावार।
तो खूये नेके खेशज़ दस्त मगुज़ार ॥ ५६ ॥

तुम्हें मेरा स्वभाव चाहे पसन्द न हो, पर तुम्हें अपने स्वभाव की भलाई न छोड़नी चाहिए।

जवान गोशानशीं शेरमर्दे राहे खुदास्त।
कि पीर खुद न तवानद ज़ गोशये बरख़ास्त ॥ ५७ ॥

जवानी में जिन्होंने एकान्त में ईश्वर-भजन किया है, सच्चे भक्त वे ही हैं। बूढ़ा आदमी यदि एकान्तवास पर गर्व करे तो झूठा है, क्योंकि वह तो जहाँ पड़ा है वहाँ से सरक ही नहीं सकता।

चो हक़ मुआयना दानी कि मी बबायद दाद।
बलुत्फ़ बहकि बजंग आवरी व दिलतंगी ॥ ५८ ॥
खिराज अगर नगुज़ारद कसे बतेबे नफ़स।
बक़हर अज़ओ बसितानन्दो मर्दे सरहंगी ॥ ५९ ॥

जिसका प्राप्य पदार्थ है उसे प्रसन्नतापूर्वक दे दो। झगड़े

के साथ देने से प्रसन्नतापूर्वक देना भला है । जो आदमी सर-कारी टका खुशी से नहीं देता उससे ज़बर्दस्ती ले लिया जाता है ।

कस न बीनद बख़ीले फ़ाज़िल रा ।
कि न दर ऐब गुफ़्तनश कोशद ॥ ६० ॥

दर करीमे दो सद गुनह दारद ।
करमश ऐबहा फ़रो पोशद ॥ ६१ ॥

कंजूस आदमी कितना ही विद्वान् हो, लोग उसमें दोष निकाले बिना नहीं छोड़ते; पर किसी उदार पुरुष में यदि दो सौ दोष भी हों तो भी उसकी उदारता से वे ढके रहते हैं ।

गुलिस्ताँ में आये कुछ प्रसिद्ध स्थानोंका भौगोलिक परिचय।

इसकन्द्रिया (*Alexandria*)—मिस्र देश में, नील नदी के मुहाने पर, क़रीब हज़ार वर्ष व्यतीत हुए, सिकन्दर ने बसाया था। (अध्याय, ३ कहानी १४)

ख़ुरासान (*Khorassan*)—फ़ारिस का एक प्रान्त। (३-७)

दमश्क़ (*Damascus*)—एशियाटिक टर्की के सीरिया प्रान्त का सब से बड़ा शहर। दुनिया के पुराने शहरों में से एक। व्यापार का केन्द्र। हज्जको जानेवालों का प्रधान विश्राम-स्थान। (२-२४)

बसरा (*Basra*)—एशियाटिक टर्की के मेसोपोटेमिया प्रान्त का ख़ास बन्दरगाह। फारिस की खाड़ी के उत्तरीय तट पर अवस्थित। (३-१७)

बग़दाद (*Bagdad*)—एशियाटिक टर्की के मेसोपोटेमिया प्रान्तका एक शहर। मुसलमानोंका प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान। उनके ख़लीफ़ाओं का निवास-स्थान। व्यापार की मण्डी। (२-४१-४४ आदि)

मक्का (*Mecca*)—टर्किश अरेबिया में मुसलमानों का सुप्रसिद्ध तीर्थ।

मदीना (*Medina*)—टर्किश अरेबिया में एक प्रसिद्ध शहर। मुहम्मद साहब का समाधि-मन्दिर इसी शहर में है, अतएव मुसलमानों की दृष्टि में यह बड़े महत्त्व की और श्रद्धा की जगह है।

सहरा (*Sahara*)—एफ्रिका का प्रसिद्ध रेतीली जङ्गल। यह जङ्गल संसार में सब से बड़ा है। यह इतना बड़ा है कि इसमें भारत जैसे दो देश बस सकते हैं।